केन्द्रीय विदयालय संगठन
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु

अध्ययन सामग्री

2023-24

कक्षा- बारहवीं

संयोजक- हरिशंकर, प्रशिक्षण सहयोगी (हिंदी)

हमारे संरक्षक

श्रीमती निधि पांडे, आई आई एस आयुक्त	Mrs. NIDHI PANDEY, IIS COMMISSIONER
श्री सत्य नारायण गुलिया संयुक्त आयुक्त (वित्त)	Mr. SATYA NARAIN GULIA JOINT COMMISSIONER (FIN)
श्री एन आर मुरली संयुक्त आयुक्त (शैक्षणिक)	Mr. N R MURALI JOINT COMMISSIONER (ACAD)
श्रीमती अजीता लोंग्जम संयुक्त आयुक्त (प्रशासन-1)	Mrs. AJEETA LONGJAM JOINT COMMISSIONER (ADMIN-I)
डॉ. जयदीप दास संयुक्त आयुक्त (प्रशासन)	Dr. JAIDEEP DAS JOINT COMMISSIONER (ADMIN)
डॉ पी देवकुमार संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)	Dr. P DEVAKUMAR JOINT COMMISSIONER (PERS)
सुश्री चंदना मंडल संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)	Ms. CHANDANA MANDAL JOINT COMMISSIONER (TRG)

MESSAGE

It is with profound delight and utmost pride that I announce the publication of our study material for class XII HINDI for the session 2023-24. It's my firm belief that access to quality education should know no boundaries, transcending social and economic constraints. Our collective vision is to empower all students with the tools for success and intellectual growth.

With their steadfast dedication PGT-HINDI of Bangalore, Chennai, Ernakulam & Hyderabad regions of Kendriya Vidyalaya Sangathan have invested their knowledge, expertise, and passion into meticulously crafting these study materials to complement the classroom learning experience of the students. These materials serve as invaluable aids for self-study since they are comprehensive, well-structured, and presented in a manner that is easy to comprehend.

It is with pleasure that I place on record my commendation for the commitment and dedication of the team of teachers which included the Training Associate (HINDI) from ZIET Mysore who has been the Coordinator of this assignment and all the concerned PGT-HINDI subject experts from the four feeder regions of ZIET Mysore.

Wishing you all the very best in your academic journey!

MENAXI JAIN
DIRECTOR
ZIET MYSORE

<u>आभार</u> (पी जी टी हिन्दी)

1. श्रीमती निर्मल, के वी एद्दुमैलारम, हैदराबाद संभाग
2. श्री नवनीत कुमार, के वी नं 2 ए एफ ए दुंडीगल, हैदराबाद संभाग
3. श्रीमती सुजाता चौकिया, के वी एन पी ए शिवरामपल्ली, हैदराबाद संभाग
4. श्री अनुराग सिंह, के वी पिकेट, हैदराबाद संभाग
5. श्रीमती ज्योती, के वी हेब्बाल, बेंगलुरू संभाग
6. श्रीमती पुष्पा निगम, के वी नं 2 बेल्गावी, बेंगलुरू संभाग
7. श्री वेकट, के वी नं 2 हुब्बल्ली, बेंगलुरू संभाग
8. श्रीमती के षिजी प्रेमन, के वी नं 1 जालहल्ली, बेंगलुरू संभाग
9. श्रीमती के सुषमा, के वी मलप्पुरम, एरणाकुलम संभाग
10. डॉ कृष्णा कुमार, के वी पट्टम, शिफ्ट 1, एरणाकुलम संभाग
11. श्रीमती शाल्बी कुरियन, के वी एन ए डी आलुवा, एरणाकुलम संभाग
12. श्रीमती शैलजा टी एच, के वी केल्टरोण नगर, एरणाकुलम संभाग
13. श्री पी जयराजन, के वी ए एफ एस आवड़ी, चेन्नई संभाग
14. श्रीमती एस पद्मश्री, के वी नं 2 तांबरम, चेन्नई संभाग
15. श्री अशोक कुमावत, के वी नं 1 पोर्ट ब्लेयर, चेन्नई संभाग
16. श्री केसरीनंदन त्रिपाठी, के वी नं 2 पोर्ट ब्लेयर, चेन्नई संभाग

विषय सूची

क्रम सं	पाठ्य विवरण	पृष्ठ सं
1.	पाठ्यक्रम विनिर्देशन	5
2.	अपठित बोध गद्य	7
3.	अपठित बोध पद्य	25
4.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-२): पद्य	52
5.	पाठ्य पुस्तक (आरोह भाग-२): गद्य	164
6.	पूरक-पुस्तिका (वितान भाग-2)	241
7.	आदर्श प्रश्नपत्र -(1-5)	295

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302)

कक्षा-12 वीं(2023-24) परीक्षा हेतु पाठयक्रम विनिर्देशन

प्रश्न-पत्र दो खण्डों- खंड अ और ब का होगा

खंड अ में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे ।

खंड ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे ।

भारांक-100 निर्धारित समय-3 घंटे

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1	**अपठित बोध (बहुवैकल्पिक प्रश्न होंगे)**		**15**
	अ	01 अपठित गदयांश पर अधारित 10 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अधिकतम 300 शब्दों का) (01 अंक ∗10 प्रश्न)	10
	ब	01 अपठित पदयांश पर अधारित 5 बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अधिकतम 150 शब्दों का) (01 अंक ∗5 प्रश्न)	05
2	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3,4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3,4 तथा 5 पर आधारित बहुविकल्पात्मक प्रश्न (01 अंक ∗5 प्रश्न)		
3	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक ∗5 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर आधारित 05 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक ∗5 प्रश्न)	05
4	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर आधारित 10 बहुविकल्पी प्रश्न (01 अंक ∗10 प्रश्न)	10
खंड- ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3,4,5,11,12 तथा 13 पर आधारित**		**16**
	1	दिए गए 03 अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (06 अंक ∗ 01 प्रश्न)	06
	2	कहानी का नाट्यरूपांतरण/रेडियो नाटक/ अप्रत्याशित विषयों के लेखन पर आधारित 02 प्रश्न (विकल्प सहित) (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक ∗ 02 प्रश्न)	04
	3	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित 03 में से 02 प्रश्न (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक ∗ 02 प्रश्न)	06
6	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 एवं वितान भाग-2 पर आधारित**		**24**
	1	काव्यखंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक ∗ 02 प्रश्न)	06
	2	काव्यखंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक ∗ 02 प्रश्न)	04
	3	गद्यखंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (03 अंक ∗ 02 प्रश्न)	06

	4	गद्यखंड पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक * 02 प्रश्न)	04
	5	वितान पाठों पर आधारित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (02 अंक * 02 प्रश्न)	04
7		**(अ) श्रवण तथा वाचन**	**10**
		(ब) परियोजना कार्य	**10**
कुल अंक			**100**

निर्धारित पुस्तकें

1. आरोह, भाग - 2 एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
2. वितान, भाग - 2 एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित
3. अभिव्यक्ति और माध्यम, एन.सी.ई.आर.टी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट- पाठ्यक्रम से निम्नलिखित पाठ हटा दिए हैं

आरोह, भाग - 2	काव्यखंड	गजानन माधव मुकतिबोध- सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) फिराक गोरखपुरी - गज़ल
	गद्यखंड	विष्णु खरे - चार्ली चैप्लिन यानी हम सब(पूरा पाठ) रजिया सज्जाद ज़हीर - नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग - 2		एन फैंक - डायरी के पन्ने

अपठित गद्यांश

गद्यांश-1

परिश्रम यानी मेहनत अपना जवाब आप ही है। सभी प्रकार की धन-संपत्ति और सफलताएँ लगातार परिश्रम करने से ही प्राप्त हुआ करती हैं। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। आज से लगभग 50 साल पहले कौन कल्पना कर सकता था कि मनुष्य एक दिन चाँद पर कदम रखेगा या अंतरिक्ष में विचरण करेगा पर निरंतर श्रम की बदौलत मनुष्य ने उन कल्पनाओं एवं संभावनाओं को साकार कर दिखाया है। मात्र हाथ पर हाथ रखकर घर पर बैठे रहने से यह कदापि संभव नहीं होता।

किसी देश,राष्ट्र अथवा जाति को उस देश के भौतिक संसाधन तब तक समृद्ध नहीं बना सकते जब तक कि वहां के निवासी उन संसाधनों का दोहन करने के लिए अथक परिश्रम नहीं करते। किसी भू-भाग की मिट्टी कितनी भी उपजाऊ क्यों ना हो,जब तक विधिवत परिश्रमपूर्वक उसमें जुताई, बुआई,सिंचाई, निराई-गुड़ाई नहीं होगी,अच्छी फसल प्राप्त नहीं हो सकती । किसी किसान को कृषि संबंधी अत्याधुनिक कितनी ही सुविधाएं उपलब्ध करा दीजिए, यदि उसके उपयोग में लाने के लिए समुचित श्रम नहीं होगा,उत्पादन क्षमता में वृद्धि संभव नहीं है। परिश्रम से तो रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं। हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात हमारी द्रुतगति प्रगति भी हमारे श्रम का ही फल है। भाखड़ा नांगल का विशाल बांध हो या श्रीहरिकोटा प्रक्षेपण केंद्र, हरित क्रांति की सफलता हो या कोविड 19 की रोकथाम के लिए टीका तैयार करना-प्रत्येक सफलता हमारे श्रम का परिणाम है तथा प्रमाण भी।

जीवन में सुख की अभिलाषा सभी को रहती हैं। बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में है। उसे वास्तविक और स्थायी शांति नहीं मिलती। गांधीजी तो कहते थे कि जो बिना श्रम किए भोजन ग्रहण करता है, वह चोरी का अन्न खाता है। ऐसी सफलता मन को शांति देने के बजाय उसे व्यथित करेगी। परिश्रम से दूर रहकर और सुखमय जीवन व्यतीत करने वाले विद्यार्थी को ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? हवाई किले तो सहज ही बन जाते हैं, लेकिन वे हवा के हल्के झोंके से ढह जाते हैं। मन में मधुर कल्पनाओं के संजोने मात्र से किसी कार्य की सिद्धि नहीं होती। कार्य सिद्धि के लिए उद्यम और सतत उद्यम आवश्यक है। तुलसीदास ने सत्य ही कहा है- सकल पदारथ है जग माहीं, करमहीन न पावत नाहीं। अर्थात इस दुनिया में सारी चीजें हासिल की जा सकती हैं, लेकिन वह कर्महीन व्यक्ति को कभी नहीं मिलती हैं।

अगर आप भविष्य में सफलता की फसल काटना चाहते हैं तो आपको उसके लिए भी बीज आज ही बोने होंगे। आज बीज नहीं बोयेंगे तो भविष्य में फसल काटने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? पूरा संसार कर्म और फल के सिद्धांत पर चलता है इसलिए कर्म की तरफ आगे बढ़ना होगा।

यदि सही मायने में सफल होना चाहते हैं तो कर्म में जुट जाएं और तब तक जुटे रहें जब तक कि सफल ना हो जाए। अपना एक-एक मिनट अपने लक्ष्य को समर्पित कर दें। काम में जुटने से आपको हर वस्तु मिलेगी जो आप पाना चाहते हैं-सफलता,सम्मान, धन,सुख या जो भी आप चाहते हो।

1.'परिश्रम का कोई विकल्प नहीं।' यह भावार्थ किस पंक्ति में है?

(i)बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में है।

(ii)सभी प्रकार की धन-संपत्ति और सफलताएँ लगातार परिश्रम करने से ही प्राप्त हुआ करती हैं।

(iii) काम में जुटने से आपको हर वस्तु मिलेगी जो आप पाना चाहते हैं।

(a) केवल (i) में

(b) केवल (ii) में

(c) (ii) , (iii) में

(d) (i) ,(ii) , (iii) में

2. कैसे व्यक्ति को अंधकार में बताया गया है?

(a) श्रमहीन व्यक्ति

(b) विश्रामहीन व्यक्ति

(c) प्रकाशहीन व्यक्ति

(d) दिशाहीन व्यक्ति

3. 'परिश्रम से रेगिस्तान भी अन्न उगलने लगते हैं' का भावार्थ क्या है?

(a) रेगिस्तान में कभी ऐसा हो नहीं सकता ।

(b) मनुष्य मेहनत के बल पर असम्भव कार्य भी पूरा कर सकता है।

(c) 'परिश्रम' किसी उन्नत खाद का नाम है।

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं ।

4. भाखड़ा नांगल बांध को यहां क्यों याद किया गया है?

(a) भाखड़ा नांगल बांध बहुत ही खूबसूरत है।

(b) यह मनुष्य के परिश्रम की जीत का सटीक उदाहरण है।

(c) लेखक को यह बहुत पसंद है ।

(d) उपर्युक्त सभी ।

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं - कथन (A) तथा कारण (R) । प्रश्न का उत्तर निम्लिखित विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर दीजिए:

कथन (A) सभी सवालों का जवाब परिश्रम में है।

कारण (R) परिश्रम से सभी कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता ।

(a) कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है ।

(b) कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है ।

(c) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है ।

(d) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है ।

6. गद्यांश में परिश्रम के प्रमाण क्या-क्या बताए गए हैं?

(a) कोविड -19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, रेगिस्तान ।

(b) कोविड -19 की रोकथाम का टीका, प्रक्षेपण केंद्र, रेल ।

(c) सिनेमा, प्रक्षेपण केंद्र ,बांध ।

(d) बांध ,कोविड -19 की रोकथाम का , प्रक्षेपण केंद्र ।

7. 'बिना श्रम किए भौतिक साधनों को जुटाकर जो सुख प्राप्त करने के फेर में है, वह अंधकार में है।'-वाक्य पहचाने

(a) सरल वाक्य

(b) संयुक्त वाक्य

(c) मिश्र वाक्य

(d) प्रश्नवाचक वाक्य

8. 'हाथ पर हाथ रखना' क्या है?

(a) मुहावरा

(b) समास

(c) मिश्र वाक्य

(d) सरल वाक्य

9. 'उद्यम' शब्द का समानार्थी शब्द है-

(a) कारखाना

(b) प्रयत्न

(c) निरुद्यम

(d) अनुमति

10. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है-

(a) परिश्रम और स्वतंत्रता

(b) परिश्रम और सफलता

(c) परिश्रम और कल्पना

(d) परिश्रम और भविष्य

गद्यांश-2

विज्ञान आज के मानव-जीवन का अविभाज्य एवं घनिष्ठ अंग बन गया है। मानव जीवन का कोई भी क्षेत्र विज्ञान के अभूतपूर्व आविष्कारों से अछूता नहीं रहा. इसी से आधुनिक युग विज्ञान का युग कहलाता है. आज विज्ञान ने पुरुष और नारी, साहित्यकार और राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और कृषक, पूंजीपति और श्रमिक, चिकित्सक और सैनिक, अभियंता और शिक्षक तथा धर्मज्ञ और तत्वज्ञ सभी को और सभी क्षेत्रों में किसी-न-किसी रूप में अपने अप्रतिम प्रदेय से अनुग्रहीत किया है। आज समूचा परिवेश विज्ञानमय हो गया है।

विज्ञान के चरण गृहिणी के रसोईघर से लेकर बड़ी-बड़ी प्राचीरों वाले भवनों और अट्टालिकाओं में ही दृष्टिगत नहीं होते। प्रत्युत वे स्थल और जल की सीमाओं को लाँघकर अंतरिक्ष में भी गतिशील है। वस्तुतः विज्ञान अद्यतन मानव की सबसे बड़ी शक्ति बन गया है। इसके बल से मनुष्य प्रकृति और प्राणी जगत का शिरोमणि बन सका है। विज्ञान के अनुग्रह से सभी प्रकार की सुविधाओं और संपदाओं का स्वामित्व प्राप्त कर चुका है। अब वह ऋतु-ऋतुओं के प्रकोप से भयाक्रांत एवं संत्रस्त नहीं हैं। विद्युत ने उसे आलोकित किया है, उष्णता और शीतलता दी है। बटन दबाकर किसी भी कार्य को संपन्न करने की ताकत भी दी है। मनोरंजन के विविध साधन उसे सुलभ हैं। यातायात एवं संचार के साधनों के विकास से समय और स्थान की दूरियाँ बहुत कम हो गई है और समूचा विश्व एक परिवार-सा लगने लगा है। कृषि और उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन की वृद्धि होने के कारण आज दुनिया पहले से अधिक धन-धान्य से संपन्न है।

शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन अभिनंदनीय है। विज्ञान के सहयोग से मनुष्य धरती और समुद्र के अनेक रहस्य हस्तामलक करके अब अंतरिक्ष लोक में प्रवेश कर चुका है। सर्वोपरि, विज्ञान ने मनुष्य को बौद्धिक विकास प्रदान किया है और वैज्ञानिक चिंतन-पद्धति दी है। वैज्ञानिक चिंतन पद्धति से मनुष्य अंधविश्वासों और रूढ़ि -परंपराओं से मुक्त होकर स्वस्थ एवं संतुलित ढंग से सोच-विचार कर सकता है और यथार्थ एवं सम्यक जीवन जी सकता है। इससे मनुष्य के मन को युगों के अंधविश्वासों और भ्रमपूर्ण और दकियानूसी विचारों और अज्ञानता से मुक्ति मिली है। विज्ञान की यह देन स्तुत्य है। मानव को चाहिए कि वह विज्ञान की इस समग्र देन को रचनात्मक कार्यों में सुनियोजित करें।

1. विज्ञान का प्रभाव दृष्टिगोचर है -

(a) यातायात-संचार, चिकित्सा, वृक्षारोपण में ।

(b) वृक्षारोपण मनोरंजन चिकित्सा में।

(c) मनोरंजन, शिक्षा, चिकित्सा में।

(d) राजनीति, चिकित्सा, शिक्षा में।

2. विज्ञान के सहयोग से मनुष्य ने कहा प्रवेश कर लिया है?

(a) मनुष्य के हृदय में।

(b) अंतरिक्ष में।

(c) विदेशों में।

(d) समुद्र में।

3. क्या होता है यदि मनुष्य विज्ञान का सहारा ना लेता?

(a) मनुष्य प्रकृति और जगत का शिरोमणि ना बन पाता।

(b) वह अपने समाज में उचित स्थान ना प्राप्त कर पाता।

(c) वह राजनीति को ना समझ पाता।

(d) वह समुद्र में प्रवेश ना कर पाता।

4. 'समूचा विश्व आज एक परिवार-सा लगने लगा है।' इसका क्या अर्थ है?

(a) मनोरंजन के विभिन्न साधनों की उपलब्धता ।

(b) यातायात और संचार साधनों का विकास ।

(c) मनुष्य का बौद्धिक विकास।

(d) मनुष्य का सत्ता प्राप्त करना।

5. आज का युग विज्ञान का युग कहलाता है। क्योंकि-

(a) विज्ञान ने सभी क्षेत्रों में पैठ बना ली है।

(b) आज लगभग सारा परिवेश विज्ञानमय हैं।

(c) यह धरती के साथ अंतरिक्ष में भी गतिशील है।

(d) उपर्युक्त सभी सही हैं ।

6. वैज्ञानिक चिंतन पद्धति के प्रभाव से व्यक्ति कैसा जीवन जी सकता है?

(a) यथार्थ

(b) सम्यक

(c) बनावटी

(d) यथार्थ और सम्यक

7. लेखक की दृष्टि में विज्ञान की सबसे बड़ी देन किया है?

(a) संचार सुविधाएं

(b) विद्युत का आविष्कार

(c) वैज्ञानिक चिंतन पद्धति

(d) चिकित्सा और शिक्षा की सुविधाएं

8. 'समूचा' शब्द का अर्थ क्या है?

(a) सम्पूर्ण

(b) अपूर्ण

(c) आधा

(d) तीन-चौथाई

9. अभिनंदनीय में कौन सा प्रत्यय है?

(a) इय

(b) ईय

(c) नीय

(d) य

10. प्रस्तुत गद्यांश किस विषय वस्तु पर आधारित हैं?

(a) विज्ञान का मानव जीवन पर प्रभाव

(b) वैज्ञानिक चिंतन और मानव

(c) विज्ञान के गतिशील चरण

(d) विज्ञान के आविष्कार।

गद्यांश-3

समस्त ग्रंथों एवं ज्ञानी अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन एक कर्मक्षेत्र है। हमें कर्म के लिए जीवन मिला है। कठिनाइयाँ एवं दुख और कष्ट हमारे शत्रु हैं, जिनका हमें सामना करना है और उनके विरुद्ध संघर्ष करके हमें विजयी बनना है। अंग्रेजी के यशस्वी नाटककार शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा , ठीक कहा है कि "कायर अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके होते हैं किंतु वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते है।"

विश्व के प्रायः समस्त महापुरुषों, अमेरिका के निर्माता जॉर्ज वाशिंगटन और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से लेकर भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन-चरित्र हमें यह शिक्षा देते हैं कि महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। इन महापुरुषों के जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ा परंतु वे घबराएं नहीं संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए। संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ शक्ति

इच्छा व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

समस्याएँ वस्तुतः जीवन का पर्याय हैं। यदि समस्याएँ न हों तो आदमी प्राय: अपने को निष्क्रिय समझने लगेगा। ये समस्याएँ वस्तुतः जीवन की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। समस्या को सुलझाते समय, उसका समाधान करते समय व्यक्ति का श्रेष्ठतम तत्व उभर कर आता है। धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन है। पुराणों में अनेक कथाएँ यह शिक्षा देती है कि मनुष्य जीवन की हर स्थिति में जीना सीखें व समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान के उपाय सोचे, जो व्यक्ति जितना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करेगा, उतना ही उसके समक्ष समस्याएँ आएंगी और उनके परिप्रेक्ष्य में ही उसकी महानता का निर्धारण किया जाएगा।

दो महत्वपूर्ण तथ्य सामान्य है- प्रत्येक समस्या अपने संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक प्राचार्य ने विद्यालय छोड़ने वाले अपने छात्रों को यह संदेश दिया था- तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओं से संघर्ष करने का प्रयास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने का संकल्प लेकर चले। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी। समस्त ग्रंथों और महापुरुषों के अनुभवों का निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना लौकिक और पारलौकिक सभी दृष्टियों से अहितकर है। मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है।आप जागिए, उठिए, दृढ़ संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय-रथ पर चढ़ जाएँ और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

1 .निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं - कथन (A) तथा कारण (R) l प्रश्न का उत्तर निम्लिखित विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर दीजिए:

कथन (A) प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है।

कारण (R) संघर्ष के गर्भ में ही सफलता निहित होती है ।

(a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या
करता है ।

(b) कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही
व्याख्या नहीं करता है ।

(c) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है

(d) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है

2. व्यक्ति के जीवन में शिथिलता आ जाएगी। यदि-

(a) वह कोई शिकायत ही ना करें।

(b) वह हमेशा सोता ही रहे।

(c) वे हमेशा शिकायतें ही करता रहे।

(d) उसके जीवन में कोई समस्या ना हो।

3. मनुष्य का विकास रुक जाएगा। यदि

(a) संघर्षों से डरेगा

(b) संघर्षों से डरकर विमुख होगा

(c) (a) और (b) दोनों

(d) केवल (a)

4. जीवन एक कर्म क्षेत्र है- से क्या आशय है?

(a) मानव की जीवंतता उसके कर्मशील बने रहने में है।

(b) जीवन में कुछ क्षेत्रों की जानकारी ज़रूर होनी चाहिए

(c) जीवन में हर कदम सोच-समझ कर उठाना चाहिए

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

5. कौन-कौन से गुण व्यक्ति की सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

(a) परिश्रम

(b) दृढ़ इच्छाशक्ति

(c) लगन

(d) सभी

6. मनुष्य के जीवन के लिए सबसे जरूरी क्या है?

(a) निष्क्रियता

(b) कर्मशीलता

(c) हंसी- ठिठोली

(d) खामोशी

7. धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन है से अभिप्राय है।

(a) समस्याएं ही जीवन को प्रगति की नई -नई राहें दिखाती है।

(b) समस्याएं जीवन का का बहुत कुछ लील लेती है

(c) मनुष्य का श्रेष्ठम आरामदायक परिस्थियों में आता है

(d) धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान को ज़रूर पढ़ना चाहिए

8. 'महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। ' वाक्य का नकारात्मक वाक्य होगा-

(a) क्या महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है।

(b) महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व नहीं है।

(c) काश! महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व होता।

(d) शायद महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है।

9. 'समाधान' का समान शब्द क्या है?

(a) परिणाम

(b) कठिनाई

(c) उपाय

(d) समस्या

10. गद्यांश का शीर्षक होगा -

(a) संघर्ष और सफलता

(b) लोक परलोक

(c) पौराणिक कथा

(d) समस्त ग्रन्थ और महापुरुष

गद्यांश-4

अवकाश से तात्पर्य है- छुट्टी का समय । उस समय व्यक्ति इस बात के लिए स्वतंत्र होता है कि वह कोई काम करे या न करे। यह समय दैनिक कामों और उत्तरदायित्वों से मुक्ति का समय होता है। आमतौर पर व्यक्ति अवकाश का समय शौक-शुगल के कार्यों पर बिताता है। लोग सैर के लिए बाहर जाते हैं, बागवानी आदि करते हैं अथवा ताश खेलते हैं या घर में खेले जाने वाले और बाहर खेले जाने वाले खेल खेलते हैं। कुछ लोग अपने खाली समय में कुछ नहीं करते। वे पूरा आराम करते हैं। ऐसे लोगों के लिए यह प्राय: आवश्यक होता है जो शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम के कार्य करते हैं। आराम करना इसलिए अच्छा होता है जिससे व्यक्ति कुछ समय के बाद फिर से अपना काम करने के लिए फिर तैयार हो सके। खाली समय के उपयोग के अन्य तरीके भी हैं।उदाहरण के रूप में कई लोग ऐसे परिश्रम करने वाले काम भी अपने अवकाश के समय में करते हैं जो उनके काम से बिलकुल भिन्न हो। ऐसे लोग काम में परिवर्तन लाने के लिए दूसरे प्रकार का काम करते हैं। वास्तव में यह अपने अवकाश का सर्वोत्तम उपयोग हैं। आराम का यह अर्थ नहीं कि हम सभी क्रियाकलापों को छोड़ दें बल्कि यह केवल काम का परिवर्तन है जिससे काफी राहत मिलती है जो शरीर, मस्तिष्क और मानसिक स्थिति के लिए अच्छी है। यह अवकाश का रचनात्मक उपयोग है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि लोग अवकाश का ठीक प्रयोग नहीं करना जानते। हम में से अधिकांश लोग अपने खाली समय को व्यर्थ गंवा देते हैं। हम समझते हैं कि कुछ ना करना हमारे खाली समय का सबसे अच्छा उपयोग है, परंतु इससे हमारी बेचैनी बढ़ती है। ऐसा कहा जाता है कि बेकार आदमी का मस्तिष्क भूत का बंगला होता है, सर्वथा सत्य है। यदि हम खाली बैठते हैं तो हमारी इच्छाएँ और कल्पनाएँ अपना कार्य शुरू कर देती है।

उनको नियंत्रित करने का एकमात्र उपाय यह है कि उन्हें किसी न किसी प्रकार के श्रम के द्वारा नियंत्रित किया जाए। इसलिए आवश्यक है कि जो समय हमें खाली मिले, हमें चुपचाप अथवा बेकार बैठकर नहीं गंवाना चाहिए।

अवकाश के समय को गुजारने के लोकप्रिय तरीके उपन्यास पढ़ना, सिनेमा देखना और शिकार खेलना आदि हैं । यदि यह सब काम केवल समय काटने के लिए किए जाए तो अच्छे हैं। हमारे शौक केवल अवकाश के समय बिताने का एक उपाय मात्र नहीं होने चाहिए बल्कि ये ऐसे होने चाहिए जिससे समय उपयोगी ढंग से बीते ।

ऐसा कहा जाता है कि विश्व के पूर्वी देशों का जीवन आराम का है। यह बात सच है। पश्चिम में समय ही पैसा है और समय का हिसाब मिनटों और सेकंडों में रखा जाता है। संभवत यही कारण है कि अनेक क्षेत्रों में पश्चिम बहुत आगे हैं। भारत के लोगों ने हाल ही में समय के मूल्य को पहचानना शुरू किया है। यदि हम एक प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अपने समय का, इस समय की अपेक्षा सबसे अधिक युक्तिसंगत रूप से प्रयोग करना होगा।

1. अवकाश का सर्वोत्तम उपयोग किसे कहा गया है?

a) अपने सामान्य कार्य से इतर कार्य करना ।

b) केवल और केवल आराम करना ।

c) किसी पहाड़ पर चढ़ना ।

d) कुछ भी ना करना ।

2. **राष्ट्र निर्माण के लिए क्या आवश्यक है?**

a) देश विदेश में घूमना ।

b) भौतिक संसाधन ।

c) अवकाश के समय का समुचित उपयोग ।

d) पेड़-पौधे और वनस्पति ।

3. निम्न में से कौन-सा कथन सही है?

a) अवकाश का समय शारीरिक और मानसिक स्थितिके लिए राहत भरा होता है।

b) आराम, व्यक्ति को एक नई ऊर्जा से भर देता है।

c) केवल a) ।

d) a) और b) दोनों ।

4. बिना कुछ किए खाली बैठेने का क्या परिणाम होता है?

a) मनुष्य व्यग्र रहता है ।

b) बहुमूल्य समय व्यर्थ हो जाता है।

c) हमारी कल्पनाएं अनियंत्रित होने लगती हैं ।

d) उपर्युक्त सभी।

5. पश्चिमी देशों ने किस प्रकार प्रगति की है?

a) अवकाश के समय में कुछ ना करके ।

b) अवकाश के समय का गुणवत्तापूर्ण उपयोग करके ।

c) दूसरे देश के संसाधन पर कब्जा करके ।

d) अच्छा भोजन करके ।

6. अवकाश में प्राय: आराम करना किनके लिए जरूरी होता है?

a) जो लिखने का काम करते हैं।

b) जो केवल एक जगह बैठे रहने का काम करते हैं ।

c) जो निरंतर शारीरिक और मानसिक परिश्रम करते हैं ।

d) अवकाश में आराम करना ही नहीं चाहिए।

7. गद्यांश के अनुसार भारत में अवकाश का समय लोगों द्वारा प्राय: किस प्रकार बिताया जाता है?

a) बागवानी, ताश खेलना, उपन्यास पढ़ना ।

b) नई खोज करना, शिकार करना, सैर- सपाटा ।

c) लंबी पैदल यात्रा, उपन्यास पढ़ना, राफ्टिंग ।

d) ताश खेलना ,नई खोज करना, शिकार करना ।

8. 'पढ़ना' से भाववाचक संज्ञा क्या होगी?

a) पढ़

b) पढ़ाई

c) पढ़ना

d) पढ़ा

9. 'परिश्रम' में लगा उपसर्ग क्या है?

a) परी

b) पर

c) श्रम

d) परि

10. **प्रस्तुत गद्यांश की विषय-वस्तु क्या है?**

a) मनुष्य के उत्तरदायित्व

b) अवकाश के समय पर चिंतन

c) परिश्रम का महत्त्व

d) परिश्रम और मनोरंजन

गद्यांश-5

संस्कृति और सभ्यता-ये दो शब्द है और उनके अर्थ भी अलग-अलग हैं। सभ्यता मनुष्य का वह गुण है, जिससे वह अपनी बाहरी तरक्की करता है। संस्कृति वह गुण हैं, जिससे वह अपनी भीतरी उन्नति करता है। करुणा, प्रेम और परोपकार सीखता है। आज रेलगाड़ी, मोटर और हवाई जहाज, लंबी-चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े मकान, अच्छा भोजन और अच्छी पोशाक, ये सभ्यता की पहचान है और जिस देश में इनकी जितनी ही अधिकता है उस देश को हम उतना ही सभ्य मानते हैं। मगर संस्कृति इन सबसे बारीक चीज़ है। वह मोटर नहीं, मोटर बनाने की कला है, मकान नहीं, मकान बनाने की रूचि है।

संस्कृति धन नहीं, गुण है। संस्कृति ठाट-बाट नहीं, विनय और विनम्रता है। एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज़ है जो हमारे पास है, लेकिन संस्कृति वह गुण है जो हममें छिपा हुआ है। हमारे पास घर होता है, कपड़े-लत्ते होते हैं मगर ये सारी चीजें हमारी सभ्यता के सबूत है, जबकि संस्कृति इतने मोटे तौर पर दिखलाई नहीं देती। वह बहुत ही सूक्ष्म और महीन चीज़ है और वह हमारी हर पसंद, हर आदत में छिपी रहती है। मकान बनाना सभ्यता का काम है, लेकिन हम मकान का कौन-सा नक्शा पसंद करते हैं-हमारी संस्कृति बतलाती है। आदमी के भीतर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर ये छः विकार प्रकृति के दिए हुए हैं। अगर ये विकार बेरोक छोड़ दिए जाएँ तो आदमी इतना गिर जाए कि उसमें और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाए। इसलिए आदमी इन विकारों पर रोक लगाता है। इन दुर्गुणों पर जो आदमी जितना ज़्यादा काबू कर पाता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊंची समझी जाती है।

संस्कृति का स्वभाव है कि वे आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते है तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज्यादा से ज्यादा देशी या जातियों की संस्कृतियों से लाभ उठाकर अपनी संस्कृति का विकास किया हो। भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से अनेकानेक मान्यताओं, धर्मों, भाषाओं की साझी विरासत रही है।

1. लेखक का संस्कृति को भौतिक वस्तु न मानने का क्या कारण है?

a) यह आंतरिक गुण है।

b) यह बाहरी गुण है।

c) यह दृश्यमान वस्तु है।

d) यह भौतिक वस्तु है।

2. कौन-सी जाति या देश अधिक संस्कृत समझे जाते हैं ?

a) जो दूसरे की संस्कृति पर हावी हो ।

b) जिनके पास अधिक संसाधन हो ।

c) जो उच्च नैतिक मूल्य अपनाते हो ।

d) जो प्राचीनतम हो ।

3. सुमेलित करें-

1. सभ्यता	(i) उच्च नैतिक मूल्य
2. संस्कृति	(ii) भौतिक संसाधन
3. आंतरिक गुण	(iii) सूक्ष्म

a) 1. (iii) 2. (ii) 3. (i)

b) 1. (ii) 2. (i) 3. (iii)

c) 1. (i) 2. (iii) 3. (ii)

d) 1. (i) 2. (ii) 3. (i)

4. किसी व्यक्ति की विभिन्न आदतें क्या दर्शाती हैं?

a) व्यक्ति की साहित्य में रुचि को ।

b) व्यक्ति के पास मौजूद संपत्ति को।

c) व्यक्ति की संस्कृति को ।

d) व्यक्ति के खानपान के तरीके को ।

5. गद्यांश के अनुसार जो जब दो देश मिलते हैं, तो क्या होता है?

a) केवल राजनीतिक मसलों पर बात होती है।

b) केवल औपचारिकताएं ही होती हैं।

c) दोनों देशों का आपसी व्यापार बढ़ता है।

d) परस्पर दोनों देशों की संस्कृतियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

6. महंगी गाड़ी में बैठा हुआ व्यक्ति असभ्य भाषा का प्रयोग करें तो उस व्यक्ति को क्या कहा जाएगा?

a) वह सभ्य है ।

b) वह असभ्य है ।

c) ऊंची संस्कृति वाला है।

d) उसमें संस्कृति का लेश मात्र भी नहीं है।

7. एक मनुष्य की संस्कृति ऊंची मानी जाएगी यदि-

a) उसमें अपने विकारों पर काबू पा लिया हो।

b) बहुत अच्छी पोशाक पहनी हो ।

c) उसके पास तीन बंगले हो।

d) यदि वह बहुत दौलतवाला हो ।

8. 'लंबी-चौड़ी' में कौन-सा समास है?

a) कर्मधारय समास

b) द्वंद समास

c) द्विगु समास

d) अव्ययीभाव समास

9. विरासत का समान शब्द कौन-सा है?

a) शब्द

b) जमीन

c) धरोहर

d) संस्कृति।

10. उपरोक्त गद्यांश किस विषय वस्तु पर आधारित है?

a) संस्कृति और संस्कार

b) संसाधन और विकास

c) साहित्य का महत्व

d) सभ्यता और संस्कृति।

उत्तरमाला (अपठित गद्यांश)

गद्यांश – 1	गद्यांश – 2	गद्यांश – 3	गद्यांश – 4	गद्यांश – 5
1 (d)	1 (c)	1 (a)	1 (a)	1 (a)
2 (a)	2 (b)	2 (d)	2 (c)	2 (c)
3(b)	3(a)	3(c)	3 (d)	3 (b)
4 (b)	4 (b)	4 (a)	4(d)	4 (c)
5 (c)	5 (d)	5 (d)	5 (b)	5 (d)
6 (d)	6 (d)	6 (b)	6 (c)	6 (d)
7 (c)	7 (c)	7 (a)	7 (a)	7 (a)
8 (a)	8 (a)	8 (b)	8 (b)	8 (b)
9 (b)	9 (b)	9 (c)	9 (d)	9 (c)
10 (b)	10 (b)	10 (a)	10 (b)	10 (d)

अपठित बोध -- काव्यांश बोध

काव्यांश-1

क्या घड़ी थी, एक भी चिंता नहीं थी पास आई
कालिमा तो दूर, छाया भी पलक पर थी न छाई
आँख से मस्ती झपकती, बात से मस्ती टपकती
थी हँसी ऐसी जिसे सुन बादलों ने शर्म खाई
वह गई तो ले गई उल्लास के आधार, माना
पर अथिरता पर समय की मुसकराना कब मना है
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।

हाय, वे उन्माद के झोंके कि जिनमें राग जागा
वैभवों से फेर आँखें गान का वरदान माँगा
एक अंतर से ध्वनित हों दूसरे में जो निरंतर
भर दिया अंबर-अवनि को मत्तता के गीत गा-गा
अंत उनका हो गया तो मन बहलने के लिए ही
ले अधूरी पंक्ति कोई गुनगुनाना कब मना है
है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।

हाय, वे साथी कि चुंबक लौह-से जो पास आए
पास क्या आए, हृदय के बीच ही गोया समाए
दिन कटे ऐसे कि कोई तार वीणा के मिलाकर
एक मीठा और प्यारा ज़िन्दगी का गीत गाए

वे गए तो सोचकर यह लौटने वाले नहीं वे

खोज मन का मीत कोई लौ लगाना कब मना है

है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।

क्या हवाएँ थीं कि उजड़ा प्यार का वह आशियाना

कुछ न आया काम तेरा शोर करना, गुल मचाना

नाश की उन शक्तियों के साथ चलता ज़ोर किसका

किंतु ऐ निर्माण के प्रतिनिधि, तुझे होगा बताना

जो बसे हैं वे उजड़ते हैं प्रकृति के जड़ नियम से

पर किसी उजड़े हुए को फिर बसाना कब मना है

है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।

1.कविता में "उल्लास के आधार" के रूप में बताई गई तीन चीजें हैं:-

a. मस्ती, हँसी और साथी

b. चिंता, कालिमा और छाया

c. राग, गान और मत्तता

d. अथिरता, समय और दीवा

2. "पास क्या आए, हृदय के बीच ही गोया समाए" पंक्ति का अर्थ है-

a. कवि मित्रों के हृदय में समाने के लिए उनके पास गया

b. कवि, मित्रों की मृत्यु से हृदय में समा गया है

c. कवि के पास आए लोग उसके दिल के बहुत करीब थे

d. हृदय में मैत्रीभाव होेने से पास कौन नहीं आ सकता

3. कविता का केन्द्रीय भाव है—

a. खुशहाली और उल्लास

b. प्रेम और दोस्ती

c. नुकसान और दुख

d. आशा और आशावादी बने रहना

4. स्तंभ-1 को स्तंभ-2 से सुमेलित कीजिए-

स्तंभ-1	स्तंभ-2
①कालिमा तो दूर, छाया भी पलक पर थी न छाई	i) निर्वशता
② नाश की उन शक्तियों के साथ चलता ज़ोर किसका	ii) आशा बलवती
③ है अँधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है।	iii) प्रसन्नवदन समय

a. ①-ii , ②-i , ③-iii
b. ①-ii , ②-iii , ③-i
c. ①-iii , ②-i , ③-ii
d. ①-iii , ②-ii , ③-i

5.इन कथनों पर विचार करें :

कथन→

①कवि की हँसी बादलों की गर्जना से तीव्र थी

②कवि ने युवकत्व में समृद्धि का वरदान माँगा था

③उन्माद के गीत नहीं, अधूरी पंक्ति ही गुनगुनानी चाहिए

④निर्माण की प्रतिनिधि, मानवों को कहा गया है

सही विकल्प चुनें:

a. कथन ② और कथन ③ सही हैं.
b. कथन ① और कथन ④ सही हैं.
c. कथन ③ और कथन ④ सही हैं.
d. कथन ② और कथन ④ सही हैं.

काव्यांश-2

लोहे के पेड़ हरे होंगे,

तू गान प्रेम का गाता चल,

नम होगी यह मिट्टी जरूर,

आँसू के कण बरसाता चल ।

सिसकियों और चीत्कारों से,

जितना भी हो आकाश भरा,

कंकालों का हो ढेर,

खप्परों से चाहे हो पटी धरा ।

आशा के स्वर का भार पवन को लेकिन, लेना ही होगा,

जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा ।

रंगों के सातों घट उड़ेल, यह अँधियाली रंग जाएगी,

उषा को सत्य बनाने को जावक नभ पर छितराता चल ।

आदर्शों से आदर्श भिड़े, प्रज्ञा प्रज्ञा पर टूट रही,

प्रतिमा प्रतिमा से लड़ती है, धरती की किस्मत फूट रही

आवर्तों का है विषम जाल, निरुपाय बुद्धि चकराती है.

विज्ञान- यान पर चढ़ी हुई सभ्यता डूबने जाती है।

जब-जब मस्तिष्क जयी होता, संसार ज्ञान से चलता है।

शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल ।

1.स्तंभ-1 को स्तंभ-2 से सुमेलित कीजिए :

स्तंभ-1	स्तंभ-2
① सिसकियों और चीत्कारों से, जितना भी हो आकाश भरा, कंकालों का हो ढेर, खप्परों से चाहे हो पटी धरा	i) संघर्ष और द्वेष
② आवर्तों का है विषम जाल, निरुपाय बुद्धि चकराती है. विज्ञान- यान पर चढ़ी हुई सभ्यता डूबने जाती है	ii) युद्ध और विनाश
③ आदशों से आदर्श भिड़े, प्रज्ञा प्रज्ञा पर टूट रही, प्रतिमा प्रतिमा से लड़ती है, धरती की किस्मत फूट रही	iii) ज्ञान और अज्ञान

a. ①-ii , ②-i , ③-iii
b. ①-ii , ②-iii , ③-i
c. ①-iii , ②-i , ③-ii
d. ①-iii , ②-ii , ③-i

2.नम होगी यह मिट्टी जरूर कहकर कवि संकेत कर रहा है:-

a. प्रेम के बल पर शुष्क हृदयों में भाव भरे जा सकते हैं

b. वर्षा न होने के कारण सूखी मिट्टी वर्षा आने पर नम जरूर हो जाएगी

c. सूखी आंखें फिर आंसुओं से नम हो जाएंगी

d. इतने आंसू बहाओ की मिट्टी गीली हो जाए

3.दुख और निराशा के वातावरण में मनुष्य का क्या कर्तव्य होना चाहिए?

a. सपने देखें और साकार करें

b. आशा का संचार करें

c. मिट्टी नम करें

d. विज्ञान यान पर सवार हो

4.प्रेम की भावना से इस भौतिक बौद्धिक संसार पर विजय पाई जा सकती है यह भाव किस पंक्ति से व्यंजित हो रहा है—

a. जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा

b. आशा के स्वर का भार पवन को लेकिन लेना ही होगा

c. जब जब मस्तिष्क जयी होता संसार ज्ञान से चलता है

d. शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल

5.इन कथनों पर विचार करें :

कथन→

①पुराने तरीकों को छोड़कर नए तरीकों को अपनाने की जरूरत है

②'विज्ञान-यान पर चढ़ी हुई' में अतिशयोक्ति अलंकार है

③विद्वानों का दंभ आपसी द्वेष का कारण बना हुआ है

④भौतिक उन्नति से संसार में शान्ति स्थापित हो सकती है

सही विकल्प चुनें:

a. कथन ② और कथन ③ सही हैं.
b. कथन ① और कथन ③ सही हैं.
c. कथन ③ और कथन ④ सही हैं.
d. कथन ② और कथन ④ सही हैं.

काव्यांश-3

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,

मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,

शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।

मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए ।

फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, जीवन के उत्थान-पतन।

आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन।

मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल।

रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल।

मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,

मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्निशिखाओं के नर्तन।

मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,

फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

1.कवि का दृष्टिकोण क्या हैः-

a.वह एक सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण रखता है, लेकिन वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करता रहता है

b. वह एक नकारात्मक और निराशावादी दृष्टिकोण रखता है, लेकिन वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करता रहता है

c. वह एक उतार-चढ़ाव वाला दृष्टिकोण रखता है, लेकिन वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करता रहता है

d. वह एक उदासवृत्ति वाला दृष्टिकोण रखता है, लेकिन वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करता रहता है

2."मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन" इसके द्वारा कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं-

a. अद्वितीयता

b. बहादुरी

c. निर्भयता

d. विरोध

3.कविता में 'युग की प्राचीर निबल' से कवि का आशय नहीं है—

a. समय की बाधाएँ

b. पुराने विचारों और विश्वासों को तोड़ना

c. एक नए युग की शुरुआत

d. युग की दीवार कमजोर है

4.स्तंभ-1 को स्तंभ-2 से सुमेलित करके सही विकल्प का चयन करें-

स्तंभ-1	स्तंभ-2
① मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल?	i) उत्साह
② मैं बढ़ता अविराम निरंतर, तन-मन में उन्माद लिए, फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन?	ii) आशा
③ मैं विपदाओं में मुसकाता, नव आशा के दीप लिए, फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन?	iii) चुनौती

a. ①-ii , ②-i , ③-iii
b. ①-ii , ②-iii , ③-i
c. ①-iii , ②-i , ③-ii
d. ①-iii , ②-ii , ③-i

5.इन कथनों पर विचार करें—

कथन-

①कवि को अपने लक्ष्य के बारे में कोई जानकारी नहीं है.

②कवि को विश्वास है कि वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है.

③कवि को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में कोई दिलचस्पी नहीं है.

④कवि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्पित है.

सही विकल्प चुनें:

a. कथन ② और कथन ③ सही हैं.
b. कथन ① और कथन ② सही हैं.
c. कथन ③ और कथन ④ सही हैं.
d. कथन ② और कथन ④ सही हैं.

काव्यांश-4

वीर जवानो, सुनो तुम्हारे सम्मुख एक सवाल है।

जिस धरती को तुमने सींचा अपने खून-पसीनों से

हार गई दुश्मन की गोली वज्र सरीखे सीनों से।

जब-जब उठीं तुम्हारी बाँहें, होता वश में काल है।

जिस धरती के लिए सदा तुमने सब कुछ कुर्बान किया

शूली पर चढ़-चढ़ हँस-हँस कर कालकूट का पान किया।

जब-जब तुमने कदम बढ़ाया, हुई दिशाएँ लाल हैं।

उस धरती को टुकड़े-टुकड़े करना चाह रहे दुश्मन

बड़े गौर से अजब तुम्हारी चुप्पी थाह रहे दुश्मन

जाति-पाँति, वर्गों-फिरकों के वह फैलाता जाल है।

कुछ देशों की लोलुप नजरें लगी तुम्हारी ओर हैं।

कुछ अपने ही जयचंदों के मन में बैठा चोर है।

सावधान कर दो उसको जो पहने कपटी खाल है।

'जब-जब उठीं तुम्हारी बाँहें, होता वश में काल है।'आशय स्पष्ट कीजिए :

जब भी तुम जय-जयकार करते हो, सब कुछ तुम्हारे वश में हो जाता है।

जब भी तुम संघर्ष करने को तैयार होते हो, मौत भी घबरा जाती है।

जब तुम समर्पण कर देते हो तो मृत्यु भी वरदान देती है।

जब तुम समर्थन करते हो तो मौत भी गुलाम हो जाती है।

देश के शत्रु क्या करना चाहते हैं?

हिंसा फैलाना

देश पर कब्जा करना

देश को तोड़ना

भेदभाव फैलाना

1.'जयचंद' का आशय हैः-

a. मूर्ख

b. गुलाम

c. विदेशी शत्रु

d. देश के गद्दार

2. कवि वीर जवानों से क्या कह रहा है? सही कथनों को पहचानें-

कथन→

① दुश्मनों से लड़ें और देश की रक्षा करें.

② देश के अंदरूनी कलह को दूर करें.

③ देश के विकास के लिए काम करें.

④ सभी भारतीयों के साथ एकता बनाए रखें.

a. कथन ① ② ③ सही हैं।
b. कथन ② ③ ④ सही हैं।
c. कथन ① ② ④ सही हैं।
d. कथन ① ③ ④ सही हैं।

3.कथन व कारण से सत्य/असत्य की को पहचानिए :

कथन → जयचंद वे हैं जो विदेशी धरती से आए हैं।

कारण → उनकी आस्था देश में नहीं, विदेश में है।

a. कथन सत्य किंतु कारण असत्य है।
b. कथन असत्य किंतु कारण सत्य है।
c. कथन और कारण दोनों सत्य हैं।
d. कथन और कारण दोनों असत्य हैं।

काव्यांश-5

जून का महीना झुलसते दिन रात, और उधर मसूरी में रिमझिम बरसात!

मैं व्यंग्य से मुस्कराया और पास बैठे बेटे को समझाया

बेटा ! तू भी मसूरी सा बन, जलते रेगिस्तान में नंदनवन-सा तन

लोगों की आहों से एक फव्वारा बना और उसमें खूब नहा!

पानी के खेल खेल, झरने बहा, घर सजा, शृंगार कर

झुलसने दे अभागों को, तू अपना घर भर !

सुनकर यह व्यंग्य की बोली, मसूरी चीखकर बोली-

सुन ! न तो मैं आग बरसाती हूँ, न किसी को तपाती हूँ

ये तो तुम्हारी ही आहें हैं, जो किसी बड़े का कंधा खोजती हैं

जिस पर सर रखकर वे रो सकें!

और मैं ! जिसे तुम अपनी आहों का शोषक कहते हो

मैं तुम्हारी आहों को आँखों में बसाती हूँ

उनमें डूबती हूँ छटपटाती हूँ

उनमें बसे आँसुओं को अपनी आँखों में लिए बरस जाती हूँ।

फिर भी तुम मेरे वक्ष पर मँडराते मेघों को कहते हो मेरा शृंगार ।

दरअसल जब भी कोई किसी के दुख-दर्द को गले लगाता है

बहुत प्यारा हो जाता है, उसके नयनों का पोर पोर उज्ज्वल हो जाता है।

और फिर मैं तुम्हारे जल को खुद कहाँ पीती हूँ

पूरा का पूरा झर जाती हूँ, तुम्हारे लिए एक नदी बनाती हूँ

झरने बहाती हूँ, पेड़, पत्तियाँ और फूल उगाती हूँ

फिर भी अपनी महिमा कहाँ गाती हूँ!

कवि किस स्थिति को देखकर व्यंग्य करता है-

मसूरी के भीम को देखकर

मसूरी की गर्मी को देखकर

भीषण गर्मी में मसूरी की ठंडक देखकर

मसूरी का शोषण देखकर

कवि ने अपने बेटे को क्या प्रेरणा दीः-

शोषक बनकर आनंद मनाने की

शोषण नष्ट करने की

शोषण से दूर रहने की

मसूरी का शोषक रूप समझने की।

1.कवि किस स्थिति को देखकर व्यंग्य करता है-

a. मसूरी के भीम को देखकर

b. मसूरी की गर्मी को देखकर

c. भीषण गर्मी में मसूरी की ठंडक देखकर

d. मसूरी का शोषण देखकर

2.कवि ने अपने बेटे को क्या प्रेरणा दीः-

a. शोषक बनकर आनंद मनाने की

b. शोषण नष्ट करने की

c. शोषण से दूर रहने की

d. मसूरी का शोषक रूप समझने की।

3.आशय स्पष्ट कीजिए→'मैं तुम्हारी आहों को आँखों में बसाती हूँ'-

a. मैं तुम्हारी पीड़ाओं को निहारती हूँ

b. मैं तुम्हारी पीड़ाओं को प्रेम करती हूँ

c. मैं तुम्हारी पीड़ाओं को अपने हृदय में धारण करती हूँ।

d. मैं तुम्हारी पीड़ाओं को समझती हूँ

4. स्तंभ-1 को स्तंभ-2 से सुमेलित करके सही विकल्प का चयन करें:

स्तंभ-1	स्तंभ-2
①"झुलसने दे अभागों को, तू अपना घर भर!"	i)मसूरी का यह कहना व्यंग्यपूर्ण है कि लोग दुख में पड़ने पर दूसरों की मदद चाहते हैं
②"न तो मैं आग बरसाती हूँ, न किसी को तपाती हूँ"	ii) दूसरों के दुखों से खुद को अलग रखना व्यंग्यपूर्ण है
③"ये तो तुम्हारी ही आहें हैं, जो किसी बड़े का कंधा खोजती हैं"	iii) मसूरी का यह कहना व्यंग्यपूर्ण है कि वह दूसरों को दुख नहीं पहुंचाती है

a. ①-ii , ②-i , ③-iii
b. ①-ii , ②-iii , ③-i
c. ①-iii , ②-i , ③-ii
d. ①-iii , ②-ii , ③-i

5.कथन व कारण से सत्य/असत्य की को पहचानिए—

कथन - मसूरी जन-शोषक नहीं, जग पालक है।

कारण- वह दूसरों की पीड़ा से द्रवित होकर सबकी प्यास बुझाती है।

a. कथन सत्य है किंतु कारण असत्य है।
b. कथन असत्य है किंतु कारण सत्य है।
c. कथन और कारण दोनों असत्य हैं।
d. कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

उत्तरमाला -

काव्यांश-1	काव्यांश-2	काव्यांश-3	काव्यांश-4	काव्यांश-5
1. a	1. b	1. a	1. b	1. c
2. c	2. a	2. c	2. b	2. a
3. d	3. b	3. d	3. a	3. c
4. c	4. d	4. c	4. c	4. b
5. b	5. c	5. d	5. b	5. d

अभिव्यक्ति और माध्यम
बहुविकल्पात्मक प्रश्न (पाठ संख्या 3 और 4)

1.कथन:फीचर लेखन के लिए उल्टा पिरामिड का प्रयोग नहीं होता।

कारण: क) फीचर कथात्मक शैली में लिखा जाता है।

ख)फीचर में तथ्य के अलावा विचार ,विश्लेषण और निजी राय पर भी ज़ोर दिया जाता है।

दिए गये कथन के लिए कौन सा कारण सही है?

a) कारण (क) सही है

b) कारण (क) और (ख) दोनो सही है

c) कारण (ख) सही है

d) कोई भी विकल्प सही नहीं है

2.स्नेहा प्रसाद पत्रकार के रूप में एक बड़े समाचार पत्र में कार्यरत है।वहाँ उसका कार्य समाचार लेखन का है। आप बताए कि निम्नलिखित में से कौन सा कार्य उसके क्षेत्र से सम्बंधित है?

a) तथ्य प्रस्तुत करना

b) विशिष्ट भाषा का प्रयोग करके अपने लेख को मनोरंजक बनाना

c)अपनी राय इमानदारी से प्रस्तुत करना

d)पिरामीड शैली का प्रयोग करके उत्तम समाचार प्रस्तुत करना

3.अनस आलम एक व्यवसायी है,परंतु कभी कभी अपनी इच्छानुसार 'दैनिक वार्ता', 'मिलाप','दर्पण' जैसे समाचार पत्रो के लिए भुगतान के आधार पर पत्रकारिता करते है। वे किस प्रकार के पत्रकार है?-

a) पूर्णकालिक

b) अंशकालिक

c) फ्रीलांसर

d) स्ट्रिंगर

4.सूर्या एक समाचार पत्र में पत्रकार है,और उसे एक विशिष्ट गायक का साक्षात्कार लेने का मौका मिला। साक्षात्कार के लिए उसे किन बातों का ध्यान रखना होगा?

a) सवाल ऐसे हो जो पाठक के मन में उठ रहे प्रश्नों का समाधान करे (जिज्ञासा शांत करे)

b) सम्भव हो तो सक्षात्कार रिकार्ड कर लेना चाहिए

c) रिकार्ड की सुविधा न होने पर नोट्स लिए जाए

d) जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है, उसके बारे में जानकारी साक्षात्कार के दौरान ही ली जा सकती है।

5.शिव तेजा की वृद्धा दादी को आँखो से कम दिखाई देता है, परंतु जागरूक नागरिक होने के नाते देश -विदेश में घट रही विभिन्न घटनाओं को जानने में उनकी रूचि है। आप उन्हें निम्नलिखित में से जनसंचार के कौन सा माध्यम चुनने की सलाह देंगे जो उन्हे देश -विदेश में घट रही विभिन्न घटनाओ की सम्पूर्ण जानकारी देगा।

a) रेडियो

b) समाचार पत्र

c) इंटरनेट

d) उपर्युक्त सभी

6.कथन: भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला।

कारण: इसे मिशनरियो ने धर्म प्रचार की पुस्तके छापने के लिए खोला।

a) कथन और कारण दोनो सही है

b) कथन और कारण दोनो सही नहीं है।

c) कथन सही पर कारण सही नहीं है।

d) कथन का सही कारण नहीं है

7.

हिन्दी मिलाप

टमाटर हाइजैक

बेंगलुरू, 23 जुलाई-(भाषा)

तमिलनाडु के एक दंपत्ति को बेंगलुरु में 2.5 टन टमाटर से लदे ट्रक को हाइजैक करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के अनुसार, वेल्लूर निवासी दंपत्ति राजमार्गों पर लूट-पाट करने वाले एक गिरोह के सदस्य हैं और उन्होंने आठ जुलाई को चित्रदुर्ग जिले के चिक्काजाला में हिरियुर के एक किसान मल्लेश को रोका तथा यह दावा करते हुए उससे पैसे ऐंठने की कोशिश की कि उसके ट्रक ने उनकी कार में टक्कर मारी है।

पुलिस के मुताबिक, जब मल्लेश ने पैसे देने से इनकार कर दिया, तो दंपत्ति ने उससे मार-पीट की, उसे ट्रक से बाहर निकाल दिया। वे 2.5 लाख रुपये से अधिक कीमत के 2.5 टन टमाटर से लदे ट्रक को लेकर फरार हो गए। पुलिस ने बताया कि किसान की शिकायत पर आरएमसी यार्ड पुलिस ने गिरोह का पता लगाया और शनिवार को भास्कर (28) तथा उसकी पत्नी सिंधुजा (26) को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उनके तीन अन्य साथी अब भी फरार हैं।

प्रस्तुत समाचार लेख में घटना की जानकारी देते हुए 'पुलिस'का हवाला दिया गया है,जनसंचार की भाषा में ऐसे व्यक्ति/विभाग जिनको उद्धृत किया जाता है, उन्हें क्या कहते है?

a) स्रोत

b) सम्पादक

c) पत्रकार

d) व्यक्ति विशेष

8.भूपेंदर को अपने पारिवारिक व्यवसाय को आधुनिक और युग के उपयोगी बनाने के लिए उसके शिक्षक ने उसे समाचार में कारोबार और व्यापार सम्बंधी जानकारी पढ़ने को कहा है। आप भूपेंदर की मदद करते हुए उसे बताए कि यह जानकारी उसे विशेष लेखन के किस क्षेत्र से मिल सकती है-

a) खेल क्षेत्र

b) आर्थिक क्षेत्र

c) राजनीतिक क्षेत्र

d) कृषि क्षेत्र

9.रेडियो समाचार के लेखन के लिए कौन सी बुनियादी बात आवश्यक है

i)समाचार कॉपी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए

ii) कॉपी के दोनो तरफ पर्याप्त हाशिया छोडा जाना चाहिए

iii) संक्षिप्ताकार(एब्रीवियेश्न्स) नहीं लिखे जाने चाहिए

iv)एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द ही होने चाहिए

बताइए कि कौन सा विकल्प सही है-

a) विकल्प (i),(ii) सही है

b) विकल्प (i),(iv) सही है

c) विकल्प (i),(ii),(iv) सही है

d) विकल्प (i),(ii),(iii),(iv) सही है

10.भारत में इंटेरनेट का पहला दौर कब से माना जाता है?

a)1993

b)1982

c)2001

d)2000

उत्तर संकेत

1. b) कारण (क) और (ख) दोनो सही है
2. a) तथ्य प्रस्तुत करना
3. c)फ्रीलांसर
4. d) जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है ,उसके बारे में जानकारी साक्षात्कार के दौरान ही ली जा सकती है।
5. a) रेडियो
6. a)कथन और कारण दोनो सही है
7. a)स्रोत
8. b)आर्थिक क्षेत्र
9. d) विकल्प (i),(ii),(iii),(iv) सही है
10. a)1993

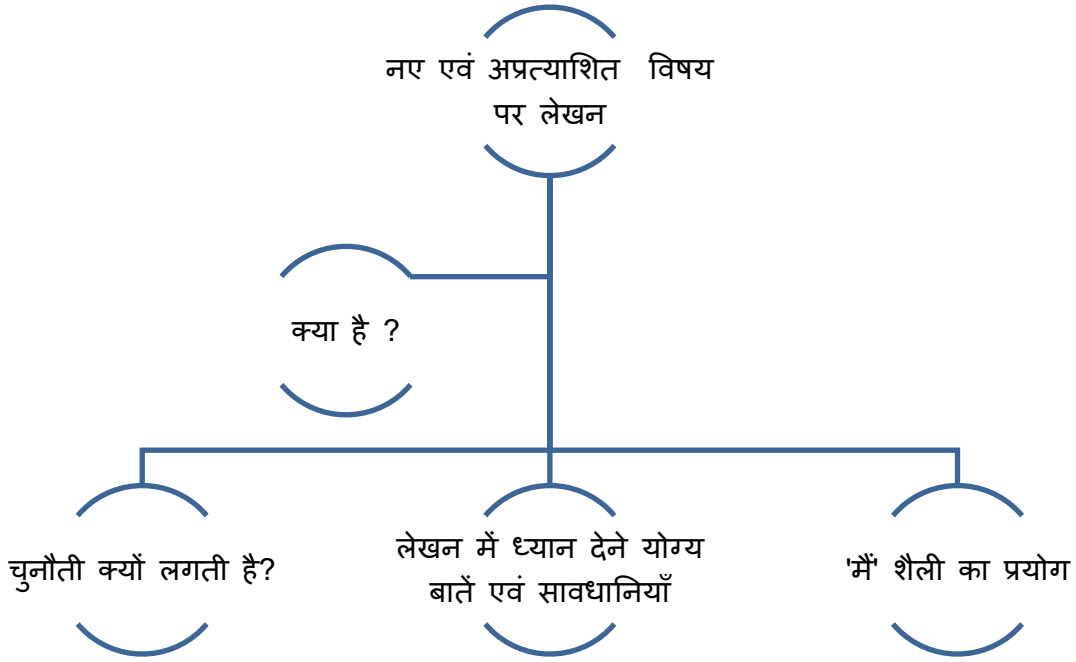

1 लेखन से क्या आशय है?

भाषा के सहारे किसी चीज़ पर विचार करने और उस विचार को व्याकरणिक शुद्धता के साथ संगठित रूप में अभिव्यक्त करना ही लेखन है|

2 अप्रत्याशित विषय पर लेखन से क्या तात्पर्य है?

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुगढ़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है|

3 विचारों को लिखना चुनौती की तरह क्यों लगता है?

विचारों को लिखना चुनौती की तरह लगने के कारण निम्नलिखित हैं-

1. आत्मनिर्भर होकर लिखित रूप में अभिव्यक्ति का अभ्यास न करने के कारण|
2. रटंत की बुरी आदत के कारण|
3. तैयार सामाग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण|

4 क्या अप्रत्याशित विषयों पर लेखन की कोई तकनीक हो सकती है? इन्हें लिखते समय क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए?

अप्रत्याशित विषय पर लेखन का कोई फार्मूला या तकनीक नहीं है| ऐसे लेखन के लिए विषय की संख्या अपरिमित है| इन्हें लिखते समय निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी पड़ती है-

1. इस तरह के लेखन में विषय खुले मैदान की तरह होती है, जिसमें पूरी तरह से दौड़ने, कूदने और खुले मैदान में कुलाँचे भरने की छूट होती है|

2. विषय पर जो भी सार्थक और सुसंगत विचार हमारे मन में आते हैं उन्हें हम यहाँ व्यक्त कर सकते हैं|
3. फोकस वाले विषय में विचारों पर थोड़ा नियंत्रण जरूरी है क्योंकि इसमें व्यक्ति यथार्थता की उपेक्षा नहीं कर सकते|
4. एक विषय पर व्यक्ति का दिमाग कई तरीकों से सोच सकता है, अतः यह तय कर लें कि किन विचारों को आपको विस्तार देना है|
5. शुरुआत आकर्षक एवं निर्वाह योग्य हो|
6. बात को शुरुआत से आगे सिलसिलेवार कैसे बढ़ाएँ इसकी रूपरेखा आपके दिमाग में हो|
7. विवरण सुसंबंध एवं सुसंगत हो|
8. कही गई बातें आपस में जुड़ी हो एवं उनमें तालमेल हो |दो बातें आपस में एक दूसरे का खंडन न करें|
9. विचारों में आत्मकथा एवं लेखक के व्यक्तित्व की छाप हो|

5 नए और अप्रत्याशित विषय पर लेखन के संदर्भ से 'मैं' शैली के प्रयोग के बारे में क्या मान्यता है?

अप्रत्याशित विषय पर लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग में कोई रोक-टोक नहीं है| लेख में व्यक्त विचारों में आत्मनिष्ठता एवं लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है अतः 'मैं' शैली के प्रयोग में कोई प्रतिबंध नहीं है|

6 अप्रत्याशित विषय पर लेखन के लिए किस प्रकार के विषय दिए जा सकते हैं?

अप्रत्याशित विषय पर लेखन के लिए कई तरह के विषय दिए जा सकते हैं, जिसकी संख्या अपरिमित है| जैसे आपके सामने की दीवार, कमरे में पड़ी पुरानी अलमारी, बहुत जरूरी है शिक्षा आदि| विषय ऐसे हों जो कभी तार्किक विचार प्रस्तुत करें, कभी यह स्मृतियों पर आधारित हो, कभी अपने अनुभव को प्रस्तुत करें, कभी सैद्धांतिक नजरिए का पालन हो|

7 अप्रत्याशित विषय पर लेख लिखने के विभिन्न तरीके कौन-कौन से हैं?

अप्रत्याशित विषय पर लेखन में विषय की मांग के अनुसार अपने तरीके का चुनाव कर सकते हैं| जैसे-

1. स्मृति आधारित विषय: जैसे दीवार पर टंगी घड़ी
    - यादों को क्रम से लिखना|
    - स्मृतियाँ पाठक को दिलचस्प लगे|

- एक-दो वाक्यों में ऐसा निचोड़ निकाला जाए कि वह किसी सामान्य सत्य की ओर इशारा करने लगे|

2. दार्शनिक विषय: जैसे दीवार पर टंगी घड़ी
   - इसमें विषय पर आधारित कुछ गंभीर प्रश्नों को उठाया जाता है|
3. अवलोकन पर आधारित विषय: जैसे दीवार पर टंगी घड़ी
   - यहाँ घड़ी की खूबसूरती, गति,आवाज़, टंगे होने के अंदाज़ लेखक की टिप्पणी का विषय बन जाता है | इसमें स्थिति का बयान करने के साथ-साथ अपनी राय भी जाहिर की जाती है|
   - एक-दो वाक्यों में निचोड़ के तौर पर सामान्य सत्य को प्रतिष्ठित किया जाता है|
4. ज्वलंत सामाजिक विषय- जैसे जातिवाद का जहर
   - यहाँ तथ्य और उसका विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है|

अप्रत्याशित विषय पर लेखन

1 भारतीय किसान

कल घर में बैठे-बैठे थोड़ा ऊबने लगी तो सोचा क्यों न बाहर निकल जाऊँ| मुझे अपने गाँव पहुँचे एक हफ्ता हो चुका है| नानी माँ से सहमति लेकर में निकली सैर पर| कितना बदल गया है मेरा गाँव| अब हर गली मुझे अनजान सी प्रतीत होती है| सोचा क्यों न खेत में जाकर थोड़ी देर बैठ जाऊँ| जब वहाँ पहुँची तो आँखें खुली की खुली रह गई| यह क्या? कहाँ गए वे लहराते खेत? कहाँ गए हमारे अन्नदाता? ज़मीन पर बोर्ड लगा है- 'बेचने के लिए'| अचानक दसवीं कक्षा में अनुच्छेद लेखन का विषय याद आया 'किसानों की समस्याएँ'| क्या यह उसी ओर इशारा कर रहा है? मैंने उस विषय का प्रारंभ कुछ इस प्रकार किया था- 'भारत कृषि प्रधान देश है| हमारी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है...|'अंदर एक हूक-सी उठी| एक अजीब सी कंपन| शायद यह समस्या दीमक बन हमारे खेतों को खा रही है| तहकीकात करने पर यह ज्ञात हुआ कि जब तक फसल किसानों के हाथों में रहती है वह मिट्टी के भाव बिकती है, जैसे ही फसलें बाजार में पहुँची कि उसके भाव आसमान छूने लगे| देश की खुशहाली को चंद पैसों के लोभी अपने हाथों बेच रहे हैं| शायद भूल गए कि जिनकी थाली में हाथ डालकर अपने चार लोगों को खिला रहे हैं, वह तो चार के बदले चार करोड़ के पेट भरता है| अब समझ में आया कि उत्पादन दर प्रति वर्ष घटता क्यों जा रहा है? अचानक याद आया दिल्ली में चला किसान आंदोलन का वह भयावह दृश्य| क्यों न हो आंदोलन? यह समझना चाहिए कि न तो किसानों को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है, न

अच्छे बीज प्राप्त हो रहे हैं और न ही सिंचाई की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध है| तकनीकी विकास पर गर्व करने वाले इस देश में मशीनीकरण का तक अभाव क्यों हो रहा है? क्यों ग्रामीण इलाकों में भंडारण सुविधा उपलब्ध नहीं हो पा रही? भारत में कई ऐसे गाँव आज भी हैं जहाँ परिवहन की उचित व्यवस्था न होने के कारण बाजार और शहर से पूरी तरह कटा हुआ है| यह सुनकर तो और भी मन द्रवित होता है कि हमारा अन्नदाता महाजन और बैंक की बोझ के तले पिस रहा है| कभी यह भी सोचा है कि कैसे खुश करें हम अन्नदाता को? मार्ग है और वह है किसानों को उचित शिक्षा प्रदान करना, सरकार की योजनाओं का सही से पालन करना और योजनाबद्ध तरीके से आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाना| हमारा यह कर्तव्य है कि हरित क्रांति को पूरा देश अपना सहारा प्रदान करें |लाल बहादुर शास्त्री जी द्वारा दिए गए नारे को मत भूलिए-

'जय जवान जय किसान'

2 रूढ़िवादी विचार और नष्ट होते सपने

रूढ़िवाद एक सामाजिक ,सांस्कृतिक और राजनैतिक दर्शन है। जो परम्पराओं ,प्रथाओं और मूल्यों को बढ़ावा देने और संरक्षित करने का प्रयास करता है। रूढ़िवादी विचारधारा के लोग उन विचारों को संजोकर रखना चाहते हैं और अपने विचार पीढ़ी दर पीढ़ी थोपते चले जाते हैं। रूढ़िवादी विचारधारा के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं। जब मैं कक्षा बारहवीं में पढ़ रही थी तब सहेलियाँ साथ में जाती हुई बातें किया करती थी और अपने पसंदीदा कॉलेज के नाम को लेकर बहस हुआ करती थी । सब लड़कियों का कॉलेज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सुनकर मन बहुत खुश होता और जब माँ रोटी बनाती तो मैं माँ के पास बैठकर खाना खाती फिर माँ के मन को टटोलती और कहती माँ मुझे भी कॉलेज जाना है और माँ ये कहकर मना कर देती कि हमारे परिवार में कोई भी लड़की अभी तक बारहवीं तक भी नहीं पढ़ी। तुझे बारहवीं पास करवा रहे है बहुत बड़ी बात है, कॉलेज के बारे में सोचना भी मत। माँ की बात सुनकर आँखे भर आना और कमरे में जाकर सिसकियाँ भरना अपने आसूँ अपने आप ही पोंछकर अपने भाग्य को कोसना मेरे नसीब में बस यही सब था। बाहरवीं कक्षा का परिणाम घोषित हुआ तथा कॉलेज में दाखिला शुरु हो गया। सब सहेलियों का कॉलेज जाना शुरु हो गया। मैं खेत में जाती और मेरी सहेलियाँ सजधजकर कॉलेज जाती। उन्हें देखकर मन की उमंगें काफी ऊँची उड़ानें भरती लेकिन क्षण में ही मुँह के बल नीचे गिर पड़ती । परिवार के रूढ़िवादी विचारों के कारण मेरे सपने चकनाचूर हो रहे थे। पड़ोस की औरतें माँ को कहती लड़के-लड़कियाँ सब बराबर होते है। आज ज़माना

बदल गया है। लड़की के पंखों को उड़ान दो इसके सपने साकार होने दो ,आज भी लड़कियों को देखती हूँ कि वे अपने सपनों को साकार करने के लिए बाहर निकलती हैं तब वे यादें मेरी स्मृतिपटल पर आकर मुझे भिगोकर चली जाती हैं ।

3) झरोखे से बाहर

आज सुबह जब मैं सोकर उठी तो प्रतिदिन की भाँति घर का मुख्य द्वार पूर्व की ओर होने के कारण झरोखे से आग के गोले जैसा या कहें सिंदूर- सा सूर्य मेरे मन को लुभा रहा था। सूर्य की किरणें मेरे घर के अंदर आती हुई ऐसी प्रतीत हो रही थी जैसे किसी नायक -नायिका का प्रथम मिलन हो रहा है |फिर मैं झरोखे के पास बैठकर सूर्य को निहारने लगी। झरोखे से बाहर पेड़ की टहनियों में गोरैया दिखाई दिया तो मैं बचपन की यादों में खो गयी मेरे आँगन की सुबह ऐसी ही मनोहारी हुआ करती थी। एक तरफ गोरैया एक डाली से दूसरी डाली पर जाकर बैठती थी, तो दूसरी तरफ हरे पात पर ओस की बूँदे सुबह की खूबसूरती में चार चाँद लगा रही थी। आसमान से गिरते ओस के कण मोती जैसे प्रतीत हो रहे थे| सब पर वे अपना जादू समान भाव से बिखेर रहे थे । यह प्राकृतिक दृश्य मेरे मन में कई सवाल खड़े कर रहा था तथा मुझे सत्य के रास्ते की तरफ धकेल रहा था। लेकिन सच्चे विचारों को विचारशून्य मन कहाँ पहचान पाता है और कुछ चिंताएँ हृदय को झकझोरकर चले जाते हैं। मैं कुछ पल के लिए उसी दुनिया में खो जाना चाहती थी जहाँ निःस्वार्थ प्रेम की भावना नज़र आती है। अचानक मेरे बेटे ने आवाज़ लगाई मम्मी स्कूल का समय हो रहा है नाश्ता जल्दी तैयार कीजिए। उसके बाद मैं रोज़मर्रा के काम में लग गयी।

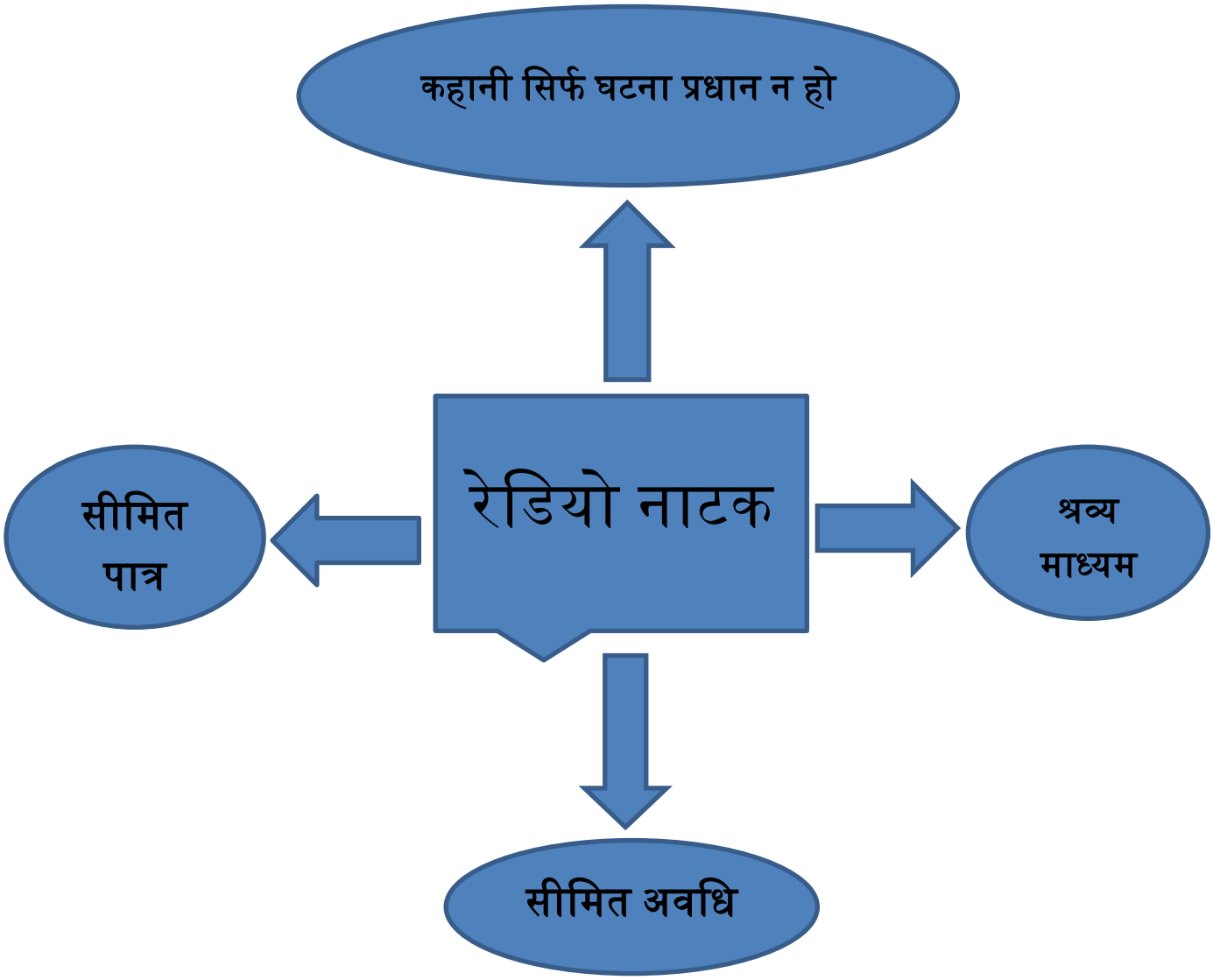

1 रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में क्या क्या समानताएँ हैं?

रेडियो नाटक तथा सिनेमा और रंगमंच में निम्नलिखित समानताएँ हैं-

1) दोनों में एक कहानी होती है|
2) इनमें आरंभ, मध्य और अंत होता है|
3) पात्रों के आपसी संवाद होते हैं|
4) परिवेश होता है|
5) पात्रों का परस्पर द्वंद्व और अंत में समाधान होता है|

2 सिनेमा या रंगमंच तथा रेडियो नाटक के लेखन में क्या अंतर होते हैं?

	रेडियो	**सिनेमा और रंगमंच**
1	रेडियो एक श्रव्य माध्यम है जिसमें दृश्य नहीं होता|	सिनेमा एक दृश्य माध्यम है|

2	रेडियो की प्रस्तुति संवाद एवं ध्वनि प्रभावों के माध्यम से होता है|	सिनेमा और रंगमंच में दृश्य होता है|
3	रेडियो नाटक में वस्त्र सज्जा, मंच सज्जा एवं अभिनेता के चेहरे पर भाव भंगिमा नहीं दिखती|	सिनेमा या रंगमंच में वस्त्र सज्जा, मंच सज्जा एवं अभिनेता के चेहरे पर भाव भंगिमा दिखती है|
4	रेडियो नाटक में एक्शन की गुंजाइश नहीं होती| इसमें एक्शन सुनना उबाऊ हो सकता है|	सिनेमा या रंगमंच की कहानी पूरी तरह से एक्शन अर्थात हरकत पर निर्भर करती है|
5	रेडियो नाटक की अवधि एवं पात्र सीमित होते हैं|	सिनेमा या रंगमंच दृश्य माध्यम होने के कारण इसमें अवधि या पात्रों की कोई सीमा नहीं होती|
6	रेडियो नाटक में पात्र संबंधी विविध जानकारी संवाद एवं ध्वनि संकेतों से उजागर होती है|	दर्शक देखकर पात्र संबंधी विविध जानकारी प्राप्त करता है|

3) रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है?

रेडियो नाटक संवाद एवं ध्वनि पर आधारित होती है| इसमें कहानी का चयन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना होता है-

1. कहानी केवल एक घटना पर आधारित न हो| इसमें अनेक कहानियों का समावेश हो|
2. समय सीमा- रेडियो नाटक की अवधि ज्यादा न हो, 20 से 30 मिनट की हो|
3. सीमित पात्र- छात्रों की संख्या कम से कम होनी चाहिए क्योंकि श्रोता ध्वनि के आधार पर ही पात्रों को याद रखता है|

4) रेडियो नाटक के तत्व कौन-कौन से हैं?

1. संवाद - रेडियो नाटक में पात्र संबंधी तमाम जानकारियाँ संवादों के माध्यम से ही मिलती है|
2. भाषा- इसमें भाषा पर भी विशेष ध्यान रखना होता है|
3. ध्वनि-
4. संगीत-

5) 'रेडियो नाटक में महत्वपूर्ण है 'संवाद और ध्वनि प्रभाव'- स्पष्टकीजिए|

रेडियो नाटक में महत्वपूर्ण है संवाद और ध्वनि प्रभाव क्योंकि-

1. संवादा द्वारा दृश्य का देशकाल स्थापित कर सकते हैं|
2. पात्रों से संबंधित जानकारी हमें संवादों के माध्यम से मिलती है|
3. पात्रों के नाम, आपसी संबंध, चारित्रिक विशेषताएँ यह सभी संवादों द्वारा उजागर होता है|
4. रेडियो में संवाद जिस चरित्र को संबंधित करता है उसका नाम लेना जरूरी होता है|

कैसे करें कहानी का नाट्य रूपान्तरण

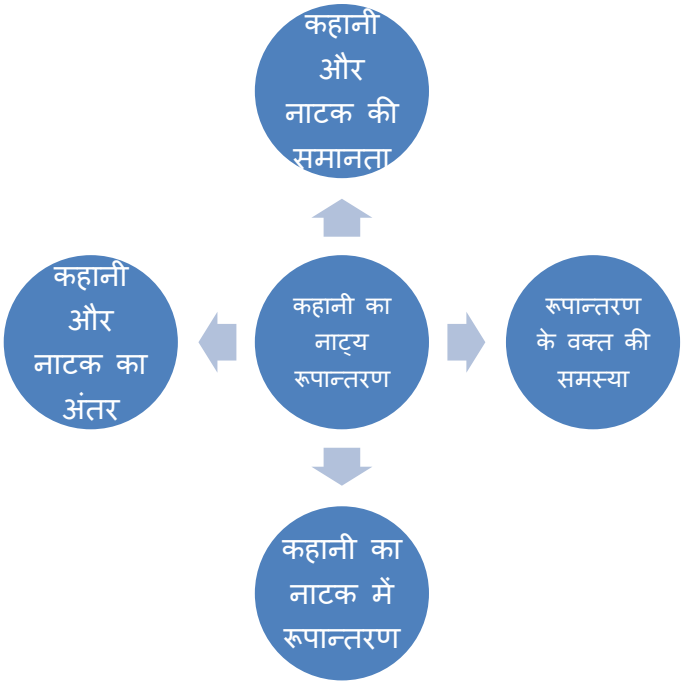

1 कहानी का नाटक में रूपांतरण करने के लिए सबसे पहले क्या समझना आवश्यक है?

कहानी का नाटक में रूपांतरण करने के लिए सबसे पहले कहानी और नाटक में अंतर तथा समानता को समझना आवश्यक है|

क) कहानी और नाटक में अंतर-

1	कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ता है|	नाटक लेखक, निर्देशक, पात्र, दर्शक, श्रोता एवं अन्य लोगों को एक दूसरे से जोड़ता है|

2	कहानी कही या पढ़ी जाती है|	नाटक को मंच पर अभिनेता द्वारा प्रस्तुत किया जाता हैं| नाटक में मंच सज्जा होती है, संगीत होता है, प्रकाश व्यवस्था होती है|
3	नाटक की तरह कहानी को ज़्यादा देर तक याद रखना थोड़ा मुश्किल है|	दृश्य का स्मृतियों से गहरा संबंध होता है इसलिए नाटक एवं फिल्म को लोग देर तक याद रखते हैं ।

2 कहानी और नाटक में क्या-क्या समानताएँ हैं?

- कहानी और नाटक दोनों में एक कहानी होती है|
- दोनों में पात्र होते हैं|
- दोनों में परिवेश होता है|
- दोनों में कहानी का क्रमिक विकास होता है
- दोनों में संवाद होते हैं|
- दोनों में द्वंद्व होता है,|
- दोनों में चरम उत्कर्ष होता है|
- दोनों में भाषा -शैली, देशकाल तथा वातावरण एवं उद्देश्य समान होते हैं|

3 कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए?

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए-

सर्वप्रथम कहानी का चुनाव करते समय यह ध्यान दें कि कहानी सिर्फ घटना प्रधान न हो, उसकी अवधि बहुत ज़्यादा न हो तथा पात्रों की संख्या सीमित हो ।

कहानी की कथावस्तु को स्थान और समय के आधार पर विभाजित किया जाता है|

(कथावस्तु- वह घटनाएँ हैं जो कहानी में घटती है)

कथावस्तु को सामने रखकर एक-एक घटना को चुन-चुन कर निकाला जाता है और उसके आधार पर दृश्य बनता है|

(यदि एक घटना एक स्थान और एक समय में घट रही है तो वही दृश्य होगा) स्थान और समय के आधार पर कहानी का विभाजन करके दृश्यों को लिखा जा सकता है|

प्रत्येक दृश्य का कथानक के अनुसार औचित्य हो|

(औचित्य=प्रत्येक दृश्य कथानक का हिस्सा है या नहीं उसे निकाल देने पर कथानक और उसके विकास पर कोई फर्क पड़ेगा या नहीं| अनावश्यक दृश्य नाटक की गति को बाधित करते हैं और नाटक को उबाऊ बनाते हैं|)

प्रत्येक दृश्य का कथानुसार तार्किक विकास हो रहा है या नहीं, इस पर ध्यान दें|

(logical=जानने समझाने हेतु किए जाने वाले प्रयास)

नाटक के प्रत्येक दृश्य में प्रारंभ, मध्य और अंत होता है|

नाटक के दृश्य में जानकारियाँ, सूचनाएँ और घटनाएँ दोहराई न गई हो|

दृश्य निर्धारित हो जाने पर पर्याप्त संवाद लिखने का काम किया जाता है|

कहानी में व्यक्त महत्वपूर्ण सूत्र नाटक के स्वरूप के अनुसार अपनी जगह निर्धारित कर लेते हैं|

(जैसे विभिन्न प्रकार के विवरणों को नाटक में स्थान देने के अलग-अलग तरीके हैं| जैसे परिवेश को मंच सज्जा के अंतर्गत दिखाया जा सकता है या पार्श्व संगीत के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है| पात्रों का विवरण संवादों के माध्यम से किया जा सकता है|)

दृश्य निर्धारित हो जाने पर उसके क्रमिक विकास हेतु पर्याप्त संवाद लिखने का काम किया जाता है|

(संवाद दर्शकों के अनुकूल सरल ,संक्षिप्त एवं प्रभावी हो| संवाद औचित्यपूर्ण हो,कहानी के मूल संवादों के साथ मेल खाते हों|)

मानसिक द्वंद्व प्रकट करने के लिए स्वगत कथन, वॉयस ओवर या फ्लैश बैक का प्रयोग किया जाता है|

(वॉयस ओवर-जो पात्र नहीं बोलता)

रूपान्तरण से पूर्व वर्तमान रंगमंच की संभावनाओं को जाने|

अच्छी नाट्य प्रस्तुतियाँ देखें|

पाठ-1 **आत्मपरिचय (कविता)**

कविः हरिवंशराय बच्चन

काव्य - सार :-

'आत्मपरिचय कविता प्रसिद्ध हालावादी कवि हरिवंश राय बच्चन के द्वारा लिखी गई है। इस कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने स्वभाव और व्यक्तित्त्व के बारे में बताया है। कवि का इस संसार से प्रीति-कलह का संबंध है क्योंकि वह जग जीवन से जुड़ा भी है और इससे अलग भी है। वह इस संसार का भार (जिम्मेदारियाँ) लिए फिरता है लेकिन उसके जीवन में प्यार की भावना भी है। कवि कहता है कि यह संसार लोगों को कष्ट ही देता है फिर भी वह संसार से अलग नहीं रह सकता है। इस कविता में कवि ने समाज एवं परिवेश से 'प्रेम एवं संघर्ष' का संबंध निभाते हुए जीवन में सामंजस्य स्थापित करने पर ज्यादा बल दिया है। कवि अपनी मस्ती में मस्त रहता है और कभी भी इस जग की परवाह नहीं करता है क्योंकि संसार अपने ढ़ंग से लोगोँ को जीवन जीने का तरीका बताता है। कवि का अपना व्यक्तित्त्व है और जग का अपना। दोनों में कोई नाता नहीं है। इस कविता में 'प्रीति-कलह' और 'शीतल वाणी' में आग का विरोधाभास दिखाया गया है क्योंकि व्यक्ति और समाज का सम्बंध 'प्रेम और संघर्ष' की तरह ही है। 'नादान वही है हाय, जहाँ पर दाना' पंक्ति के माध्यम से कवि सत्य की खोज के लिए 'अहंकार को त्याग कर नई सोच अपनाने पर जोर दे रहा है।

कविता के मुख्य बिंदु :

- कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं है।
- यह दुनिया अपनी मौज में रहने वाले और सदैव प्रेम लुटाने वाले दीवानों का महत्त्व नहीं समझ पाती ।
- कवि किसी प्रिय की मधुर यादों से झंकृत हृदय में प्रेम लेकर घूमते हैं।
- संसार प्रेम के अभाव के कारण अपूर्ण है और स्वार्थ से भरा है। संसार का स्वार्थपूर्ण रवैया कवि को अच्छा नहीं लगता

- सांसारिक जीवन की कड़वाहट, विषमता आदि समस्याओं के बावजूद भी कवि के हृदय में सबके लिए प्रेम है ।
- कवि संसार के आकर्षण से दूर है। वह अपनी ही दुनिया में मस्त रहते हैं |
- कवि आज भी यौवन के उत्साह से भरपूर है।
- कवि संसारिक ज्ञान को भूलना चाहता है। भौतिक वैभव तुच्छ है। कवि जीवन में आने वाले सुख-दुख दोनों को ही समान भाव से सहते हैं और मग्न रहते हैं।

<u>'आत्मपरिचय' का शिल्प सौंदर्य</u>

- भाषा सरल, सरस प्रवाह से युक्त साहित्यिक खड़ी बोली है।
- मुक्त छंद गीत, श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है।
- कविता आत्मकथात्मक एवं गेयात्मक शैली में लिखित है |
- 'जग-जीवन' और 'स्नेह-सुरा' क्यों, कवि कहकर और जग झूम झुके' में अनुप्रास अलंकार है ।
- 'भव-सागर' एवं 'भव मौजों में रूपक अलंकार है ।
- मैं और, और जग और में यमक अलंकार तथा बना-बना में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है ।
- 'उन्मादों में अवसाद और बाहर हँसा, रुलाती भीतर रोदन में राग और 'शीतल वाणी में आग पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार का प्रयोग हुआ है।
- कवि के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति हुई है।
- सूफियाना भाव-भूमि है और इस कविता में संसार की अपूर्णता का वर्णन किया गया है।

<u>पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न</u> 05*01= 05 अंक

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,

फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता है;

कर दिया किसी ने झंकृत जिनको

छूकर मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,

मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,

जग पूछ रहा है उनको, जो जग की गाते,

मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता है,

मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता

मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

प्रश्न 1- 'निज उर के उद्‌गार' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(क) कवि के अपने हृदय के भाव

(ख)अपने रिश्तेदारों के हृदय के भाव

(ग) अपने पड़ोसियों के हृदय के भाव

(घ) अपने बच्चों के हृदय के भाव

प्रश्न 2- कवि के अनुसार मनुष्य को संसार में किस प्रकार रहना चाहिए ?

(क) लड़ाई-झगड़े करके

(ख) शांतिपूर्वक

(ग) कष्टों को हँसते हुए सहकर

(घ) दूसरों पर दोषारोपण करके

प्रश्न 3- कवि संसार को अपूर्ण क्यों मानता है?

(क) उसमें प्रेम नहीं है

(ख) वह बनावटी व झूठा है

(ग) यह स्वार्थ से परिपूर्ण है

(घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

प्रश्न 4-. मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ, प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) यमक

(ख) उपमा

(ग) श्लेष

(घ) रूपक

प्रश्न 5- कवि दुखों के संसार रूपी समुंद्र में किस प्रकार मस्त बहा करता है ?

(क) दुःख में ज्यादा दुखी होकर

(ख) दूसरों के सुख से दुखी होकर

(ग)दुखो की पीड़ा को हृदय में दबाकर व् सांसारिक सुख -दुःख की परवाह न करके

(घ)स्वार्थी बनकर, अपने सुखों को प्राप्त करके

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -01

1. क 2. घ 3. घ 4. घ 5. ग

<u>पठित काव्यांश-02</u>

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,

सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ।

जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,

मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,

उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ.

जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,

मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

कर यत्न मिटे सब सत्य किसी ने जाना?

नादान वहाँ हैं, हाय, जहाँ पर दाना।

फिर मूढ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे ?

मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना ।

1. कवि यौवन के उन्माद में क्या लिए फिरता है?

(क) अवसाद

(ख) अहसास

(ग) अहसान

(घ) अवसर

2. कवि किस अवस्था का उन्माद लिए फिरता है?

(क) वृद्धावस्था का

(ख) प्रौढावस्था का

(ग) युवावस्था का

(घ) किशोरावस्था का

3. संसार के बारे में कवि क्या कह रहा है?

(क) यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने के लिए प्रयास करते हैं.

(ख) यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने में कभी सफल नहीं हुए,

(ग) यहाँ लोग सांसारिक मायाजाल में उलझे हुए हैं

(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं

4. कवि सीखे ज्ञान को क्यों भुलाना चाहता है?

(क) क्योंकि उससे जीवन-सत्य की प्राप्ति नहीं होती

(ख) ताकि वह अपने मन के कहे अनुसार चल सके,

(ग) वह सांसारिकता से मुक्त होना चाहता है,

(घ) उपर्युक्त सभी कारणों से

5. उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ, प्रस्तुत पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) यमक

(ख) उपमा

(ग) विरोधाभास

(घ) रूपक

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -02

1. क 2. ग 3. घ 4. घ 5. ग

<u>पठित काव्यांश-03</u>

मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,

मैं बना-बना कितने जग रोज मिटाता;

जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,

मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता !

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,

शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,

हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर

मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ।

मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,

मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना,

क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,

मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना|

मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ

मैं मादकता निःशेष लिए फिरता हूँ;

जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,

मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ।

1. कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?

(क) छंद बनाना

(ख) बहाने बनाना

(ग) अभिनय करना

(घ) आँसू बहाना

2. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता, प्रस्तुत पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) यमक

(ख) उपमा

(ग) विरोधाभास

(घ) रूपक

3.कवि के पास ऐसा क्या हैं जिस पर बड़े-बड़े राजाओं के महल न्योछावर हो जाते हैं?

(क) प्रेमरूपी महल के खंडहर या अवशेष

(ख) दीवानापन

(ग) अतीत की स्मृतियाँ

(घ) साहित्यिक कौशल

4. कवि की मनोदशा कैसी हैं?

(क) दीवानों जैसी

(ख) मस्ती में चूर

(ग) प्रेम के नशे में डूबे हुए

(घ) उपर्युक्त सभी सही हैं

5. कवि स्वयं को दुनिया का एक नया क्या मानता है?

(क) प्रेमी

(ख) दीवाना

(ग) परवाना

(घ) रक्षक

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -03

1. क 2. क 3. क 4. घ 5. ख

<u>काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए - 03 अंक</u>

प्रश्न - 1 कविता एक ओर जगजीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूं'- एक दूसरे से विपरीत इन कथनों का क्या आशय है ?

उत्तर - जग - जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है । आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख- दुख, हानि - लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहां कवि सांसारिक दायित्व की अनदेखी की बात नहीं करता । वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डर कर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अतः इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। यह एक- दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

प्रश्न-2 जहां पर ज्ञानी रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं- कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर- नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फंसा रहता है । संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है, और मोक्ष के लक्ष्य को भूल कर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है । इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

प्रश्न-3. मैं और, और जग और कहां का नाता - पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर- यहां 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अतः यहां यमक अलंकार है । पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है । वह आम आदमी की तरह भौतिक चीजों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख - सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है । यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है । तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

प्रश्न-4. 'शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - कवि ने यहां विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है । वह प्रेम - रहित संसार को अस्वीकार करता है । अतः अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है । वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जागृत कर रहा है।

प्रश्न-5. कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है ?

उत्तर- कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता । वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। सांसारिक लोग माया-मोह और अपने स्वार्थ की पूर्ति के पीछे दौड़ते हैं जिसे कवि व्यर्थ मानता है। सांसारिक लोग प्रेम को महत्व नहीं देते हैं । इसलिए कवि को संसार अपूर्ण लगता है ।

<u>काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए -</u>

प्रश्न 1. आत्म-परिचय कविता में कवि संसार को क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर-आत्म-परिचय कविता श्री हरिवंश राय बच्चन द्वारा रचित है। इसमें कवि संसार को मस्ती का संदेश देना चाहता है। ऐसी मस्ती जिसमें संपूर्ण संसार मदमस्त होकर आनंद विभोर हो उठे। वह आनंदित होकर नृत्य करने लगे और इसी मस्ती में सदैव लहराता रहे।

प्रश्न 2. कवि के जीवन और संसार में क्या भिन्नता है ?

उत्तर-कवि प्रेम एवं मस्ती में मदमस्त रहता है। वह प्रेम रूपी मदिरा पीकर उसी के आनंद में डूबा हुआ है। वह चारों तरफ प्रेम, मस्ती, आनंद एवं सौंदर्य का वातावरण फैलाना चाहता है जबकि यह संसार परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, अहं की भावनाओं में डूबा है। इसे किसी के प्रेम व आनंद से कोई मतलब नहीं है। यह तो प्रेम की मस्ती को भी व्यर्थ समझता है। यह सदैव दूसरों की कोमल भावनाओं से खिलवाड़ करता है और उनका मज़ाक उड़ाता है।

प्रश्न 3. कवि ने संसार को क्या माना है और उसे किस चीज़ की आवश्यकता नहीं है?

उत्तर-कवि सुख-दुख दोनों अवस्थाओं में समान रहता है। उसने संसार को एक सागर के समान माना है। उसके अनुसार संसार के लोग इस संसार रूपी सागर को पार करने हेतु नाव बना सकते हैं, किंतु उसे इस नाव की कोई आवश्यकता नहीं है। वह सांसारिक खुशियों में डूबकर यूं ही बहना चाहता है।

प्रश्न 4. कवि संसार में किस चीज़ से प्रभावित नहीं होता ?

उत्तर-कवि पृथ्वी पर व्याप्त धन-ऐश्वर्य तथा शान-ओ-शौकत से तनिक भी प्रभावित नहीं होता। ऐसी शान-ओ-शौकत को वह पग-पग रा पर ठुकराता चलता है। वह कहता है कि जिस पृथ्वी पर यह संसार झूठे धन-ऐश्वर्य तथा शान और शौकत खड़ा करता है, वह ऐसी ऐश्वर्य परिपूर्ण पृथ्वी को पग-पग पर ठुकरा देता है। यह धन-वैभव कवि को तनिक भी विचलित नहीं कर सकता।

प्रश्न 5. 'मानव-जीवन क्षणभंगुर है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि मानव-जीवन क्षणभंगुर है। अर्थात समय बहुत कम है जो अत्यंत तेज़ी से गुज़रता है। मनुष्य रूपी यात्री को यह चिंता रहती है कि उसके लक्ष्य को प्राप्त करने से पहले ही उसके रास्ते में रात न हो जाए। कवि कहता है कि दिन अत्यंत शीघ्रता से व्यतीत होता है।

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

कविता का सार

'एक गीत' शीर्षक कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन कहते हैं कि समय हमेशा चलता रहता है और उसके बीतने का अहसास हमें लक्ष्य-प्राप्ति के लिए और अधिक प्रयास करने की प्रेरणा देता है। रास्ते में चलने वाला राहगीर यही सोचकर अपनी मंजिल की ओर तेज गति से कदम बढ़ाता है कि कही रास्ते में ही रात ना हो जाए। पक्षियों को भी दिन बीतने के साथ यह अहसास होता है कि उनके बच्चें भोजन पाने की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे। यह सोचकर चिड़ियाँ के पंखों में तेजी आ जाती है। इन पंक्तियों में आशावादी स्वर है। आशा की किरण जीवन की जड़ता को समाप्त कर देती है और पाठकों को सकारात्मक सोच तक ले जाने का प्रयास करती हैं। लेकिन कवि का जीवन तो एकाकी है और घर पर उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई भी नहीं है। घर पर ऐसा कोई भी नहीं है जो कि उसके लिए व्याकुल होगा और इसी निराशा के कारण कवि का मन कुंठा से भर जाता है, उसकी गति मंद पड़ जाती है। इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने अपने जीवन के अकेलेपन की पीड़ा को वाणी दी है।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के मुख्य बिंदु :

- दिन जल्दी जल्दी ढलता है कविता जीवन की निरंतरता को परिभाषित करती है।

- समय सतत प्रवाहमान है, वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता ।
- पथिक को थकान होने के बावजूद भी निरंतर अपनी मंजिल की ओर अग्रसर रहना चाहिए।
- समय की गतिशीलता को दर्शाने के लिए कवि ने चिड़िया और पथिक का उदाहरण लिया है।
- मंजिल दूर न होने पर भी पथिक यह सोचकर जल्दी-जल्दी चलता है कि कहीं रात न हो जाए।
- चिड़िया दिन ढलते देख और अपने बच्चों की भूख-प्यास तथा आशा को ध्यान कर जल्दी-जल्दी अपने घोंसले में पहुंचने के लिए व्याकुल हो उठती है।
- मंजिल / घर की ओर बढ़ते आदि के पाँव यह सोचकर शिथिल पड़ जाते हैं कि उसकी प्रतीक्षा के लिए कोई नहीं है,लेकिन मंजिल पर पहुँचने की आतुरता उसे व्याकुल करती है।

" दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' का शिल्प सौंदर्य:

- भाषा सरल भावानुकूल साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- गेयात्मक शैली है। संगीतात्मकता है।
- जल्दी-जल्दी में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार, मुझसे मिलने में अनुप्रास अलंकार तथा मैं होऊँ किसके हित चंचल?" में प्रश्नालंकार का प्रयोग हुआ है।
- नीड़ों से झाँक रहे होंगे पंक्ति में दृश्य बिंब दर्शनीय है।
- कविता में वियोग शृंगार रस की अनुभूति होती है।
- जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
- एकाकी जीवन की मनोदशा का यथार्थ चित्रण हुआ है।

पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न **05*01= 05 अंक**

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
हो जाए न पथ में रात कहीं.
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

मुझसे मिलने को कौन विकल?

मैं होऊँ किसके हित चंचल ?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है।

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

प्र.1. उपरोक्त काव्यांश किस संग्रह से लिया गया है→

क) निशा निमंत्रण

ख) मधुबाला

ग) बसेरे से दूर

घ) आरती और अंगारे

प्र.2. कवि को किस बात का डर है?

क) कहीं सूर्योदय ना हो जाए

ख) कहीं मंजिल दूर ना चली जाए

ग) कहीं रास्ते में रात्रि ना हो जाए

घ) कहीं उसकी प्रतीक्षा करने वाला चला ना जाए

प्र.3. 'पंथी' का समानार्थी शब्द क्या नहीं है?

क) बटोही

ख) पथिक

ग) यात्री

घ) पत्र व्यवहार

प्र.4. दिन 'जल्दी-जल्दी' ढलता है, पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) पुनरुक्ति प्रकाश

ख) यमक

ग) रूपक

घ) उपमा

प्र.5. पथिक की चाल शाम ढलते ढलते तेज हो जाती है क्योंकि→

क) उस भविष्य की योजना बनानी है।

ख) दिन भर के कार्य से वह थक चुका है ।

ग) घर पर कोई प्रतीक्षारत है।

घ) बाहर चारों ओर शत्रु हैं ।

उत्तरमाला : पठित काव्यांश -

1- क 2-ग 3- ग 4- क 5- ग

<u>काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए</u>

<u>- 03 अंक</u>

प्रश्न 1- कविता 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में पक्षी तो घर लौटने को विकल है, पर कवि में उत्साह नहीं है। ऐसा क्यो?

<u>उत्तर-</u> प्रस्तुत कविता 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में शाम को घर लौटते हुए पक्षियों को व्याकुल और आतुर बच्चों की याद आने लगती है और उनसे मिलने के लिए वे भी बेचैन हो जाते हैं, जिसकी वजह से उनके पंखों में तेजी व चंचलता आ जाती है और वे शीघ्र ही घर पहुंचने का प्रयास करने लगते हैं। इस कविता में आगे बताया गया है कि कवि के घर में उसकी प्रतीक्षा करने वाल कोई भी नहीं है। घर में उसके आने के इंतजार में कोई व्याकुल नहीं होगा और वह सोचने लगता है कि वह घर जाने की शीघ्रता क्यो करे। अतः पक्षी तो घर लौटने को व्याकुल है परंतु कवि में कोई उत्साह नहीं है |

प्रश्न 2- 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में चिड़िया अपने घरोंदों की ओर लौटने को विकल क्यों हैं?

अथवा

चिड़िया के परों में चंचलता आने का क्या कारण है ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- चिड़िया दिन को जल्दी-जल्दी डलते देखती है तो उसे अपने बच्चों का स्मरण हो आता है। उसे ध्यान आता है कि उसके बच्चे दाने और माँ के लौटने की प्रतीक्षा में होंगे और विकल होकर बार-बार घोसले से झाँक रहे होंगे। इसी कारण चिडिया के परों में चंचलता आ जाती है और वह अपने घोंसले की ओर लौटने को विकल हो उठती है।

प्रश्न 3- दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में कवि अपने घर की और लौटने में शिथिल तथा अनुत्साहित क्यों है?

अथवा

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि की गति में शिथिलता और हृदय में विह्वलता का क्या कारण है?

उत्तर- कवि जानता है कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह गतिशील है और उसकी अपनी गति है। कवि को यह जानकारी है कि घर पर उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं होगा। उससे मिलने के लिए कोई व्याकुल नहीं होगा । इसलिए वह किसके लिए शीघ्रता करे। यह बात कवि के पैरों को शिथिल कर देती है लेकिन मंजिल पर पहुँचने की जलक उसके हृदय में बेचनी भर देती है। उसे लगता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। किसी अनजानी जगह पर प्रिय की यादों के साथ रात बिताना अत्यंत कष्टकर होगा। उसे फिर नए सिरे से सफर करना होगा। जल्दी-जल्दी ढलते दिन का ध्यान आते ही उसके पैरों में चंचलता आ जाती है। इस तरह कवि अपने घर की ओर लौटने में शिथिल तथा अनुत्साहित भी है।

काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए - 02 अंक

प्रश्न 1- कवि अपने घर जाने के लिए व्याकुल और उत्साहित क्यों नहीं है?

उत्तर - कवि एकाकी है। दिन अपनी गति से ढल रहा है किन्तु कवि का इंतजार करने वाला और कवि से मिलने के लिए व्याकुल कोई नहीं है। कवि को लगता है कि वह किसके लिए शीघ्रता करे ? यह भाव उसके पैरों को शिथिल/ धीमा कर देता है। इसी कारण उसके मन में घर जाने का न उत्साह है और न ही उत्कंठा। लेकिन दिन जल्दी-जल्दी ढलता देख कवि में हृदय लक्ष्य तक पहुँचने की व्याकुलता भर जाती है।

प्रश्न 2- चिड़िया के बच्चे किस आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

उत्तर - चिड़िया के बच्चे समय पर दाना पाने और अपनी माँ के शीघ्र लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसी आशा में वे नीड़ों/घोंसलों से बार-बार झाँक रहे होंगे।

प्रश्न 3.दिन जल्दी-जल्दी ढलता है -कविता का प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर : प्रस्तुत कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मनुष्य के जीवन में उमंग की हिलोरें पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी जल्दी बीत जा रहा है। इससे अपने प्रियजनों से मिलने हेतु कदम में तेजी आ जाती है ।

प्रश्न 4. यदि मंजिल दूर हो तो लोगों की वहाँ पहुँचाने की मानसिकता कैसी होती है?

उत्तर: मंजिल दूर होने पर लोगों में उदासीनता का भाव आ जाता है। कभी-कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है। मंजिल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना भी छोड़ देते हैं। मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है।

प्रश्न 5.घर लौटते हुए कवि के कदम शिथिल क्यों हो जाते हैं?

उत्तर : घर लौटते समय कवि को स्मरण हो जाता है कि जिस प्रिय से मिलने की आकांक्षा है उसका अस्तित्व अब संसार में नहीं है। अतः कवि में निराशा के भाव आने से वह सोच में पड़ जाता है और उसके कदम शिथिल हो जाते हैं।

प्रश्न 6.चिड़िया किसके बारे में सोचकर चंचल हो रही है?

उत्तर :चिड़िया अपने बच्चों के बारे में सोचकर चंचल हो रही है। शाम ढलते ही अन्धेरा हो जाने पर चिड़िया के बच्चे डर जायेंगे। वे अपनी माँ की प्रतीक्षा में घोंसले से झाँक रहे होंगे । माँ अपने बच्चों की चिंता में बेचैन हो रही है ।

प्रश्न 7.जीवन रूपी पथ में अँधेरा छाने के भय से कौन और क्यों भयभीत है?

उत्तर : राहगीर रात होने से पहले अर्थात् परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने से पहले अपनी मंजिल को पा लेना चाहता है । उसे लगता है कि समय बहुत तीव्र गति से बीत रहा है । अतः वह समय रहते हुए अपना कार्य पूरा कर लेना चाहता है ।

पाठ -02 **पतंग**

कवि :आलोक धन्वा

श्री आलोक धन्वा दवारा रचित 'पतंग' कविता उनके काव्य-संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' में संकलित है। पतंग' आलोक धन्वा की तीन हिस्सों में फैली हुई एक लंबी कविता है। परंतु उसका तीसरा हिस्सा ही पाठ्य क्रम में शामिल किया गया है। इस कविता में आया हुआ पतंग शब्द असल में बहुत सी बातों का प्रतीक है। वह कल्पना, उमंग, उत्साह, उड़ान और विकास का प्रतीक बनकर कविता में नये अर्थ रचता है।बिंबों और प्रतीक विधान से भी कविता समृद्ध है। इस कविता में कवि ने बाल-सुलभ इच्छाओं एवं उमंगों का सुंदर एवं मनोहारी चित्रण किया है। पतंग बच्चों की उमंगों का रंग-बिरंगा सपना है, जिसमें वे खो जाना चाहते हैं। आकाश में उड़ती हुई पतंग ऊँचाइयों की वे हदें हैं, जिन्हें बाल-मन छूना चाहता है और उसके पार जाना चाहता है।

<u>कविता के मुख्य बिंदु-</u>

इस कविता के माध्यम से कवि आलोक धन्वा ने बाल सुलभ इच्छाओं, क्रीडाओं तथा उमंगों के कोमल संसार का सुन्दर चित्रण किया है।कवि ने शरद का मानवीकरण किया है।

- भादो की अँधेरी रात का समय बीत चुका है और शरद आ गया है।
- शरद अँधेरी रातों वाले भादो माह के पुलों को पार करता हुआ आ गया है।
- शरद अपनी चमकीली साइकिल अर्थात चमकीली किरणों रूपी साइकिल को तेज़ चलाते हुए, घंटी बजाकर बच्चों के झुंड को बुलाता है।
- शरद ऋतु का सवेरा खरगोश की लाल आँखों जैसा प्रतीत होता है।
- आसमान साफ़-मुलायम दिखाई देने लगा है। पतंग उड़ाने के लिए उपयुक्त है।
- पतले कागज़ और बाँस की पतली कमानी से बनी पतंग बालकों की बालसुलभ इच्छाओं का प्रतीक है।
- बच्चे जन्म से कपास के समान कोमल भावनाएँ एवं लचीला शरीर लेकर आते हैं ।
- पतंगों के लिए दौड़ते बच्चे सभी दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए प्रतीत होते हैं ।

- बच्चे अपनी धुन में पतंग उड़ाते समय छतों के खतरनाक कोनों तक आ जाते हैं तो उन्हें उनके शरीर का रोमांच गिरने से बचाता है। उड़ती पतंगें मानो उन्हें थामे हुए रहती हैं।

<u>शिल्प सौंदर्य-</u>

- भाषा सरल, भावानुकूल साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
- मुक्त छंद है विभिन्न प्रतीकों और बिंबों का सुंदर प्रयोग हुआ है ।
- प्राकृतिक ऋतु परिवर्तन का सजीव चित्रण, जिसके कारण मानवीकरण अलंकार की उपस्थिति है ।
- नरम, बेचैन, महज, खतरनाक आदि उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- 'मृदंग की तरह दिशाओं को बजाना' में श्रव्य बिंब, 'बेचैन पैरों में गति बिंब और पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' में दृश्य बिंब का उत्कृष्ट प्रयोग हुआ है।
- 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा में उपमा अलंकार, ज़ोर-ज़ोर में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार, गिरते हैं-बच जाते हैं' में विरोधाभास अलंकार, सुनहले सूरज' में अनुप्रास अलंकार तथा पृथ्वी और तेज़ चूमती हुई आती है में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग दर्शनीय है।
- छोटे-छोटे बच्चों की उमंग, आशा और बाल सुलभ चेष्टाओं का मनोहारी चित्रण हुआ है। साथ ही बालकों के साहसिक कार्यों का वर्णन भी मिलता है।

<u>पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न</u>

पठित काव्यांश-01

सबसे तेज बौछारें गयीं भादो गया

सवेरा हुआ

खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा

शरद आया पुलों को पार करते हुए

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए

घंटी बजाते हुए जोर जोर से

चमकीले इशारों से बुलाते हुए

पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को

चमकीले इशारों से बुलाते हुए और

आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए

कि पतंग ऊपर उठ सके

दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन चीज़ उड़ सके

दुनिया का सबसे हल्का कागज़ उड़ सके

बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके

कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और

तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

1. 'चमकीले इशारों में निहित भाव स्पष्ट कीजिए

(क) चमकीली या तेज धुप

(ख) स्वच्छ एवं साफ आकाश

(ग) आकाश में बिजली चमकना

(घ) आकाश में सितारे चमकना

2. कवि ने तेज बौछारों के जाने के साथ ही किस महीने के भी चले जाने की बात कही है?

(क) सावन

(ख) आषाढ

(ग) अश्विन

(घ) भादो

3. कविता में खरगोश की आँखों जैसा बताया गया है?

(क) सवेरे को

(ख) साईकिल को

(ग) पतंग को

(घ) आसमान को

4. शरद आया पुलों को पार करते हुए में अलंकार है-

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) अतिशयोक्ति

(घ) मानवीकरण।

5. कवि के अनुसार दुनिया की सबसे हल्की और रंगीन उड़ने वाली चीज़ है-

(क) तितली

(ख) फूल

(ग) पतंग

(घ) कपास

उत्तरमाला पठित काव्यांश - 01

1. ख 2. घ 3. क 4. घ 5. ग

पठित काव्यांश-02

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास

पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बैचैन पैरों के पास

जब वे दौड़ते हैं बेसुध

छतों को भी नरम बनाते हुए

दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं।

डाल की तरह लचीले वेग से अकसर

छतों के खतरनाक किनारों तक

उस समय गिरने से बचाता है उन्हें

सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत

पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती है महज़ एक धागे के सहारे

पतंगों के साथ साथ वे भी उड़ रहे हैं।

अपने रन्ध्रों के सहारे

अगर वे गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से

और बच जाते हैं तब तो

और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं

पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है।

उनके बैचैन पैरों के पास ।

1. 'कपास' प्रतीक है-

(क) प्रकाश का

(ख) अंधकार का

(ग) कोमलता का

(घ) शांति का

2. पतंग के साथ बच्चे कैसे दौड़ते हैं?

(क) डरकर

(ख) संभलकर

(ग) रुक-रुक कर

(घ) बेसुध होकर

3. दौड़ते भागते बच्चे दिशाओं को बजाते हैं-

(क) सारंगी की तरह

(ख) सितार की तरह

(ग) मृदंग की तरह

(घ) हारमोनियम की तरह

4.पतंग उड़ाते समय बच्चों के रोमांचित शरीर का संगीत क्या करता है?

(क) उन्हें गिरने से बचाता है।

(ख) उन्हें नचाता है

(ग) सब बच्चों को बुलाता है

(घ) उन्हें डराता है

5.'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे है' से आशय है-

(क) उड़ान भरना

(ख) स्वप्न देखना

(ग) आकाश छू लेने का अहसास होना

(घ) पतंग उड़ने पर प्रसन्न होना

उत्तरमाला पठित काव्यांश -02

उत्तर 1. गं 2. घ 3. ग 4. क 5. ग

<u>काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए - 03 अंक</u>

प्रश्न 1- सबसे तेज बौछारों के साथ भादों के बीत जाने के बाद प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण 'पतंग' कविता के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - इस कविता में कवि ने प्राकृतिक वातावरण का सुंदर वर्णन किया है। भादों माह में तेज वर्षा होती है। इसमें बौछारें पड़ती हैं। बौछारों के समाप्त होने पर शरद का समय आता है। मौसम खुल जाता है। प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई देते हैं-

1-सवेरे का सूरज खरगोश की आँखों जैसा लाल-लाल दिखाई देता है।

2-शरद ऋतु के आगमन से उमस समाप्त हो जाती है। ऐसा लगता है कि शरद अपनी साइकिल को तेज गति से चलाता हुआ आ रहा है।

3-वातावरण साफ़ व धुला हुआ-सा लगता है।

4-धूप चमकीली होती है।

5- फूलों पर तितलियाँ मैंडराती दिखाई देती हैं।

प्रश्न 2. 'जन्म से ही वे लाते हैं अपने साथ कपास' - कपास के बारे में सोचें की कपास से बच्चों का क्या सम्बन्ध बन सकता है?

उत्तर :- कपास की तरह ही बच्चे भी जन्म से ही कोमल और मुलायम होते हैं | बच्चों के सपने कपास से बनी डोर के सामान होते हैं ,जो पतंग की तरह ऊँची उड़ान भरते हैं |बच्चे कपास की तरह कोमल आकर्षक और लचीले होते हैं लचीलेपन के कारण ही वो एक छत से दूसरी छत पर आसानी से छलांग लगा लेते हैं साथ ही उनकी भावनाएँ भी कपास के सामान स्वच्छ होती हैं यही कारण है की इन दोनों में समानता बताई गयी है |

प्रश्न 3. 'रोमांचित शरीर का संगीत' के जीवन की लय से क्या सम्बन्ध है?

उत्तर :- जब व्यक्त किसी कार्य को करने के लिए उत्साहित होता है तो उस कार्य में आने वाली सभी बाधाएँ आसानी से पार कर लेता है | व्यक्ति अपने जीवन में जितना रोमांचित होगा उतना ही कार्य के प्रति तन्मयता आती है | बच्चे भी पतंग उड़ाते समय बहुत उत्साहित और रोमांचित होते हैं इसी कारण छतों के किनारे से गिरने का डर उनको नही होता यदि व्यक्ति के जीवन में रोमांच भरा होता है तो उसके जीवन में उमंगो की एक लहर बनी होती है जो उसके जीवन को लय ताल प्रदान करती है और वो अपने जीवन के लक्ष्य आसानी से प्राप्त कर लेता है |

4.पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास स्वत: कैसे आ जाता है ?

उत्तर :- जब बच्चे पतंग उड़ाते है तो वे सब कुछ भूल जाते हैं और वो चाहते हैं की उनकी पतंग सबसे ऊंची उड़े और पतंग उड़ाते वक़्त वो भूल जाते हैं की वो कहाँ भाग रहे हैं और पतंग की रंगीन दुनिया में खो जाते हैं , इसीलिए पृथ्वी का प्रत्येक कोना उनके लिए अपने आप सिमटता चला जाता है | इसी कारण से कहा गया है कि पृथ्वी का प्रत्येक कोना बच्चों के पास स्वतः आ जाता है |

प्रश्न 5- पतंग कविता में आए अलंकारों को स्पष्ट कीजिए |

1.उपमा - खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा, मृदंग की तरह, डाल की तरह

2.मानवीकरण - शरद आया पुलों को पार करते हुए,

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए

3.पुनरुक्तिप्रकाश - घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से

4.अतिशयोक्ति - दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज़ उड़ सके

दुनिया का सबसे पतला कागज़ उड़ सके-

बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-

प्रश्न 6-कविता में आए बिम्बों को स्पष्ट कीजिए |

1.दृश्य बिम्ब (आँखों के सामने उभरने वाले) - सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादो गया, खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा, शरद आया पुलों को पार करते हुए, अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए, चमकीली इशारों से बुलाते हुए, सुनहले सूरज के सामने आते हैं

2.श्रव्य बिम्ब (सुनाई देने वाले) - घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से, दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए

3.स्पर्श बिम्ब (महसूस करने वाले) - आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए, छतों को नरम बनाते हुए

<u>काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए - 02 अंक</u>

प्रश्न 1-: किन-किन शब्दों का प्रयोग करके कवि ने इस कविता को जीवंत बना दिया हैं?

उत्तर - - तेज बौछारें गई - भादों गया

- नयी चमकीली तेज साइकिल - चमकीले इशारे

- अपने साथ लाते हैं कपास - छतों को भी नरम बनाते हुए

प्रश्न 2-: बच्चों के बारे में कवि ने क्या-क्या बताया है?

उत्तर -बच्चों के बारे में कवि बताता है कि वे कपास की तरह नरम व लचीले होते हैं। वे पतंग उड़ाते हैं तथा झुंड में रहकर सीटियाँ बजाते हैं। वे छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तथा गिरने पर भयभीत नहीं होते। वे पतंग के साथ मानो स्वयं भी उड़ने लगते हैं।

प्रश्न 3- शरद ऋतु और भादों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -भादों के महीने में काले-काले बादल घुमड़ते हैं और तेज बारिश होती है। बादलों के कारण अँधेरा-सा छाया रहता है। इस मौसम में जीवन रुक-सा जाता है। इसके विपरीत, शरद ऋतु में रोशनी बढ़ जाती है। मौसम साफ़ होता है, धूप चमकीली होती है और चारों तरफ उमंग का माहौल होता है।

प्रश्न 4- 'किशोर और युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं।' -'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -कवि ने 'पतंग' कविता में बच्चों के उल्लास व निभीकता को प्रकट किया है। यह बात सही है कि किशोर और युवा वर्ग उत्साह से परिपूर्ण होते हैं। किसी कार्य को वे एक धुन से करते हैं। उनके मन में अनेक कल्पनाएँ होती हैं। वे इन कल्पनाओं को साकार करने के लिए मेहनत करते हैं। समाज में विकास के लिए भी इसी एकाग्रता की जरूरत है। अत: किशोर व युवा वर्ग समाज के मार्गदर्शक हैं।

प्रश्न 6 :'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर -इस कविता में कवि ने बालसुलभ इच्छाओं व उमंगों का सुंदर वर्णन किया है। पतंग बच्चों की उमंग व उल्लास का रंगबिरंगा सपना है। शरद ऋतु में मौसम साफ़ हो जाता है। चमकीली धूप बच्चों को आकर्षित करती है। वे इस अच्छे मौसम में पतंगें उड़ाते हैं। आसमान में उड़ती हुई पतंगों को उनका बालमन छूना चाहता है। वे भय पर विजय पाकर गिर-गिर कर भी सँभलते रहते हैं। उनकी कल्पनाएँ पतंगों के सहारे आसमान को पार करना चाहती हैं। प्रकृति भी उनका सहयोग करती है, तितलियाँ उनके सपनों की रंगीनी को बढ़ाती हैं।

प्रश्न 7: शरद ऋतु और भादों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -भादों के महीने में काले-काले बादल घुमड़ते हैं और तेज बारिश होती है। बादलों के कारण अँधेरा-सा छाया रहता है। इस मौसम में जीवन रुक-सा जाता है। इसके विपरीत, शरद ऋतु में रोशनी बढ़ जाती है। मौसम साफ़ होता है, धूप चमकीली होती है और चारों तरफ उमंग का माहौल होता है।

प्रश्न 8: शरद का आगमन किस लिए होता है?

उत्तर -शरद का आगमन बच्चों की खुशियों के लिए होता है। वे पतंग उड़ाते हैं। वे दुनिया की सबसे पतली कमानी के साथ सबसे हलकी वस्तु को उड़ाना शुरू करते हैं।

प्रश्न 9 : बच्चों के बारे में कवि ने क्या-क्या बताया है?

उत्तर -बच्चों के बारे में कवि बताता है कि वे कपास की तरह नरम व लचीले होते हैं। वे पतंग उड़ाते हैं तथा झुंड में रहकर सीटियाँ बजाते हैं। वे छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं तथा गिरने पर भयभीत नहीं होते। वे पतंग के साथ मानो स्वयं भी उड़ने लगते हैं।

प्रश्न 10: प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने 'सबसे' शब्द का प्रयोग कई बार किया हैं, क्या यह सार्थक हैं?

उत्तर -कवि ने हलकी, रंगीन चीज, कागज, पतली कमानी के लिए 'सबसे' शब्द का प्रयोग सार्थक ढंग से किया है। कवि ने यह बताने की कोशिश की है कि पतंग के निर्माण में हर चीज हलकी होती है क्योंकि वह तभी उड़ सकती है। इसके अतिरिक्त वह पतंग को विशिष्ट दर्जा भी देना चाहता है।

पाठ - 3 **<u>पाठ- कविता के बहाने</u>**

<u>कवि- कुँवर नारायण</u>

सार-

'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता-कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

यह कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

शिल्प-पक्ष -

1. **नए प्रतीक**:- चिड़िया ।

2. सरल एवं सहज **खड़ी बोली** का प्रयोग किया गया है ।

3. **कविता का मानवीकरण** किया गया है ।

4. रचनात्मक ऊर्जा पर सीमा के बंधन न होने की वकालत की गई है ।

5. **अनुप्रास अलंकार**-

*'कविता के पंख लगा उड़ने के माने'

*इस घर उस घर में अनुप्रास अलंकार है

* बिना मुरझाए महकने के माने

प्रश्न अलंकार

*चिड़िया क्या जाने?

* फूल क्या जाने?

उपमा अलंकार

*बच्चों के बहाने में है । बाल मन की सरलता की अभिव्यक्ति हुई है ।

6. **मुक्त छंद** है ।

7. कविता के रसास्वादन का आनंद अनंतकाल तक शाश्वत होने की वकालत की गई है ।

काव्यांश-1

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने

चिड़िया क्या जाने?

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने

कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

बिना मुरझाए महकने के माने

फूल क्या जाने?

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने

बाहर भीतर

यह घर, वह घर

सब घर एक कर देने के माने

बच्चा ही जाने।

1.'कविता के बहाने' कविता के कवि हैं-

a. कुंवर नारायण

b. उमाशंकर जोशी

c. आलोक धन्वा

d. रघुवीर सहाय

2."कविता के बहाने" कविता में किसके अस्तित्व पर विचार किया गया है?

a. चिड़िया के

b. कविता के

c. फूल के

d. इन सभी के

3. कवि और बच्चों में समानता रखने का क्या कारण है?

a. दोनों ही किसी सीमा को नहीं मानते

b. दोनों ही अपने-पराये का भेद नहीं करते

c. दोनों में ही सृजनात्मक शक्ति होती है

d. उपर्युक्त सभी

4."कविता के पंख लगा उड़ने"- से क्या तात्पर्य है?

a. उड़ना

b. कल्पना करना

c. चलना

d. इनमें से कोई नहीं

5. कवि के अनुसार कविता की उड़ान को कौन नहीं जान सकता?

a. चिड़िया

b. फूल

c. बच्चा

d. कवि

6. किसकी उड़ान देश, काल और परिस्थिति से बाहर संभव है?

a. चिड़िया की

b. बच्चे की

c. फूल की

d. कविता की

7. फूल की अंतिम परिणति क्या होगी?

a. मुरझाना

b. ताजगी भरना

c. खिलना

d. महकना

8. चिड़िया अपने पंखों के सहारे उड़ती है और कविता किसके सहारे उड़ती है?

a. हवा के

b. पंख के

c. शब्द के

d. कल्पना के

9. कविता बिना मुरझाए सदियों तक महकती रहती है - इसका क्या आशय है?

a. कविता कालजयी होती है

b. कविता का प्रभाव सदियों तक बना रहता है

c. कविता का सौन्दर्य कभी समाप्त नहीं होता

d. उपर्युक्त सभी

10. कविता पढ़ते और लिखते समय काल के बंधन टूट जाते हैं और बच्चों के खेलते समय -

a. धर्म के बंधन टूट जाते हैं

b. भेदभाव के बंधन टूट जाते हैं

c. संकीर्णता के बंधन टूट जाते हैं

d. उपर्युक्त सभी

उत्तरमाला -: काव्यांश -01

1. a	2.b	3.d	4.b	5.a	6.d	7.a	8.d	9.d	10.d

काव्यांश- 2

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने

चिड़िया क्या जाने?

1. इस काव्यांश के आधार पर बताइए कि कविता और चिड़िया में किस गुण की समानता है?

a. दोनों पंख लगाकर उड़ सकते हैं

b. दोनों ही उड़ान भर सकते हैं ।

c. दोनों कल्पना कर सकते हैं ।

d. दोनों कविता लिख सकते हैं ।

2.चिड़िया अपने पंखों के सहारे उड़ती है और कविता किसके सहारे उड़ती है?

a. पंख

b. विचार

c. कल्पना

d. शब्द

3.कविता में चिड़िया का वर्णन करने के पीछे कवि का क्या उद्देश्य होता है?

a. कल्पना करना

b. उड़ान भरना

c. अपने मन के भावों को व्यक्त करना

d. अलंकार का प्रयोग करना

4. कविता और चिड़िया की उड़ान में क्या अंतर है ?

a. चिड़िया दूर तक उड़ सकती है और कविता किताब के पन्नों तक

b. चिड़िया की उड़ान की एक सीमा होती है जबकि कविता की उड़ान असीम है ।

c. चिड़िया पंखों के सहारे उड़ती है और कविता कल्पना के सहारे

d. ब और स दोनों

5. अभिकथन(A)- कविता और चिड़िया में समानता है |

कारण (R)- कविता की कल्पना चिड़िया की तरह उड़ान भरती है|

a. अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b. अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c. अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d. अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R,Aकी व्याख्या नहीं करता है|

उत्तरमाला -: काव्यांश -02

उत्तर	1. b	2. c	3. c	4. d	5. c

काव्यांश- 3

कविता एक खिलना है फूलों के बहाने

कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!

बाहर भीतर

इस घर, उस घर

बिना मुरझाए महकने के माने

फूल क्या जाने?

1. कविता और फूल दोनों में क्या समानता होती है ?

a. दोनों खिलते हैं और मुरझा जाते हैं ।

b. दोनों ही खिलते और महकते हैं ।

c. दोनों ही मन में खुशी उत्पन्न करते हैं ।

d. उपरोक्त सभी

2. फूल की अंतिम परिणति क्या होगी ?

a. खिलना

b. महकना

c. मुरझाना

d. ताज़गी भरना

3. अभिकथन(A)- कविता फूल की भांति विकसित होती है एवं फूलों की तरह ही उसमें रंग और भाव है ।

कारण (R)- कविता की परिणति निश्चित होती है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, Aकी व्याख्या नहीं करता है|

4. कविता बिना मुरझाए सदियों तक महकती रहती है- इस कथन का क्या आशय होगा ?

a. कविता कालजयी होती है ।

b. कविता का प्रभाव सदियों तक बना रहता है ।

c. कविता का सौंदर्य कभी समाप्त नहीं होता ।

d. उपरोक्त सभी

5. कविता और फूलों के महकने में क्या अंतर है ?

a. फूलों की महक महसूस कर सकते हैं परंतु कविता की नहीं

b. फूलों की महक सीमित होती है और कविता की असीम

c. फूल कुछ समय के लिए महकते हैं और कविता की महक कालातीत होती है

d. b और c दोनों

उत्तरमाला -: काव्यांश -03

उत्तर	1.b	2.c	3.a	4.d	5.d

<u>काव्यांश- 4</u>

कविता एक खेल है बच्चों के बहाने

बाहर भीतर

यह घर, वह घर

सब घर एक कर देने के माने

बच्चा ही जाने।

1. अभिकथन(A)- कवि कविता को बच्चों के खेल के समान मानता है|

कारण (R)- कवि के लिए कविता शब्दों की क्रीडा है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, Aकी व्याख्या नहीं करता है|

2. बच्चों के खेल की क्या विशेषता होती है?

a. वे खेलते समय लड़ते-झगड़ते हैं ।

b. वे खेलते समय विभिन्न घरों का भेदभाव मिटा देते हैं ।

c. वे खेलते समय शैतानी करते हैं ।

d. उपरोक्त सभी

3. कविता किसके सहारे खेलती है?

a. खिलौने के

b. घरेलू सामान के

c. घरों के

d. शब्दों के

4. मनुष्यों के बीच की दूरी कौन मिटा सकता है?

a. कविता और फूल

b. बच्चे

c. कविता और चिड़िया

d. फूल

5. कविता पढ़ते और लिखते समय काल के बंधन टूट जाते हैं और बच्चों के खेलते समय

a. धर्म-जाति के बंधन टूट जाते हैं ।

b. भेदभाव के सभी बंधन टूट जाते हैं ।

c. संकीर्णता के बंधन टूट जाते हैं ।

d. उक्त सभी विकल्प सही है ।

उत्तरमाला -: काव्यांश -04

उत्तर	1. c	2. b	3. d	4. b	5. d

1. 'कविता के बहाने' कविता में कवि ने 'कविता' को किस रूप में देखा है और क्यों?

उत्तर. कविता के बहाने में कवि कविता को खेल के रूप में देखा है क्योंकि जिस प्रकार खेल का उद्देश्य मनोरंजन करना एवं आत्मसंतुष्टि प्रदान करना होता है, उसी प्रकार कविता भी शब्दों के माध्यम से कवि तथा श्रोता का मनोरंजन करती है एवं रचनाकार को आत्मतुष्टि प्रदान करती है ।

2. कविता के संदर्भ में बिना मुरझाए महकने के माने क्या है?

उत्तर. फूल खिलता है लेकिन दो-चार दिन बाद उसकी खुशबू समाप्त हो जाती है और वह मुरझा जाता है लेकिन कविता एक बार सृजित होने के बाद अनंतकाल तक बिना मुरझाए रसास्वादन करवाती रहती है।

3. कविता को खेल की संज्ञा क्यों दी गई है ?

उत्तर. कविता को खेल की संज्ञा दी गई है क्योंकि जिस प्रकार खेल का उद्देश्य मनोरंजन करना एवं आत्मसंतुष्टि प्रदान करना होता है, उसी प्रकार कविता भी शब्दों के माध्यम से कवि तथा श्रोता का मनोरंजन करती है एवं चित्त को संतुष्टि प्रदान करती है ।

4. बच्चा सब घर एक कैसे कर देता है?

अथवा

इस कविता के बहाने बताएँ कि "सब घर एक कर देने के माने" क्या है?

अथवा

कविता और बच्चे को समांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर. सब घर एक कर देने से मतलब है सभी घरों को एक समान समझना अपना -पराया, छोटा-बड़ा मेरा -तेरा ,जाति- सम्प्रदाय, धर्म आदि संकुचित भावों को मिटाकर सबको एक समान दृष्टि से देखें । समाज में छोटे बच्चे का मन बहुत कोमल होता है उसे किसी से भेदभाव ईर्ष्या द्वेष आदि नहीं होता है । इसलिए वे अपने साथियों के साथ खेलने के लिए सभी घरों में चले जाते हैं । वह समस्त संकीर्णता को त्याग कर सभी घरों को एक समान देखता है । जैसे बच्चे खेलते कूदते समय स्थान, उपस्थिति का ध्यान न रखते हुए अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देते है वैसे ही कवि भी कहीं भी अपनी कविता के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति कर देता है । क्योंकि इन दोनों के माध्यम से ही अतीत वर्तमान और भविष्य आपस में जुड़ते हैं ।

5. 'बच्चे की उछल-कूद, सब घर एक कर देना' एवं 'कवि का कविता लिखना' दोनों में क्या समानता है?

उत्तर. बच्चा खेल-खेल में घर का सारा सामान अस्त व्यस्त कर देता है, सब कुछ टटोलता है, सभी वस्तुओं को एक स्थान पर एकत्र कर लेता है एवं बच्चा कहीं भी खेलना प्रारंभ कर देता है तथा उसका खेल भेदभाव रहित होता है| वैसे ही काव्य रचना-प्रक्रिया में कवि भी

पूरा मानव जीवन खगाल लेता है, वह निष्पक्ष होता है, भावों को एक जगह पिरोता है एवं कविता भी कहीं भी और कभी भी प्रकट हो जाती है ।

6. 'कविता के बहाने' के आधार पर कविता के असीमित अस्तित्व को स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर. 'कविता के बहाने' में कविता का असीमित अस्तित्व प्रकट करने के लिए कवि ने चिड़िया की उड़ान एवं फूलों की महक का उदाहरण दिया है । वह कहता है कि चिड़िया की उड़ान सीमित होती है किन्तु कविता की कल्पना का दायरा असीमित होता है । चिड़िया घर के अंदर-बाहर या एक घर से दूसरे घर तक उड़ती है, परन्तु कविता की उड़ान व्यापक होती है। कवि के भावों की कोई सीमा नहीं है । कविता घर-घर की कहानी कहती है।

वह पंख लगाकर हर जगह उड़ सकती है । उसकी उड़ान चिड़िया की उड़ान से कहीं आगे है। साथ ही कवि कहता है कि कविता फूल की तरह खिलती है परन्तु वह फूल की भांति मुरझाती नहीं है बल्कि वह अमर होती और युगों-युगों तक समाज का मार्गदर्शन करती है ।

7. कविता के बहाने कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर. कविता के बहाने कविता में चिड़िया तथा फूल से लेकर बच्चे तक की यात्रा है । एक तरफ प्रकृति है तो दूसरी तरफ भविष्य की ओर कदम बढ़ाता हुआ बच्चा है ।यह स्पष्ट है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है फूल के खिलने की भी एक सीमा है ।फूल खिलने के बाद एक दिन अवश्य मुरझा जाता है लेकिन बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई बंधन नहीं है कविता भी शब्दों का एक खेल है ,जिसमें जड़-चेतन अतीत-वर्तमान साधन मात्र है अतः जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होती है वहाँ सीमाओं के बंधन स्वतः टूट जाते हैं।

8. उड़ने और खिलने का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है?

उत्तर. जैसे चिड़िया पंखों के माध्यम से उड़ान भरती है उसी प्रकार से कवि भी कल्पना के पंख लगा कर कविता के माध्यम से उड़ता है लेकिन चिड़िया के उड़ने की एक सीमा निर्धारित होती है किंतु कवि के उड़ने की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती अर्थात् असीमित होती है।

जैसे फूल खिलता है और खुशबू प्रदान करता है उसी प्रकार से कविता भी रसास्वादन प्रदान करती है लेकिन फूल के खिलने और रसास्वादन प्रदान करने का समय सीमित हैं लेकिन एक बार कविता के सृजन के बाद अनंतकाल तक उसका रसास्वादन किया जा सकता है ।इसलिए चिड़िया की उड़ान एवं फूल के खिलने से बढ़ कर कवि-कर्म को बताया गया है।

Link for Video--

पाठ-3 **बात सीधी थी**

कवि- कुँवर नारायण

बात सीधी थी कविता **कोई दूसरा नहीं** संग्रह से ली गई है। जिसमें कथित तौर पर माध्यम के द्वंद्व को स्पष्ट करते हुए भाषा की सरलता पर बल दिया है। शब्द की कील से एवं अर्थ की खांचे से साम्यता बैठाकर सटीक अर्थ प्रदान करने का प्रयास किया है ।

उन्होंने अच्छी बात या अच्छी कविता के बनने को सही बात का सही शब्द से जुड़ना माना है और तब तो किसी रचनात्मक दबाव या अतिरिक्त कार्य या प्रयास की जरूरत ही नहीं रह जाती और सारा कार्य सहूलियत के साथ आसानी से हो जाता है।

शिल्प सौंदर्य

1. **भाषा की जटिलता** पर कटाक्ष किया गया है ।
2. **मुक्त छंद** है एवं **खड़ी बोली** का इस्तेमाल हुआ है ।
3. **ज़रा टेढ़ी फंस गई, बात और भी पेंचीदा होती चली गई** में मुहावरों का इस्तेमाल हुआ है ।
4. **आडंबरपूर्ण भाषा शैली** पर कटाक्ष किया गया है
5. पेंच कसने में **बिंब** प्रभावी है ।
6. बेहतर है जैसे सटीक विशेषण का इस्तेमाल हुआ है ।
7. करतब शब्द में व्यंजना है ।
8. उर्दू शब्दावली का सटीक इस्तेमाल हुआ है । जैसे बेहतर, करतब,तमाशबीन, साफ।
9. **साथ-साथ** एवं **वाह-वाह** में **पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार** है।
10. बात का **मानवीकरण** किया गया है ।
11. कील की तरह, बच्चे की तरह में **उपमा अलंकार** हैं ।
12. बात की चूड़ी मर गई में **रूपक अलंकार** है ।

काव्यांश-1

बात सीधी थी पर एक बार

भाषा के चक्कर में

जरा टेढ़ी फँस गई।

उसे पाने की कोशिश में

भाषा को उलटा पलटा

तोड़ा मरोड़ा

घुमाया फिराया

कि बात या तो बने

या फिर भाषा से बाहर आए-

लेकिन इससे भाषा के साथ साथ

बात और भी पेचीदा होती चली गई।

सारी मुश्किल को धैर्य से समझे बिना

मैं पेंच को खोलने के बजाए

उसे बेतरह कसता चला जा रहा था

क्यों कि इस करतब पर मुझे

साफ सुनाई दे रही थी

तमाशबीनों की शाबाशी और वाह वाह!

1.सीधी बात किस के चक्कर में टेढ़ी फँस गई?

a.तर्कशास्त्र के

b. विज्ञान के

c. भाषा के

d.उपर्युक्त सभी के

2.भाषा के क्या करने से बात और अधिक पेचीदा हो गई?

a.उलटने-पलटने

b.तोड़ने-मरोड़ने

c.घुमाने-फिराने से

d.उपर्युक्त सभी कारणों से

3.भाषा को उलटने-पलटने, तोड़ने-मरोड़ने और घुमाने-फिराने से बात कैसी हो जाती है?

a. सरल

b. स्पष्ट

c. पेचीदा

d. प्रभावकारी

4.कवि के करतबों (कविता में बनावटी भाषा का प्रयोग) को देख कर तमाशबीनों ने क्या किया?

a. उसकी झूठी तारीफ

b. शाबाशी दी

c. वाह-वाही की

d. उपर्युक्त सभी सही हैं

5. अभिकथन(A)- उत्तम संचार के लिए हमें सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए|

कारण(R)- क्लिष्ट भाषा आम लोगों की समझ से बाहर होती है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या नहीं करता है|

उत्तर	1. c	2. d	3. c	4. d	5.c

<u>काव्यांश-2</u>

आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

जोर जबरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी!

हार कर मैंने उसे कील की तरह

उसी जगह ठोंक दिया।

ऊपर से ठीक ठाक

पर अंदर से

न तो उसमें कसाव था

न ताकत!

बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह

मुझसे खेल रही थी,

मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा-

“क्या तुमने भाषा को

सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा?”

1.बात कवि के साथ किसके समान खेल रही थी?

a.पेंच के समान

b. कील के समान

c. बच्चे के समान

d. खिलौने के समान

2.'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का तात्पर्य है-

a.बात का प्रभावहीन हो जाना

b.बात का सहज और स्पष्ट हो जाना

c.बात में कसावट आ जाना

d.उपर्युक्त में से कोई नहीं

3.बनावटी एवं आडंबरयुक्त भाषा के प्रयोग से बात कैसी हो गई?

a. प्रभावहीन

b. उद्देश्यहीन

c. अर्थहीन

d. उपर्युक्त सभी

4.भाषा को सहूलियत से बरतने से क्या तात्पर्य है?

a. भाव के अनुरूप सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग करना

b. भावाभिव्यक्ति के लिए अनावश्यक आडंबरयुक्त शब्दों के प्रयोग से बचना

c. अनावश्यक पांडित्य प्रदर्शन से बचना

d. उपर्युक्त सभी

5. अभिकथन(A)- बात और भाषा एक दूसरे से जुड़े रहते हैं|

कारण(R)- हमें अनावश्यक पांडित्य प्रदर्शन से बचना चाहिए|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, Aकी व्याख्या नहीं करता है|

उत्तर	1. c	2.a	3. d	4.d	5.c

1. बात और भाषा परस्पर कैसे जुड़े होते हैं? कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी कैसे हो जाती है?

उत्तर. भाषा के माध्यम से ही हम अपनी बात लोगों तक पहुंचा सकते हैं। जब हम अपनी बात किसी व्यक्ति से कहते हैं तो उसके लिए उचित शब्दों का चयन करते हैं लेकिन यदि दिखावे के फेर में हमने कठिन एवं अव्यावहारिक शब्दों का इस्तेमाल कर लिया तो बात समझ में नहीं आती। अतः हमें सोच समझकर सरल एवं सहज भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

2. बात से जुड़ें कुछ मुहावरे ।

उत्तर. 1 बात छेड़ना (अर्थात् चर्चा करना)- श्याम बात छेड़ तो देता है परन्तु पूरी नहीं करता।

2 बात बात में(तुरंत) -मोहन हर काम बात ही बात में कर लेता है।

3 बात को पीना (अर्थात चुभती बात को सहन कर लेना) -श्री कृष्ण शिशुपाल की अनेक बातों को पी गए।

4 बातें रखना (इज्जत रखना) - लाला रामलाल ने कन्हैया की बेटी का अपने पुत्र से बिना दहेज के विवाह करके उसकी बात रख ली।

5 बाते हाँकना (बढ़-चढ़कर बातें करना) -राधा मोहन कुछ काम तो करता नहीं बस बातें ही हाँकता रहता है।

3.बात सीधी थी पर कविता में निहित संदेश स्पष्ट कीजिए?

अथवा

'बात सीधी थी' कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. कविता में कवि ने उन रचनाकारों पर कटाक्ष किया है जो अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए भाषा के साथ खिलवाड़ करते हैं। वे अपनी रचना में शब्दों

का जाल रच कर पाठकों को भ्रमित करते हैं तथा आडंबरपूर्ण शब्द योजना से उनकी वाहवाही लूटते हैं। चाहे उनकी रचना का कथ्य पाठकों अथवा श्रोताओं की समझ में आया हो या नहीं। कवि चाहता है कि रचनाकार को अपनी बात अत्यंत सहज तथा स्पष्ट शब्दों में कहनी चाहिए। कथ्य और भाषा का सही संबंध बना रहना चाहिए जिससे पाठक अथवा श्रोता उसके बाद सहज रूप से ग्रहण कर सके।

4. बात ने, जो एक शरारती बच्चे की तरह मुझसे खेल रही थी, मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा क्या तुमने भाषा को सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा? इन पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर. इन पंक्तियों में कवि ने बात का मानवीकरण किया है। कवि काव्य रचना में भाषा की सहजता तथा प्रभावशाली प्रयोग पर बल दे रहा है।खड़ी बोली में रचित इन पंक्तियों की भाषा विदेशी, देशज है एवं मुहावरों का सहज रूप से प्रयोग किया गया है। प्रश्न, अनुप्रास, मानवीकरण आदि अलंकार है। लाक्षणिक एवं बिंब विधान ने कथन को सुंदरता प्रदान की है।

5. भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या मतलब है?

उत्तर. भाषा को सहूलियत से बरतने से तात्पर्य है कि हमें अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए सहज एवं सरल शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए नाकि आडंबरपूर्ण एवं दिखावे से भरपूर बोझिल भाषा का।

6.कवि के साथ बात किसके समान खेल रही थी? उसने कवि पर क्या व्यंग्य किया?

उत्तर. बात कवि के साथ एक नटखट एवं शरारती बच्चे के समान खेल रही थी ।उसने कवि पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आपको भाषा का सहज एवं सरल रूप इस्तेमाल करना नहीं आता है क्या?

7:कवि के अनुसार कोई बात पेचीदा कैसे हो जाती है?

उत्तर. कवि कहता है कि जब अपनी बात को सहज रूप से न कहकर तोड़-मरोड़कर या घुमा-फिराकर कहने का प्रयास किया जाता है तो बात उलझती चली जाती है। ऐसी बातों के अर्थ श्रोता या पाठक समझ नहीं पाता। वह मनोरंजन तो पा सकता है, परंतु कवि के भावों को समझने में असमर्थ होता है। इस तरीके से बात पेचीदा हो जाती है।

8.प्रशंसा का व्यक्ति पर क्या प्रभाव पड़ता हैं? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर बताइए।

उत्तर. प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को सही व उच्च कोटि का मानने लगता है। वह गलत-सही का निर्णय नहीं कर पाता। उसका विवेक कुंठित हो जाता है। कविता में प्रशंसा मिलने के कारण कवि अपनी सहज बात को शब्दों के जाल में उलझा देता है। फलत: उसके भाव जनता तक नहीं पहुँच पाते।

9.कवि को पसीना आने का क्या कारण था?

उत्तर. कवि अपनी बात को प्रभावशाली भाषा में कहना चाहता था। इस चक्कर में वह अपने लक्ष्य से भटककर शब्दों के आडंबर में उलझ गया। भाषा के चक्कर से वह अपनी बात को निकालने की कोशिश करता है, परंतु वह नाकाम रहता है। बार-बार कोशिश करने के कारण उसे पसीना आ जाता है।

10.कवि ने कथ्य को महत्व दिया है अथवा भाषा को-'बात सीधी थी पर' के आधार पर तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर. 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने कथ्य को महत्व दिया है। इसका कारण यह है कि सीधी और सरल बात को कहने के लिए जब कवि ने चमत्कारिक भाषा में कहना चाहा तो भाषा के चक्कर में भावों की सुंदरता नष्ट हो गई। भाषा के उलट-फेर में पड़ने के कारण उसका कथ्य भी जटिल होता गया।

11.'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है?

उत्तर. 'बात सीधी थी पर' कविता में कवि ने भाषा के विषय में व्यंग्य करके यह सिद्ध करना चाहा है कि लोग किसी बात को कहने के क्रम में भाषा को सीधे, सरल और सहज शब्दों में न कहकर तोड़-मरोड़कर, उलट-पलटकर, शब्दों को घुमा-फिराकर कहते हैं, जिससे भाषा क्लिष्ट होती जाती है और बात बनने की बजाय बिगड़ती और उलझती चली जाती है। इससे हमारा कथ्य और भी जटिल होता जाता है क्योंकि बात सरल बनने की जगह पेचीदी बन जाती है।

Link for Video--

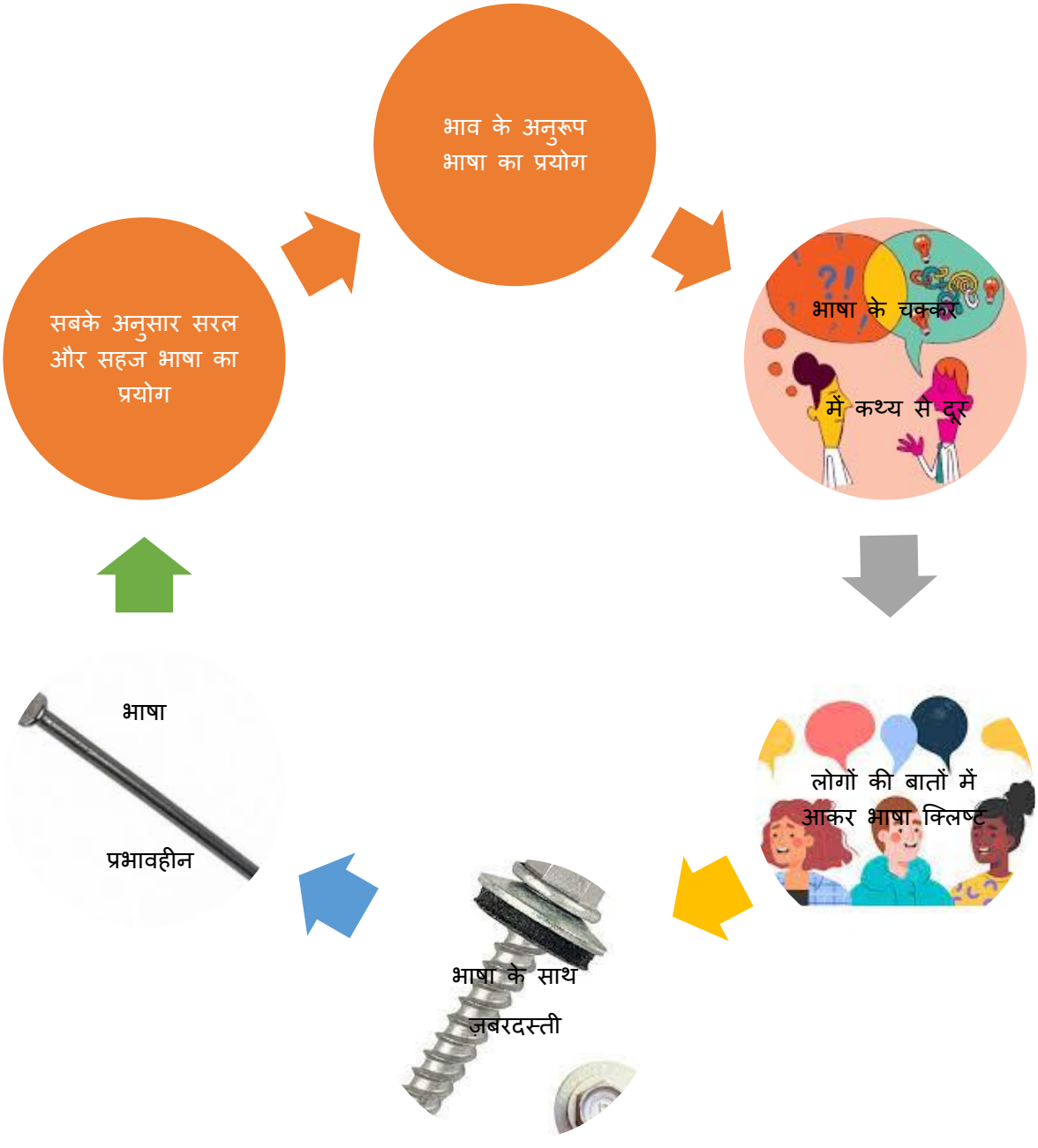
भाव के अनुरूप
भाषा का प्रयोग
भाषा के चक्कर
में कथ्य से दूर
लोगों की बातों में
आकर भाषा क्लिष्ट
भाषा के साथ
ज़बरदस्ती
भाषा
प्रभावहीन
सबके अनुसार सरल
और सहज भाषा का
प्रयोग

पाठ- 4 कैमरे में बंद अपाहिज (कविता)

कवि- रघुवीर सहाय

कविता का सार-कैमरे में बंद अपाहिज कविता में कवि रघुवीर सहाय जी ने अत्यंत साधारण और अनायास-सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की कठोर विडंबनाओं को उकेरने का प्रयास किया है। उन्हीं का प्रतिनिधित्व 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता करती है। जो **'लोग भूल गए हैं'** संग्रह से ली गई है। शारीरिक चुनौतियों को झेलते व्यक्ति से टेलीविजन कैमरे के सामने किस तरह के प्रश्न पूछे जाएंगे और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उससे कैसी भंगिमा की अपेक्षा की जाएगी, इसका लगभग सहज तरीके से स्पष्ट वर्णन रघुवीर सहाय ने किया है। किसी की पीड़ा को बहुत बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को पहले स्वयं उस पीड़ा के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। फिर दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आप जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास करते हैं तब कारोबारी दबाव के तहत आपका रवैया संवेदनहीन हो जाता है। रघुवीर सहाय जी की यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को उभारती है। अपनी व्यंजना में यह कविता हर ऐसे व्यक्ति की ओर इशारा करती है जो दुख, दर्द, यातना व वेदना को बेचना चाहता है। इस कविता को शारीरिक चुनौतियों को झेलते लोगों के प्रति संवेदनशील नजरिया अपनाने के लिए प्रेरित करने वाले पाठ के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।इसके लिए कवि ने धुर संवेदनहीनता को रेखांकित करने का तरीका अपनाया है। जिसमें देखा गया है कि किस तरह करुणा जगाने से शुरू हुआ कार्यक्रम क्रूर बन जाता है।

<u>काव्यांश-1</u>

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे

हम समर्थ शक्तिवान

हम एक दुर्बल को लाएँगे

एक बंद कमरे में

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?

तो आप क्यों अपाहिज हैं?

आपका अपाहिजपन तो दुख देता होगा

देता है?

(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा-बड़ा)

हाँ तो बताइए आपका दुख क्या हैं

जल्दी बताइए वह दुख बताइए

बता नहीं पाएगा।

सोचिए

बताइए

आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है

कैसा

यानी कैसा लगता हैं

(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)

सोचिए

बताइए

थोड़ी कोशिश करिए

(यह अवसर खो देंगे?)

आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते

हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे

इंतजार करते हैं आप भी उसके रो पड़ने का

करते हैं?

(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)

1. 'कैमरे में बंद अपाहिज" कविता के कवि का नाम है -

a. कुँवर नारायण

b. उमाशंकर जोशी

c. आलोक धन्वा

d.रघुवीर सहाय

2. 'हम समर्थ शक्तिवान' 'हम' प्रयुक्त हुआ है-

a. अपाहिज के लिए

b. टेलीविजन मीडियाकर्मी (दूरदर्शनवालों) के लिए

c. दर्शकों के लिए

d. उपर्युक्त में से किसी के लिए नहीं

3. एक बंद कमरे में दूरदर्शन वाले किसको लाएंगे?

a. रोगी को

b. नेताजी को

c. दुर्बल को

d.बलवान को

4. हम दूरदर्शन पर बोलेंगे 'हम समर्थ शक्तिवान' में भाव है -

a. करुणा का

b. अहंकार का

c. दया का

d. घृणा का

5. बंद कमरे में अपाहिज से कैसे प्रश्न पूछे जाएँगे?

a. क्या आप अपाहिज हैं?

b. आप क्यों अपाहिज हैं?

c. क्या आपको आपका अपाहिजपन दुःख देता है?

d. उपरोक्त सभी

6. 'आपको अपाहिज होकर कैसा लगता हैं' इस तरह के प्रश्नों से दूरदर्शन (टेलीवजन मीडिया) कर्मियों की किस मनोवृत्ति का पता चलता है?

a. करुणा का

b. संवेदनहीनता का

c. दया का

d. संवेदनशीलता का

7. 'आप जानते हैं कि कार्यक्रम रोचक बनाने के वास्ते, हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे' इन पंक्तियों के माध्यम से व्यंग्य किया गया है-

a. टी.वी. मीडिया की व्यावसायिकता पर

b. टी.वी मीडिया की संवेदनहीनता पर

c. टी.वी. मीडिया की करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता पर

d. उपर्युक्त सभी पर

8. अपाहिज क्या नहीं बता पाएगा ?

a. अपना सुख

b. अपना दुख

c. अपना सामर्थ्य

d. अपनी शक्ति

9. अपाहिज से पूछे गए प्रश्न की विशेषता नहीं है -

a. निरर्थकता

b. बेतुकापन

c. संवेदनहीनता

d. संवेदनशीलता

10. अभिकथन(A)- किसी व्यक्ति के दुःख को प्रस्तुत कर रोचकता लाना अनुचित है|

कारण(R)- क्योंकि यह अमानवीय व असंवेदनशील व्यवहार है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, Aकी व्याख्या नहीं करता है|

उत्तरमाला -: काव्यांश -01

उत्तर	1.d	2.b	3.c	4.b	5.d	6.b	7.d	8.b	9.d	10.c

<u>काव्यांश-2</u>

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे

फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर

बहुत बड़ी तसवीर

और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी

(आशा हैं आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)

एक और कोशिश

दर्शक

धीरज रखिए

देखिए

हमें दोनों को एक संग रुलाने हैं

आप और वह दोनों

(कैमरा

बस करो

नहीं हुआ

रहने दो

परदे पर वक्त की कीमत है)

अब मुसकुराएँगे हम

आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम

(बस थोड़ी ही कसर रह गई)

1. कैमरे वाले परदे पर अपाहिज की क्या दिखाएँगे?

a. हँसी

b. बेचैनी

c. अपंगता की पीड़ा

d. रोने से फूली हुई आँख

2. अपाहिज से दूरदर्शन कार्यक्रम संचालक किस प्रकार के प्रश्न पूछता है ?

a.अर्थपूर्ण

b. तर्कसंगत

c. भावपूर्ण

d. अर्थहीन

3. दूरदर्शन संचालक और कैमरामैन एक और कोशिश क्यों करना चाहते हैं?

a. तस्वीर साफ दिखाने के लिए

b. अपाहिज की अपंगता को उभारने के लिए

c. कार्यक्रम को आकर्षक बनाने के लिए

d. चमत्कार उत्पन्न करने के लिए

4. दूरदर्शन संचालक दर्शकों से क्या अनुरोध करता है?

a. शांति बनाए रखने का

b. हिम्मत दिखाने का

c. धैर्य बनाए रखने का

d. दया भावना दिखाने का

5. कैमरे वाला किन्हें एक साथ रुलाना चाहता है?

a. अपाहिज और कैमरामैन को

b. अपाहिज और दूरदर्शन संचालक को

c. अपाहिज और दर्शक को

d. उपर्युक्त में से किसी को नहीं

6. दूरदर्शन पर किस उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम दिखाया जा रहा था ?

a. धार्मिक

b. वैज्ञानिक

c. सामाजिक

d. मनोवैज्ञानिक

7. कविता में पर्दे पर किसकी कीमत बताई गई है ?

a. वक्त की

b. अपाहिज की

c. धन की

d. विद्या की

8. कविता के अनुसार टेलीविजन मीडिया सामाजिक कार्यक्रम के नाम पर क्या करता है?

a. लोगों के दुख-दर्द को बेचने का काम करता है।

b. अपने व्यावसायिक हितों को पूरा करने का काम करता है।

c. पीड़ितजनों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने का काम करता है।

d. उपर्युक्त सभी

9. आखिरकार दूरदर्शन संचालक के मन में सबसे बड़ी क्या कसक रह गई?

a. दर्शक और अपाहिज, दोनों को एक साथ न रुला पाने की

b. अपाहिज की पीड़ा दर्शकों तक न पहुँचा पाने की

c. अपाहिज को अच्छे से न रुला पाने की

d. दर्शकों को न रुला पाने की

10. अभिकथन(A)- कविता में प्रश्नकर्ता कैमरेवाले को आँख की बड़ी तस्वीर दिखाने के लिए कहता है|

कारण(R)- ताकि दूरदर्शन जनता की सहानुभूति प्राप्त कर सके|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या नहीं करता है|

उत्तरमाला :-पद्यांश- 02

1.d	2.d	3.d	4.c	5.c	6.c	7.a	8.d	9.a	10.c

<u>काव्यांश-3</u>

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे
हम समर्थ शक्तिवान
हम एक दुर्बल को लाएँगे
एक बंद कमरे में
उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?
तो आप क्यों अपाहिज हैं?

1. काव्यांश में समर्थ शक्तिवान किसे बताया है ?

a. सरकार को

b. दूरदर्शन पर कार्यक्रम के प्रायोजकों को

c. विकलांगों को

d. सभी को

2. तो आप क्या अपाहिज हैं? पंक्ति में निहित भाव है -

a. करुणा का

b. सहानुभूति का

c. क्रूरता का

d. दया का

3.'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता किस काव्य संग्रह से ली गई है -

a. लोग भूल गए है

b. सीढ़ियों पर धूप में

c. आत्महत्या के विरुद्ध

d. हँसो- हँसो जल्दी हँसो

4. काव्यांश में किसकी मानसिकता पर व्यंग्य किया गया है?

a. जनता की

b. सरकार की

c. मीडिया की

d. जनता की

5. अभिकथन(A)- हम एक दुर्बल को लाएंगे|

कारण(R)- दुर्बल व्यक्ति की दूरदर्शन को आवश्यकता है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या नहीं करता है|

उत्तरमाला :-- पद्यांश - 03

1.b	2.c	3.a	4.c	5.a

<u>काव्यांश-4</u>

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फुली हुई आँख की एक बडी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा हैं आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमें दोनों एक संग रुलाने हैं

1. **काव्यांश के रचनाकार का नाम क्या है ?**

a. शमशेर बहादुर सिंह

b. कुँवर नारायण

c. मुक्तिबोध

d. रघुवीर सहाय

2. **दर्शको में अपाहिज के लिए कैसी भावना है** ?

a. दया की

b. द्वेष की

c. कठोरता की

d. द्रोह की

3. **काव्यांश में 'कसमसाहट' का अर्थ है ?**

a. बेचैनी

b. नाचना

c. ख़ुशी

d. गाना

4. **काव्यांश में परदे पर क्या दिखाने की बात कही गई है** ?

a. फुली हुई आँख की रंगीन तसवीर

b. फुली हुई आँख की सुन्दर तसवीर

c. फुली हुई आँख की एक छोटी तसवीर

d. फुली हुई आँख की एक बडी तसवीर

5. **अभिकथन(A)- कविता में कोष्ठकों का प्रयोग हुआ है|**

कारण(R)- यह नयी कविता की विशेषता है|

a.अभिकथन(A) सही है जबकि कारण(R) गलत है|

b.अभिकथन(A) गलत है जबकि कारण(R) सही है|

c.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या करता है|

d.अभिकथन(A) और कारण(R) दोनों सही है R, A की व्याख्या नहीं करता है|

उत्तरमाला :-- पद्यांश- 04

1.d	2.a	3.a	4.d	5.c

1. कैमरे में बंद अपाहिज कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर. "कैमरे में बंद अपाहिज" कविता में कवि ने अपाहिज व्यक्ति के प्रति करुणा जगाने के उद्देश्य से टेलीविजन पर उसे बुलाया था। लेकिन अपने कार्यक्रम को सफल बनाने एवं व्यावसायिक लाभ कमाने के उद्देश्य से संवेदनहीन रवैये को अपनाता है। एक अपंग की मज़बूरी को व्यापार बनाते हैं, उन्हें बेचते हैं। फलतः दूरदर्शन पर शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति उनका रवैया क्रूर हो जाता है ।

2. हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे पंक्तियों में समर्थ शक्तिवान और दुर्बल किसके लिए आया है?

उत्तर. मीडिया में इतनी शक्ति होती है कि वे किसी को भी रातों रात सकारात्मक अथवा नकारात्मक रूप में प्रसिद्ध कर सकते हैं। उपरोक्त पंक्तियों में समर्थ शक्तिवान टेलीविजन कैमरे/मीडिया वालों के लिए आया है। जबकि निर्बल अपाहिज व्यक्ति के लिए आया है।

3. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन-सा उद्देश्य पूरा हो जाएगा ?

उत्तर. यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहा व्यक्ति रोने लगेगा तो भावनात्मक जुड़ाव की वजह से दर्शक वर्ग भी रोने लगेगा।जिससे दर्शक लगातार लंबे समय तक कार्यक्रम को देखेंगे। उनकी टीआरपी बढ़ेगी। फलतः उससे प्रायोजकों का मुनाफा बढ़ेगा ।

4. जब शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति से उसके दुख के विषय में पूछा जाता है तो वह अपने दुख क्यों नहीं बता पाता?

उत्तर. जब शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति से उसके दुखों के बारे में उससे पूछा जाता है तो वह अपने दुख के विषय में नहीं बता पाता क्योंकि वह अपनी असमर्थता को लोगों के सामने प्रकट नहीं करना चाहता? वह नहीं चाहता कि लोग उसे दुर्बल और शक्तिहीन समझे तथा किसी कार्य को करने में असमर्थ कहकर उसका अपमान करें उसे हँसी का पात्र बनाएँ और कुंठित होकर उसमें साहस की कमी न होने लगे ।

5. कैमरे में बंद अपाहिज कविता की मूल व्यंजना स्पष्ट कीजिए?

उत्तर. कैमरे में बंद अपाहिज कविता ऐसे लोगों की ओर इशारा करती है जो अपने दुख-दर्द यातना वेदना को बेचना चाहते हैं । उनकी स्थिति महामारी की कामना करने

वाले चिकित्सक के समान होती है । जो दिखावा तो संवेदना की करते हैं लेकिन बहुत संवेदनहीन हो जाते हैं ।

6. "हम दूरदर्शन पर बोलेंगे हम समर्थ शक्तिवान हम एक दुर्बल को लाएंगे एक बंद कमरे में" इसका भाव सौंदर्य एवं कला/शिल्प सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर. भाव-सौंदर्य -इस अवतरण में रघुवीर सहाय ने टेलीविजन कैमरे के सामने किसी अपंग मनुष्य के प्रति संवेदनहीन रवैया का चित्रण किया है। इसमें कवि ने टेलीविजन कैमरे के सामने अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए शारीरिक रूप से अपंग मनुष्य के प्रति संवेदनशील भाव अपनाने की बात की है। हम दूरदर्शन पर अपने आप को यानी मीडिया को शक्तिशाली बताएँगे। अपना गौरवगान स्वयं करेंगे ताकि हमारा कार्यक्रम ज्यादा सफल हो सके इसके लिए किसी कमजोर असहाय व्यक्ति को हम एक बंद कमरे में कैमरे के सामने प्रस्तुत करेंगे।

कला /शिल्प सौंदर्य- भाषा सरल एवं स्पष्ट है। तत्सम एवं तद्भव शब्दावली का इस्तेमाल हुआ है। शैली मर्मस्पर्शी एवं भावपूर्ण है। करुण रस है । प्रसादगुण है। अनुप्रास एवं पद मैत्री अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कविता में कोष्ठकों प्रयोग भी अनूठा है।

7. "परदे पर वक्त की कीमत है।" कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

उत्तर. परदे पर वक्त की कीमत है यह कह कर कवि ने यह बताया है कि दूरदर्शन वाले चाहते थे कि अपंग व्यक्ति को दुखी देखकर दर्शकगण भी रोने लगेंगे ।लेकिन जब वे इस उद्देश्य में सफल न हो सके तो उन्हें इस कार्यक्रम को अधिक समय दिखाना उचित नहीं लगा । इसलिए उन्होंने ऐसा कहा ।

8.'कैमरे में बंद अपाहिज'कविता के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में शारीरिक अक्षमता की पीड़ा झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा को जिस अमानवीय ढंग से दर्शको तक पहुँचाया जाता है वह कार्यक्रम के निर्माता और प्रस्तुतकर्ता की संवेदनहीनता की पराकाष्ठा है। वह पीड़ित व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए उसे बेचने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ भी उनकी पैसा कमाने सोच दिखती है,जो उनकी मानवता पर हावी हो चुकी है।

9. कैमरे में बंद अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे?

उत्तर. 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता कुछ लोगों की संवेदनहींनता प्रकट करती है क्योंकि ऐसे लोग धन कमाने एवं अपने कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार के लिए दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचाते है और किसी की करुणा बेचकर अपनी आय बढ़ाना चाहते हैं। ऐसे लोग अपाहिजों से सहानुभूति नहीं रखते है और अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उल्टे-सीधे प्रश्न पूछते हैं। उनके मन में उन दिव्यांगों के प्रति किसी भी प्रकार का दया, करुणा या संवेदना नहीं होती, होता है तो सिर्फ लालच एवं स्वार्थ।

10. नाटकीय कविता की अंतिम परिणति किस रूप में होती है?

उत्तर. बार बार प्रयास करने पर भी मीडियाकर्मी, अपाहिज व्यक्ति को रोता हुआ नहीं दिखा पाता। वह खीझ जाता है और खिसियानी मुस्कुराहट के साथ कार्यक्रम समाप्त कर देता है। सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम शब्दों में व्यंग्य है क्योंकि मीडिया के छद्म व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती।

11. दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमज़ोर को ही क्यों लाते हैं?

उत्तर. दूरदर्शन वाले जानते हैं कि समाज में कमज़ोर व अशक्त लोगों के प्रति करुणा का भाव होता है। लोग दूसरे के दुख के बारे में जानना चाहते हैं। दूरदर्शन वाले इसी भावना का फायदा उठाना चाहते है तथा अपने लाभ के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाते हैं ।

12. 'यह अवसर खो देंगे?' पंक्ति का क्या तात्पर्य है?

उत्तर. प्रश्नकर्ता विकलांग से तरह-तरह के प्रश्न करता है । वह उससे पूछता है कि आपको अपाहिज होकर कैसा लगता है? ऐसे प्रश्नों के उत्तर प्रश्नकर्ता को तुरंत चाहिए । यह विकलांग के लिए सुनहरा अवसर है कि वह अपनी पीड़ा को समाज के समक्ष व्यक्त करे । ऐसा करने से उसे लोगों की सहानुभूति व सहायता मिल सकती है। यह पंक्ति मीडिया की कार्यशैली व व्यापारिक मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।

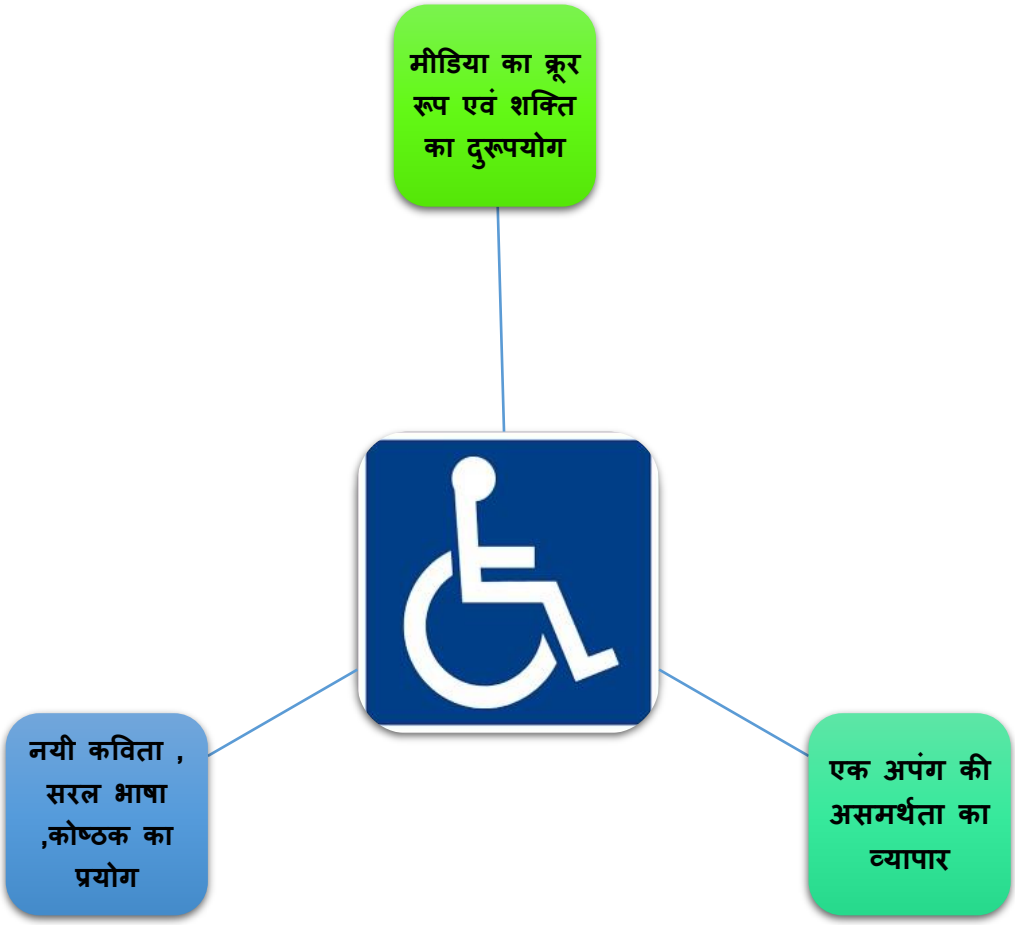

Link for Video--

पाठ- 5 **उषा (कविता)**

कवि - शमशेर बहादुर सिंह

- **कविता का परिचय** :-

'उषा' कविता हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध प्रगतिवादी कवि श्री शमशेर बहादुर जी की एक प्रसिद्ध रचना है । यह कविता उनके कविता संग्रह - 'दुनिया रोज बनती है' काव्य संग्रह से लिया गया है जो उनके चित्रकार हृदय का परिचय कराती है । इसमें विभिन्न उपमानों और बिंबों के द्वारा उषाकाल के सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया गया है जिसमें आसमान विभिन्न रंगों (नीला, स्लेटी, केसरिया) में परिवर्तित होता दिखाई देता है । कवि ने इसे ही **'उषाकाल का जादू'** कहा है । सूर्योदय के बाद आसमान का रंग-बिरंगा जादू अचानक समाप्त हो जाता है जिसे कवि ने **'उषा के जादू का टूटना'** बताया है ।

आसमान में होने वाले विभिन्न रंगों के परिवर्तन को दर्शाने के लिए कवि ने निम्नलिखित उपमानों का प्रयोग किया है -

- नीले रंग का आसमान - नीले शंख के समान
- स्लेटी रंग का आसमान - राख़ से लीपे हुए चौके(रसोई) के समान
- केसरिया रंग - सिल (पत्थर का टुकड़ा) पर पीसे गए केसर के समान अथवा

  काली स्लेट पर बिखरी हुई लाल रंग की खड़िया

- **पंक्तियों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न** **(1×5= 5)**

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा-से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो

और जादू टूटता है

इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है !

1. **'उषाकाल' से क्या तात्पर्य क्या तात्पर्य है ?**

    a. प्रातःकालीन नभ

    b. लालिमायुक्त नभ

    c. सूर्योदय के बाद का नभ

    d. सूर्योदय के पूर्व का नभ

2. **कवि ने सूर्योदय से पूर्व आकाश में हो रहे परिवर्तनों को किस रूप में देखा है ?**

    a. उषाकालीन नभ में नीले शंख समान पवित्रता होती है ।

    b. आसमान में लीपे गए चौके के समान नमी रहती है ।

    c. आसमान में केसर के समान लालिमा रहती है ।

    d. उपरोक्त सभी

3. **'अभी गीला पड़ा है' - पंक्ति द्वारा कवि क्या भाव व्यक्त करना चाहते हैं ?**

    a. भोर के नभ में सजलता का गुण विद्यमान है ।

    b. आसमान बारिश की नमी के कारण भीगा है ।

    c. नभ ताजगी और पवित्रता का द्योतक है ।

    d. आसमान नमी से धुला हुआ प्रतीत होता है ।

4. **उषाकालीन नभ के सौंदर्य को दर्शाने के लिए कवि ने नीला शंख, राख़ से लीपा चौका, सिल पर बिखरा केसर जैसे उपमानों का प्रयोग क्यों किया होगा ?**

a. कवि को रंगों से प्रेम है

b. नभ के बदलते रंगों का परिचय कराने के लिए

c. कवि को यह उपमान प्रिय हैं

d. उषाकालीन नभ के पल-पल बदलते सौंदर्य को बताने के लिए

5. **'उषा' कविता प्रकृति का ----------चित्रण प्रस्तुत करती है ।**

a. गतिशील

b. परिवर्तनशील

c. नवीन

d. प्रगतिशील

6. **उषा का जादू कब समाप्त हो जाता है ?**

a. नीले जल में किसी की गौरवर्ण परछाई दिखने पर

b. नभ के बदलते रंगों में कोई नया परिवर्तन न होने पर

c. सूर्य का प्रकाश नभ में भर जाने पर

d. आसमान में बादल छा जाने पर

7. **'स्लेट पर या -----किसी ने, पंक्ति किस बदलाव का चित्रण करती है ?**

a. बच्चे द्वारा स्लेट पर खड़िया फैलाने की

b. काली रंग की स्लेट पर लाल खड़िया का सौंदर्य दिखने की

c. सूर्य की लालिमा क्षितिज पर बिखरने की

d. सूर्य का प्रकाश नील जल में भर जाने की

8. **'बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो - पंक्ति में अलंकार होगा -**

a. उपमा

b. उत्प्रेक्षा

c. मानवीकरण

d. रूपक

कविता पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक उत्तर 60 शब्दों में) 2×3 = 6

(i) शमशेर बहादुर की कविता गाँव की सुबह का जीवंत गतिशील चित्रण है, पुष्टि कीजिए ।

(ii) 'उषा' कविता के आधार पर उस जादू को स्पष्ट कीजिए जो सूर्योदय के समाप्त हो जाता है ?

अथवा

सूर्योदय होते ही उषा का जादू कैसे टूटने लगता है ?

अथवा

सूर्योदय के साथ उषाकाल का कौन सा जादू टूटने लगता है ?

- **कविता पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्न** (प्रत्येक उत्तर 40 शब्दों में)2×2 = 4

1. 'उषा' कविता में किन उपमानों का प्रयोग हुआ है, इससे कविता के सौन्दर्य पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

2. उषाकाल का जादू किसे कहा गया है ?

3. प्रातः काल के नभ की तुलना नीले शंख से किए जाने का क्या कारण होगा ?

4. **उषाकाल के पल-पल परिवर्तित सौंदर्य की क्या विशेषता है ?**

उत्तर संकेत

- **पंक्तियों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न** **(1×5= 5)**

1- d सूर्योदय के पूर्व का नभ

2- d उपरोक्त सभी

3- c नभ ताजगी और पवित्रता का द्योतक है

4- d उषाकालीन नभ के पल-पल बदलते सौंदर्य को बताने के लिए

5- a गतिशील

6- c सूर्य का प्रकाश नभ में भर जाने पर

7- c सूर्य की लालिमा क्षितिज पर बिखरने की

8- b उत्प्रेक्षा

- **कविता पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न** (प्रत्येक उत्तर 60 शब्दों में) 2×3= 6

(i) उषा कविता में कवि ने जिन उपमानों का प्रयोग किया है उनमें से अधिकांशतः ग्रामीण जीवन का हिस्सा है, जैसे -

- **राख़ से लीपा हुआ चौका** - ग्रामीण परिवेश में महिलाएं भोजन पकाने के बाद चौके को स्वच्छ करने के लिए उसकी राख से लिपाई करती है जो काफी समय तक भीगा रहता है ।
- **काली सिल -** सिल अर्थात पत्थर का टुकड़ा जो प्रायः काले या गहरे रंग का होता है । इस पर महिलाएं अनाज या मसाले पीसकर भोजन तैयार करती हैं।
- **काली स्लेट और खड़िया -** स्लेट और खड़िया जैसी वस्तुओं का प्रयोग भी ग्रामीण जीवन में अधिक दिखाई देता है । नन्हें बालक स्लेट और खड़िया द्वारा ही लिखना-पढ़ना सीखते हैं ।

उपरोक्त तीनों उपमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि 'उषा' कविता गाँव की सुबह का जीवंत गतिशील चित्रण है ।

(ii) उषाकालीन नभ में सूर्योदय के पूर्व अलग-अलग रंगों का परिवर्तन दिखाई दे रहा था जो किसी जादुई सम्मोहन जैसा था । सूर्योदय के बाद आसमान सूर्य की किरणों से

भर जाता हैं । इसके परिणामस्वरूप आसमान का नीला, स्लेटी और केसरिया रंग अचानक लुप्त हो जाता है । ऐसा लगता है जैसे सूर्य ने उषाकाल का रंग-बिरंगा जादुई सौन्दर्य समाप्त कर दिया हो । दूसरे शब्दों में कहा जाए तो सूर्योदय होने पर उषा का जादू टूट जाता है ।

- **कविता पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्न** (प्रत्येक उत्तर 40 शब्दों में)2×2= 4

1. उषाकाल के समय आसमान कई रंगों में बदलता है जिसके लिए कवि ने क्रमशः नीलिमा युक्त आसमान के लिए नीला शंख, स्लेटी रंग के आसमान के लिए राख़ से लीपा चौका और अंत में केसरिया रंग के लिए सिल पर बिखरा केसर/ स्लेट पर बिखरी खड़िया आदि उपमानों का प्रयोग किया है ।

2. प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व आसमान में कई परिवर्तन दिखाई देते हैं जैसे- आसमान का गहरा नीला रंग उसके कुछ समय बाद स्लेटी रंग और अंत में केसरिया रंग । आसमान में इस तरह कई रंगों का आना और फिर लुप्त हो जाना किसी जादू जैसा प्रतीत होता है

3. रात्रि के समाप्त होने के बाद धीरे-धीरे आसमान में बदलाव आता है । वह नीले रंग का दिखाई देता है । कवि ने इसे नीले शंख जैसा बताया है । जिस प्रकार शंख की ध्वनि नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करती है उसी तरह प्रातः काल की यह बेला नकारात्मकता का नाश करके एक नई सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है ।

4. उषाकाल एक प्राकृतिक घटना है जो परिवर्तन का सूचक है । यह रात्रि के समापन से प्रातः सूर्योदय होने तक दिखाई देता है । रात्रि के अंधकार के बाद आसमान धीरे-धीरे कई रंगों में परिवर्तित होकर कभी नीला कभी स्लेटी और कभी केसरिया रंग का दिखाई देता है । आसमान में रंगों का इस प्रकार आना और फिर लुप्त हो जाना अद्भुत और जादुई लगता है । इस सौन्दर्य की विशेषता है कि इसमें जीवंतता और गति है ।

पाठ- 6 बादलराग (कविता)

कवि - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविता का सारांश :- 'बादलराग' कविता प्रसिद्ध छायावादी कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी द्वारा रचित है। यह कविता उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'अनामिका' से ली गई है। वे

बादलों को विप्लव और क्रांति का प्रतीक मानकर उनका आह्वान करते हैं। क्रांति द्वारा ही अन्याय और शोषण का अंत किया जा सकता है ।

जब धरती पर ग्रीष्म ऋतु अपने भीषण और चरम रूप में होती है तब पौधों-वनस्पतियों के साथ-साथ जीव जंतुओं के प्राणों पर संकट छा जाता है । पानी की कमी से वे त्राहि-त्राहि करने लगते हैं। ऐसे में क्रांति के प्रतीक बादलों का आगमन होता है जो उनके जीवन के साथ-साथ प्रकृति में भी एक नया बदलाव लाता है । बादल किसी क्रांतिकारी की भांति आकर धरती से शोषण समाप्त करता है और सभी को नवजीवन प्रदान करता हैं। जब भीषण गर्मी पूरी धरती को अपने ताप से झुलसाने लगती है तब अनजान दिशाओं से बादल किसी योद्धा की भांति आकर पूरे आकाश में छा जाते हैं, उनकी कड़कदार आवाज भेरी गर्जना जैसी लगती है। उनके इस रूप को देखकर धरती के नन्हें-नन्हें पौधे और गरीब किसान राहत की सांस लेते हैं । वे आशा भरी दृष्टि से बादलों की ओर देखने लगते हैं ।

एक ओर बादलों का आगमन जहाँ भीषण गर्मी की मार झेल रहे शोषितों और वंचितों को न्याय दिलाता है तो वहीं दूसरी तरफ वह गर्मी के मौसम के लिए विनाश का रूप लेकर आता है। गरीब और कमजोर वर्ग के लिए बादलों का आगमन किसी मंगल उत्सव से कम नहीं। इसलिए वह सदा इन बादलों की प्रतीक्षा करता है।

'बादलराग' कविता एक ओर प्रकृति में बदलाव की बात करती है तो दूसरी ओर सामाजिक बदलाव के लिए क्रांति को आवश्यक मानती है। वर्षों से शोषण की मार झेल रहे पीड़ितों को राहत मिलती है । वे खुलकर अपने अधिकारों के साथ जी पाते हैं ।

<u>कविता में आए प्रतीकात्मक शब्द</u> -

बादल	- क्रांतिकारी
अंकुर, छोटे पौधे, जलज, नन्हें शिशु	- समाज का दबा-कुचला, वंचित(सर्वहारा) वर्ग
अचल	- समाज का ताकतवर वर्ग (पूंजीपति)
पंक	- सामाजिक बुराई
विप्लव	- क्रान्ति

पंक्तियों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न :-

तिरती है समीर सागर पर

अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से,

घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर,

उर में पृथ्वी के आशाओं से

नवजीवन की, ऊंचा कर सिर

ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल !

1. अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया किसे बताया गया है ?

a. हवा को

b. बादलों को

c. सागर को

d. तेज धूप को

2. बादलों के आगमन का वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

a. मौसम सुहाना हो रहा है

b. मौसम बिगड़ रहा है

c. मौसम उदासीन हो रहा है

d. मौसम में क्रांतिकारी बदलाव हो रहा है

3. बादलों को विप्लव का रूप क्यों माना गया है ?

a. वह मौसम को बदलने की सामर्थ्य रखता है

b. वह तेज गर्जन-तर्जन के साथ वर्षा करता है

c. वह बिजली गिराता है

d. उपरोक्त सभी

4. सुप्त अंकुर के आशावान होने का क्या कारण है ?

a. बादलों के आने से उसे नया जीवन मिलेगा

b. सुहाना वातावरण देखने को मिलेगा

c. वे बादलों की जल वर्षा देख सकेंगे

d. वे धरती से बाहर आ सकेंगे

5. पृथ्वी की गोद में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता हैं ?

a. बादलों के गरजने का

b. चिड़ियों के चहकने का

c. बिजली के कड़कने का

d. झरनों के गिरने का

फिर- फिर
बार- बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र- हुंकार।
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर
क्षत-विक्षत हत अचल- शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्धा- धीर।
हँसते हैं छोटे पौधे लघु भार
शस्य अपार,
हिल- हिल,
खिल- खिल
हाथ हिलाते,

तुझे बुलाते,
विप्लव- रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

1. 'हृदय थाम लेता संसार' - पंक्ति में संसार के हृदय थामने का क्या कारण है ?

a. विनाश की संभावना से ग्रसित होकर

b. बादलों का आना देखकर

c. मौसम का परिवर्तन देखकर

d. बिजली की कड़क के कारण

2. उन्नत शत -शत वीर कौन हैं ?

a. बादल

b. पेड़

c. सागर

d. पर्वत

3. पंक्ति में बादलों का कौन सा रूप उभर कर सामने आया है ?

a. तूफान लाने वाला

b. तेज बारिश लाने वाला

c. क्रान्ति द्वारा परिवर्तन लाने वाला

d. क्रान्ति द्वारा विनाश लाने वाला

4. कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा कि विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते-?

a. क्रान्ति से पेड़-पौधे प्रभावित होते हैं

b. क्रान्ति से सभी को खुशी मिलती है

c. क्रान्ति द्वारा ही बदलाव संभव होता है

d. क्रान्ति द्वारा हमेशा शोषित वर्ग ही लाभान्वित होता है

5. पंक्तियों द्वारा कवि क्या ने क्या बताने का प्रयास किया है ?

a. परिवर्तन के लिए क्रान्ति की आवश्यकता होती है

b. परिवर्तन के लिए क्रान्ति की आवश्यकता नहीं होती

c. क्रान्ति से लोगों को डराया जा सकता है

d. क्रान्ति पूंजीपतियों का नाश करती है

अट्टालिका नही है रे
आतंक- भवन,
सदा पंक पर ही होता
जल- विप्लव प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से
सदा छलकता नीर,
रोग- शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर।
रुद्ध कोष, है क्षुब्ध तोष,
अंगना- अंग से लिपटे भी
आतंक- अंक पर काँप रहे हैं

1. अट्टालिकाएं आतंक भवन क्यों बन गई हैं ?

a. क्योंकि इसमें पूंजीपति रहता है

b. अट्टालिकाएँ भयानक होती हैं

c. अट्टालिकाएँ कमजोर होती हैं

d. इनमें रहने वाला पूंजीपति क्रान्ति के आगमन से भयभीत है, उसका सामना करने में डरता है

2. **'सदा पंक पर ही होता जल-विप्लव प्लावन' द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं ?**

a. पंक पानी को प्रदूषित कर देता है

b. कीचड़ का सफाया करने के लिए पानी आवश्यक है

c. पानी से जल प्रलय का खतरा होता है

d. पानी की क्रांतिकारी धारा सदैव पंक रूपी बुराई का नाश करती है

3. जलज और शिशु किनका प्रतीक हैं ?

a. आभिजात्य वर्ग का

b. सर्वहारा वर्ग का

c. सुकोमल वर्ग का

d. शोषक वर्ग का

4. आतंक अंक पर कौन काँप रहे हैं और क्यों ?

a. बादल

b. व्यापारी वर्ग

c. सर्वहारा वर्ग

d. शोषक वर्ग

5. क्रान्ति से शोषितों-वंचितों को क्या लाभ पहुंचता है ?

a. न्याय मिलता है

b. खुशी मिलती है

c. जीवन के सभी दु:ख दूर होते हैं

d. उपर्युक्त सभी

धनी, वज्र- गर्जन से, बादल!
त्रस्त नयन- मुख ढाँप रहे है।

जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,

हाड़ मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

1. क्रान्ति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

a. वे खुशी मनाते हैं

b. उन्हें अनुचित तरीकों से जमा की गई पूंजी की समाप्ति का भय होता है

c. वे पीड़ितों को न्याय नहीं देना चाहते

d. शोषक वर्ग वीरता से अन्याय का सामना करता है

2. कृषक की अधीरता का क्या कारण है ?

a. उन्हें क्रान्ति द्वारा होने वाले परिवर्तन का इंतजार है

b. उन्हें क्रान्ति द्वारा होने वाले विनाश का इंतजार रहता है

c. उन्हें झमाझम पानी बरसने का इंतजार होता है

d. वे बारिश में भीगकर प्रसन्न होते हैं

3. बादलों को विप्लव के वीर कहकर क्यों संबोधित किया गया है ?

a. वे तेज गर्जना करते हुए आते हैं

b. वे जलधारा बरसाते हैं

c. वे मौसम में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं

d. वे पूरे आसमान को ढक देते हैं

4. गरीब वर्ग को क्रान्ति का इंतजार क्यों रहता है ?

a. खुशी मानने के लिए

b. गरीबी मिटाने के लिए

c. अमीर बनने के लिए

d. शोषण से छुटकारा पाने के लिए

5. सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता क्यों होती है ?

a. समाज को बदलने के लिए

b. समाज में नयापन लाने के लिए

c. समाज से भेदभाव दूर करने के लिए

d. समाज में एकता, भाईचारा और न्याय व्यवस्था की स्थापना के लिए

कविता पर आधारित प्रश्न (प्रत्येक उत्तर 60 शब्दों में) :- 2×3 = 6

I. 'बादलराग' कविता के आधार पर धनी शोषकों की जीवन शैली पर टिप्पणी कीजिए । उन्हें सुविधा सम्पन्न होते हुए भी उन्हें किस बात का भय होता है ?

अथवा

II. 'बादलराग' कविता में निराला जी ने शोषितों की वेदना को स्वर दिया है - इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

III. 'बादलराग' कविता में अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है ?

IV. क्रान्ति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है, उनका मुख ढाँपना उनकी किस मानसिकता का द्योतक है ?

कविता पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक उत्तर 40 शब्दों में) :- 2×2 = 4

I. 'बदलराग' कविता में बादलों का आह्वान कौन कर रहा है और क्यों ?

II. 'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते' - पंक्ति में 'विप्लव-रव' का क्या तात्पर्य है ? छोटे ही हैं शोभा पाते ऐसा क्यों कहा गया है ?

III. बादलों की रणभेरी का सुप्त अंकुरों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

IV. छोटे पौधे किसके प्रतीक हैं ? वे क्यों हँसते हैं ?

V. गगन स्पर्शी स्पर्धा धीर किन्हे कहा गया है और क्यों ?

VI. हर प्रकार से सुरक्षित और सम्पन्न होते हुए भी शोषक वर्ग विप्लव की संभावना से भयभीत क्यों है ?

उत्तर संकेत

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न- 1×5=5

तिरती है समीर----------विप्लव के वीर !

1- b बादलों को

2- d मौसम में क्रांतिकारी बदलाव हो रहा है

3- d उपरोक्त सभी

4- a बादलों के आने से उसे नया जीवन मिलेगा

5- a बादलों के गरजने का

फिर-फिर, बार-बार गर्जन ----------शोभा पाते ।

1- a विनाश की संभावना से ग्रसित होकर

2- a बादल

3- c क्रान्ति द्वारा परिवर्तन लाने वाला

4- d क्रान्ति द्वारा हमेशा शोषित वर्ग ही लाभान्वित होता है

5- a परिवर्तन के लिए क्रान्ति की आवश्यकता होती है

अट्टालिका नही है रे----------काँप रहे हैं ।

1- d इनमें रहने वाला पूंजीपति क्रान्ति के आगमन से भयभीत है, उसका सामना करने में डरता है

2- d पानी की क्रांतिकारी धारा सदैव पंक रूपी बुराई का नाश करती है

3- b सर्वहारा वर्ग का

4- d शोषक वर्ग

5- d उपरोक्त सभी

धनी, वज्र-गर्जन ----------जीवन के पारावार ।

1- b उन्हें अनुचित तरीकों से जमा की गई पूंजी की समाप्ति का भय होता है

2- a उन्हें क्रान्ति द्वारा होने वाले परिवर्तन का इंतजार है

3- c वे मौसम में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं

4- d शोषण से छुटकारा पाने के लिए

5- d समाज में एकता, भाईचारा और न्याय व्यवस्था की स्थापना के लिए

कविता पर आधारित प्रश्न (प्रत्येक उत्तर 60 शब्दों में) :- 2×3 = 6

(i) समाज का धनी वर्ग प्रभुत्वशाली और साधन सम्पन्न होता है । यह वर्ग पूंजीवादी और सामंती होता है । यह साधन सम्पन्न वर्ग गरीबों, वंचितों और पिछड़े वर्ग का शोषण कर अपनी तिजोरियाँ भरता है और आनंदित होता है । लेकिन जब दबी-कुचली जनता अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने लगती है तब इन्हें बही लगाने लगता है । ये पूंजीपति वर्ग किसी भी सामाजिक परिवर्तन के आने से डरता है ।

विप्लव के बादल जब घोर गर्जना करते हैं, तो धनी वर्ग अपने विनाश, मृत्यु तथा लूटने की आशंका से ग्रस्त हो जाता है। ऐसा धनी वर्ग अपने महल के शयन कक्ष में भी भयभीत दिखाई देता है । उसे अपने अस्तित्व पर खतरा दिखने लगता है । गरीबों पर अत्याचार और शोषण करके उसे अब तक जो फायदा हो रहा था, उसे उसका भी अंत होता दिखाई देने लगता है । क्रान्ति की प्रक्रिया जहां शोषितों, वंचितों को न्याय दिलाती है वहीं पूँजीपतियों के अत्याचारों का अंत भी करती है ।

(ii) अट्टालिकाएँ पूँजीपतियों के निवास स्थल को कहा गया है । ये अट्टालिकाएँ उनके लिए किसी महल से कम नहीं होतीं । इनमें निवास करने वाला पूंजीपति वर्ग क्रान्ति आने के भय से हमेशा आशंकित और डरा रहता है । उनका भय और आशंकाएँ इस अट्टालिका रूपी महल को महल नहीं रहने देते बल्कि आतंक भवन बना देते हैं । यह पूंजीपति अब तक गरीबों और कमजोर वर्ग का शोषण और दमन करके लाभ उठा रहा था, इसलिए जब यह शोषक वर्ग क्रान्ति का स्वर सुनता है तो अंदर तक आतंक से भर जाता है ।

(iii) क्रान्ति की गर्जना से शोषक वर्ग भयभीत हो जाता है । अब तक वह सर्वहारा वर्ग का शोषण करके अपनी तिजोरियाँ भर रहा था और आनंदित होता था । सामाजिक

क्रान्ति के आने से उसे अपने अधिकार और संपत्ति दोनों के छिन जाने की चिंता सताने लगती है । शोषित और वंचित वर्ग अन्याय के विरुद्ध एकजुट हो जाता हैं। उन्हें उनका खोया अधिकार और न्याय हासिल होता है और इस तरह पूँजीपतियों के शोषण का अंत होता है । इसी कारण पूंजीपति वर्ग सामाजिक बदलाव के पक्ष में नहीं होता । 'मुँह ढाकना' उनकी भयभीत मानसिकता का द्योतक है । वे अपने अधिकारों को खो देने से डरते हैं । इसी कारण ऊंचे और आलीशान महलों में रहकर भी वह भयभीत रहता है ।

कविता पर आधारित लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक उत्तर 40 शब्दों में) :- 2×2 = 4

(i) 'बादलराग;' कविता में बादलों का आह्वान कृषक कर रहे हैं। बादलों द्वारा की जाने वाली वर्षा से ही उनकी फसलों को नया जीवन मिलेगा । खेतों में अपार फसल होगी जिससे उनके जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आएगी । इसलिए वह बादल को क्रान्ति का प्रतीक मानकर उसका आह्वान करता है ।

(ii) विप्लव-रव' का अर्थ है- क्रान्ति का स्वर । क्रान्ति के स्वर से ही समाज में सकरात्मक परिवर्तन आता है । ऐसा परिवर्तन समाज के कजोर, वंचित और शोषण का शिकार हुए लोगों को न्याय दिलाने में सक्षम होता है ।

'छोटे ही हैं शोभा पाते' - ऐसा इसलिए कहा गया है क्योंकि सामाजिक क्रान्ति से पिछड़े लोगों को ही आगे बढ़ाने का मौका मिलता है ।

(iii) बादलों की रणभेरी रूपी गर्जना सुनकर धरती की गोद में सोए हुए अंकुर सजग हो जाते हैं । नवजीवन मिलने की आशा में वे अपना सिर उठाकर बादलों की देखने लगते हैं । बादलों द्वारा की जाने वाली जलवर्षा उनके लिए बहुत लाभकारी होती है।

(iv) छोटे पौधे सर्वहारा या शोषित वर्ग के प्रतीक हैं । क्रान्ति के कारण उन्हें लाभ पहुँचता है । जिस प्रकार छोटे पौधे वर्षा का जल पाकर तृप्त होते हैं उसी प्रकार सर्वहारा वर्ग क्रान्ति के परिणाम स्वरूप आने वाले न्याय से लाभान्वित होता है ।

(v) गगनस्पर्शी स्पर्धा धीर क्रान्ति वीर बादलों को कहा गया जो गर्मी के प्रतिकूल मौसम का नाश करने के लिए वीरों को दल की तरह आकाश में उमड़-घुमड़ करते दिखाई देते हैं । वे तेज गड़गड़ाहट के साथ बिजली गिराते हैं, तेज जलधार बरसाते हैं । इस प्रक्रिया में वे कई बार नष्ट होते हैं किन्तु फिर एकत्र होकर आकाश में छा जाते हैं और किसी वीर योद्धा की भांति मौसम के विरुद्ध युद्ध लड़ते रहते हैं ।

(vi) शोषक वर्ग हर प्रकार के साधन और सुविधा से सम्पन्न होते हुए भी क्रान्ति के भय से डरा रहता है क्योंकि उसे पता है कि उसने अब तक गरीबों का शोषण किया है । अतः जब सर्वहारा वर्ग क्रान्ति करेगा तो उनके शोषण का अंत हो जाएगा। उनकी सुख-शांति और अनुचित तरीके से कमाई गई संपत्ति नष्ट हो जाएगी । उनकी ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएँ नष्ट कर दी जाएंगी ।

पाठ -7 **कवितावली (उत्तर कांड से)**

लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

तुलसीदास

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,

चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी ।

पेटको पढत, गुन गढत, चढत गिरी,

अटत गहन-गन अहन अखेटकी ॥

ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,

पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी ।

'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,

आगि बडवागितें बडी है आगि पेटकी ॥

प्रसंग: तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली से लिया गया है। सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का विस्तार से वर्णन करते हैं।

व्याख्या: तुलसीदास कहते हैं कि मजदूर, किसान-परिवार, व्यापारी, भिखारी, नौकर-चाकर चोर दूत आदि सब पेट की भूख शांत करने के लिए अनेक उपाय बनाते हैं, पर्वतों पर चढते तथा शिकार के लिए दुर्गम वनों में मारा-मारा फिर रहे है। सब लोग पेट के लिए ही ऊँच-नीच कर्म कर रहे हैं और धर्म-अधर्म का ध्यान न रखते हुए अपने कर्म (धंधे) में लगे हुए है। यहाँ तक कि वे पेट भरने के लिए अपने बेटा-बेटी को बेचने के लिए मजबूर हैं। यह पेट की आग जंगल की आग से भी बढकर, लोगों के पेट की आग भयानक लगती है।

ऐसी भयंकर (विषम) आग को तो श्री राम रुपी घनश्याम की कृपा ही शांत कर सकता है, श्री राम नाम रुपी बादल ही पेट की आग को शांत कर सकते हैं। उन पर श्री राम की कृपा है तो उन्हें भूखे नहीं रहना पडता ।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. कवितावली किसकी रचना है।

(क) सूरदास

(ख) मीरा बाई

(ग) तुलसीदास

(घ) कबीर दास

उत्तर : तुलसीदास

2. कवितावली की भाषा -

(क) अवधी

(ख) फारसी

(ग) हिन्दी

(घ) ब्रज भाषा

उत्तर: ब्रज भाषा

3. घनश्याम किसे कहा गया है।

(क) श्रीराम

(ख) कृष्ण

(ग) रहीम

(घ) तुलसीदस

उत्तर: श्रीराम

4. गिरी शब्द का पर्याय क्या है।

(क) पर्वत

(ख) पौधे

(ग) वन

(घ) नदी

उत्तर: पर्वत

5. किस की कृपा से भूख के लिए भटकते लोगों को शांति मिल सकती है?

(क) कृष्ण की कृपा

(ख) देव की कृपा

(ग) राम की कृपा

(घ) हनुमान की कृपा

उत्तर: राम की कृपा

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि,

बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।

जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,

कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करि?'

बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,

साकरें साबैं पै, राम! रावरें कृपा करी।

दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!

दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी॥

प्रसंग: उपर्युक्त कवित्त में आर्थिक दुर्दशा का वर्णन करते हुए, इस कवित्त में उन्होंने अपने समय की गरीबी और बेरोजगारी का वर्णन किया गया है।

व्याख्या: बेरोजगारी के कारण अपने समय की विभिन्न वर्गों की स्थिति का चित्रण करते हुए कहते हैं कि किसान के पास खेती करने के साधन नही हैं। भिखारी को भीख तक

नहीं मिलती। व्यवसायियों (व्यापारियों) का व्यापार नहीं चलता तथा नौकरों को नौकरी नहीं मिल पा रही है। जीविकोपार्जन का कोई साधन न मिल पाने के कारण लोग दुखी है। एक-दूसरे से कहते है कि कहाँ जाएँ, क्या करे वेदों और पुराणों में भी यह कहा गया है कि संकट के समय में श्री राम स्वयं ही दुखी जनों पर कृपा करते हैं। दरिद्रता रुपी रावण ने इस दुनिया (संसार) को सब प्रकार से दबा रखा है। हे दरिद्रता को दूर करने वाले प्रभु-राम! आप संसार के समस्त लोगों को इस दरिद्रता से दूर करिए। आप ही संकट से उबार सकते हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. बनिक शब्द का अर्थहै -

(क) व्यापारी

(ख) किसान

(ग) मजदूर

(घ) चोर

उत्तर: व्यापारी

2. समाज में चारों ओर किसका बोल बाला है।

(क) प्रेम और भाईचारे का

(ख) गरीबी और बेकारी

(ग) घृणा और लडाई का

(घ) अमीरी और गरीबी

उत्तर: (ख) गरीबी और बेकारी

3. वेदों और पुराणों के अनुसार संकट के समय कौन सहायत करता है।

(क) नेता लोग

(ख) अधिकारी

(ग) देवता

(घ) प्रभुराम

उत्तर: प्रभुराम

4. व्यापार किसको नहीं है।

(क) अधिकारियों को

(ख) नेता लोगों को

(ग) व्यवसायियों

(घ) बेरोजगारों को

उत्तर: व्यवसायियों

5. दरिद्रता को दूर करने वाले -

(क) हनुमान

(ख) रावण

(ग) लक्ष्मण

(घ) राम

उत्तर: राम

धुत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।

काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ॥

तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।

माँगि कै खैबो, मसित को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।

प्रसंग: उपर्युक्त सवैया तुलसीदास जी द्वारा रचित कवितावली से लिया गया है। भक्ति की रचनात्मक भूमिका को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि भक्त हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया गया है। जिससे समाज में व्याप्त जात-पात एवं धर्म के आडंबरों का साहस उत्पन्न होता है।

व्याख्या: कवि इस दुनिया के लोगों को साफ कहते हैं - चाहे धूर्त कहो या अवधूत योगी कहो, राजपूत या जुलाहा कहे उन्हें इसकी कोई फर्क नहीं पडता क्योंकि उन्हें न तो

किसी की बेटी से अपना बेटा नहीं ब्याहना है अर्थात उन्हें किसी से वैवाहिक संबंध नहीं बनाने है। जिससे किसी की जाति भ्रष्ट (बिगाड) हो। तुलसीदास जी कहते है कि वे तो पूरे संसार में राम के सेवक के रुप में प्रसिद्ध हो गए हैं। उन पर किसी की बातों का मुझे कोई फर्क नहीं पडता। मैं तो भीख माँगकर खाता हूँ और किसी मसजिद में जाकर सो जाता हूँ। उन्हें न किसी से कुछ लेना न कुछ देना है। श्री राम की भक्ति के अतिरिक्त कवि को किसी से कोई लगाव (सरोकार) नहीं है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. 'अवधूत' शब्द का अर्थ क्या है -

(क) मक्कार

(ख) किसी की

(ग) बिगाडना

(घ) योगी

2. श्रीराम सेवक के रुप में कौन प्रसिद्ध हो गए।

(क) सूरदास

(ख) कबीरदास

(ग) तुलसीदास

(घ) रसखान

3. तुलसीदास किसके गुलाम है।

(क) श्रीराम

(ख) हनुमान

(ग) रावण

(घ) लक्ष्मण

4. 'कहौ कोऊ... बेटी सों बेटा न ब्याहब में कौन सा अलंकार है

(क) रुपक

(ख) यमक

(ग) उपमा

(घ) अनुप्रास

5. तुलसीदास अपने किस रुप पर गर्व करतें हैं।

(क) भक्त-रुप

(ख) भिक्षावृत्ति

(ग) मान-मर्यादा

(घ) बेटा-बेटी

लक्ष्मण-मूच्र्छा और राम का विलाप

तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहऊँ नाथ तुरंत।

अस कहि आयसु पाइ पद दि चलेउ हनुमंत॥

भरत बाहु बल सील गुन प्रहु पद प्रीति अपार।

मन महुँ जात सराहत पुनि पुनि पवनकुमार॥

प्रसंग: 'लक्ष्मण-मूच्र्छा और राम का विलाप' तुलसीदास जी द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'लंका-कांड' से लिया गया है। भाई के शोक में राम का विलाप प्रलाप में बदल जाता है।

व्याख्या: हे प्रभु मैं आपके प्रताप (पौरुष और विरता) का ध्यान ह्रदय में रखकर तुरंत चला जाऊँगा। ऎसा कहकर हनुमान ने भरत से आज्ञा माँगी, भरत के चरणों की वंदना करके हनुमान चले। भरत जी के बाहुबल, शील आदि गुणों तथा प्रभु श्रीराम के चरणों में अपार प्रेम की सराहना बारंबार मन-ही-मन करते हुए पवन पुत्र हनुमान चले जा रहे हैं।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. लक्ष्मण-मूच्र्छा और राम का विलाप किसकी रचना है -

(क) कबीरदास

(ख) मीरा बाई

(ग) तुलसीदस

(घ) सूरदास

उत्तर: तुलसीदस

2. उर्युक्त काव्यांश में किस भाषा का प्रयोग हुआ है -

(क) अवधी

(ख) ब्रज

(ग) हिन्दी

(घ) खडीबोली

उत्तर: अवधी

3. लक्ष्मण-मूच्छा और राम का विलाप - रामचरित मानस के किस कांड से लिया गया है।

(क) अयोध्या कांड

(ख) लंका कांड

(ग) सुंदर कांड

(घ) किष्किंधा कांड

उत्तर: लंका कांड

4. आयसु शब्द का क्या अर्थ है -

(क) आ गया

(ख) अवजा

(ग) आजा

(घ) प्रसन्न

उत्तर: आजा

5. भाई के शोक में कौन विलाप कर रहे हैं -

(क) राम

(ख) लक्ष्मण

(ग) हनुमान

(घ) वानर सेना

उत्तर: राम

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥

अर्ध राति गै कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लाअऊ॥

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥

मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पितु अचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

प्रसंग: लक्ष्मण को मूर्च्छित पडे देखकर श्रीराम साधारण मनुष्य की भांति विलाप करते हैं।

व्याख्या: लंका में मुर्च्छित अवस्था में पडे लक्ष्मण को देखकर श्रीराम अधीर होकर शोक-भरे वचन कहने लगे। आधी रात बीत गई है, तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख सकते थे। तुम्हारा स्वभाव सदा से ही ऎसा कोमल और मृदु रहा है। मेरे हित के लिए तुमने माता-पिता को छोडकर मेरे साथ वनवास में चले आए। प्रिय भाई लक्ष्मण! तुम्हारा वह पहले जैसा प्रेम अब कहाँ है, तुम मेरे व्याकुलतापूर्ण वचन सुनकर उठते क्यों नहीं! यदि मैं यह जानता कि वन में तुझते बिछुडना पड़ेगा तो मैं पिता का वचन नहीं मानता। श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण को मूर्च्छित देख साधारण मानव की तरह विलाप करने लगे।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. अर्ध रात्रि गई कपि नहि आयउ - किसके बारे में कहा गया है।

(क) सुग्रीव

(ख) हनुमान

(घ) भरत

(घ) अंगद

उत्तर: हनुमान

2. 'उर' शब्द का अर्थ है -

(क) हाथ

(ख) पैर

(ग) हृदय

(घ) चेहरा

उत्तर: हृदय

३. लंका में मूर्च्छित अवस्था में कौन पडे है -

(क) लक्ष्मण

(ख) हनुमान

(ग) भरत

(घ) वानर सेना

उत्तर: लक्ष्मण

4. साधारण मानव की भाँति कौन विलाप कर रहे हैं -

(क) राम

(ख) लक्ष्मण

(ग) रावण

(घ) कुंभकरण

उत्तर: राम

5. तुम माता-पिता को छोडकर मेरे साथ वनवास में चले आए-कौन कह रहे हैं-

(क) हनुमान

(ख) भरत

(ग) राम

(घ) लक्ष्मण

उत्तर: राम

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥

अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड दैव जिआवै मोही ॥

जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नाइ हानि बिसेत छति नाहीं॥

प्रसंग: श्रीराम एक साधारण मानव की तरह विलाप करते हुए कहते हैं -

व्याख्या: पुत्र, धन, स्त्री, घर और परिवार तो इस संसार में बार-बार मिलतें है किंतु सहोदर भाई बार-बार नहीं मिलते। संसार में पुत्र, धन, पत्नी, घर और परिवार समाप्त हो जाने के बाद पुन: प्राप्त हो सकते है किंतु सगा भाई दोबारा नहीं मोल सकता। जिस प्रकार पक्षी पंखों के बिना दीन-हिन हो जाता है, मणि के बिना साँप, सूँड के बिना हाथी दीन हो जाते है, वैसे ही यदि भाग्य मुझे जीवित रखें तो तुम्हारे बिना मेरा जीवन भी ऎसा ही होगा स्त्री यानी पत्नी के लिए भाई को खोकर, मैं अयोध्या में कौन-सा मुँह लेकर जाऊँगा। इस संसार के लोग कहेंगे कि देखो, इसने अपनी पत्नी के लिए सगे भाई को गँवा दिया। मैं नारी को खोने का अपयश तो फिर भी सह लूँगा। इस परिस्थिति में पत्नी की हानि उतनी बडी बात नहीं है, जितनी कि भाई को खोना।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. पक्षी किसके बिना दीन-हिन है -

(क) पूँछ

(ख) पंख

(ग) सूँड

(घ) पैर

उत्तर: पंख

2. साँप का जीवन किसके बिना असंभव है -

(क) नागमणि

(ख) फण

(ग) विष

(घ) अमृत

उत्तर: नागमणि

3. किसकी हानि विशेष नहीं है।

(क) भाई

(ख) पिता

(ग) पत्नी

(घ) माता

उत्तर: पत्नी

4. नारि हानि विशेष छति नहीं - छति का अर्थ है -

(क) लाभ

(ख) हानि

(ग) नष्ट

(घ) कमाई

उत्तर: हानि

5. मैं अयोध्या में कौन-सा मुँह लेकर जाऊँगा - किसने कहा है।

(क) श्रीराम

(ख) हनुमान

(ग) लक्ष्मण

(घ) भरत

उत्तर: श्रीराम

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥

निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा॥

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। स बिधि सुखद परम हित जानी॥

उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥

अहु बिधि सोचत सोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन॥

उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपाल देखाई॥

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर

आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥

प्रसंग: श्रीराम लक्ष्मण के शोक में डुबे हुए तरह-तरह से विलाप कर रहे थे। तभी हनुमान जी ने संजीवनी लेकर आ जाते हैं।

व्याख्या: लक्ष्मण को मूर्च्छित अवस्था में पडा देखकर शोक में डूबे श्रीराम कहते हैं कि हे भाई! अब तो मेरा निष्ठुर एवं कठोर हृदय यह अपयश और तुम्हारा शोक दोनों ही सहन करेगा। तुम अपनी माता के इकलौते पुत्र हो और उसके प्राणों के आधार हो। तुम्हारे बिना तुम्हारे माँ भी जीवित नहीं रह पाएगी। तुम्हें हर प्रकार से सुखदायी और हितैषी मानकर ही तुम्हारी माता ने तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में सौंपा था। मैं तुम्हारे बिना उन्हें जाकर क्या उत्तर दूँगा। तुम उठकर मुझे सिखाते (समझाते) क्यों नहीं? शोक से छुटकारा दिलाने के लिए श्रीराम कई प्रकार से सोचते हैं। उनके कमल की पँखुडी के समान नयनों से शोक के आँसुओं का जल बह रहा है। शिवजी कहते हैं कि हे उमा! श्री रघुनाथ जी एक संपूर्ण है, अखंड है,

अव्दितीय है, भक्तों पर कृपा करने वाले है। भगवान ने लीला करके मनुष्य जैसी दशा दिखाई है।

प्रभु के विलाप को सुनकर वानरों का समूह व्याकुल हो उठा। तभी हनुमान जी संजीवनी बूटी के साथ इस प्रकार आ गए जैसे कि करुण रस में वीर रस आ गया है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. मूर्च्छित अवस्था में कौन पडा है -

(क) भरत

(ख) राम

(ग) लक्ष्मण

(घ) दशरथ

उत्तर: लक्ष्मण

2. तुम अपनी माता के इकलौते पुत्र हो किसने कहा है -

(क) तुलसीदास

(ख) राम

(ग) लक्ष्मण

(घ) हनुमान

उत्तर: राम

3. कवि ने राम के किस रुप का वर्णन किया है -

(क) ईश्वर रुप का

(ख) मानव रुप का

(ग) देवता रुप का

(घ) राजा का रुप

उत्तर: मानव रुप का

4. श्रीराम के विलाप को सुनकर कौन विकल हो गए।

(क) हनुमान

(ख) वानर

(ग) दशानन

(घ) भरत

उत्तर: वानर

5. हनुमान संजीवनी बूटी लेकर आए कवि ने करुण रस में किस रस के समावेश की कल्पना की है।

(क) वीर रस

(ख) हास्य रस

(ग) रौद्र रस

(घ) करुणा रस

उत्तर: वीर रस

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना॥

तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥

हृदयँ लाइ प्रभु हेंटेउ भ्राता। हरषे सकल हालु कपि ब्राता॥

कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा॥

यह बृतांत दसानन सुनेऊ। अति बिषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ॥

ब्याकुल कंभकरन पहिं आवा। बिबिध जतन करि ताहि जगावा॥

प्रसंग: हनुमान जी के आने से करुणा का प्रसंग हर्ष में परिवर्तित हो गया। श्रीराम ने हनुमान से कृतज्ञता व्यक्त की।

व्याख्या: हनुमान जी के संजीवनी बूटी लेकर आने पर श्रीराम ने प्रसन्न होकर उनसे भेंट की। श्रीराम हनुमान के प्रति बहुत कृतज्ञ हुए। हनुमान को गले लगाकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। तब वैद्य ने तुरंत ही लक्ष्मण का उपचार किया। उस उपचार से लक्ष्मण मूर्च्छा से उठ बैठे और सभी बहुत प्रसन्न हो उठे। श्रीराम ने भाई लक्ष्मण को गले से लगाकर मिले। यह मिलन को देखकर वहाँ उपस्थित सभी वानरों और भालुओं का समुह प्रसन्न हो उठा। हनुमान ने वैद्य को उस स्थान पर पहुँचा दिया जहाँ से वह उन्हें लाया था। यह समाचार जब रावण ने सुना कि लक्ष्मण जीवित है तो उसने अत्यंत विषादित होते हुए पछताने लगे। वह व्याकुल होकर कुंभकरण के पास गया और कई तरह के उपाय करके कुंभकरण को जगाया। भाव यह है कि श्रीराम के भाई लक्ष्मण के जीवित होने का समाचार पाकर रावण अत्यंत व्याकुल हो उठा।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. मूर्च्छा से कौन उठ बैठे।

(क) वैद्य

(ख) हनुमान

(ग) भरत

(घ) लक्ष्मण

उत्तर: लक्ष्मण

2. हनुमान जी के संजीवनी बूटी लेकर आने पर कौन प्रसन्न हुए।

(क) लक्ष्मण

(ख) भरत

(ग) श्रीराम

(घ) रावण

उत्तर: श्रीराम

3. लक्ष्मण का उपचार किसने किया।

(क) श्रीराम

(ख) वैद्य

(ग) रावण

(घ) कुँभकरण

उत्तर: वैध

4. श्रीराम ने किसको गले से लगाकर मिले।

(क) लक्ष्मण

(ख) हनुमान

(ग) सुग्रीव

(घ) वैद्य

उत्तर: लक्ष्मण

5. **लक्ष्मण के जीवित होने का समाचार पाकर कौन अत्यंत व्याकुल हो उठा।**

(क) अंगद

(ख) वैद्य

(ग) हनुमान

(घ) रावण

उत्तर: रावण

जागा निसिचर देखिअ कैसा। मानहुँ कालु देह धरि बैसा॥

कुंभकरन बूझा कहु भाई। काहे तव मुख रहे सुखाई॥

कथा कही सब तेहिं अभिम्मानी। जेहि प्रकार सीता हरि आनी॥

तात कपिन्ह सब्ब निसिचर मारे। महा महा जोधा संघारे॥

दुर्मुख सुररिपु मनुज अहारी। भट अतिकाय अकंपन भारी॥

अपर महोदर आदिक बीरा। परे समर महि सब रनधीरा॥

सुनि दसकंधर बचन त कुंहकरन बिलखान।

जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान॥

प्रसंग: रावन द्वारा अपने भाई कुंभकरण को जगाने और सारी बातें अपने भाई को विस्तार से वर्णन किया गया है।

व्याख्या: रावण के बहुत प्रयास के बाद कुंभकरण उठ बैठा। जागने पर कुंभकरण ऐसे दिखाई पड रहा था कि मानो साक्षात काल (यमराज) देह धारण करके बैठा हो। कुंभकरण ने अपने भाई रावण से पूछा - हे भाई! कहो तो, तुम्हारे मुख क्यों सूख रहें हैं? तब रावण ने घमंड के साथ वह सारी कथा सुनाई कि कैसे वह सीता का अपहरण कर लाया था। उसने कहा - भाई कुंभकरण, वानरों ने सभी राक्षसों को मार डाला। बडे-बडे योद्धाओं का भी संहार कर डाला है। दुर्मुख, देवशत्रु, मनुष्य-भक्षक (नरांतक), महायोद्धा, अतिकाय, भारी-भरकम अकंपन और महोदर आदि राक्षस तथा युद्ध में अविचल रहने वाले वीर रणभूमि में मारे गए हैं।

तब रावण के वचन सुनकर कुंभकरण दुखी होकर बोला - अरे मूर्ख! जगत-जननी सीता का अपहरण करके भी अपना कल्याण चाहता है।

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. उपर्युक्त काव्यांश में रावण की सेना के कौन-कौन से वीर मारे गए।

(क) नरान्तक

(ख) महिदर

(ग) उपरोक्त सभी

(घ) देवशत्रु

उत्तर: उपरोक्त सभी

2. सीता का अपहरण किसने किया?

(क) रावण

(ख) देवशत्रु

(ग) विभीषण

(घ) मेघनाथ

उत्तर: रावण

3. रावण के सभी महान योद्धाओं को किसने मारा।

(क) राम

(ख) लक्ष्मण

(ग) हनुमान

(घ) मेघनाथ

उत्तर: हनुमान

4. सुनी दसकंधर बचन तब कंभकरण बिलखान - पंक्ति में दसकंधर शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है।

(क) मेघनाथ

(ख) कुंभकर्ण

(ग) रावण

(घ) हनुमान

उत्तर: रावण

5. जगदंबा शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है।

(क) लक्ष्मी

(ख) सीता

(ग) मंदोदरी

(घ) सूर्पणखा

उत्तर: सीता

अन्य प्रश्नोत्तर:

1. कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदस को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

तुलसीदास के युग में समाज में आर्थिक विषमता व्याप्त थी। पेट की आग को शांत करने के लिए लोग अच्छे बुरे कर्म करतें है। उनके युग में बेकारी और गरीबी के कारण व्याकुल जनता एक-दूसरे से पूछती है कि हम कहाँ जाएँ और क्या करें। श्रीराम-भक्ति पेट की आग बुझाने वाली जीवन के यर्थाथ संकटों का समाधान करने वाले है। तुलसीदस को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।

2. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है - तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग सत्य है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।

तुलसीदस कहते हैं कि इस समस्या का समाधान राम-भक्ति में दिखाई पडता है।राम को पेट की आग बुझाने वाला मानना न तो तुलसी का युग-सत्य था और न ही आज का युग सत्य है। इस युग में भी गरीबी और बेकारी की समस्या से जूझते लोगों की पेट की आग नहीं बुझती तो भगवान के भरोसे छोड देते हैं।

3. तुलसी ने यह कहने की जरुरत क्यों समझी- धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ / काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।

इस सवैया में काहू के बेटा सों बेटी न ब्याहब कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता?

तुलसीदस के युग में समाज में जात-पाँत और धार्मिक आधार पर भेदभाव प्रचलित था। 'काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब! बेटे की शादी श्रेष्ठ परिवार में करने मंशा रही है। पितृ प्रधान समाज में पुत्र ही पारिवारिक परंपरा तथा जातिगत प्रक्रिया को आगे बढ़ाने वाला होता है। विवाह के बाद बेटी को अपने पिता की जाति छोड़कर पति की जाति अपनानी पड़ती है।

4. धूत कहौ.... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखलाई पडने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?

सच्ची भक्ति भावना तथा स्वाभिमानी स्वहाव का परिचय मिलता है। उन्होंने अपने समर्पण को प्रकट करने के लिए गुलाम शब्द का प्रयोग किया गया है। उन्हें किसी से कोई लेना-देना नहीं है।

5. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नर लीला की अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रुप में रचा है। क्या आप इससे सहमत हैं? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

इस आत से सहमत है कि लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने से मूर्च्छित हो जाते हैं। राम उन्हें देखकर सामान्य मनुष्य की भाँति व्याकुल हो उटते हैं। सामान्य मानव की भाँति राम अपना धैर्य खो देते हैं। यदि उन्हें ज्ञात होता कि वन में भाई से हाथ धोना पडेगा तो वे पिता की आज्ञा को नहीं मानते। राम द्वारा शोक की स्थिति में कही गई बातें सच्ची मानवीय अनुभूति की अभिव्यक्ति है।

6. शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

वैद्य ने बताया था कि भोर होने से पूर्व संजीवनी बूटी आ गई तो लक्ष्मण का जीवन संभव है, वरना मृत्यु हो सकती है। अर्ध-रात्रि तक हनुमान के नहीं लौटने से राम अत्यंत दुखी हुए, उन्हें भाई का बिछोह संतप्त कर रहा था। चारों ओर करुण रस का प्रवाह था, उसी समय हनुमान द्रोण पर्वत के साथ लंका पहुँच गए। उनके पहुँचते ही वानर और भालुओं में हर्ष का संचार हो गया। करुण रस की जगह वीर रस का प्रवाह हुआ।

7. जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नाइ हानि बिसेत छति नाहीं॥

भाई के शोक में डुबे राम के इस प्रलाप-वचन में स्त्री के प्रति कैसा सामाजिक दृष्टिकोण संभावित है?

पुरुष-प्रधान समाज में नारी की तुलना में पुरुष को अधिक महत्व दिया गया है। समाज की दृष्टि में पत्नी की हानि को विशेष नहीं माना गया है। राम को चिंता है कि लक्ष्मण को कुछ हो जाता है तो संसार के लोग कहेंगे कि पत्नी के लिए प्रिय भाई को गँवा दिया है।

पाठ- 8 रुबाइयाँ

-फिराक गोरखपुरी

रुबाई उर्दू और फारसी का छंद या लेखन शैली है, जिसमें 4 पंक्तियां होती है। इसकी पहली दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है। प्रस्तुत

रुबाइयाँ वात्सल्य रस से युक्त है। इसमें नन्हे शिशु की अठखेलियां, मां बेटे की कुछ मनमोहक अदाएं तथा रक्षाबंधन का दृश्य प्रस्तुत है।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए-

1.आँगन में लिये चाँद के टुकड़े को खड़ी

हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी

रह-रह के हवा में जो लोका देती है।

गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

1. कवि ने किसकी तुलना चाँद से की है?

a. आँगन
b. माँ
c. बच्चा
d. हवा

2. माँ अपने बच्चे को क्या कर रही है?

a. नहा रही है
b. लोका देती है
c. खिलौना देती है
d. चाँद दिखा रही है

3. माँ अपने चाँद के टुकड़े को किस पर झुलाती है?

a. झूले पर
b. अपने हाथ पर
c. पेड़ की डाली पर
d. इनमें से कोई नहीं

4. इसमें कौनसा रस झलकता है ?

a. करुण
b. वात्सल्य
c. शांत

d. श्रृंगार

5. प्रस्तुत काव्यांश के रचयिता कौन हैं?

a. फिराक गोरखपुरी
b. रघुवीर सहाय
c. उमाशंकर जोशी
d. आलोक धन्वा

उत्तर -

1.c बच्चा

2.b लोका देती है

3.b अपने हाथ पर

4.b वात्सल्य

5.a फिराक गोरखपुरी

2. दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए

प्रश्न-

1. रूपवती किसके लिए प्रयुक्त हैं?

a. पड़ोसिन
b. देवी- देवना
c. कवि
d. घर की मालकिन

2. दमक से क्या तात्पर्य है ?

a. चमक

b. आभा

c. शोभा

d. उपरोक्त सभी

3. माँ दिए कहाँ रख देती है?

a. मंदिर में

b. घर में

c. घरौंदे में

d. आँगन में

4.किस छंद का प्रयोग हुआ है ?

a. सवैया

b. दोहा

c. चौपाई

d. रुबाई

5. खिलौने किससे बने हैँ ?

a. चीनी

b. लकड़ी

c. लाख

d. चाँदी

उत्तर

1.d घर की मालकिन

2.d उपरोक्त सभी

3.c घरौंदे में

4.d रुबाई

5.a चीनी

<u>लघूत्तरात्मक प्रश्न</u>

1. बच्चा 'ठुनक रहा है ज़िदयाया है'- क्यों ?

बच्चे के ठुनकने और ज़िंदयाने में उसकी बाल-सुलभ हठ एवं मनपसन्द चीज प्राप्त करने की चेष्टा प्रदर्शित होती है। वह अपनी माँ से चाँद लेने केलिए हठ कर रहा है, जो उसे अच्छी लग रही है।

2.शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है रक्षाबंधन का त्योहार भाई-बहन के मधुर सम्बन्ध को प्रदर्शित करने वाला एक पावन पर्व है। यह त्योहार सावन मास में आता है, इस समय काली-काली घटा में बिजली चमकती रहती है। यहाँ बिजली प्रसन्नता का प्रतीक है।इसी प्रकार राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते रहते हैं। ये लच्छे भी प्रसन्नता के ही प्रतीक हैं जिनमें रक्षाबंधन जैसे पावन पर्व पर बहन अपने भाई को राखी बाँधती है।

3.बच्चा खिलखिलाकर हँसने का क्या कारण है ?

माँ अपने चाँद जैसी सुंदर संतान को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे अपने हाथों पर झुलाती हुई हवा में उछाल देती है। इससे बच्चा खुश होकर खिलखिलाकर हँसने लगता है।

(4) बच्चा कब अपनी माँ को प्यार से देखता है?

माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है। पानी के छलकने से बच्चा प्रसन्न होता है। जब माँ बच्चे को अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है तब वह अपनी माँ को बहुत प्यार से देखता है।

पाठ- 9 छोटा मेरा खेत

- उमाशंकर जोशी.

छोटा मेरा खेत कविता में कवि उमाशंकर जोशी कवि कर्म की तुलना खेती से करते हैं । कवि के लिए कागज का पन्ना ही छोटा चौकोना खेत है। इस खेत में भावनात्मक आंधी द्वारा किसी क्षण एक विचार रूपी बीज बोया जाता है। कल्पना रूपी रसायनों को पीकर यह विकसित होता है। उसमें से शब्द रूपी अंकुर निकल आते हैं और रचना धीरे-धीरे अपने पूर्ण स्वरूप को ग्रहण करती है। कृषि कर्म में जिस प्रकार खेत पल्लवित- पुष्पित होता है वैसे ही भाव ,रस ,अलंकार, एवं छंद से कविता अपना सुंदर आकार ग्रहण करती है। उसमें अलौकिक आनंद प्रदान करने वाले फल झूमने लगते हैं। एक क्षण में होने वाली रोपाई

द्वारा साहित्य कृति से अलौकिक रस धारा फूटती है। खेती और कवि कर्म में अंतर यह है कि जहां फसल कुछ समय के बाद समाप्त होता है, वहाँ कालजयी रचनाएँ हर समय और हर काल में अपना आनंद बिखेरती रहती है । ऐसी रचनाएँ, अक्षय पात्र के समान सीमातीत और कालातीत होकर मन में अमृत की धारा बहाती रहती है।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

I)छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना,

कोई अंधड़ कहीं से आया

क्षण का बीज वहाँ बोया गया।

कल्पना के रसायनों को पी

बीज गल गया निःशेष;

शब्द के अंकुर फूटे,

पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष ।

1. कवि के लिए खेत क्या है?

a जमीन का एक टुकड़ा.

b कागज का एक पन्ना.

c. मैदान.

d पूरा देश.

2 रचना के संदर्भ में अंधड़ से क्या तात्पर्य है ?

a आँधी .

b भावना का आवेग.

c शब्द.

d अलंकार.

3 कविता के संदर्भ में रसायन किसका प्रतीक है?

a शब्द

b अलंकार

c कल्पना

d रस.

4.कविता के संदर्भ में अंकुर से क्या तात्पर्य है?

a कल्पना

b भाव

c अलंकार

d शब्द.

कॉलम 1 कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए.

कॉलम 1		कॉलम 2	
1	शब्द	(i)	आँधी
2	विचार	(ii)	अंकुर
3	भावात्मक आवेग	(iii)	बीज

a. 1-(ii), 2-(iii), 3- (i)

b. 1- (i), 2-(iii), 3 -(ii)

c. 1- (i), 2 -(iii), 3 -(ii)

d. 1- (i), 2 -(ii) ,3-(iii)

उत्तर - 1 -(b), 2 -(b),3 -(c),4-(d),5-(a)

II) झूमने लगे फल,

रस अलौकिक,

अमृत धाराएँ फूटतीं

रोपाई क्षण की,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

रस का अक्षय पात्र सदा का

छोटा मेरा खेत चौकोना।

1 **कथन(A)**- उत्तम साहित्य रचना रस के अक्षय पात्र के समान है|

कारण(R) - साहित्य रचना देश और काल से परे होकर आनंद बिखेरती रहती है।

a) कथन(A) तथा कारण(R) और दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है ।

c) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

d) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) इसकी गलत व्याख्या करता है ।

2. 'रोपाई क्षण की' से कवि का क्या आशय है.

a) कविता क्षणभंगुर है.

b) एक क्षण के भावावेश में कविता लेखन होता है।

c)कविता लेखन के लिए अभ्यास की जरूरत है|

d) कविता लेखन सबके बस की बात नहीं है|

3. 'कटाई अनंतता की' से क्या तात्पर्य है.

a) उत्तम काव्य रचना कालजयी होती है|

b) कविता का आनंद एक सीमित समय के लिए होता है|

c) खेती की कटाई अनंतकाल तक है।

d) कविता अलंकारों से पूर्ण होती है |

4. काव्यांश के आधार पर बताइए कि वह कौन सी चीज़ है, जो लुटते रहने पर भी कम नहीं होती?

a) फसल

b) धन -दौलत

c) कविता से प्राप्त आनंद

d) सौंदर्य

5. रस का अक्षयपात्र किसे कहा गया है?

a) उत्तम साहित्यकृति

b) खेत

c) कवि

d) जन्मभूमि

उत्तर - 1 -(a), 2 -(b),3 -(a),4-(c),5-(a)

प्रश्नोत्तर

1) छोटे चौकोने खेत को कागज का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

कविता में कवि कर्म की तुलना खेती से की गई है| कागज का पन्ना और खेत दोनों चौकोर हैं| खेत में बीज डाला जाता है, पानी और रसायन का सहारा लेकर पौधे पल्लवित होते हैं और उसमें फल निकल आते हैं । उसी प्रकार कवि के मन में भावनात्मक आंधी द्वारा विचार रूपी बीज बोया जाता है। कल्पना रूपी रसायन को पीकर वह विकसित होता है और उसमें शब्द रूपी अंकुर फूटते हैं तथा आनंद रूपी फल निकल आते हैं।

2) रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या है?

रचना के संदर्भ में अंधड़ से तात्पर्य भावनात्मक आंधी से है| कभी कोई घटना, वस्तु या व्यक्ति हमारे मन को तीव्र रूप से प्रभावित करता है और एक साहित्य सृष्टि का कारण बनता है| बीज का तात्पर्य विचार से हैं,जिसके आधार पर कविता अपना रूप ग्रहण करती है|

3) 'रस का अक्षय पात्र' से कवि ने रचना कर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

कवि ने कालजयी उत्कृष्ट रचनाओं को रस का अक्षय पात्र कहा है क्योंकि ये रचनाएँ सीमातीत और कालातीत हैं। ऐसी रचनाएँ देश काल की सीमाओं से ऊपर उठकर लोगों को आनंद प्रदान करती है। काव्य रस का आस्वादन चाहे जितना भी किया जाए या बांटा जाए वह कभी कम नहीं होता।

छोटा मेरा खेत
1
कवि कर्म और खेती की तुलना
2
कागज रूपी चौकोना खेत
3
भावना की आंधी से विचार रूपी बीज बोया गया
4
कल्पना के रसायनों को पीकर विचार का विकसित होना।
5
शब्द रूपी अंकुर निकल आना।
6
आनंद रूपी फल।
7
फसल सीमित समय के लिए।
8
उत्तम काव्य रचना कालजयी।
9
रस के अक्षय पात्र के समान सदा आनंद प्रदान करती रहती।

बगुलों के पंख

कवि - उमा शंकर जोशी

नभ में पाँती-बाँधे बगुलों के पंख,

चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखे।

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया,

तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया

हौले-हौले जाती मुझे बाँध निज माया से।

उसे कोई तनिक रोक रक्खो।

वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखे

नभ में पाँती-बँधी बगुलों के पाँखें।

कविता का सार - कवि का कथन है कि असीम आकाश में बगुले पंक्तिबद्ध होकर उड़ रहे हैं। इन बगुलों के सफ़ेद पंख अत्यंत सुंदर एवं मनमोहक हैं। वे सफ़ेद पंखों से युक्त आकाश में उड़ते बगुले मेरी आँखों को चुरा लिए जा रहे हैं। अर्थात् कवि का कहने का अभिप्राय यह है कि इन नयनाभिराम पंक्ति में बंधे बगुलों के सुंदर-सुंदर पंखों ने मेरे नेत्रों को चुरा लिया है। अर्थात् उनकी अद्भुत सुंदरता मेरी आँखों में बस गई है। इन काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते हुए बगुलों के पंख काले बादलों के ऊपर तैरती साँझ को श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं।

कवि कहता है कि वह दृश्य इतना सुंदर है कि जो मुझे अपने माया रूपी सौंदर्य से धीरे-धीरे अपने आकर्षण में बाँध रहा है अर्थात् मुझे अपनी ओर खींच रहा है। कवि आग्रह करते हैं कि कोई उस माया को थोड़ा-सा रोके। यह आकाश में उड़ते पंक्तिबद्ध बगुलों के पंखों को सुंदरता निरंतर मेरी आँखों को चुरा कर लिए जाती है अर्थात् उन सफ़ेद बगुलों का पंक्तिबद्ध सौंदर्य मुझे अपनी ओर आकर्षित कर रहा है और मेरी आँखें उसी ओर लगी हुई हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कथन और कारण पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए।

कथन- चुराए लिए जाती वे मेरी आंखें।

कारण- नभ में पांती-बांधे बगुलों के पंख।

(क) कथन कारण का अनुसरण नहीं करता है।

(ख) कथन कारण से सम्बंध नहीं रखता है।

(ग) कथन कारण की सही व्याख्या करतीहै।

(घ) इसमें से कोई नहीं

2. कविता और कवि के नाम का सही मेल पहचानिए।

(क) छोटा मेरा खेत और रघुवीर सहाय

(ख) बगुलों के पंख और उमाशंकर जोशी

(ग) उषा और शमशेर बहादुर सिंह

(घ) बगुलों के पंख और महावीर प्रसाद

3. आकाश में पंक्ति बांधे कौन जा रहे हैं ?

(क) कबूतर

(ख) कौवे

(ग) बगुले

(घ) गौरेया

4. कवि बगुलों को देखकर क्या करने को कहता है ?

(क) बगुलों को रोकने के लिए

(ख) बगुलों को करीब से देखना चाहता था

(ग) क और ख दोनों

(ग) इनमें से कोई नहीं

5. पंक्ति-बाँधे बगुलों के पंख, कवि की क्या चुराए लिए जाती हैं ?

(क) हृदय

(ख) आंखें

(ग) कीमती सामान

(घ) छत पर डाला कपड़ा

6. कवि किस दृश्य पर मुग्ध हैं?

(क) आकाश में छाए काले बादलों के बीच सफेद बगुले पंक्ति बनाकर उड़ रहे हैं।

(ख) बारिश को देख कर

(ग) वनों की सुंदरता देख कर

(घ) आकाश में तारों को देखकर

7. बगुलों के पंख काले बादलों के ऊपर तैरते किसके समान प्रतीत होते हैं?

(क) प्रात:काल की सुंदर काया

(ख) सायंकाल की पीली काया

(ग) रात्रि की काली काया

(घ) साँझ की श्वेत काया

8. 'बगुलों के पंख' कविता में साँझ की सतेज श्वेत काया क्या कर रही है?

(क) तैर रही है

(ख) उड़ रही है

(ग) भाग रही है

(घ) नहा रही है

9. आकाश किससे भरा हुआ है?

(क) सफेद बादलों से

(ख) संतरी बादलों से

(ग) काले बादलों से

(घ) स्लेटी बादलों से

10. हौले-हौले मैं कौन सा अलंकार है?

(क) पुनरुक्ति अलंकार

(ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

(ग) उपमा अलंकार

(घ) रूपक अलंकार

अन्य प्रश्न

1. काले-काले बादलों के बीच उड़ते सफ़ेद बगुले कैसे प्रतीत होते हैं?

उत्तर: काले-काले बादलों के बीच उड़ते सफ़ेद बगुले ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे शाम की सफ़ेद चमकती हुई काया काले बादलों पर तैर रही है।

2. किस चीज का आनंद कभी ख़त्म नहीं होता है?

उत्तर: कविता के रसपान से मिलने वाला आनंद आजीवन मिलता रहता है वह कभी खत्म नही होता है, उसे हम अपनी इच्छा अनुसार कभी भी ग्रहण कर सकते है।

3. पाँती बँधे' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: 'पाँती बँधे' से कवि का तात्पर्य एकता से है। जिस प्रकार ऊँचे आकाश में बगुले पंक्ति बाँधकर एक साथ चलते हैं, उसी प्रकार मनुष्य को भी एकजुट रहना चाहिए। बगुलों की पंक्ति हमें 'एकता ही शक्ति है' का भाव सिखाती है।

गद्य पाठ - 11 **भक्तिन**

महादेवी वर्मा

प्रस्तावना :

भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो 'स्मृति की रेखाएँ' में संकलित है। इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का दिलचस्प खाका खींचा है।

महादेवी के घर में काम शुरू करने से पहले उसने कैसे एक संघर्षशील, स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन बिताया था , कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और हारकर कैसे ज़िंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची, इसका संवेदनशील चित्रण लेखिका ने किया है।

साथ ही, भक्तिन लेखिका के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखाई पड़ती है, जिसके कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम उद्घाटित होते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।

पाठ का सार :

जीवन का पहला परिच्छेद

भक्तिन का असली नाम था लछमिन अर्थात लक्ष्मी|वह ऐतिहासिक झूंसी गाँव के प्रसिद्ध सूरमा की इकलौती बेटी थी। उसका लालन-पालन उसकी सौतेली माँ ने किया। पाँच वर्ष की उम्र में इसका विवाह हँडिया गाँव के एक गोपालक के पुत्र के साथ कर दिया गया था। नौ वर्ष की उम्र में गौना हो गया। भक्तिन की विमाता ने उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा। सास ने रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उसे पीहर यह कहकर भेज दिया कि वह बहुत दिनों से गई नहीं है। मायके जाने पर विमाता के दुर्व्यवहार तथा पिता की मृत्यु से व्यथित होकर वह पानी तक पिए बिना घर वापस चली आई। घर आकर सास को खरी-खोटी सुनाई तथा पति के ऊपर गहने फेंककर अपनी व्यथा व्यक्त की।

दूसरा परिच्छेद :

भक्तिन को जीवन के दूसरे भाग में भी सुख नहीं मिला। उसके लगातार तीन लड़कियाँ पैदा हुई तो सास व जेठानियों ने उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी। इसका कारण यह था कि

सास के तीन कमाऊ बेटे थे तथा जिठानियों ने भी पुत्रों को जन्म दिया था। जिठानियाँ बैठकर खातीं और लोक-चर्चा करती लेकिन लेकिन भक्तिन को घर का सारा काम -चक्की चलाना, कूटना, पीसना, खाना बनाना आदि - अकेला करना पड़ता था| । छोटी लड़कियाँ गोबर उठाते तथा कंडे थापते हुए माँ की सहायता करती थीं । खाने के मामले में भी भक्तिन और बेटियों के प्रति भेदभाव दिखाए गए| लेकिन भक्तिन के प्रति पति का व्यवहार अच्छा था। उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था।पति-प्रेम के बल पर ही वह अलगौझा कर लेती है| खेतों में सारा काम भक्तिन ही करती थी अत: अपने ज्ञान के कारण गाय-भैंस, खेत, खलिहान, अमराई के पेड़ आदि में सबसे अच्छी चीजें प्राप्त करने में वह सफल बन जाती है । परिश्रम के कारण घर में समृद्धि आ गई। लेकिन भक्तिन का दुर्भाग्य उससे कम हठी नहीं था| पति ने बड़ी लड़की का विवाह धूमधाम से करने के बाद दो कन्याओं और गृहस्थी का भर 29 वर्षीय पत्नी पर छोड़कर उसके पति ने इस संसार से विदा ले ली| भक्तिन की संपत्ति पर मोह रखने वाले जेठ-जिठानियों के सामने उसने दूसरी शादी न करने की घोषणा कर दी । उसने केश कटवा दिए तथा गुरु से मंत्र लेकर कंठी बाँध ली। उसने दोनों लड़कियों की शादी कर दी और पति के चुने दामाद को घर-जमाई बनाकर रखा।

जीवन का तीसरा परिच्छेद

जीवन के तीसरे परिच्छेद में दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसकी लड़की भी विधवा हो गई। परिवार वालों की दृष्टि उसकी संपत्ति पर थी। उसके जिठौत विधवा बहन के विवाह के लिए अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता।भक्तिन की लड़की ने उस वर को नापसंद कर दिया। माँ-बेटी मन लगाकर अपनी संपत्ति की देखभाल करने लगीं।

एक दिन भक्तिन की अनुपस्थिति में उस तीतरबाज वर ने बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और उसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। लड़की ने उसकी खूब मरम्मत की तो पंच समस्या में पड़ गए। अंत में पंचायत ने कलियुग को इस समस्या का कारण बताया और अपीलहीन फैसला हुआ कि दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। अपमानित बालिका व माँ विवश थीं।

यह संबंध सुखकर नहीं था। दामाद निश्चिंत होकर तीतर लड़ाता था, जिसकी वजह से पारिवारिक द्वेष इस कदर बढ़ गया कि लगान अदा करना भी मुश्किल हो गया। लगान न

पहुँचने के कारण जमींदार ने भक्तिन को कड़ी धूप में खड़ा कर दिया।यह अपमान वह सहन न कर सकी और कमाई के विचार से शहर चली आई।

जीवन का अंतिम परिच्छेद

मैली धोती तथा गले में कंठी माला पहने वह लेखिका के पास नौकरी की खोज में आई|वह अपना असली नाम लोगों से छुपाना चाहती थी| लेखिका ने उसकी कंठी माला देखकर उसका भक्तिन नामकरण किया| उसने रोटी बनाना, दाल बनाना आदि काम जानने का दावा किया।

नौकरी मिलने पर उसने अगले दिन स्नान करके लेखिका की धुली धोती भी जल के छींटों से पवित्र करने के बाद पहनी। निकलते सूर्य व पीपल को अर्घ दिया। दो मिनट जप किया और कोयले की मोटी रेखा से चौके की सीमा निर्धारित करके खाना बनाना शुरू किया। भक्तिन छूत-पाक को मानने वाली थी। लेखिका ने समझौता करना उचित समझा। भोजन के समय भक्तिन ने लेखिका को दाल के साथ मोटी काली चित्तीदार चार रोटियाँ परोसीं तो लेखिका ने टोका। उसने अपना तर्क दिया कि अच्छी सेंकने के प्रयास में रोटियाँ अधिक कड़ी हो गई। उसने सब्जी न बनाकर दाल बना दी।इसी प्रकार भक्तिन ने लेखिका को ग्रामीण भोजन पकाकर दिया, ग्रामीण जीवन-शैली सिखाई और अपनी भाषा की अनेक दंतकथाएं कंठस्थ कर दी|इस देहाती वृद्धा की सरलता से लेखिका इतना प्रभावित हुई कि वह अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी। भक्तिन स्वयं को बदल नहीं सकती थी। वह दूसरों को अपने मन के अनुकूल बना लेना चाहती थी।

भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था |लेखिका के घर में इधर-उधर पड़े पैसों को वह किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी जिसे वह बुरा नहीं मानती थी। पूछने पर वह कहती कि यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! अपनी मालकिन को खुश करने के लिए वह बात को बदल भी देती थी। वह अपनी बातों को शास्त्र-सम्मत मानती थी। वह अपने तर्क देती थी। लेखिका ने उसे सिर घुटाने से रोका तो उसने 'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध' कहकर अपना कार्य शास्त्र-सिद्ध बताया। वह स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थी। अब वह हस्ताक्षर करना भी सीखना नहीं चाहती थी। उसका तर्क था कि उसकी मालकिन दिन-रात किताब पढ़ती है। यदि वह भी पढ़ने लगे तो घर के काम कौन करेगा।

भक्तिन अपनी मालकिन को असाधारणता का दर्जा देती थी। इसी से वह अपना महत्व साबित कर सकती थी। उत्तर-पुस्तिका के निरीक्षण-कार्य में लेखिका का किसी ने सहयोग नहीं दिया। इसलिए वह कहती फिरती थी कि उसकी मालकिन जैसा कार्य कोई नहीं जानता। वह स्वयं सहायता करती थी। कभी उत्तर-पुस्तिकाओं को बाँधकर, कभी अधूरे चित्र को कोने में रखकर, कभी रंग की प्याली धोकर और कभी चटाई को आँचल से झाड़कर वह जो सहायता करती थी उससे भक्तिन का अन्य व्यक्तियों से अधिक बुद्धिमान होना प्रमाणित हो जाता है। लेखिका की किसी पुस्तक के प्रकाशन होने पर उसे प्रसन्नता होती थी। उस कृति में वह अपना सहयोग खोजती थी। लेखिका भी उसकी आभारी थी क्योंकि जब वह बार-बार के आग्रह के बाद भी भोजन के लिए न उठकर चित्र बनाती रहती थी, तब भक्तिन कभी दही का शरबत अथवा कभी तुलसी की चाय पिलाकर उसे भूख के कष्ट से बचाती थी।

भक्तिन में गजब का सेवा-भाव था। छात्रावास की रोशनी बुझने पर जब लेखिका के परिवार के सदस्य-हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि भी-आराम करने लगते थे, तब भी भक्तिन लेखिका के साथ जागती रहती थी। वह उसे कभी पुस्तक देती, कभी स्याही तो कभी फ़ाइल देती थी। भक्तिन लेखिका के जागने से पहले जागती थी तथा लेखिका के बाद सोती थी|

बदरी-केदार के पहाड़ी तंग रास्तों पर वह लेखिका से आगे चलती थी, परंतु गाँव की धूलभरी पगडंडी पर उसके पीछे रहती थी। लेखिका भक्तिन को छाया के समान समझती थी। युद्ध के समय लोग डरे हुए थे, उस समय वह बेटी-दामाद के बुलाने पर भी लेखिका को छोड़कर जाने को तैयार नहीं थी | युद्ध की भीषणता से बचने केलिए वह लेखिका को अपने गाँव ले जाना चाहती थी। वहाँ वह लेखिका के रहने और काम करने के लिए हर तरह के प्रबंध करने का आश्वासन देती थी। वह अपनी पूँजी को भी दाँव पर लगाने के लिए तैयार थी। `

लेखिका का मानना है कि भक्तिन और उनके बीच में स्वामी-सेवक का संबंध नहीं था। इसका कारण यह था कि इच्छा होने पर भीवह भक्तिन को सेवा से हटा नहीं सकती थी और चले जाने का आदेश पाकर भी भक्तिन उसे हँसकर टालती रहती थी। वह उसे नौकर भी नहीं मानती थी। भक्तिन के व्यक्तित्व का विकास लेखिका के जीवन को घेरे हुए थे ।

भक्तिन छात्रावास की बालिकाओं के लिए चाय बना देती थी। वह उन्हें लेखिका के नाश्ते का स्वाद भी लेने देती थी।यों वह अपने भीतर के स्नेह एवं ममता का परिचय देती है| वह लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से भी परिचित थी। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा लेखिका करती थी। वह उन्हें आकार-प्रकार, वेश-भूषा या नाम के

द्वारा जानती थी। कवियों के प्रति उसके मन में विशेष आदर नहीं था, परंतु दूसरे के दुख से वह कातर हो उठती थी। किसी विद्यार्थी के जेल जाने पर वह व्यथित हो उठती थी। वह कारागार से डरती थी, परंतु लेखिका के जेल जाने पर खुद भी उनके साथ चलने का हठ किया। अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के हक के लिए वह बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार थी। भक्तिन का अंतिम परिच्छेद चालू है। भक्तिन को खोकर इसे पूरा करना लेखिका नहीं चाहती।

निम्न लिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प द्वारा दीजिए-

1. सेवक धर्म में हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है -नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बंध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है ; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि सूचक नाम किसी को बताती नहीं । केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूं ।उपनाम रखने की प्रतिभा होती तो मैं सबसे पहले उसका उपयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने , इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गदगद होती उठी।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए:-

i) भक्ति ने अपना मूल नाम तो बता दिया पर लेखिका से क्या प्रार्थना की?

a. मूल या असली नाम से ही बुलाने की

b. अपने लिए नया नामकरण करने की

c. एक कवित्वहीन नाम से बुलाने की

d. मूल या असली नाम से न बुलाने की

उत्तर : d)-मूल या असली नाम से न बुलाने की

ii) भक्ति अपना वास्तविक या असली नाम क्यों छुपाती थी?

a. वह गरीब थी इसलिए उसे लक्ष्मी नाम जंचता नहीं था

b. वह लक्ष्मी नाम से घृणा करती थी

c. उसे कोई अन्य नाम प्रिय था

d. उसे किसी भेद के खुल जाने का डर था

उत्तर : a)-वह गरीब थी इसलिए उसे लक्ष्मी नाम जंचता नहीं था

iii) भक्तिन की मां को लेखिका ने अनामधन्या क्यों कहा?

a. क्योंकि वह अपनी पुत्री की सहायता ना कर सकी

b. क्योंकि भक्तिन की मां का यही नाम था

c. क्योंकि वह अपने नाम से प्रसिद्ध नहीं थी

d. क्योंकि वह एक गोपालिका थी

उत्तर : c)-क्योंकि वह अपने नाम से प्रसिद्ध नहीं थी

iv) निम्न लिखित कथन एवं कारण को पढिए और उसके आधार पर सही विकल्प चुनिए

कथन:लेखिका के नाम की विशालता उसके लिए दुर्वह थी

कारण :क्योंकि लेखिका के जीवन में अपने नाम के अनुसार समृद्धि नहीं है

a. कथन और कारण दोनों सही हैं

b. कथन सही है लेकिन कारण गलत है

c. कथन गलत है लेकिन कारण सही है

d. कथन और कारण दोनों गलत हैं

उत्तर b)- कथन सही है लेकिन कारण गलत है

v) स्पर्धा का समानार्थक शब्द होगा-

a. बराबरी

b. हार

c. विजय

d. प्रतियोगिता

उत्तर d)-प्रतियोगिता

2. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावत: ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था । रोने पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ ना बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जा कर देख आवे, यही कहकर और पहना -उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वह गांव की सीमा में पहुंचते ही झड़ गए।'हाय लक्ष्मिन अब आई'की अस्पष्ट पुनरावृतियां और स्पष्ट सहानुभूति पूर्ण दृष्टियां उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहां न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटें पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक फेंक कर उसने पिता के चिर बिछोह की मर्म व्यथा व्यक्त की।

(i) गद्यांश में उल्लिखित 'अप्रत्याशित अनुग्रह' क्या है?

a. पिता का उस पर अगाध प्रेम

b. सज -धज कर जाने की अनुमति मिलना

c. बिना माँगे नैहर जाने की अनुमति मिलना

d. संपत्ति की रक्षा

उत्तर c). बिना माँगे नैहर जाने की अनुमति मिलना

ii) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

a. भक्तिन की विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था

b. घर में पिताजी का चिह्न तक शेष नहीं था

c. भक्तिन दुख से शिथिल हो गई थी और अपमान से जल गई थी

d. नैहर में पानी भी बिना पिए उलटें पैरों ससुराल लौट पड़ी।

उत्तर : a). भक्तिन की विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था

iii) निम्न लिखित कथन एवं कारण को पढिए और उसके आधार पर सही विकल्प चुनिए

कथन: विमाता ने पिताजी के मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था

कारण : पिता -पुत्री के बीच अगाध प्रेम होने के कारण रोग की खबर जानकार वह बहुत दुखी हो जाएगी|

a. कथन और कारण दोनों सही हैं

b. कथन सही है लेकिन कारण गलत है

c. कथन गलत है लेकिन कारण सही है

d. कथन और कारण दोनों गलत हैं

उत्तर b- कथन सही है लेकिन कारण गलत है

iv) भक्तिन वापस अपने ससुराल पहुंचने पर अपनी सास को खरी खोटी क्यों सुनाया?

a. क्योंकि वह अपनी सास के कपट पूर्ण व्यवहार से आहत थी।

b. क्योंकि भक्तिन की सास ने उसके पिता की मृत्यु की बात को जानते हुए भी उससे से नहीं बताया।

c. क्योंकि सास भक्तिन के दुख से बढ़कर उसके रोने -पीटने के अपशकुन पर ज्यादा चिंतित थी|

d. उपरोक्त तीनों सही है

उत्तर d. उपरोक्त तीनों सही है

(v) चिर विछोह से क्या तात्पर्य है?

a. क्षणिक वियोग

b. दीर्घकालिक वियोग

c. शाश्वत वियोग

d. दुखद अलगाव

उत्तर c. शाश्वत वियोग।

3.जब गत वर्ष युद्ध के भूत ने वीरता के स्थान पर पलायन-वृत्ति जगा दी थी ,तब भक्तिन पहली ही बार सेवक की विनीत मुद्रा के साथ मुझसे गाँव चलने का अनुरोध करने आई|वह लकड़ी रखने के मचान पर अपनी नई धोती बिछाकर मेरे कपड़े रख देगी,दीवाल में कीलें गाड़कर और उन पर तख्ते रखकर मेरी किताबें सजा देगी ,धान के पुआल का गोंदरा बनवाकर और उस पर अपना कंबल बिछाकर वह मेरे सोने का प्रबंध करेगी| मेरे रंग ,स्याही आदि को नई हँड़ियों में सँजोकर रख देगी और कागज-पत्रों को छींके में यथाविधि एकत्र कर देगी|

i. भक्तिन लेखिका से गाँव चलने का अनुरोध क्यों करती है?

a. लेखिका के प्रति आदर-विनय का भाव प्रकट करने के लिए

b. वह लेखिका को गाँव के घर-वातावरण से परिचय कराना चाहती थी

c. उसमे लेखिका के प्रति अगाध प्रेम था और वह युद्ध के दौरान लेखिका की सुरक्षा पर चिंतित थी

d. वह शहर के वातावरण से बचना और गाँव जाकर रहना चाहती थी

उत्तर: c) उसमे लेखिका के प्रति अगाध प्रेम था और वह युद्ध के दौरान लेखिका की सुरक्षा पर चिंतित थी

ii) पलायन-वृत्ति से क्या तात्पर्य है?

a. कहीं अन्यत्र भागना

b. युद्ध में शहीद हो जाना

c. अन्याय से युद्ध जीतना

d. अत्याचार एवं आक्रमण करना

उत्तर: a) कहीं अन्यत्र भागना

iii) निम्न लिखित कथन एवं कारण को पढिए और उसके आधार पर सही विकल्प चुनिए

कथन:वह दीवाल में कीलें गाड़कर और उन पर तख्ते रखकर मेरे कपड़े रखने का

प्रबंध करेगी |

कारण : भक्तिन के गरीब घर में कपड़े,किताबें आदि रखने केलिए अलमारी या अन्य सुविधाएं नहीं हैं |

a. कथन और कारण दोनों सही हैं

b. कथन सही है लेकिन कारण गलत है

c. कथन गलत है लेकिन कारण सही है

d. कथन और कारण दोनों गलत हैं

उत्तर : c- कथन गलत है लेकिन कारण सही है

iv) गद्यांश में भक्तिन की किन-किन चारित्रिक विशेषताएं उभरकर आई हैं?

a. मालकिन के प्रति विनय का भाव

b. मालकिन के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव

c. उसकी समझदारी एवं प्रबंधन क्षमता

d. उपर्युक्त सभी

उत्तर : d) उपर्युक्त सभी

v) गद्यांश के आधार पर कौन-सा कथन लेखिका के संबंध में सही नहीं है?

a. लेखिका अपने प्रति भक्तिन के प्यार को जानती है और बदले में प्यार निभाती है |

b. भक्तिन ने गाँव मे जिन-जिन सुविधाएं तैयार करने के बारे में कहा, लेखिका को वे परिहासास्पद लगे|

c. लेखिका विख्यात रचनाकार होने के साथ- साथ एक चित्रकार भी है|

d. लेखिका भक्तिन के प्यार और भोलेपन में मुग्ध हो गई थी |

उत्तर: b) भक्तिन ने गाँव मे जिन-जिन सुविधाएं तैयार करने के बारे में कहा, लेखिका को वे परिहासास्पद लगे|

4. मेरे भ्रमण की भी एकांत साथिन भक्तिन ही रही है|बदरी-केदार आदि के ऊंचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे वह हठ करके मेरे आगे चलती रही है,वैसे ही गाँव की धूलभरी पगडंडी पर मेरे पीछे रहना नहीं भूलती |किसी भी समय ,कहीं भी जाने के लिए प्रस्तुत होते ही मैं भक्तिन को छाया के समान साथ पाती हूँ |

i) गद्यांश के आधार पर भक्तिन के संबंध में कौन-सा कथन सही है?

a. भक्तिन भ्रमणशील है और हमेशा लेखिका के साथ भ्रमण करने जाती है|

b. भक्तिन अपने से बढ़कर लेखिका की सुरक्षा पर ज्यादा बल देती है

c. यात्राओं में भक्तिन हमेशा लेखिका के आगे-आगे चलने केलिए हठ करती है|

d. उपर्युक्त सभी कथन सही हैं|

उत्तर: b) भक्तिन अपने से बढ़कर लेखिका की सुरक्षा पर ज्यादा बल देती है |

ii) निम्न लिखित कथन एवं कारण को पढिए और उसके आधार पर सही विकल्प चुनिए -

कथन: लेखिका सपरिवार भ्रमण केलिए जाती है और भक्तिन को साथ लेती है

कारण : भक्तिन रास्ते में उसे सुरक्षा प्रदान करती है

a. कथन और कारण दोनों सही हैं

b. कथन सही है लेकिन कारण गलत है

c. कथन गलत है लेकिन कारण सही है

d. कथन और कारण दोनों गलत हैं

उत्तर : c- कथन गलत है लेकिन कारण सही है

iii) बदरी-केदार के रास्ते कैसे हैं?

a. धूलभरी पगडंडियाँ

b. कीचड़ से भरा दलदली रास्ते

c. पहाड़ों से घिरा हुआ समतल प्रदेश

d. ऊँचे -नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते

उत्तर : d) ऊँचे -नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते

iv) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

a. ऊंचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे भक्तिन हठ करके लेखिका के पीछे चलती है|

b. कहीं भी जाने के लिए प्रस्तुत होते ही लेखिका भक्तिन को छाया के समान साथ पाती है|

c. गाँव की धूलभरी पगडंडी पर भक्तिन लेखिका के पीछे चलती है |

d. लेखिका को हर प्रकार से सुरक्षा प्रदान करना भक्तिन चाहती है|

उत्तर: - a)ऊँचे-नीचे और तंग पहाड़ी रास्ते में जैसे भक्तिन हठ करके लेखिका के पीछे चलती है|

v) पगडंडी शब्द का अर्थ होगा -

a. पहाड़ी रास्ता

b. सँकरा मार्ग

c. धूलभरी चौड़ी सड़क

d. पक्की सड़क

उत्तर : b) सँकरा मार्ग

5. भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था,इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई| भइयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई|विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुलाया लाया ,क्योंकि उसका हों जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता|भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी,इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया|

i) भक्तिन के बड़ी बेटी के विधवा होने पर उसके पति के बड़े भाइयों ने आशा की किरण क्यों देखी ?

a. उन्हें भक्तिन के धन हड़पने का एक और अवसर मिल गया

b. उन्हें भक्तिन के सेवा भाव का एक अवसर मिल गया

c. उन्होंने भक्तिन के घर परिवार को संभालने की सोची

d. विधवा बेटी की शादी कराना उनका उत्तरदायित्व था

उत्तर : a)उन्हें भक्तिन के धन हड़पने का एक और अवसर मिल गया

ii) भइयहू शब्द का अर्थ है -

a. साले की पत्नी

b. छोटे भाई की पत्नी

c. बहिन के पति

d. बड़े भाई की पत्नी

उत्तर: b) छोटे भाई की पत्नी

iii) निम्न लिखित कथन एवं कारण को पढिए और उसके आधार पर सही विकल्प चुनिए

कथन: भक्तिन की बेटी ने वर को नापसंद कर दिया

कारण : वह समझदार थी और जानती थी कि शादी के नाम पर संपत्ति हड़पने की साजिश बना रहे हैं|

a. कथन और कारण दोनों सही हैं

b. कथन सही है लेकिन कारण गलत है

c. कथन गलत है लेकिन कारण सही है

d. कथन और कारण दोनों गलत हैं

उत्तर : a- कथन और कारण दोनों सही हैं

iv) गद्यांश के अनुसार कौन-सा कथन भक्तिन के संबंध में सही नहीं है?

a. भक्तिन हठी थी

b. दुर्भाग्य भी हमेशा भक्तिन के साथ है|

c. जेठ और जिठौतों के साथ भक्तिन का अच्छा संबंध था |

d. भक्तिन तीतर लड़ाने वाले लड़के के साथ बेटी की शादी कराना नहीं चाहती थी|

उत्तर : c) जेठ और जिठौतों के साथ भक्तिन का अच्छा संबंध था |

v) विधवा बहिन केलिए वर के रूप में कौन बुलाया गया ?

a. तीतर लड़ाने वाला जिठौत

b. बड़े जेठ का साला

c. छोटे जिठौत का साला

d. बड़े जिठौत का साला

उत्तर : d) बड़े जिठौत का साला

II. प्रश्नोत्तर (60 शब्दों में) - 3 अंक

1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर - भक्तिन का असली नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी|लेकिन लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बंध सकी|इसलिए वह अपना समृद्धि-सूचक नाम लोगों से छुपाती थी| अपनी बेटी की ज़िंदगी में समृद्धि की कामना कर उसकी माँ-बाप ने उसे लक्ष्मी नाम दिया होगा| उसकी कंठी माला देखकर लेखिका ने उसे भक्तिन नाम दिया|

2. भक्तिन के आने से लेखिका अधिक देहाती कैसे हो गयी?

उत्तर - लेखिका भक्तिन द्वारा अपनी इच्छा से बनाई गई देहाती भोजन खाने को विवश हो गयी|लेखिका के कपड़ों को वह तह करने के बहाने सिलवटों से भर देती थी | लेखिका की जीवन-शैली ही सरल हो गयी|लेखिका को भक्तिन ने अपनी भाषा की की अनेक दंत कथाएँ कंठस्थ करा दी| यों भक्तिन के आने से लेखिका अधिक देहाती हो गयी|

3. भक्तिन और मेरे बीच स्वामी -सेवक का संबंध नहीं है। ' महादेवी वर्मा ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर- महादेवी वर्मा के अनुसार ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया,जो स्वामी

के द्वारा चले जाने का आदेश पाकर भी उपेक्षा के साथ हँस दे। उसे सेवक कहना उतना असंगत है जितना अपने घर मे आने-जाने वाले अंधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना|

4. स्त्री के विवाह संबंधी मानवाधिकार को कुचलने की कुपरंपरा का पालन 'भक्तिन' पाठ में किस प्रकार हो पाया है ?

उत्तर- स्त्री हो या पुरुष ,अपने विवाह के संबंध में निर्णय लेने का अधिकार उसे मिलना चाहिए| लेकिन प्राचीन काल से लेकर स्त्रियों के इस मानवाधिकार का निषेध होता चला आ रहा है| हमारे समाज में पुरुषों की भांति स्त्रियों को इसके निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिया जाता है कि वह किस से और कब विवाह करे | भक्तिन की बेटी का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध करवाया गया।पंचों ने उस तितरबाज़ युवक के साथ शादी का फैसला सुनाया।भक्तिन और बेटी अनिच्छा के बावजूद इसे मानने के लिए मजबूर हो गई|यह स्त्री के मानवाधिकार का हनन है|

5. भक्तिन सेवा- धर्म किस तरह निभाती है?

उत्तर- भक्तिन अपनी स्वामिनी लेखिका के प्रति पूर्ण समर्पित थी। पूरे मनोयोग से अपने कर्तव्य को निभाती थी। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली बताया है।वह अपने सुख और स्वास्थ्य की चिंता किए बिना दिन-रात लेखिका की सेवा में लगी रहती है| लेखिका जब कभी देर रात तक लिखने पढ़ने या चित्र बनाने में व्यस्त रहती थी तब तब भक्तिन लेखिका का साथ देती थी। बदरी-केदार की यात्रा में अपने से ज्यादा लेखिका की सुरक्षा को प्रमुखता देती थी| युद्ध के समय लेखिका के लिए अपने बचा कर रखे पैसे खर्च करने, उन्हें अपने गाँव ले जाने, तथा लेखिका के साथ जेल यात्रा करने के लिए भी भक्तिन तैयार हो गई थी|

6. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए |

उत्तर : 'भक्तिन' लेखिका की सेविका है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:-

व्यक्तित्व- भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं।

परिश्रमी- भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, और पशुओं का सारा कार्य अकेले करती है। अलगौझा के बाद अपने लिए प्राप्त मिट्टी में परिश्रमकरके उसे सोना बना दिया |

स्वाभिमानिनी- भक्तिन बेहद स्वाभिमानिनी है। पति की मृत्यु के बाद उसने किसी का पल्ला नहीं थामा तथा स्वयं मेहनत करके घर चलाया,बच्चों का पालन-पोषण किया और बेटियों की शादी भी कराया|लगान के मामले में जमींदार से दंड पाने को वह घोर अपमान मानती है और गाँव छोड़कर शहर चली आई|

महान सेविका- भक्तिन में सच्चे सेवक के सभी गुण हैं। लेखिका ने उसे हनुमान जी से स्पर्धा करने वाली बताया है।वह अपने सुख और स्वास्थ्य की चिंता किए बिना दिन-रात लेखिका की सेवा में लगी रहती है|बदरी-केदार की यात्रा में अपने से ज्यादा लेखिका की सुरक्षा को प्रमुखता देती है|

समझदार - लेखन-कार्य और चित्र बनाने में लेखिका की सहायता करना,अनपढ़ होकर भी पढ़नेवालों के इंस्पेक्टर बनना आदि उसकी समझदारी केलिए प्रमाण देते हैं|

ममतामयी - परिवार और परिस्थितियों के कारण स्वभाव में थोड़ी विषमताएं उत्पन्न होने के बावजूद उसके भीतर से एक स्नेह और सहानुभूति की आभा फूटती रहती है|छात्रावास में रहनेवाली बालिकाओं के साथ उसका व्यवहार, जेल में बंद छात्रों के प्रति उसकी सहानुभूति आदि इसके प्रमाण हैं|

प्रश्नोत्तर (40 शब्दों में) 2 अंक

1. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने संबंधी कौन सा उदाहरण लेखिका ने दिया है ?

उत्तर : हर बृहस्पतिवार भक्तिन सिर का मुंडन कराती है| स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा न लगने के कारण लेखिका ने इसे रोका| तब भक्तिन ने उत्तर दिया कि शास्त्र में ऐसा लिखा है –'तीर्थ गए मुंडाए सिद्ध' ।यह सूत्र भक्तिन ने अपनी आस्था से बना लिया था ।

2. 'भक्तिन अच्छी है,यह कहना कठिन होगा,क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा?

लेखिका के अनुसार भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था |लेखिका के घर में इधर-उधर पड़े पैसों को वह किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी जिसे वह बुरा नहीं मानती थी।

पूछने पर वह कहती कि यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! अपनी मालकिन को खुश करने के लिए वह बात को बदल भी देती थी|

3. बदरी-केदार की यात्रा में भक्तिन किस प्रकार लेखिका का अनुगमन करती थी?

बदरी-केदार के पहाड़ी तंग रास्तों में वह हठ करके लेखिका के आगे चलती थी, परंतु गाँव की धूलभरी पगडंडी पर उसके पीछे रहती थी। कहीं भी जाने के लिए प्रस्तुत होते ही लेखिका की छाया के समान भक्तिन साथ रहती थी।

4. युद्ध के समय बेटी-दामाद के बुलाने पर भी भक्तिन उनके साथ जाने को क्यों तैयार नहीं थी ?

उत्तर :युद्ध के समय लोग डरे हुए थे, उस समय वह बेटी-दामाद के बुलाने पर तथा लेखिका द्वारा खूब समझाने पर भी उनके साथ जाने को भक्तिन तैयार नहीं थी | उनके साथ जाने के लिए लेखिका का साथ छोड़ना आवश्यक था ,जो भक्तिन को जीवन के अंत तक स्वीकार नहीं था| उसने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए लेखिका के साथ रहना उचित समझा।

5. भक्तिन के ससुराल वालों ने उसके साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर: भक्तिन की सास और जेठानियां उसके साथ क्रूरता से पेश करती थी।भक्तिन अपनी ससुराल में सबसे छोटी बहू थी तथा उस ने तीन कन्याओं को जन्म दिया था| इसलिए उसकी सास व जिठानियां उस पर रोब जमाना चाहती थीं। घर और खेत के सारे काम उससे करवाती थी|

6. भक्तिन के ससुराल वालों ने उसके पति की मृत्यु पर उसे पुनर्विवाह के लिए क्यों कहा?

उत्तर: भक्तिन के ससुराल वालों का विचार ठीक नहीं था।उनकी नजर भक्तिन के परिश्रम से बनाई गई घर व संपत्ति पर थी। भक्तिन के पुनर्विवाह करके नए घर जाने पर उसकी की सारी संपत्ति ससुराल वालों को मिल जाएगी| इसलिए भक्तिन के ससुराल वालों ने उसे पुनर्विवाह के लिए कहा|

7. भक्तिन जीवन भर अपरिवर्तित ही रही -इसका समर्थन कीजिए|

उत्तर : भक्तिन अपनी आदतों और इरादों की पक्की थी। वह अपनी जीवनशैली को सही मानती थी।भक्तिन को दूसरों को अपने अनुकूल बना लेने की क्षमता थी पर वह खुद नहीं

बदलना चाहती थी। उसने लेखिका को अधिक देहाती बना डाली लेकिन खुद न शहरी भोजन का स्वाद लिया और न शहरी शिष्टाचार सीख लिया |

पाठ-12 बाज़ार दर्शन

-जैनेंद्र कुमार

बाज़ार दर्शन पाठ में लेखक जैनेंद्र कुमार वर्तमान उपभोक्तावादी संस्कृति एवं बाज़ार की वास्तविकता का सुंदर चित्रण करते हैं।पाठ में लेखक विवेक के साथ बाज़ार का सदुपयोग करने का संदेश दे रहे हैं। लेखक के अनुसार बाज़ार के प्रभाव में आकर समाज में दिखावे की एक संस्कृति पनप रही है ।लोग अपनी मनीबैग या पैसे की गर्मी दिखाना चाहते हैं।अपने पर्चेजिंग पावर दिखाने के चक्कर में वे बाज़ार के शैतानी जाल में फंसते चले जा रहे हैं। बाज़ार में एक जादू है वह रूप का जादू है और आंखों के जरिए काम करता है। इसके प्रभाव में आकर लोग अनावश्यक सामान खरीदते चले जाते हैं। बाजार के मोहवलय में पडकर उनका विवेक नष्ट हो जाते हैं और वे पैसे की व्यंग्य शक्ति का शिकार हो जाते हैं|

लेखक के अनुसार बाज़ार के जादू या दुष्प्रभाव से बचने का एक ही मार्ग है कि जब भी बाज़ार जाओ खाली मन से न जाओ अर्थात मन में लक्ष्य भरा होना चाहिए । वास्तव में बाजार आवश्यकता के समय काम आने के लिए हैं। पाठ में भगत जी के व्यक्तित्व से हमें प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए। भगत जी को साफ पता है कि उन्हें क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए। अगर भगत जी को जीरा और काला नमक चाहिए तो पूरे बाजार का अस्तित्व उनके लिए उतना ही है जहां से उनको जीरा एवं काला नमक मिलता है। बाकी बाज़ार के जादू का उन पर कोई असर नहीं पड़ता। हमें भी वासना लोभ या दिखावे से दूर रहकर विवेक के साथ बाज़ार का सदुपयोग करना चाहिए। अन्यथा बाजार के दुष्प्रभाव के कारण समाज में कपट एवं अशांति ही बढ़ेगी।

1,निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।

क) बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस

तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फ़ैसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। थोड़ी देर को स्वाभिमान को ज़रूर सेंक मिल जाता है पर इससे अभिमान की गिल्टी की और खुराक ही मिलती है। जकड़ रेशमी डोरी की हो तो रेशम के स्पर्श के मुलायम के कारण क्या वह कम जकड़ होगी?

1) बाज़ार के जादू का असर कब सबसे अधिक होता है ?

a) जब जेब खाली होती है

b) जब मन भरा होता है

c) जब जेब और मन दोनों खाली होता है

d) जब जेब भरी और मन खाली होता है

2) बाज़ार के जादू का क्या असर होता है?

a) लोग संयम से सामान खरीदते हैं।

b) लोग बाज़ार से दूर चले जाते हैं।

c) लोग अनावश्यक चीज़ें भी खरीद लेते हैं।

d) लोग सामान खरीदना बंद कर लेते हैं।

3) सिर्फ बाज़ार के आकर्षण में फँसकर ली गई चीज़ें -

a) आनंद प्रदान करती हैं।

b) उपयोगी सिद्ध होती हैं।

c) आराम में खलल डालती हैं।

d) आवश्यक लगने लगती हैं।

4) खाली मन से बाज़ार जाने का क्या परिणाम होता है ?

a) कुछ खरीदने को मन नहीं करता ।

b) बाज़ार के जादू का कोई प्रभाव नहीं होता ।

c) बाज़ार के आकर्षण के वश में पड जाएगा।

d) आवशयक चीज़ें ही खरीदेगा ।

5) कथन(A) और कारण(R) को पढकर उचित उत्तर के विकल्प को चुनिए ।

कथन(A) - बाज़ार अपनी चमक-दमक और जादू के प्रभाव से लोगों को अनावश्यक चीज़ें खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

कारण(R) - बाज़ार जाते समय लोगों का मन भरा और जेब खाली होती है।

a) कथन(A) तथा कारण(R) और दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है ।

c) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

d) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) इसकी गलत व्याख्या करता है ।

उत्तर : 1-(d), 2 - (c), 3- (c),4-(c),5-(d)

ख) क्या जाने उस भोले आदमी को अक्षर-ज्ञान तक भी है या नहीं। और बड़ी बातें तो उसे मालूम क्या होंगी। और हम-आप न जाने कितनी बड़ी-बड़ी बातें जानते हैं। इससे यह तो हो सकता है कि वह चूरन वाला भगत हम लोगों के सामने एकदम नाचीज़ आदमी हो। लेकिन आप पाठकों की विद्वान श्रेणी का सदस्य होकर भी मैं यह स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ कि उस अपदार्थ प्राणी को वह प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है। उस पर बाज़ार का जादू वार नहीं कर पाता। माल बिछा रहता है, और उसका मन अडिग रहता है। पैसा उससे आगे होकर भीख तक माँगता है कि मुझे लो। लेकिन उसके मन में पैसे पर दया नहीं समाती । वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। ऐसे आदमी के आगे क्या पैसे की व्यंग्य-शक्ति कुछ भी चलती होगी ? क्या वह शक्ति कुंठित रहकर सलज्ज ही न हो जाती होगी?

1) भगत जी को लेखक विद्वानों से भी श्रेष्ठ क्यों मानते हैं ?

a) भगत जी चूरन बेचते हैं

b) भगत जी बाज़ार के प्रलोभन में नहीं पडते।

c) वे बाज़ार के जाल में फंस जाते हैं

d) उन्हें बाज़ार से विरोध है ।

2) चूरनवाले भगत जी के सामने बाज़ार क्यों हार मान लेता है ?

a) भगत जी के पास असीम धन है ।

b) भगत जी केलिए बाज़ार आवश्यकता के समय काम आने के लिए है।

c) भगत जी बाज़ार की चमक-दमक से प्रभावित होते हैं।

d) भगत जी बाज़ार की हर चीज़ खरीदने का सामर्थ्य रखते हैं ।

3) अनुच्छेद के आधार पर भगत जी के चरित्र की मुख्य विशेषता क्या है?

a) लोभ

b) संयम और विवेक

c) क्रोध एवं ईर्ष्या

d) अहंकार

4) चूरनवाले भगत जी को अपदार्थ प्राणी क्यों कहा गया है ?

a) वे अधिक शिक्षित या धनिक नहीं हैं ।

b) वे चूरन बेचते हैं ।

c) उनपर बाज़ार के जादू क प्रभाव नहीं पड्ता ।

d) वे सभी सामान खरीद लेते हैं ।

5) कथन(A) और कारण(R) को पढकर उचित उत्तर के विकल्प को चुनिए ।

कथन(A) - भगत जी पर बाज़ार का जादू वार नहीं कर पाता ।

कारण(R) - भगत जी का मन स्थिर और लोभ से रहित है ।

a) कथन(A) यह तथा कारण(R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है ।

c) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

d) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) इसकी गलत व्याख्या करता है ।

उत्तर : 1-(b), 2 - (b), 3- (b), 4-(a),5-(a)

ग) मैंने मन में कहा, ठीक बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है, ओह! कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल करके मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।

1.गद्यांश में प्रयुक्त 'अतुलित' शब्द का समानार्थी शब्द हो सकता है ?

a. आनंद

b. अपरिमित

c. अभाव

d. अक्षय

2.गद्यांश का केंद्रीय भाव है ?

a. बाज़ार के प्रकार बताना

b. बाज़ार न जाने की सलाह

c. मनुष्य की तृष्णा को इंगित करना

d. मनुष्य पर बाज़ार के जादू का असर

3.निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए।

a. जब मनुष्य बैचैन हो जाता है तब वह बाज़ार की ओर उन्मुख हो जाता है।

b. जब मनुष्य पर बाज़ार का जादू चढने लगता है तब असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या के भाव मनुष्य में उभरते हैं।

c. जब मनुष्य को बाज़ार आमंत्रित करता है तब मनुष्य की व्याकुलता इसका कारण होती है।

d.जब मनुष्य बाज़ार का तिरस्कार करता है तब वह इसका सही लाभ ले पाता है।

4. कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कॉलम 1		कॉलम 2	
1	चाह का अर्थ	(i)	मौन रहकर कार्य करना
2	बड़े बाज़ार का जादू	(ii)	अपनी तृष्णा को रोकना
3	बाज़ार के जादू से बचने का उपाय	(iii)	अभाव का एहसास

a. 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

b. 1- (i) 2 (ii), 3- (iii)

c. 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

d. 1-(iii), 2-(i), 3-(ii),

5.बाज़ार का आमंत्रण कि, 'आओ मुझे लूटो' से क्या आशय है ?

a. बाज़ार लुट जाना चाहता है

b. बाज़ार के पास वस्तुएँ बहुत ज्यादा हैं

c. बाज़ार केवल खुद का रूप दिखाना चाहता हैं

d. बाज़ार आकर्षित करना चाह रहा है

उत्तर : 1-(b), 2 - (d), 3- (b), 4-(d),5-(d)

प्रश्नोत्तर

1)बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या क्या असर पड़ता है?

बाजार के जादू के वश में पड़ने पर व्यक्ति को हर चीज आवश्यक एवं आराम में मदद डालने वाली प्रतीत होती है। वह अनावश्यक चीजें भी खरीदने लगता है। वह अपना विवेक खो बैठता है और पर्चेसिंग पावर दिखाने के चक्कर में फिजूलखर्ची करता है। बाद में उसे पछतावा होता है कि ये वस्तुएं उसे आराम देने की बजाय आराम में खलल ही डाल रही हैं।

2) बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन सा सशक्त पहलू उभर कर आता है ? क्या आपकी नजर में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

भगतजी का मन विवेक और लक्ष्य से भरा है। भगतजी को पता है कि उन्हें क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए। बाजार के जादू का कोई प्रभाव उनके ऊपर नहीं होता। अगर भगतजी को जीरा और काला नमक चाहिए तो वह बाजार के पंसारी की दुकान पर चले जाते हैं और वही लेकर आते हैं। रास्ते में चौक बाजार की सजावट, चमक-दमक आदि में फंसकर अनावश्यक सामान वे नहीं खरीदते। उनके व्यवहार में कोई असमंजस नहीं है। सब के प्रति उनके मन में आशीर्वाद एवं संतुष्टि ही है।

भगत जी जैसे संयमी व्यक्ति का आचरण निश्चय ही समाज में शांति स्थापित करने के लिए सहायक है। बाजार के जादू में फंसने का अर्थ है बाजारूपन को बढ़ावा देना, समाज में कपट एवं अनाचार का बढ़ना। व्यक्ति यदि आवश्यकता के अनुसार खरीदारी करेंगे, तो बाजार सार्थक प्रतीत होगा।समाज में संतोष एवं शांति की स्थापना होगी।

3) 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं ?अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है?

बाजारूपन का आशय है -बाजार से जुड़े छल- कपट, ऊपरी चमक दमक एवं दिखावा । बाजार में चीजों को आकर्षक ढंग से सजा कर लोगों के अंदर चाहत जगाना, ग्राहकों को लुभाना एवं ठगना बाजारूपन है।अनावश्यक खरीदारी एवं फिजूलखर्ची इसका परिणाम है। वही व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करता है, जो यह जानता कि उसे क्या चाहिए ।

जिसके अंदर संयम और विवेक होता है। बाजार की सार्थकता आवश्यकता के समय काम आने में है।

बाजार का सदुपयोग
खाली मन से बाजार न जाना।
मन में लक्ष्य का होना।
वासना,लोभ और दिखावे से दूर रहकर विवेक से काम लेना।
.भगत जी से प्रेरणा ग्रहण करना।
क्या चाहिए और क्या नहीं चाहिए का ठीक पता होना।
बाजार आवश्यकता के समय काम आने के लिए।

पाठ- 13 **काले मेघा पानी दे**

धर्मवीर भारती

पाठ का सारांश

काले मेघा पानी दे' धर्मवीर भारती का एक प्रसिद्ध संस्मरण है, जिसमें लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के तर्क का दवदव है। इसे पढ़कर पाठक भी सोचने पर विवश हो जाता है कि आखिर दोनों में से कौन-सा बेहतर है। जिन चुनौतियों का विज्ञान के पास कोई उत्तर नहीं है, जन मानस उनका सामना अपने विश्वास और उत्सवों से करने के लिए तत्पर रहता है। अपने अर्ध्य और दान के द्वारा प्रकृति को खुश करके अपनी समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करता है। दान और त्याग की इस भावना को अंधविश्वास बिल्कुल नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इनसे किसी वर्ग विशेष या धर्म की हानि नहीं होती है। ये तो वे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य हैं, जो भारतीयता का मूल आधार हैं। विश्वास एक रचनात्मक जीवन-मूल्य है। इंदर सेना के प्रयास से वर्षा करवाने का विश्वास यद्यपि वैज्ञानिक नहीं लगता, लेकिन विपरीत परिस्थितियों में भी जीने और उत्सव मनाने की भारतीयता को दिखाता है लेखक का एक वैज्ञानिक मन भी अपनी जीजी की संतुष्टि और अपने प्रति उनका सदभाव बचाए रखने के लिए तमाम रीति-रिवाजों को ऊपरी तौर पर ही सही अपनाने को बाध्य बना रहता था।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक-मंडली नाम क्यों दिया?

a. तालाब में मेंढकों के समान उछलने के कारण

b. शोर-शराबे द्वारा गाँव की शांति भंग करने के कारण

c. अनावृष्टि में जल माँगने के कारण

d. नंग-धडंग शरीर के साथ कीचड़-कांदों में लोटने के कारण

2. किशोर अपने-आप को इंदर सेना क्यों कहते हैं?

a. लोगों से जल माँगने के लिए

b. इंद्र देवता से प्यार करने के लिए

c. इंद्र के समान आचरण करने के लिए

d. वर्षा के लिए इंद्र को प्रसन्न करने के लिए

3. गुड़धानी' से क्या अभिप्राय है?

a. अनाज और सुख शांति का जीवन

b. गुड़ और चने से बना लड्डू

c. धन-संपत्ति

d. पानी और अनाज

4. जीजी लेखक के हाथों पूजा-अनुष्ठान क्यों कराती थी?

a. लेखक के कल्याण के लिए

b. अपने कल्याण के लिए

c. परिवार के कल्याण के लिए

d. समाज-कल्याण के लिए

5 लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे?

a. चारों ओर पानी की घोर कमी के कारण

b. पानी को फेंकना पानी की बर्बादी होने के कारण

c. पीने के लिए बड़ी कठिनाई से बाल्टी भर पानी इकट्ठा किया हुआ होने के कारण

d. पानी को यूँ फेंकना अंधविश्वास होने के कारण

6. किस वस्तु का दान महत्त्वपूर्ण है?

a. जो वस्तु तुम्हारे पास बहुत कम है

b. जो वस्तु तुम्हारे पास बहुत अधिक है

c. जो वस्तु तुम्हारे पास नहीं है

d. जो वस्तु तुमने किसी से उधार ली है

7. दान के लिए किस भावना का होना आवश्यक है?

a. बहुत अधिक होने पर थोड़ा बहुत दे देना

b. बहुत अधिक सम्पत्ति का होना

c. ईश्वर को प्रसन्न कर मोक्ष प्राप्त करने

d. अपनी जरूरत को अनदेखा करते हुए किसी को दे देना

8. जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया ?

a. पानी की बुवाई करना

b. कुछ पाने के लिए कुछ देना पड़ता है

c. इंद्रदेव को जल का अर्घ्य चढ़ाना

d. उपरोक्त सभी

9.'गगरी फूटी बैल पियासा' का प्रतीकार्थ देश के संदर्भ में क्या है ?

a. भ्रष्टाचार के कारण आम आदमी की स्थिति में कोई सुधार न होना

b. देश की वर्तमान हालत का चित्रण

c. देश के सभी गाय और बैल प्यासे मर हैं हैं

d. सूखे की ओर बढ़ते समाज का सजीव एवं मार्मिक चित्रण

10. आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?' इस प्रश्न का आप क्या उत्तर देंगे?

a. जब समाज से भ्रष्टाचार पूरी तरह समाप्त हो जाएगा

b. अपना स्वार्थ छोड़ देंगे

c. हम सब अपने देश से प्रेम करने लगेंगे

d. जब समाज के सभी लोग सम्पन्न हो जाएँगे

अन्य प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1: लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक - मंडली नाम किस आधार पर दिया ? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी ?

उत्तर - जब आषाढ़ के पहले पखवाड़े भी जाने पर भी आकाश में बादल की कोई रेखा दिखाई नहीं देती, जब ढोर - ढंगर प्यास के मारे मरने लगते , लेकिन बारिश का कहीं नाम

निशान नहीं होता, तब हार कर अंतिम उपाय के रूप में निकलती है इंदर सेना । वर्षा के बादलों के स्वामी है इंद्र और लड़कों की टोली अपने आप को इंद्र की सेना बताकर, कीचड़ में लथपथ निकलती है, पुकारते हुए मेघों को पानी माँगते हुए प्यासे गलों और सूखे खेतों के लिए। इंदर सेना होते होते थे दस - बारह से लेकर सोलह- सत्रह बरस के लड़के। जो लोग इनके नग्न स्वरूप शरीर, उनकी उछल कूद, उनके शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ - कांधों से नफरत करते थे , वे उन्हें मेढक - मंडली कहते थे ।

प्रश्न 2: जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर - जीजी ने लेखक को बताया कि इंदर सेना पर पानी फेंका जाना पानी की बर्बादी नहीं है , बल्कि यह पानी का अर्घ्य चढ़ाना है । जो चीज मनुष्य पाना चाहता है, उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे ? अगर तीस- चालीस मन गेहूँ उगाना है , तो किसान पाँच-छ: सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियाँ बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं । उसी प्रकार इंदर सेना पर जो पानी फेंका जाता है, वह भी पानी की बुवाई है । यह पानी गली में बोएँगे , तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी । हम बीज बनाकर पानी देते हैं , फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं। सब ऋषि मुनि यही कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना - अठगुना करके लौटाएँगे । जीजी के अनुसार अगर हमें कुछ पाना है, तो कुछ त्यागना भी होगा। उसी दान का फल मिलता है, जब हम अपनी जरूरतों को पीछे रख कर दूसरों के कल्याण के लिए उसे त्याग देते हैं । इस तरह जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को सही ठहराया।

प्रश्न 3: 'पानी दे ,गुड़धनी दे' मेघों से पानी के साथ - साथ गुड़धनी की माँग क्यों की जा रहा है ?

उत्तर - गुड़धानी यहाँ भोजन का प्रतीक है। पानी के बरसने से धरती हरी भरी हो जाएगी और दानों की फसल लहलहा उठेंगे। जब लोगों का पेट भर खाना मिलेगा, तो उनके मन में खुशियां झूम उठेगी ? इस गीत में गुड खुशियों का प्रतीक है। जब मेघ नहीं बरसता सब लोग पानी के साथ साथ भोजन के लिए भी तरसते हैं । पानी के बरसने से लोगों का पेट और मन दोनों भर जाता है । सुख शांति फैल जाती है और जीवन में मधुरता आ जाती है।

प्रश्न 4: 'गगरी फूटी बैल पियासा' से लेखक का क्या आशय हैं?

उत्तर - भारतीय समाज एक कृषि प्रधान समाज है । हमारे समाज में किसान और बैलों के बीच का संबंध बहुत गहरा होता है और किसान बैलों को अपने परिवार वालों से अधिक सम्मान देता है । किसान अपने आपको या परिवार को भूखा-प्यासा रख सकता है लेकिन अपने बैलों को भूखा प्यासा नहीं देख सकता । वह तब तक खुश नहीं रह सकता , जब तक उसकी बैलों की प्यास नहीं बुझती। इसलिए वह काले मेघा से जल्दी बरसने का निवेदन करता है। गगरी फूटी का आशय है कि गाँव में सूखा होने के कारण गाँव के घरों में पानी का एक भी बूंद नहीं है । मनुष्य और पेड़ पौधों के समान घडे भी पानी के लिए तरस रहे हैं।

प्रश्न 5: इंदर सेना सबसे पहले गा मैया की जय क्यों बोलती हैं?

उत्तर - इंदर सेना टोली बाँधकर पानी माँगने जब निकलते थे, तब एक स्थान पर इकट्ठे होकर जयकारा लगाते हैं - " बोल गंगा मैया की जय" । जयकारा सुनते ही घर की औरतें और लड़कियां सावधान हो जाती थी। भारतीय नदियों में गंगा का प्रमुख स्थान है। भारतीय विश्वास करते हैं कि गंगा स्वर्ग से उतरकर धरती पर आई है । देव लोग की नदी होने के कारण इसे पवित्र माना जाता है। गंगा भारतीयों के लिए एक नदी ही नहीं है म, बल्कि देवी है , माँ है , मोक्षदायिनी है। गंगा में नहा कर भारतीय अपने पापों से मुक्ति पाते हैं । भारत में हर उत्सव और मंगल कार्य गंगा के बिना अपूर्ण है। यही कारण है कि मंगल कार्य के आरंभ से पहले इंदर सेना गंगा मैया की जय बोलते हैं।

प्रश्न : नदियों का भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व हैं?

उत्तर - नदियाँ ही हमारी श्री रही है। भारतीय नदियों को केवल पानी का स्रोत नहीं , बल्कि देवी माना जाता है, माँ माना जाता है । प्राचीन काल से ही इन्हीं नदियों के किनारे सभ्यता बसी है जिसके साथ बड़े-बड़े नगर पनप उठे हैं। यह भी देखा गया है कि प्रमुख मंदिर और तीर्थ स्थान नदियों के किनारे ही बसते हैं । इनका आश्रय पाकर संगीत कला, नाट्य कला , नृत्य कला आदि का विकास हुआ है जो हमारी संस्कृति की धरोहर है। नदियाँ भारतीयों के जीवन में बहुत महत्व रखता है और इसलिए हम कह सकते हैं कि नदियों का सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में बड़ा महत्व है।

प्रश्न 6: "रिश्तों में हमारी भावना - शक्ति का बँट जाना ,विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजनी हमारी बुदिध की शक्ति को कमज़ोर करती है। " पाठ में जीजी लेखक की भावना के संदर्ब में इस कथन के ओचित्य की समीक्षा कीजिए ?

उत्तर - यह कथन पूर्णत: सत्य है। रिश्तों में हमारी भावना-शक्ति बँट जाती है। ऐसे में विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति कमजोर हो जाती है। इस पाठ में जीजी लेखक को बेपनाह स्नेह करती हैं। वे अनेक तरह की धार्मिक क्रियाएँ लेखक से करवाती थीं जिन्हें लेखक अंधविश्वास मानता था। कभी-कभी ऐसा होता है कि रिश्तो को बनाए रखने के लिए अंधविश्वास का भागीदार बनना पड़ता है । भारतीय संस्कृति विश्वासों और अंधविश्वासों की खान है। ज्यादातर बड़े बूढ़े अपने अंधविश्वास को छोड़ने का नाम नहीं लेते । यह नई पीढ़ी के युवा वर्ग अंधविश्वासों को उखाड़ कर फेंकना चाहते हैं लेकिन रिश्तो को बनाए रखने के लिए इन्हीं अंधविश्वासों का भागीदार बन जाते हैं । पाठ में लेखक को जीजी से बहुत लगाव था। इसलिए जीजी की पूजा अनुष्ठान, तीज त्यौहार आदि में लेखक को भागीदार बनना पड़ता था। यद्यपि लेखक में इन अंधविश्वासों के प्रति विरोध की भावना मौजूद थी फिर भी जीजी के प्रति आदर और प्रेम के कारण वे मना नहीं कर पाते थे । इस तरह उन्हें अपनी बुद्धि शक्ति को परे रखकर भावना शक्ति में बह जाना पड़ता था।

काले मेघा पानी दे' पर पोडकास्ट

https://drive.google.com/file/d/1Uc97hjpvtUk6ZlewtzKGYg32Na5dLPV0/view?usp=drive_link

पाठ - 14 पहलवान की ढोलक

फणीश्वरनाथ रेणु

यह कहानी व्यवस्था बदलने के साथ लोक-कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक होने की कहानी है।

कहानी के पहले भाग में लेखक ने गाँव का वर्णन किया है। अमावस की ठंडी रात में कुत्तों का रोना रात की विकट भयावहता को और अधिक सघन कर देता है| गाँव का एक पहलवान और उसका ढ़ोल रात्रि की इस भीषणता को चुनौती देता दिखाई पड़ता है। पहलवान का नाम है- लुट्टन, जो नौ वर्ष की आयु में ही अनाथ हो जाता है। विधवा सास ने ही उसका

पालन-पोषण किया। गाँव के लोगों द्वारा अपनी सास की तकलीफों का बदला लेने के लिए की गई कसरत ने उसे एक पहलवान बना दिया।

कहानी में मेला देखने गए लुट्टन ने पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दे डाली, जिसे शिकार प्रिय-राजा साहब अपने दरबार में रखने की बात कर रहे थे। दर्शक गण लुट्टन द्वारा चाँद सिंह को दी गई चुनौती को उसका पागलपन बता रहे थे। राजा साहब ने भी उसे पहलवान के साथ लड़ने से मना कर दिया। लेकिन धुन का पक्का लुट्टन उससे लड़ने की अपनी जिद पर अड़ा रहा। यहाँ सभी लोग लुट्टन के खिलाफ थे लेकिन एक चीज जो लगातार उसे प्रेरणा और हिम्मत दे रही थी वह है ढोलक की ताल। जिसे बाद में लुट्टन ने अपना गुरु भी माना। ढोल की इसी ताल से प्रेरित होकर लुट्टन ने उस पहलवान को हराया और राजा साहब ने खुश होकर लुट्टन को राज-पहलवान घोषित कर दिया।

राज पहलवान बनने के बाद लुट्टन ने सभी नामी पहलवानों को हरा कर अपने को अजेय बना लिया था। उसकी जोड़ी का कोई पहलवान नहीं था |राजा साहब की मृत्यु के बाद विलायत से आकर नए राजकुमार ने राज्य की बागडोर संभाल ली। सत्ता परिवर्तन के साथ-साथ शासन व्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया। राज दरबार से पहलवान को निकाल दिया गया। वह अपने दोनों पुत्रों को लेकर गाँव आ गया, वहाँ गाँव के लड़कों को दांव-पेच सिखा कर जीवन व्यतीत करने लगा।अनावृष्टि, अन्न की कमी तथा मलेरिया और हैजा इन सबने मिलकर गाँव को खाली कर दिया था। मुर्दों को बिना कफन के नदी में बहाया जा रहा था। गाँव से हर रोज दो-तीन लाशें उठ रही थीं। लोगों में बोलने तक की शक्ति नहीं रह गई थी।

लेखक ने कहानी के अंतिम भाग में भी रात के समय को चुना है। (प्रारम्भ की तरह)। जो संकेत करता है कि उनकी समस्याओं का अभी अन्त नहीं हुआ। पूरे गाँव के लिए केवल पहलवान की लगातार बजती ढोलक हैं जोलोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी |कहानी के अंत में पहलवान के दोनों बेटों की मृत्यु हो जाती है।फिर भी लुट्टन ढोलक बजाता रहा| लेकिन चार पाँच दिन बाद रात को अचानक ढोलक की आवाज सुनाई देनी बंद हो गई। पहलवान मर चुका था। जीवन भर अजेय रहने वाला लुट्टन मौत के सामने चित हो गया। इस करुणा/त्रासदी में लुट्टन पहलवान हमारे सामने कई सवाल छोड़ जाता है. क्या कला का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है? हम कला को जीवित रखने के लिए क्या योगदान दे सकते हैं? आदि।

क) जाडे का दिन | अमावस्या की रात- ठंडी और काली |मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव भयार्थ शिशु की तरह थर - थर काँप रहा था |पुरानी और उजड़ी बाँस फूस की झोंपडियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य| अन्धेरा और निस्तब्धता|

अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी |निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने ह्रदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी|आकाश में तारे चमक रहे थे| पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं | आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी| अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे|

1 ठंडी और काली विशेषण का प्रयोग अमावस्या की रात के लिए क्यों किया है?

a. जाडे के दिनों की ठंडक बढाने के लिए

b. अमावस्या की रात के चित्रण के लिए

c. बीमारी की भयावहता को बढाने के लिए

d. रात की विशेषता बताने के लिए

2. अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी |इस वाक्य में किसका वर्णन किया है?

a. गाँव का चित्रण

b. प्रकृति की सुंदरता

c. प्रकृति का मानवीकरण

d. इनमे से कोई नहीं

3. पुरानी और उजड़ी बाँस - फूस की झोंपडियों से गाँव की किस स्थिति का पता चलता है?

a. ग्रामवासियों की अकर्मण्यता का

b. गाँव के सच्चे एवं वास्तविक स्वरुप का

c. प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता का

d. जर्जर आर्थिक स्थिति का

4. अंधकार और सन्नाटा कहाँ छाया हुआ था?

a. बाँस -फूस की झोंपडियों में

b. गाँव वालों के दिल में

c. वातावरण में

d. इनमे से कोई नहीं

5. आकाश में क्या चमक रहे थे?

a. चाँद

b. तारे

c. बिजली

d. इनमे से कोई नहीं

उत्तर - 1-c , 2-c, 3-d, 4-a, 5-b

ख)सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी -कभी निस्तब्धता को अवश्य भंग कर देती थी |गाँव की झोंपडियों से कराहने और कै करने की आवाज़,हरे राम!हे भगवान! की टेर अवश्य सुनाई पडती थी | बच्चे भी कभी -कभी निर्बल कंठों से माँ-माँ पुकारकर रो पड़ते थे | पर इससे रात्री की निस्तब्धता में विशेष बाधा नहीं पडती थी |

कुत्तों को परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है|वे दिनभर राख के घूरों पर गठरी की तरह सिकुडकर,मन मारकर पड़े रहते थे | संध्या या गंभीर रात्रि को सब मिलकर रोते थे | रात्रि अपनी भीषणताओं के साथ चलती रहती और उसकी सारी भीषणता को ,ताल ठोककर,ललकारती रहती थी - सिर्फ पहलवान की ढोलक|

1. **किन कारणों से रातऔर अधिक भयानक हो रही थी ?**

a. बच्चों की रोने की आवाज़ से

b. सियारों के क्रंदन से और पेचक की डरावनी आवाज़ से

c. झोंपडियों से कराहने और कै करने की आवाज़ से

d. उपर्युक्त सभी

2. रात्रि की निस्तब्धता का क्या कारण था?

a. अंधेरी रात

b. भयानक गरीबी

c. महामारी का फैलना

d. इनमे से कोई नहीं

3. किसमें परिस्थिति को ताड़ने की विशिष शक्ति होती है?

a. पेड़ पौधों में

b. बच्चों में

c. मनुष्यों में

d. कुत्तों में

3. पहलवान की ढोलक किसे ललकारती रहती थी ?

a. संजीवनी शक्ति को

b. दूसरे पहलवानों को

c. रात्रि की विभीषिका को

d. इनमे से कोई नहीं

4. उपर्युक्त गद्यांश में किस पहलवान का उल्लेख किया है?

a. श्याम सिंह

b. चाँद सिंह

c. लुट्टन सिंह

d. इनमे से कोई नहीं

उत्तर - 1.d, 2.c, 3.d, 4.c, 5.c

ग)लुट्टन के माता- पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे थे|सौभाग्यवश शादी हो चुकी थी |वरना वह भी माँ -बाप का अनुसरण करता |विधवा सास ने पाल पोसकर

बड़ा किया था |बचपन में वह गाय चराता ,धारोष्ण दूध पीता और कसरत किया करता था |गाँ व के लोग उसकी सास को तरह- तरह के तकलीफ़ दिया करते थे |लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन लोगों से बदला लेने के लिए सवार हुई थी, नियमित कसरत ने किशोरावस्था में ही उसके सीने और बाहों को सुडौल और मांसल बना दिया था|जवानी के कदम रखते ही वह गाँव के सबसे अच्छा पहलवान समझा जाने लगा |लोग उससे डरने लगे और वह पहलवान की भाँति दोनों हाथों को दोनों ओर 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर ,चलने लगा |वह कुश्ती भी लड़ता था |

1. सौभाग्यवश शादी हो चुकी थी, वरना वह भी माँ बाप का अनुसरण करता | इस कथन से लेखक का क्या आशय है?

a. लूट्टन की शादी माँ बाप का अनुसरण न करने से हो पाई थी |

b. यदि लूट्टन की शादी न हुई होती तो वह अपने माँ बाप के साथ रह रहा होता |

c. लुट्टन के माता पिता का विवाह सामान्य से अधिक आयु में हुआ था |

d. यदि लूट्टन विवाहित न होता, यदि लुट्टन के सास ने उसके पालन पोषण का दायित्व न लिया होता तो वह भी अपने माता-पिता के समान चल बसा होता |

2. लुट्टन के सर पर कसरत की भूत सवार होने का क्या कारण था?

a. वह दंगल में लड़ना चाहता था?

b. वह बड़ा पहलवान बनकर राजा दरबार में प्रवेश पाना चाहता था|

c. वह बचपन से ही पहलवान बनने का सपना देखा था |

d. वह अपनी सास को तकलीफ देने वाले लोगों से लड़ना चाहता था|

3. धारोष्ण दूध का क्या अर्थ है?

a. पौष्टिक दूध

b. खौलता हुआ दूध

c. स्वादिष्ट दूध

d. थन से निकला हुआ ताजा दूध

4. पहलवान बन जाने के बाद लुट्टन के चलने के तरीके में क्या परिवर्तन आया ?

a. लुट्टन की चाल धीमी पड गई |

b. लुट्टन की चलने की गति बढ गई|

c. लुट्टन पहलवान की भाँति दोनों हाथों को दोनों ओर 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर,चलने लगा |

d. लुट्टन दोनों हाथों को बांधकर चलने लगा |

5. नियमित कसरत का लुट्टन के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ा?

a. नियमित कसरत ने किशोरावस्था में ही उसके सीने और बाहों को सुडौल और मांसल बना दिया था

b. नियमित कसरत से वह अपनी उम्र से बड़ा दिखता था |

c. नियमित कसरत से वह थका हुआ था |

d. लुट्टन की मांसपेशियों में दर्द होने लगा |

उत्तर–1.d, 2.d, 3.d, 4.c, 5.a

घ) रात्री की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी |पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस ख्याल से ढोलक बजाता हो,किन्तु गाँव के अर्द्धमृत ,औषधि उपचार पथ्य विहीन प्राणियों में यह संजीवनी शक्ति ही भरती थी |बूढे जवानों के शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था |स्पंदन शक्तिहीन स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी |अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही ,पर इसमें कोई संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समाय कोई तकलीफ नहीं होती थी | मृत्यु से वे डरते नहीं थे |

1. ढोलक किसे ललकारती रहती थी ?

a. रात्री की विभीषिका को

b. पहलवान को

c. संजीवनी शक्ति को

d. उपर्युक्त सभी उत्तर गलत है|

2. उपर्युक्त गदयांश में गाँव की किस स्थिति का वर्णन है?

a. महामारी का दृश्य

b. चुनाव का दृश्य

c. विद्यालय का दृश्य

d. दंगल का दृश्य

3. बूढे जवानों के शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था |क्यों?

a. कुत्तों की आवाज सुनकर

b. पहलवान की ढोलक सुनकर

c. पहलवान को देखकर

d. पहलवान के दोनों बेटों को देखकर

4. बाबा उठा पटक दो वाला ताल बनाओ |यह वाक्य किसने कहा?

a. पहलवानों के लडकों ने

b. दंगल के पहलवानों ने

c. गाँव वालों ने

d. इनमे से कोई नहीं

5. गाँव में संजीवनी शक्ति भरने का काम कौन करता है?

a. सियारों का क्रंदन

b. पेचक की आवाज़

c. राजा की आवाज़

d. ढोलक की आवाज़

उत्तर–1.a, 2.a, 3.b, 4.a, 5.d

ड.)विजयी लुट्टन कूदता फांदता ,ताल ठोकता सबसे पहले बाजे वालों की ओर दौड़ा और ढोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया | फिर दौडकर उसने राजा साहब को गोद में उठा लिया

|राजा साहब के कीमते कपड़े मिट्टी में सन गए| मेनेजर साहब ने आपत्ति की - 'है है अरे रे !" किंतु राजा साहब ने उसे स्वयं छाती से लगाकर गदगद होकर कहा -जीते रहो बहादुर ! तुमने मिट्टी की लाज रख ली |

पंजाबी पहलवानों की जमायत आंखें पोंछ रही थी | लुट्टन को राजा साहब ने पुरस्कृत ही नहीं किया ,अपने दरबार में सदा के लिए रख लिया |तब से लुट्टन राज पहलवान हो गया और राजा साहब उसे लुट्टन सिंह कहकर पुकारने लगे | राज पंडितों ने मुँह बिचकाया - 'हुजूर जाति का ..... सिंह '

1. विजयी लुट्टन ने सबसे पहले किसको प्रणाम किया ?

a. ढोलक को

b. सास को

c. ईश्वर को

d. राजा को

2. राजा साहब को लुट्टन ने गोद में उठाने पर किसने आपत्ति प्रकट की ?

a. मंत्री ने

b. अन्य पहलवानों ने

c. राजा साहब ने

d. मेनेजर ने

3. राजा साहब ने लुट्टन को कैसे पुरस्कृत किया ?

a. प्रशंसा करके

b. इनाम देकर

c. राज पहलवान बनाकर

d. गले लगाकर

4. राज पंडितों द्वारा लुट्टन की विरिध से समाज की किस बुराई की ओर संकेत किया गया है?

a. दासता की ओर

b. साम्प्रदायिकता की ओर

c. क्षेत्रीयता की ओर

d. जाति - प्रथा की ओर

5. पंजाबी पहलवान किसकी आँखें पोंछ रहे थे ?

a. लुट्टन की

b. चाँद सिंह की

c. राजा साहब की

d. मेनेजर की

उत्तर- 1.a, 2.d, 3.c, 4.d, 5.b

प्रश्न 1.**कुश्ती के समय ढोल की आवाज़ और लुट्ट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज़ आपके मन में कैसी ध्वनि पैदा करते हैं, उन्हें शब्द दीजिए।**

उत्तर:कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में अद्भुत तालमेल था। ढोल बजते ही लुट्टन की रगों में खून दौड़ने लगता था। उसे हर थाप में नए दाँव-पेंच सुनाई पड़ते थे। ढोल की आवाज उसे साहस प्रदान करती थी। ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में निम्नलिखित तालमेल था

धाक-धिना, तिरकट तिना - दाँव काटो, बाहर हो जाओ।

चटाक्-चट्-धा - उठा पटक दे।

धिना-धिना, धिक-धिना – चित करो, चित करो।

ढाक्-ढिना - वाह पट्ठे।

चट्-गिड-धा - मत डरना। ये ध्वन्यात्मक शब्द हमारे मन में उत्साह का संचार करते हैं।

प्रश्न 2.**कहानी के किस-किस मोड़ पर लुटेन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?**

उत्तर:लुट्न पहलवान का जीवन उतार-चढ़ावों से भरपूर रहा। जीवन के हर दुख-सुख से उसे दो-चार होना पड़ा। सबसे पहले उसने चाँद सिंह पहलवान को हराकरे राजकीय पहलवान का दर्जा प्राप्त किया। फिर काला खाँ को भी परास्त कर अपनी धाक आसपास के गाँवों में स्थापित कर ली। वह पंद्रह वर्षों तक अजेय पहलवान रहा। अपने दोनों बेटों को भी उसने राजाश्रित पहलवान बना दिया। राजा के मरते ही उस पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। विलायत से राजकुमार ने आते ही पहलवान और उसके दोनों बेटों को राजदरबार से अवकाश दे दिए। गाँव में फैली बीमारी के कारण एक दिन दोनों बेटे चल बसे। एक दिन पहलवान भी चल बसा और उसकी लाश को सियारों ने खा लिया। इस प्रकार दूसरों को जीवन संदेश देने वाला पहलवान स्वयं खामोश हो गया।

प्रश्न 3.**लुट्टन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यही ढोल है?**

उत्तर:पहलवान ने ढोल को अपना गुरु माना और एकलव्य की भाँति हमेशा उसी की आज्ञा का अनुकरण करता रहा। ढोल को ही उसने अपने बेटों का गुरु बनाकर शिक्षा दी कि सदा इसको मान देना। ढोल लेकर ही वह राज-दरबार से रुखसत हुआ। ढोल बजा-बजाकर ही उसने अपने अखाड़े में बच्चों-लड़कों को शिक्षा दी, कुश्ती के गुर सिखाए। ढोल से ही उसने गाँव वालों को भीषण दुख में भी संजीवनी शक्ति प्रदान की थी। ढोल के सहारे ही बेटों की मृत्यु का दुख पाँच दिन तक दिलेरी से सहन किया और अंत में वह भी मर गया। यह सब देखकर लगता है कि उसका ढोल उसके जीवन का संबल, जीवन-साथी ही था।

प्रश्न 4.**गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?**

उत्तर:ढोलक की आवाज़ सुनकर लोगों में जीने की इच्छा जाग उठती थी। पहलवान नहीं चाहता था कि उसके गाँव का कोई आदमी अपने संबंधी की मौत पर मायूस हो जाए। इसलिए वह ढोल बजाता रहा। वास्तव में ढोल बजाकर पहलवान ने अन्य ग्रामीणों को जीने की कला सिखाई। साथ ही अपने बेटों की अकाल मृत्यु के दुख को भी वह कम करना चाहता था।

प्रश्न 5.**ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था।अथवा पहलवान की ढोलक की उठती गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है?**

उत्तर-महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी।

प्रश्न 6.**महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?**

उत्तर:महामारी ने सारे गाँव को बुरी तरह से प्रभावित किया था। लोग सूर्योदय होते ही अपने मृत संबंधियों की लाशें उठाकर गाँव के श्मशान की ओर जाते थे ताकि उनका अंतिम संस्कार किया जा सके। सूर्यास्त होते ही सारे गाँव में मातम छा जाता था। किसी न किसी बच्चे, बूढ़े अथवा जवान के मरने की खबर आग की तरह फैल जाती थी। सारा गाँव श्मशान घाट बन चुका था।

प्रश्न 7.**कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था।**

(क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?

(ख) इसकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?

(ग) कुश्ती को फिर से प्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर:(क) कुश्ती या दंगल पहले लोगों व राजाओं के प्रिय शौक हुआ करते थे। राजा पहलवानों को सम्मान देते थे, परंतु आज स्थिति बदल गई है। अब पहले की तरह राजा नहीं रहे। दूसरे, मनोरंजन के अनेक साधन प्रचलित हो गए हैं।

ख) कुश्ती की जगह अब अनेक आधुनिक खेल प्रचलन में हैं; जैसे-क्रिकेट, हॉकी, बैडमिंटन, टेनिस, शतरंज, फुटबॉल आदि।

(ग) कुश्ती को फिर से लोकप्रिय बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कुश्ती की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा सकती साथ-साथ पहलवानों को उचित प्रशिक्षण तथा कुश्ती को बढ़ावा देने हेतु मीडिया का सहयोग लिया जा सकता है।

प्रश्न 8.**आशय स्पष्ट करें -आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।**

उत्तर:लेखक ने इस कहानी में कई जगह प्रकृति का मानवीकरण किया है। यह गद्यांश भी प्रकृति का मानवीकरण ही है। यहाँ लेखक के कहने का आशय है कि जब सारा गाँव मातम और सिसकियों में डूबा हुआ था तो आकाश के तारे भी गाँव की दुर्दशा पर आँसू बहाते प्रतीत होते हैं। क्योंकि आकाश में चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। यदि कोई तारा अपने मंडल से टूटकर पृथ्वी पर फैले दुख को बाँटने आता भी था तो वह रास्ते में विलीन (नष्ट) हो जाता था। अर्थात् वह पृथ्वी तक पहुँच नहीं पाता था। अन्य सभी तारे उसकी इस भावना को नहीं समझते थे। वे तो केवल उसका मजाक उड़ाते थे और उस पर हँस देते थे।

प्रश्न 9.**पाठ में अनेक स्थलों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर:मानवीकरण के अंश-

अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।

आशय-रात का मानवीकरण किया गया है। ठंड में ओस रात के आँसू जैसे प्रतीत होते हैं। वे ऐसे लगते हैं मानो गाँव वालों की पीड़ा पर रात आँसू बहा रही है।

तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। आशय-तारों को हँसते हुए दिखाकर उनका मानवीकरण किया गया है। वे मजाक उड़ाते प्रतीत होते हैं।

ढोलक लुढ़की पड़ी थी। आशय-यहाँ पहलवान की मृत्यु का वर्णन है। पहलवान व ढोलक का गहरा संबंध है। ढोलक का बजना पहलवान के जीवन का पर्याय है।

पाठ 15 **शिरीष के फूल**

हजारी प्रसाद द्विवेदी -

पाठ का सारांश

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित निबंध 'शिरीष के फूल' एक ललित निबंध है, जिस में लेखक ने शिरीष के फूल की तुलना एक ऐसे अवधूत (अनासक्त योगी) से की है जो ग्रीष्म की भीषण तपन सहकर भी खिला रहता है। लेखक ने इसके माध्यम से मनुष्य को यह संदेश दिया है कि उसे विपरीत स्थितियों में भी घबराना नहीं चाहिए अपितु कठिन से कठिन संकट का भी उसी प्रकार से सामना करना चाहिए अपितु कठिन से कठिन संकट का भी उसी प्रकार से सामना करना चाहिए जैसे जेठ की तपती दोपहरी में शिरीष फूलों से लदकर झूमते हुए अपनी मन्द सुगन्ध चारों ओर बिखेरता रहता है।

शिरीष की प्रशंसा करते हुए लेखक लिखता है कि शिरीष ऐसा वृक्ष है जो छायादार होने के साथ ही अपने फूलों की महक वसन्त के आगमन से लेकर भादों तक बिखेरता रहता है। जेठ की प्रचण्ड गर्मी को भी वह अपने कोमल फूलों के साथ झूम-झूम कर व्यतीत कर लेता है। गर्मी में जब अन्य वनस्पतियाँ तथा फूल आदि सूख जाते हैं। शिरीष कालजयी अवधूत के समान लहलहाता हुआ जीवन की अजेयता का सन्देश देता रहता है। शिरीष के फूलों को इतना अधिक कोमल माना गया है कि ये केवल भँवरों के पैरों का बोझ ही सहन कर सकते हैं, पक्षियों का नहीं। फिर भी ये भीषण गर्मी को आसानी से झेल जाते हैं। कबीर और कालिदास को भी लेखक शिरीष के समान मानता है जो मस्ती, फक्कड़पन और मादकता में शिरीष के फूल के समान हैं। वे इन्हें अनासक्त योगी मानता है क्योंकि अनासक्त ही कवि हो सकता है। कबीर का फक्कड़पन और कालिदास का सौंदर्यबोध एवं मनोरम कल्पनाएँ शिरीष के समान ही हैं। सुमित्रानन्द पंत और टैगोर की भी वह शिरीष जैसी अनासक्ति से युक्त मानता है।

शिरीष के फूल जहाँ बहुत कोमल होते हैं, इसके फल बहुत कठोर होते हैं। वे अगली वसन्त के आने तक भी गिरते नहीं हैं बल्कि सूख कर खड़खड़ाते रहते हैं। उन्हें नए पत्ते और नये फल ही धकेल कर उसी प्रकार से गिरा देते हैं जैसे बूढ़े नेताओं द्वारा कुर्सी खाली न करने पर उन्हें नए नेता पीछे धकेल देते हैं। अपने इस कथन से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि मनुष्य को अपनी अवस्था तथा स्थिति के अनुरूप कार्य करना चाहिए। समय की रफ्तार को पहचान कर स्वयं को उसी के अनुसार ढाल लेना चाहिए। अधिकार का लालच

सदा नहीं बना रहना चाहिए। जिस प्रकार पुराने पत्ते झड़ जाते हैं तो नये पत्ते उन के स्थान पर आ जाते हैं उसी प्रकार से मनुष्य को भी कुर्सी से चिपके रहने के स्थान पर बुढ़ापा आने पर अपने उत्तराधिकारी की वह स्थान सौंप देना चाहिए। इस से युवा पीढ़ी को अनुभवी पीढ़ी को निर्देश में आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। जिस प्रकार बचपन, जवानी, बुढ़ापा और मृत्यु एक सत्य है उसी प्रकार से मृत्यु के स्वागत के लिए भी सदा तैयार रहना चाहिए और उसके आकस्मिक रूप से आने से पहले ही सब प्रबन्ध कर देने चाहिए नहीं तो जैसे शिरीष के पुराने खड़खड़ाते फल को नये पत्ते और फल धकेल कर गिरा देते हैं वैसे ही अधिकार के लालची व्यक्ति को भी लोग धकेल देते हैं वह मनुष्य को गांधी जसै बनने के प्रेरणा देता है जो शिरीष के फूल के समान कोमल और शिरीष के फल के समान कठोर भी थें वे शिरीष के समान वातावरण से ही जीवन-वायु खींच कर संघर्ष करते हुए देश को स्वतंत्र कर सके थे।

इस प्रकार लेखक ने 'शिरीष के फूल' निबंध के माध्यम से मनुष्य को प्रेरित करते हुए यह कहा है कि उसे सुख-दुख में समभाव से रहते हुए जीवन संघर्ष से कभी निराश नहीं होना चाहिए, अपितु शिरीष के समान वायुमण्डल से ही जीवन-रस प्राप्त कर विपरीत स्थितियों का सामना उसी प्रकार से मुस्कराते हुए करना चाहिए जैसे शिरीष के फलू भीषण गर्मी में भी लहलहाते रहते हैं। कबीर विपरीत स्थितियों में भी अपने फक्कड़पन से समाज को अपना संदेश सुनाते रहे, कालिदास अनासक्त भाव से अपने सौंदर्य निरूपण में लगे रहे, गांधी जी अपने आस-पास के वातावरण से जीवन-रस प्राप्त कर विपरीत स्थितियों का सामना करते हुए विदेशियों से देश-स्वतंत्र कराने में सफल हुए। अतः वही व्यक्ति जीवन में सफल तथा महान बन सकता है जो शिरीष के समान वायुमण्डल से रस खींचकर विपरीत स्थितियों में भी लहलहाता रहे और कोमलता तथा कठोरता का सहज मिश्रण हो। क्योंकि ऐसे अवधूत ही महान साहित्यकार, समाज सुधारक अथवा जननायक बन सकते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न :

1. लेखक ने शिरीष की तुलना किसके साथ की है?

A. भिखारी के साथ

B. अवधूत के साथ

C. साधु के साथ

D. गृहस्थ के साथ उत्तर: (B)

2. 'शिरीष के फूल' के रचयिता का क्या नाम है?

A. डॉ० नगेन्द्र

B. रामवृक्ष बेनीपुरी

C. उदय शंकरभट्ट

D. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी उत्तर: (D)

3. आरग्वध किस पेड़ का नाम है?

A. आम का

B. नीम का

C. अमलतास का

D. शिरीष का उत्तर: (C)

4. अमलतास कितने दिनों के लिए फूलता है?

A. 15-20 दिन

B. 1-2 महीने

C. 2 सप्ताह

D. 4 सप्ताह उत्तर: (A)

5. किस ऋतु के आने पर शिरीष लहक उठता है?

A. शीत ऋतु

B. शिरीष ऋतु

C. वसंत ऋतु

D. वर्षा ऋतु उत्तर: (C)

6. किस महीने तक शिरीष के फूल मस्त बने रहते हैं?

A. चैत्र

B. वैसाख

C. ज्येष्ठ

D. आषाढ़ उत्तर: (D)

7. शिरीष की डालें कैसी होती हैं?

A. कमजोर

B. मजबूत

C. मोटी

D. पतली उत्तर: (A)

8. द्विवेदी जी ने 'शिरीष के फूल' नामक पाठक में संस्कृत के किस महान कवि का उल्लेख किया है ?

A. बाणभट्ट

B. भवभूति

C. कालिदास

D. भास उत्तर: (C)

9. "धरा को प्रमान यही तुलसी जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना" कथन किस कवि का है?

A. कबीरदास

B. सूरदास

C. तुलसीदास

D. बिहारी उत्तर: (C)

10. कौन सपासप कोड़े चला रहा है?

A. रावण

B. अत्याचारी राजा

C. ब्रह्मा

D. महाकाल देवता उत्तर: (D)

11. शिरीष का वृक्ष कहाँ से अपना रस खींचता है ?

A. पानी से

B. मिट्टी से

C. वायुमंडल से

D. खाद से उत्तर: (C)

12. 'मेघदूत' किस कवि की रचना है?

A. कालिदास

B. व्यास

C. वाल्मीकि

D. भवभूति उत्तर: (A)

13. कर्णाट-राज की कन्या का क्या नाम है?

A. विजय देवी

B. लक्ष्मी देवी

C. पार्वती देवी

D. विज्जिका देवी उत्तर: (D)

14. लेखक ने कबीर के अतिरिक्त और किस कवि को अनासक्त योगी कहा है?

A. व्यास

B. ब्रह्मा

C. कालिदास

D. वाल्मीकि उत्तर: (C)

15. ईक्षुदण्ड किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

A. नीम के लिए

B. गन्ने के लिए

C. चावल के लिए

D. बांस के लिए उत्तर: (B)

16. अंत में लेखक ने शिरीष की तुलना किसके साथ की है?

A. महात्मा गांधी

B. जवाहर लाल नेहरू

C. सरदार पटेल

D. लाल बहादुर शास्त्री उत्तर: (A)

17. शिरीष के फूल को किस भाषा में कोमल माना जाता है?

A. संस्कृत

B. उर्दू

C. अंग्रेजी

D. हिब्रू उत्तर: (A)

19: राजा दुष्यंत ने किसका चित्र बनाया था?

A. मीरा

B. रत्ना

C. पद्मावती

D. शकुंतला उत्तर: (D)

20: शिरीष के फूल किन का दवाब सहन कर सकते हैं?

A. सांप

B. भौंरो

C. गिद्धों

D. चूहों उत्तर: (B)

21: कौन से महान कवि बगीचे में घने छायादार वृक्षों में झूला लगाना चाहिए?

A. वात्स्यायन

B. कालिदास

C. कबीर

D. पाश उत्तर: (A)

22. लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसे पहले क्या बनने की ज़रूरत है?

A. उदास

B. प्रेमी

C. फक्कड़

D. आज़ाद उत्तर: (C)

प्रश्न 1.**लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है?**

अथवा

शिरीष को 'अद्भुत अवधूत' क्यों कहा गया है?

उत्तर:लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत कहा है। अवधूत वह संन्यासी होता है जो विषय-वासनाओं से ऊपर उठ जाता है, सुख-दुख हर स्थिति में सहज भाव से प्रसन्न रहता है तथा फलता-फूलता है। वह कठिन परिस्थितियों में भी जीवन-रस बनाए रखता है। इसी तरह शिरीष का वृक्ष है। वह भयंकर गरमी, उमस, लू आदि के बीच सरस रहता है। वसंत में वह लहक उठता है तथा भादों मास तक फलता-फूलता रहता है। उसका पूरा शरीर फूलों से लदा रहता है। उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, तब भी शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है, वह काल व समय को जीतकर लहलहाता रहता है।

प्रश्न 2.**हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी हो जाती है - प्रस्तुत पीठ के आधार पर स्पष्ट करें।**

उत्तर:परवर्ती कवि ये समझते रहे कि शिरीष के फूलों में सब कुछ कोमल है अर्थात् वह तो कोमलता का आगार हैं लेकिन द्विवेदी जी कहते हैं कि शिरीष के फूलों में कोमलता तो

होती है लेकिन उनका व्यवहार (फल) बहुत कठोर होता है। अर्थात् वह हृदय से तो कोमल है किंतु व्यवहार से कठोर है। इसलिए हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार का कठोर होना अनिवार्य हो जाता है।

प्रश्न 3. **द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। स्पष्ट करें। (CBSE-2008)**

उत्तर: द्विवेदी जी ने शिरीष के माध्यम से कोलाहल व संघर्ष से भरी जीवन-स्थितियों में अविचल रहकर जिजीविषु बने रहने की सीख दी है। शिरीष का वृक्ष भयंकर गरमी सहता है, फिर भी सरस रहता है। उमस व लू में भी वह फूलों से लदा रहता है। इसी तरह जीवन में चाहे जितनी भी कठिनाइयाँ आएँ मनुष्य को सदैव संघर्ष करते रहना चाहिए। उसे हार नहीं माननी चाहिए। भ्रष्टाचार, अत्याचार, दंगे, लूटपाट के बावजूद उसे निराश नहीं होना चाहिए तथा प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाते रहना चाहिए।

प्रश्न 4.**हाय, वह अवधूत आज कहाँ है! ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे?**

उत्तर:लेखक कहता है कि आज शिरीष जैसे अवधूत नहीं रहे। जब-जब वह शिरीष को देखता है तब-तब उसके मन में 'हूक-सी' उठती है। वह कहता है कि प्रेरणादायी और आत्मविश्वास रखने वाले अब नहीं रहे। अब तो केवल देह को प्राथमिकता देने वाले लोग रह रहे हैं। उनमें आत्मविश्वास बिलकुल नहीं है। वे शरीर को महत्त्व देते हैं, मन को नहीं। इसीलिए लेखक ने शिरीष के माध्यम से वर्तमान सभ्यता का वर्णन किया है।

प्रश्न 5.**कवि (साहित्यकार) के लिए अनासक्त योगी की स्थित प्रज्ञता और विदग्ध प्रेम का हृदय एक साथ आवश्यक है। ऐसा विचार प्रस्तुत कर लेखक ने साहित्य कर्म के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया है। विस्तारपूर्वक समझाइए।**

उत्तर:विचार प्रस्तुत करके लेखक ने साहित्य-कम के लिए बहुत ऊँचा मानदंड निर्धारित किया हैं/विस्तारपूर्वक समझाएँ/ उत्तर लेखक का मानना है कि कवि के लिए अनासक्त योगी की स्थिर प्रज्ञता और विदग्ध प्रेमी का हृदय का होना आवश्यक है। उनका कहना है कि महान कवि वही बन सकता है जो अनासक्त योगी की तरह स्थिर-प्रज्ञ तथा विदग्ध प्रेमी की तरह सहृदय हो। केवल छंद बना लेने से कवि तो हो सकता है, किंतु महाकवि नहीं हो सकता। संसार की अधिकतर सरस रचनाएँ अवधूतों के मुँह से ही निकलती हैं। लेखक कबीर व कालिदास को महान मानता है क्योंकि उनमें अनासक्ति का भाव है। जो व्यक्ति शिरीष के

समान मस्त, बेपरवाह, फक्कड़, किंतु सरस व मादक है, वही महान कवि बन सकता है। सौंदर्य की परख एक सच्चा प्रेमी ही कर सकता है। वह केवल आनंद की अनुभूति के लिए सौंदर्य की उपासना करता है। कालिदास में यह गुण भी विद्यमान था।

प्रश्न 6.**सर्वग्रासी काल की मार से बचते हुए वही दीर्घजीवी हो सकता है जिसने अपने व्यवहार में जड़ता छोड़कर नित बदल रही स्थितियों में निरंतर अपनी गतिशीलता बनाए रखी है। पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।**

उत्तर: परिवर्तन प्रकृति का नियम है। मनुष्य को समयानुसार परिवर्तन करते रहना चाहिए। एक ही लीक पर चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। शिरीष के फूल हमें यही सिखाते हैं। वह हर मौसम में अपने को और अपने स्वभाव को बदल लेता है। इसी कारण वह निर्लिप्त भाव से वसंत, आषाढ़ और भादों में खिला रहता है। प्रचंड लू और उमस को सहन करता है। लेकिन फिर भी खिला रहता है। फूलों के माध्यम से कोमल व्यवहार करता है तो फलों के माध्यम से कठोर व्यवहार। इसीलिए वह दीर्घजीवी बन जाता है। मनुष्य को भी ऐसा ही करना चाहिए।

प्रश्न 7.**आशय स्पष्ट कीजिए**

दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा पाएँगे। भोले हैं वे। हिलते डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की ओर मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हैं। जमे कि मरे।

जो कवि अनासक्त नहीं रह सका, जो फक्कड़ नहीं बन सका, जो किए-कराए का लेखा-जोखा मिलाने में उलझ गया, वह भी क्या कवि है?...मैं कहता हूँ कि कवि बनना है मेरे दोस्तों, तो फक्कड़ बनो।

फल हो या पेड़, वह अपने-आप में समाप्त नहीं है। वह किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई अंगुली है। वह इशारा है।

उत्तर:लेखक कहता है कि संसार में जीवनी शक्ति और सब जगह समाई कालरूपी अग्नि में निरंतर संघर्ष चलता रहता है। बुद्धिमान निरंतर संघर्ष करते हुए जीवनयापन करते हैं। संसार में मूर्ख व्यक्ति यह समझते हैं कि वे जहाँ हैं, वहीं देर तक डटे रहेंगे तो कालदेवता की नजर से बच जाएँगे। वे भोले हैं। उन्हें यह नहीं पता कि एक जगह बैठे रहने से मनुष्य का विनाश हो जाता है। लेखक गतिशीलता को ही जीवन मानता है। जो व्यक्ति हिलते-डुलते

रहते हैं, स्थान बदलते रहते हैं तथा प्रगति की ओर बढ़ते रहते हैं, वे ही मृत्यु से बच सकते हैं। लेखक जड़ता को मृत्यु के समान मानता है तथा गतिशीलता को जीवन।

लेखक कहता है कि कवि को सबसे पहले अनासक्त होना चाहिए अर्थात तटस्थ भाव से निरीक्षण करने वाला होना चाहिए। उसे फक्कड़ होना चाहिए अर्थात उसे सांसारिक आकर्षणों से दूर रहना चाहिए। जो अपने किए कार्यों का लेखा-जोखा करता है, वह कवि नहीं बन सकता। लेखक का मानना है कि जिसे कवि बनना है, उसे फक्कड़ बनना चाहिए।

लेखक कहता है कि फल व पेड़-दोनों का अपना अस्तित्व है। वे अपने-आप में समाप्त नहीं होते। जीवन अनंत है। फल व पेड़, वे किसी अन्य वस्तु को दिखाने के लिए उठी हुई औगुली हैं। यह संकेत है कि जीवन में अभी बहुत कुछ है। सुंदरता व सृजन की सीमा नहीं है। हर युग में सौंदर्य व रचना का स्वरूप अलग हो जाता है।

प्रश्न 8.**शिरीष के पुष्य को शीतपुष्प भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड गरमी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?**

उत्तर:शिरीष का फूल प्रचंड गरमी में भी खिला रहता है। वह लू और उमस में भी जोर शोर से खिलता है अर्थात् विषम परिस्थितियों में भी वह समता का भाव रखता है। इसीलिए लेखक ने शिरीष को शीतपुष्प का अर्थ है ठंडक देने वाला फूल और शिरीष का फूल भयंकर गरमी में भी ठंडक प्रदान करता है।

प्रश्न 9.**कोमल और कठोर दोनों भाव किस प्रकार गांधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता बन गए?**

उत्तर:गांधी जी सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि कोमल भावों से युक्त थे। वे दूसरे के कष्टों से द्रवित हो जाते थे। वे अंग्रेजों के प्रति भी कठोर न थे। दूसरी तरफ वे अनुशासन व नियमों के मामले में कठोर थे। वे अपने अधिकारों के लिए डटकर संघर्ष करते थे तथा किसी भी दबाव के आगे झुकते नहीं थे। ब्रिटिश साम्राज्य को उन्होंने अपनी दृढ़ता से ढहाया था। इस तरह गांधी के व्यक्तित्व की विशेषता-कोमल व कठोर भाव बन गए थे।

प्रश्न 10.**आजकल अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भारतीय फूलों की बहुत माँग है। बहुत से किसान साग-सब्ज़ी व अन्न उत्पादन छोड़ फूलों की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसी मुद्दे को विषय बनाते हुए वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करें।**

उत्तर:वाद- विश्व के सभी प्रमुख देशों में भारतीय फूलों की माँग सबसे ज्यादा है। टनों की मात्रा में भारतीय फूल अन्य देशों में निर्यात हो रहे, जिस कारण भारत सरकार के राजस्व में भी अतिशय वृद्धि हो रही है। भारतीय फूलों का स्तर बहुत ऊँचा है। इस क्वालिटी और इतने प्रकार के फूल अन्य स्थानों पर मिलना संभव-सा प्रतीत नहीं होता। इसकी खेती करके कुछ ही समय में अच्छा लाभ अर्जित किया जा सकता है। इसीलिए किसान लोग फूलों की खेती को ज्यादा महत्त्व दे रहे हैं। विवाद-चूँकि भारतीय फूल विदेश में निर्यात हो रहे हैं इसलिए लोगों को आकर्षण फूलों की खेती में ज्यादा हो गया है। इस कारण वे मूल फ़सलों का उत्पादन नहीं कर रहे जिससे अनिवार्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ती जा रही हैं। अन्न उत्पादन लगातार कम होता जा रहा है। अपने थोड़े-से लाभ के लिए किसान लोग करोड़ों देशवासियों को महँगी वस्तुएँ खरीदने पर मजबूर कर रहे हैं।

प्रश्न 11.**द्विवेदी जी की वनस्पतियों में ऐसी रुचि का क्या कारण हो सकता है? आज साहित्यिक रचना फलक पर प्रकृति की उपस्थिति न्यून से न्यून होती जा रही है। तब ऐसी रचनाओं का महत्त्व बढ़ गया है। प्रकृति के प्रति आपका दृष्टिकोण रुचिपूर्ण या उपेक्षामय है? इसका मूल्यांकन करें।**

उत्तर: द्विवेदी जी का जीवन प्रकृति के उन्मुक्त आँगन में ज्यादा रमा है। प्रकृति उनके लिए शक्ति और प्रेरणादायी रही है इसीलिए उन्होंने अपने साहित्य में प्रकृति का चित्रण किया है। वे वनस्पतियाँ हमारे जीवन का आधार हैं। इनके बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है। कवि क्योंकि कुछ ज्यादा ही भावुक या संवेदनशील होता है, इसीलिए वह प्रकृति के प्रति ज्यादा संजीदा हो जाता है। मैं स्वयं प्रकृति के प्रति रुचिपूर्ण रवैया रखता हूँ। प्रकृति को जीवन शक्ति के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए। प्रकृति के महत्त्व को रेखांकित करते हुए पंत जी कहते हैं -

छोड़ द्रुमों की मृदुल छाया

बदले! तेरे बाल जाल में कैसे उलझा हूँ लोचन?

यदि हम प्रकृति को सहेजकर रखेंगे तो हमारा जीवन सुगम और तनाव रहित होगा। प्रकृति संजीवनी है। अतः इसकी उपेक्षा करना अपने अस्तित्व को खतरे में डालने जैसा है।

प्रश्न 12.**निबंधकार ने किस तरह कोमल और कठोर दोनों भावों का सम्मिश्रण शिरीष के माध्यम से किया है?**

उत्तर:प्रत्येक वस्तु अथवा व्यक्ति में दो भाव एक साथ विद्यमान रहते हैं। उसमें कोमलता भी रहती है और कठोरता भी। संवेदनशील प्राणी कोमल भावों से युक्त होगा लेकिन समाज में अपने को बनाए रखने के लिए कठोर भावों का होना भी अनिवार्य है। ठीक यही बात शिरीष के फूल पर भी लागू होती है। यद्यपि संस्कृत साहित्य में शिरीष के फूल को अत्यंत कोमल माना गया है तथापि लेखक का कहना है कि इसके फल बहुत कठोर (मजबूत) होते हैं। वे नए फूलों के आ जाने पर भी नहीं निकलते, वहीं डटे रहते हैं।

कोमलता और कठोरता के माध्यम से इस निबंध के लालित्य को इन शब्दों में निबंधकार ने प्रस्तुत किया है-"शिरीष का फूल संस्कृत साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। मेरा अनुमान है कि कालिदास ने यह बात शुरू-शुरू में प्रचार की होगी। कह गए हैं, शिरीष पुष्प केवल भौंरों के पदों का कोमल दबाव सहन कर सकता है, पक्षियों का बिलकुल नहीं। .... शिरीष के फूलों की कोमलता देखकर परवर्ती कवियों ने समझा कि उसका सब कुछ कोमल है। यह भूल है। इसके फल इतने मज़बूत होते हैं कि नए फूलों के निकल आने पर भी स्थान नहीं छोड़ते। जब तक नए फल, पत्ते मिलकर धकियाकर उन्हें बाहर नहीं कर देते तब तक वे डटे रहते हैं।

प्रश्न 13.**'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध किस श्रेणी का निबंध है? इस पर प्रकाश डालिए?**

उत्तर:हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने कई विषयों पर निबंध लिखे हैं। उनके निबंधों को कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उन्होंने ज्यादातर ललित निबंध लिखें हैं। अपनी निबंध कला से आचार्य द्विवेदी ने हिंदी ललित निबंध साहित्य को विकसित किया है। उनके साहित्यिक निबंध ही ललित निबंध हैं। अनेक विद्वान भी ऐसा ही मानते हैं। ललित निबंध क्या है इस बारे में डॉ. बैजनाथ सिंहल ने लिखा है-शोधार्थी ललित निबंध को सामान्यतः जिसे हम निबंध कहते हैं। ऊलगते हुए केवल एक ही आधार को अपनाते दिखाई देते हैं-यह आधार है लालित्य का। ललित शब्द को लेकर किसी विधा के अंतर्गत एक अलग विधा को बनाया जाना स्वीकार नहीं हो सकता। लालित्य साहित्य मात्र में रहता है तथा ललित कलाओं में साहित्य लालित्य के कारण ही सर्वोच्च कला है। इसलिए लालित्य तो साहित्य का अंतवर्ती तत्व है। डॉ० हजारी प्रसाद का 'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध भी एक ललित निबंध है।

प्रश्न 14.**प्रकृति के माध्यम से आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लालित्य दिखाने का सफल प्रयास किया है, सिद्ध करें।**

उत्तर:'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध की रचना का मूलाधार प्रकृति है। निबंधकार ने प्रकृति को आधार बनाकर इस निबंध की रचना की है। इसलिए इस निबंध में लेखक ने प्रकृति के माध्यम से लालित्य दिखाने का सफल प्रयास किया है। प्रकृति का इतना मनोरम और यथार्थ चित्रण निबंध को लालित्य से परिपूर्ण कर देता है। लेखक ने बड़े सुंदर शब्दों में प्रकृति को चित्रित किया है। शिरीष के फूल का वर्णन इस प्रकार किया है-

"वसंत के आगमन से लहक उठता है, आषाढ़ तक तो निश्चित रहता रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्यात फूलता रहता है। ...एक-एक बार मुझे मालूम होता है कि यह शिरीष का एक अद्‌भुत अवधूत है। दुख हो या सुख, वह हार नहीं मानता। न ऊधो का लेना, न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं। एक वनस्पति शास्त्री ने मुझे बताया है कि यह उस श्रेणी का पेड़ है जो वायुमंडल से अपना रस खींचता है। ज़रूर खींचता होगा, नहीं तो भयंकर लू के समय इतने कोमल ततुंजाल और ऐसे सकुमार केसर को कैसे उगा सकता था?"

प्रश्न 15.**यह निबंध भावों की गंभीरता को समुच्चय जान पड़ता है। प्रस्तुत पाठ के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।**

उत्तर:विचारों के साथ ही भावों की प्रधानता भी इस निबंध में मिलती है। भाव तत्व निबंध का प्रमुख तत्व है। इसी तत्व के आधार पर निबंधकार मूल भावना या चेतना प्रस्तुत कर सकता है। वातावरण का पूर्ण ज्ञान उन्हें था। कवि न होने के बावजूद भी प्रकृति को चित्रण भावात्मक ढंग से करते थे। प्रकृति के प्रत्येक परिवर्तन का उन पर गहरा प्रभाव होता था। वे भावुक थे इसलिए प्रकृति में होने वाले नित प्रति परिवर्तनों से वे भावुक हो जाते थे। इस बात को स्वीकारते हुए वे लिखते हैं -

"यद्‌यपि कवियों की भाँति हर फूल पत्ते को देखकर मुग्ध होने लायक हृदय विधाता ने नहीं दिया है, पर नितांत ढूँठ भी नहीं हैं। शिरीष के पुष्प मेरे मानस में थोडा हिल्लोल ज़रूर पैदा करते हैं।" निबंधकार का मानना है कि व्यक्तियों की तरह शिरीष का पेड़ भी भावुक होता है। उसमें भी संवेदनाएँ और भावनाएँ भरी होती हैं - "एक-एक बार मुझे मालूम होता है। कि यह शिरीष एक अद्‌भुत अवधूत हैं। दुख हो या सुख वह हार नहीं मानता न ऊधो को लेना न माधो का देना। जब धरती और आसमान जलते रहते हैं तब भी यह हज़रत न जाने कहाँ से अपना रस खींचते रहते हैं। मौज में आठों याम मस्त रहते हैं।" अतः निबंधकार ने इस निबंध में भावात्मकता का गुण भरा है।

प्रश्न 16.**जीवन शक्ति का संदेश इस पाठ में छिपा हुआ है? कैसे? स्पष्ट करें।**

उत्तर: द्विवेदी जी ने इस निबंध में फूलों के द्वारा जीवन शक्ति की ओर संकेत किया है। लेखक बताता है कि शिरीष का फूल हर हाल में स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखता है। इस पर गरमी-लू आदि का कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि इसमें जीवन जीने की लालसा है। इसमें आशा का संचार होता रहता है। यह फूल तो समय को जीतने की क्षमता रखता है। विपरीत परिस्थितियों में जो जीना सीख ले उसी का जीवन सार्थक है। शिरीष के फूलों की जीवन शक्ति की ओर संकेत करते हुए निबंधकार ने लिखा है-

"फूल है शिरीष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक तो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गयो तो भरे भादों में भी निर्यात फूलता रहता है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है और लू से हृदय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।" इस प्रकार निबंधकार ने शिरीष के फूल के माध्यम से जीवन को हर हाल में जीने की प्रेरणा दी है। उन्होंने कई भावों को इस निबंध में प्रस्तुत किया है। यह निबंध संवेदनाओं से भरपूर है। इन संवेदनाओं और भावनाओं का विस्तारपूर्वक चित्रण आचार्य जी ने किया है। यह एक श्रेष्ठ निबंध है।

प्रश्न 17.**निबंधकार का अधिकार लिप्सा से क्या आशय है?**

उत्तर:इस निबंध में एक प्रसंग में निबंधकार ने अधिकार लिप्सा की बात कही है। इस तथ्य ने भी प्रस्तुत निबंध के लालित्य को बढ़ाया है। निबंधकार कहता है कि प्रत्येक में अधिकार लिप्सा होनी चाहिए लेकिन अधिकार लिप्सा का अर्थ यह है। कि जीवनभर आप एक ही जगह जमे रहो। दूसरों को भी मौका देना चाहिए ताकि उनकी योग्यता को सिद्ध किया जा सके। "वसंत के आगमन के समय जब सारी वनस्थली पुष्प-पुत्र से मर्मरित होती रहती है, शिरीष के पुराने फल बुरी तरह लड़खड़ाते रहते हैं। मुझे इनको देखकर उन नेताओं की याद आती है जो किसी प्रकार ज़माने का रुख नहीं पहचानते और जब तक नई पौध के लोग उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमे रहते हैं। मैं सोचता हूँ पुराने की यह अधिकार लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती?" इस तरह निबंधकार ने अधिकार भावना को नए अर्थों में प्रस्तुत कर इस निबंध की लालित्य योजना को प्रभावी बना दिया है।

प्रश्न 18.**व्यंग्यात्मकता इस निबंध की मूल चेतना है। प्रस्तुत पाठ के आलोक में इस पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर:इस तत्व का प्रयोग करके निबंधकार ने अपने निबंध को बोझिल होने से बचा लिया है। डॉ. सक्सेना के शब्दों में आपकी रचना पद्धति में कहीं-कहीं व्यंग्य एवं विनोद भी विद्यमान है। आपको यह व्यंग्य अधिक कटु एवं तीखा नहीं होता किंतु मर्मस्पर्शी होता है और हृदय को सीधी चोट न पहुँचाकर स्थायी प्रभाव डालने वाला होता है। परंतु निबंध में व्यंग्य तत्व का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। द्विवेदी जी ने शिरीष के पेड़ की शाखाओं की कमजोरी और कवियों के मोटापे पर व्यंग्य करते हुए लिखा है-

यद्यपि पुराने कवि बहुल के पेड़ में ऐसी दोलाओं को लगा देखना चाहते थे पर शिरीष भी क्या बुरा है? डाल इसकी अपेक्षाकृत कमज़ोर ज़रूर होती हैं पर उसमें झूलने वालियों का वजन भी तो ज्यादा नहीं होता। कवियों की यही तो बुरी आदत है कि वज़न का एकदम ख्याल नहीं करते। मैं तुंदिल नरपतियों की बात नहीं कर रहा हूँ, वे चाहें तो लोहे का पेड़ लगवा लें। इस निबंध की एक और विशेषता है-स्पष्टता। द्विवेदी जी ने जो विचार अथवा भाव प्रकट किए हैं उनमें स्पष्टता का गुण विद्यमान है। उनके भावों में कोई उलझाव या बिखराव नहीं है।

प्रश्न 19.**शिरीष, अवधूत और गांधी जी एक-दूसरे के समान कैसे हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर:शिरीष के अवधूत रूप के कारण लेखक को महात्मा गांधी की याद आती है। शिरीष तरु अवधूत की तरह, बाहय परिवर्तन धूप, वर्षा, आँधी, लू-सब में शांत बना रहता है तथा पुष्पित-पल्लवित होता रहता है। इनकी तरह ही महात्मा गांधी भी मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट, खून खच्चर को बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे। इस समानता के कारण लेखक गांधी जी को याद करता है। जिस तरह शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल व कठोर हो सकता है, उसी तरह महात्मा गांधी भी कोमल-कठोर व्यक्तित्व वाले थे। यह वृक्ष और मनुष्य दोनों ही अवधूत हैं।

प्रश्न 20.**'हाय वह अवधूत आज कहाँ है!' लेखक ने यहाँ किसे स्मरण किया है? क्यों?**

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के संदर्भ में महात्मा गांधी का स्मरण क्यों किया है? साम्य निरूपित कीजिए।

उत्तर:'हाय, वह अवधूत आज कहाँ है!'-लेखक ने यहाँ महात्मा गांधी का स्मरण किया है। शिरीष भयंकर गरमी व लू में भी सरस वे फूलदार बना रहता है। गांधी जी अपने चारों छाए अग्निकांड और खून-खच्चर के बीच स्नेही, अहिंसक व उदार दोनों एक समान कठिनाइयों में जीने वाले सरस व्यक्तित्व हैं।

पाठ -16 श्रम विभाजन और जाति-प्रथा,

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

बाबा साहब भीमराव आंबेडकर

सारांश- लेखक कहता है कि आज के युग में भी जातिवाद के पोषकों की कमी नहीं है। समर्थक कहते हैं कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है। इसमें आपति यह है कि जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है।

श्रम विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

जाति प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता। इसमें व्यक्तिगत रुचि व भावना का कोई स्थान नहीं होता। पूर्व लेख ही इसका आधार है। ऐसी स्थिति में लोग काम में अरुचि दिखाते हैं। अतः आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक है क्योंकि

यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा, रुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें स्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है।

2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज

सारांश- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलतः सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार

व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है। समता के आलोचक कहते हैं कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। यह सत्य होते हुए भी महत्व नहीं रखता क्योंकि समता असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धांत है। मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर है।

1. शारीरिक वंश परंपरा,

2. सामाजिक उत्तराधिकार,

3. मनुष्य के अपने प्रयत्न ।

इन तीनों दृष्टियों से मनुष्य समान नहीं होते, परंतु क्या इन तीनों कारणों से व्यक्ति से असमान व्यवहार करना चाहिए। असमान प्रयत्न के कारण असमान व्यवहार अनुचित नहीं है, परंतु हर व्यक्ति को विकास करने के अवसर मिलने चाहिए। लेखक का मानना है कि उच्च वर्ग के लोग उत्तम व्यवहार के मुकाबले में निश्चय ही जीतेंगे क्योंकि उतम व्यवहार का निर्णय भी संपन्नों को ही करना होगा। प्रयास मनुष्य के वंश में हैं, परंतु वंश व

सामाजिक प्रतिष्ठा उसके वश में नहीं है। अतः वंश और सामाजिकता के नाम पर असमानता अनुचित है। एक राजनेता को अनेक लोगों से मिलना होता है। उसके पास हर व्यक्ति के लिए अलग व्यवहार करने का समय नहीं होता। ऐसे में वह व्यवहार्य सिद्धांत का पालन करता है कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। वह सबसे व्यवहार इसलिए करता है क्योंकि वर्गीकरण व श्रेणीकरण संभव नहीं है। समता एक काल्पनिक वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञों के लिए यही एकमात्र उपाय व मार्ग है।

पठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दें

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य कुशलता' के लिए श्रम- विभाजन को आवश्यक मानते हैं और क्योंकि जाति- प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति -प्रथा- श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक- विभाजन का भी रूप लिए हुए हैं

1 गद्यांश में इनमें से किसे विडंबना कहा गया है?

क) जातिवाद का विरोध करने को

ख) इसे अनावश्यक मानने को

ग) जातिवाद का समर्थन करने और कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

घ) जातिवाद का समर्थन करने पर कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

उत्तर (ग) कुछ लोगों द्वारा जातिवाद का समर्थन करने और कार्यकुशलता के लिए आवश्यक मानने को

2 जाति प्रथा के पोषकों का मानना है कि-

क) जाति प्रथा और श्रम विभाजन एक नहीं हो सकते

ख) जाति प्रथा श्रम विभाजन का अन्य रूप है

ग) श्रम विभाजन का कारण जाति प्रथा है

घ) समाज में जाति प्रथा का स्थान नहीं होना चाहिए

उत्तर (ख) जाति प्रथा श्रम विभाजन का अन्य रूप है

3 श्रम विभाजन की किस कमी की ओर संकेत किया गया है?

क) इससे उत्पादन में कमी आती है

ख) इससे श्रमिक अपने पेशे में रुचि नहीं लेते

ग) इस विभाजन से श्रमिकों का विभाजन हो जाता है

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ग) इस विभाजन से श्रमिकों का विभाजन हो जाता है

4 श्रम विभाजन का अर्थ है-

क) काम करने वालों को बांट देना

ख) काम को योग्यता अनुसार श्रमिकों में बांट देना

ग) श्रमिक और काम धंधे दोनों को बांट देना

घ) उपरोक्त तीनों

उत्तर (ख**)** काम को योग्यता अनुसार श्रमिकों में बांट देना

5 श्रम विभाजन का लाभ इनमें से क्या है?

क) इससे हर काम में कुशलता आती है

ख) इससे श्रमिकों की कुशलता बढ़ती है

ग) इससे काम में हानि नहीं होती है

घ) इससे श्रमिकों का अभी विभाजन हो जाता है

उत्तर (क) इससे हर काम में कुशलता आती है

2 फिर मेरी दृष्टि में आदर्श समाज क्या है ? ठीक है, यदि ऐसा पूछेंगे, तो मेरा उत्तर होगा कि मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता , भ्रातृता पर आधारित होगा ? क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है ? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए जिससे कोई भी वंचित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा

सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए । सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए । तात्पर्य है कि दूध- पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है ,और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है।

1 लेखक जिस समाज को आदर्श मानता है , उसके संबंध में असत्य अवधारणा कौन सी है ?

क) समाज में सबको स्वतंत्रता हो

ख) सब को एक समान समझा जाए

ग) समाज में गति हीनता हो जिससे लोग परिवर्तन ग्रहण न कर सकें

घ) समाज में समरसता और भाईचारा हो

उत्तर (ग) समाज में गतिहीनता हो जिससे लोग परिवर्तन ग्रहण न कर सकें

2 गद्यांश के आधार पर भ्रातृता का स्वरूप इनमें से क्या है?

क) जिसमें लोग अपना हित समझें

ख) लोग अपनी रक्षा करने में सक्षम हों

ग) लोग अपने समुदाय के लोगों को भाई समझें

घ) लोग सामूहिक रूप से एक दूसरे का हित समझें और एक दूसरे की रक्षा करें

उत्तर (घ) लोग सामूहिक रूप से एक-दूसरे का हित समझें और एक दूसरे की रक्षा करें

3 लोकतंत्र का सच्चा स्वरूप इनमें से क्या है ?

क) केवल एक शासन पद्धति

ख) सामूहिक जीवन जीने का एक तरीका

ग) अनुभव को संजोकर रखना

घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ख) सामूहिक जीवन जीने का तरीका

4 डॉक्टर अंबेडकर कैसा भाईचारा चाहते थे?

क) जिसमें लोग परस्पर दूध पानी की तरह मिलें

ख) जिसमें रुढिबद्धता हो

ग)जिसमें संबंधों में कुछ- न- कुछ बंधन हो

घ) उपयुक्त तीनों

उत्तर (क) जिसमें लोग परस्पर दूध पानी की तरह मिलें

5 'सब लोगों का उदारतापूर्वक मेल मिलाप' इसके लिए जिस शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है, वह किस विकल्प में है?

क) गतिशीलता

ख) बहुविधि हित

ग) अवाध संपर्क

घ) दूध पानी का मिश्रण

उत्तर (क) गतिशीलता

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर-

1. लेखक की दृष्टि में वर्तमान समाज में सबसे बड़ी विडंबना क्या है?

(क) जातिवाद के पोषकों की कमी न होना

(ख) जातिवाद के पोषक नगण्य होना

(ग) आर्थिक दृष्टि से जातिवाद उचित होना

(घ) सामाजिक दृष्टि से जातिवाद उचित होना

उत्तर:- (क) लेखक की दृष्टि में वर्तमान समाज में सबसे बड़ी विडंबना जातिवाद के पोषकों की कमी न होना है।

2. आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता के लिए किसे आवश्यक मानता है?

(क) धन विभाजन को

(ख) जाति विभाजन को

(ग) श्रम विभाजन को

(घ) जन विभाजन को

उत्तर:- (ग) आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है।

श्रम विभाजन व जाति-प्रथा के अनुसार भारत की जाति प्रथा की विशेषता क्या है

(क) श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन

(ख) विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच का करार

(ग) जाति के अनुसार दृष्टि

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:-(घ) श्रम विभाजन व जाति प्रथा के अनुसार श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन, विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच का करार देना तथा जाति के अनुसार दृष्टिकोण रखना आदि सभी भारत की जाति प्रथा की विशेषताएँ हैं।

3. किस सिद्धांत में मनुष्य के प्रशिक्षण व उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना ही माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है?

(क) समानता के सिद्धांत में

(ख) स्वतंत्रता के सिद्धांत में

(ग) जाति प्रथा के दूषित सिद्धांत में

(घ) सामाजिकता के सिद्धांत में

उत्तर:-(ग) जाति-प्रथा के दूषित सिद्धांत में मनुष्य के प्रशिक्षण व उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना ही माता-पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

4. 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' पाठ के अनुसार भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कौन-सा एक कारण है?

(क) धार्मिक आस्था

(ख) समानता

(ग) जाति प्रथा

(घ) स्वतंत्रता

उत्तर:-(ग) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' पाठ के अनुसार भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का एक प्रमुख कारण 'जाति प्रथा' है।

5. वर्तमान समय में जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक कारण है?

(क) प्रत्यक्ष

(ख) प्रमुख

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:-(ग) वर्तमान समय में जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रत्यक्ष व प्रमुख कारण बनी हुई है।

6. जाति-प्रथा किस प्रकार से समाज के लिए हानिकारक है?

(क) आर्थिक पहलू से

(ख) सामाजिक पहलू से

(ग) सांस्कृतिक पहलू से

(घ) ये सभी

उत्तर:-(घ) जाति-प्रथा आर्थिक पहलू, सामाजिक पहलू तथा सांस्कृतिक पहलू से समाज के लिए हानिकारक है ये सभी।

7. 'मेरी कल्पना का आदर्श-समाज' के आधार पर एक आदर्श समाज किस पर आधारित है?

(क) स्वतंत्रता पर

(ख) समानता पर

(ग) भ्रातृत्वता पर

(घ) ये सभी

उत्तर:-(घ) 'मेरी कल्पना का आदर्श-समाज' के आधार पर एक आदर्श समाज स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्वता आदि सभी पर आधारित है ये सभी।

8. 'दूध पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा हो।' यही लोकतंत्र है, पंक्ति का आशय बताइए।

(क) भाई दूध-पानी की तरह मिले हो

(ख) भाई-भाई से प्रेम करे

(ग) दूध पानी का मिश्रण हो

(घ) साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो

उत्तर:-(घ) 'दूध-पानी के मिश्रण की तरह भाईचारा हो।' यही लोकतंत्र है, पंक्ति का आशय साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव होने से है।

9. "श्रम विभाजन व जाति प्रथा के अनुसार लोकतंत्र क्या है?

(क) शासन की एक पद्धति

(ख) सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति

(ग) समाज के सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान

(घ) ख और ग दोनों

उत्तर:-(घ) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' के अनुसार लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं है,अपितु यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है।

10. हिंदू धर्म की जाति-प्रथा में व्यक्ति को क्या चुनने की स्वतंत्रता नहीं है?

(क) इच्छानुसार पेशा

(ख) शिक्षा

(ग) धर्म

(घ) स्वतंत्रता

उत्तर:-(क) हिंदू धर्म की जाति-प्रथा में व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार पेशा चुनने की स्वतंत्रता नहीं है।

11. 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना क्या कहलाता है?

(क) दासता

(ख) असमानता

(ग) सामाजिकता

(घ) ये सभी

उत्तर:-(क) 'श्रम विभाजन तथा जाति प्रथा' पाठ के आधार पर व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता न देना दासता कहलाता है।

12. फ्रांसीसी क्रांति के नारे में विवाद का विषय क्या रहा है?

(क) समता

(ख) स्वतंत्रता

(ग) समाजवाद

(घ) लोकतंत्र

उत्तर:-(क) फ्रांसीसी क्रान्ति के नारे में समता विवाद का विषय रहा है।

13. 'श्रम विभाजन व जाति-प्रथा' पाठ के आधार पर बताइए कि मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है?

(क) शारीरिक वंश परंपरा

(ख) सामाजिक उत्तराधिकार

(ग) मनुष्य के अपने प्रयत्न

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर:-(घ) 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार मनुष्य की क्षमता शारीरिक वंश परंपरा, सामाजिक उत्तराधिकार तथा मनुष्य के अपने प्रयत्न आदि तीन बातों पर निर्भर करती है उपरोक्त सभी।

14. 'जाति-प्रथा व श्रम विभाजन' के अनुसार समता का औचित्य किस पर निर्भर करता है?

(क) समान अवसर पर

(ख) समान व्यवहार पर

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर:-(ग) 'जाति-प्रथा व श्रम विभाजन' के अनुसार समता का औचित्य समान अवसर तथा समान व्यवहार पर निर्भर करता है।

15. 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार एक राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या से किस तरह का व्यवहार करना पड़ता है?

(क) जाति अनुसार

(ख) समान व्यवहार

(ग) धर्मानुसार

(घ) व्यवसाय के अनुसार

उत्तर:-(ख) 'श्रम विभाजन तथा जाति-प्रथा' पाठ के अनुसार एक राजनीतिज्ञ को बहुत बड़ी जनसंख्या से समान व्यवहार करना पड़ता है।

16. लेखक के अनुसार 'समता' किस जगत की वस्तु है?

(क) काल्पनिक जगत की

(ख) वास्तविक जगत की

(ग) आर्थिक जगत की

(घ) सामाजिक जगत की

उत्तर:-(क) लेखक के अनुसार 'समता' काल्पनिक जगत की वस्तु है।

वर्णनात्मक / निबंधात्मक / बोधगम्य प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक भीमराव आंबेडकर के 'जाति -प्रथा एवं श्रम-विभाजन' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- श्रम-विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता हो सकती है, परंतु यह श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति-प्रथा श्रमिकों के अस्वाभाविक विभाजन के साथ-साथ विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है। जाति-प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह भी मानव की रुचि पर आधारित नहीं है। सक्षम समाज को चाहिए कि वह लोगों को अपनी रुचि का पेशा करने के लिए सक्षम बनाए। जाति-प्रथा में यह दोष है कि इसमें मनुष्य का पेशा उसके प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता के आधार पर न करके उसके माता-पिता के सामाजिक स्तर से किया जाता है। यह मनुष्य को जीवन-भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है। ऐसी दशा में उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में परिवर्तन से भूखों मरने की नौबत आ जाती है। हिंदू धर्म में पेशा बदलने की अनुमति न होने के कारण कई बार बेरोजगारी की समस्या उभर आती है।

प्रश्न 2: लेखक भीमराव आंबेडकर के एक आदर्श समाज की कल्पना' का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- लेखक का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भ्रातृत पर आधारित होगा। समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए। ऐसे समाज में सबका सब कार्यों में भाग होना चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सबको संपर्क के साधन व अवसर मिलने चाहिए। यही लोकतंत्र है। लोकतंत्र मूलतः सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। आवागमन, जीवन व शारीरिक सुरक्षा की स्वाधीनता, संपत्ति, जीविकोपार्जन के लिए जरूरी औजार व सामग्री रखने के अधिकार की स्वतंत्रता पर किसी को कोई आपति नहीं होती, परंतु मनुष्य के सक्षम व प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए लोग तैयार नहीं हैं। इसके लिए व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देनी होती है। इस स्वतंत्रता के अभाव में व्यक्ति 'दासता' में जकड़ा रहेगा।

'दासता' केवल कानूनी नहीं होती। यह वहाँ भी है जहाँ कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार व कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। फ्रांसीसी क्राति के नारे में 'समता' शब्द सदैव विवादित रहा है।

प्रश्न 3:जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

अथवा

जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर- जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के निम्नलिखित तर्क हैं-

1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है । सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।

2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।

3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

प्रश्न 4:जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही हैं? क्या यह स्थिति आज भी हैं?

उत्तर -जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती रही है। भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बाँध दिया जाता था। इस निर्णय में व्यक्ति की रुचि, योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं, इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त, संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही और देता था। उद्योग-धंधों की विकास प्रक्रिया व तकनीक के कारण कुछ व्यवसायी

रोजगारहीन हो जाते थे। अतः यदि वह व्यवसाय न बदला जाए तो बेरोजगारी बढ़ती है। आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून, सामाजिक सुधार व विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति-प्रथा के बंधन काफी ढीले हुए हैं, परंतु समाप्त नहीं हुए हैं। आज लोग अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे हैं।

प्रश्न 5: लेखक के मत से ' दासता ' की व्यापक परिभाषा क्या हैं? समझाइए।

उत्तर -लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है। जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

प्रश्न 6: शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क है?

उत्तर -शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर 'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते हैं क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएँ। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। उनका तर्क है कि उत्तम व्यवहार के हक में उच्च वर्ग बाजी मार ले जाएगा। अतः सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 7: सही में आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा हैं, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर -आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। हम उनकी इस बात से सहमत हैं। आदमी की भौतिक स्थितियों उसके स्तर को निर्धारित करती है। जीवन जीने की सुविधाएँ मनुष्य को सही मायनों में मनुष्य सिद्ध करती हैं। व्यक्ति का रहन सहन और चाल चलन काफी हद तक उसकी जातीय भावना को खत्म कर देता है।

प्रश्न 8: आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया हैं अथवा नहीं? आप इस 'भ्रातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत है? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/ समझेगी?

उत्तर -आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है।

उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा। यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते हैं। कोई व्यक्ति एक-दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचता है।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. आंबेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर -आंबेडकर की कल्पना का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा।सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

प्रश्न 2. मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है ?

उत्तर -मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है

1. जाति प्रथा का श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है।

2. शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।

3. सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।

4. मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

प्रश्न 3. लेखक ने जाति प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया हैं?

उत्तर -लेखक ने जाति-प्रथा की निम्नलिखित बुराइयों का वर्णन किया है -

1. यह श्रमिक-विभाजन भी करती है।

2. यह श्रमिकों में ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।

3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।

4. यह मनुष्य को सदैव एक व्यवसाय में बाँध देती है भले ही वह पेशा अनुपयुक्त व अपर्याप्त हो।

5. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।

6. जाति-प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रुचि नहीं लेता।

प्रश्न 4. लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है ?

उत्तर -लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है। वस्तुतः यह सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इसमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 5: आर्थिक विकास के लिए जाति-प्रथा कैसे बाधक है?

उत्तर - भारत में जाति-प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर मिला पेशा ही अपनाना पड़ता है। उसे विकास के समान अवसर नहीं मिलते। जबरदस्ती थोपे गए पेशे में उनकी अरुचि हो जाती है और वे काम को टालने या कामचोरी करने लगते हैं। वे एकाग्रता से कार्य नहीं करते। इस प्रवृत्ति से आर्थिक हानि होती है और उद्योगों का विकास नहीं होता।

प्रश्न 6: डॉ० अबेडकर समता' को कैसी वस्तु मानते हैं तथा क्यों?

उत्तर - डॉ० आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु मानते हैं। उनका मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता। वह जन्म से ही सामाजिक स्तर के हिसाब से तथा अपने प्रयत्नों के कारण भिन्न और असमान होता है। पूर्ण समता एक काल्पनिक स्थिति है, परंतु हर व्यक्ति को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए समान अवसर मिलने चाहिए।

प्रश्न 7 : जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? 'श्रम-विभाजन और जाति प्रथा' के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि

1. जाति-विभाजन, श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।

2. सभ्य समाज में श्रम-विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के वर्गों में

विभाजन आवश्यक नहीं है।

3. जाति-विभाजन में श्रम-विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि

श्रम-विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है।

4. जाति प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोजगार बदलने का अवसर नहीं देती, जबकि श्रम विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।

प्रश्न 8: भारत की जाति-प्रथा की क्या विशेषता है ? श्रम विभाजन व श्रमिक-विभाजन में क्या अंतर हैं?

उत्तर -भारत की जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो करती ही है, साथ ही वह इन वर्गों को एक-दूसरे से ऊँचा-नीचा भी घोषित करती है। 'श्रम-विभाजन' का अर्थ है- अलग-अलग व्यवसायों का वर्गीकरण। 'श्रमिक-विभाजन' का अर्थ है-जन्म के आधार पर व्यक्ति का व्यवसाय व स्तर निश्चित कर देना।

प्रश्न 9: आधुनिक युग में पेशा बदलने की जरूरत क्यों पड़ती हैं? पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं?

उत्तर -आधुनिक युग में उद्योग-धंधों का स्वरूप बदलता रहता है। तकनीक के विकास से किसी भी व्यवसाय का रूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलना पड़ सकता है। तकनीक व विकास-प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पड़ता है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा।

प्रश्न 10: लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना हैं और क्यों? भ्रातृता के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिएँ तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। 'भ्रातृता' का अर्थ है भाईचारा । लेखक ऐसा भाईचारा चाहता है जिसमें बाधा न हो। सभी सामूहिक रूप से एक दूसरे के हितों को समझे तथा एक-दूसरे की रक्षा करें।

प्रश्न 11: लेखक किस बात को निष्पक्ष निर्णय नहीं मानता? न्याय का तकाजा क्या है?

उत्तर - लेखक कहता है कि उत्तम व्यवहार प्रतियोगिता में उच्च वर्ग बाजी मार जाता है क्योंकि उसे शिक्षा, पारिवारिक ख्याति, पैतृक संपदा व व्यावसायिक प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त है। ऐसे में उच्च वर्ग को उत्तम व्यवहार का हकदार माना जाना निष्पक्ष निर्णय नहीं है। न्याय का तकाजा यह है कि व्यक्ति के साथ वंश परंपरा व सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर असमान व्यवहार न करके समान व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न 12:पेशा बदलने की स्वतंत्रता न होने से क्या परिणाम होता हैं? हिन्दू धर्म की क्या स्थिति है ?

उत्तर -तकनीक व विकास प्रक्रिया के कारण उद्योगों का स्वरूप बदल जाता है। इस कारण व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलना पडला है। यदि उसे अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो तो उसे भूखा ही मरना पड़ेगा। हिंदू धर्म में जाति-प्रथा दूषित है। वह किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की आजादी नहीं देती जो उसका पैतृक पेशा न हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो।

वितान पाठ -1 सिल्वर वैडिंग

: मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सार

सिल्वर वेडिंग कहानी पीढ़ियों के अंतराल का मार्मिक चित्रण करती हुई कहानी है । आधुनिकता के दौर में यह समस्या आजकल प्रत्येक परिवार में पैदा हो गई है कि पूर्व पीढ़ी के लोग अपने बच्चों को अपने अनुसार ढालना चाहते हैं । किंतु युवा पीढ़ी अपनी पूर्व पीढ़ी के पारिवारिकों को दरकिनार करती हुई अपने ही आनंद में आधुनिक तौर-तरीकों के अनुसार जीवन जीना चाहती है और ऐसे में संबंधों में परस्पर तनाव तथा द्वेष का वातावरण पैदा हो जाता है ।

यहाँ दोनों ही पीढ़ियों को एक दूसरे का मनोविज्ञान समझने की आवश्यकता है और एक समन्वय की स्थिति अपनाने की आवश्यकता है, ताकि संस्कार भी बने रहें, आधुनिकता भी बनी रहे और परिवार भी बने रहें।

इसी का चित्रण करती हुई यह कहानी प्रारंभ होती है यशोधर बाबू से ।

आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। जो हुआ होगा और समहाउ इंप्रापर के दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। जो हुआ होगा में यथास्थितिवाद यानी ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो समहाउ इंप्रापर में एक अनिर्णय की स्थिति भी है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। वे इन स्थितियों का जिम्मेदार भी किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं।

दफ़्तर में सेक्शन अफ़सर यशोधर पंत ने जब आखिरी फ़ाइल का काम पूरा किया तो दफ़्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वे अपनी घड़ी सुबह-शाम रेडियो समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए वे दफ़्तर की घड़ी को सुस्त बताते हैं। इनके कारण अधीनस्थ को भी पाँच बजे के बाद भी रुकना पड़ता है। वापसी के समय वे किशन दा की उस परंपरा का निर्वाह करते हैं जिसमें जूनियरों से हल्का मजाक किया जाता है।

दफ़्तर में नए असिस्टेंट चड्ढा की चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पंत जी को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होते हैं। उसने थोड़ी बदतमीजीपूर्ण व्यवहार करते हुए पंत

जी की चूनेदानी का हाल पूछा। पंत जी ने उसे जवाब दिया। फिर चड्ढा ने पंत जी की कलाई थाम ली और कहा कि यह पुरानी है। अब तो डिजिटल जापानी घड़ी ले लो। सस्ती मिल जाती है। पंत जी उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में मिली है। यह घड़ी भी उनकी तरह ही पुरानी हो गई है। अभी तक यह सही समय बता रही है।

इस तरह जवाब देने के बाद एक हाथ बढ़ाने की परंपरा पंत जी ने अल्मोड़ा के रेम्जे स्कूल में सीखी थी। ऐसी परंपरा किशन दा के क्वार्टर में भी थी जहाँ यशोधर को शरण मिली थी। किशन दा कुंआरे थे और पहाड़ी लड़कों को आश्रय देते थे। पंत जी जब दिल्ली आए थे तो उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। उन्होंने यशोधर को कपड़े बनवाने व घर पैसा भेजने के लिए पचास रुपये दिए। इस तरह वे स्मृतियों में खो गए। तभी चड्ढा की आवाज से वे जाग्रत हुए और मेनन द्वारा शादी के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहने लगे'नाव लेट मी सी, आई वॉज़ मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फ़ोर्टी सेवन।'

मेनन ने उन्हें 'सिल्वर वैडिंग की बधाई दी। यशोधर खुश होते हुए झेपे और झेपते हुए खुश हुए। फिर भी वे इन सब बातों को अंग्रेजों के चोंचले बताते हैं, किंतु चड्ढा उनसे चाय-मट्ठी व लड्डू की माँग करता है। यशोधर जी दस रुपये का नोट चाय के लिए देते हैं, परंतु उन्हें यह 'समहाउ इंप्रॉपर फाइंड' लगता है। अत: सारे सेक्शन के आग्रह पर भी वे चाय पार्टी में शरीक नहीं होते है। चडढ़ा के जोर देने पर वे बीस रुपये और दे देते हैं, किंतु आयोजन में सम्मिलित नहीं होते। उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प-गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उनकी परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर बाबू ने इधर रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने या स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीति अपनाई है। यह बात उनकी पत्नी व बच्चों को अखरती थी। क्योंकि वे बुजुर्ग नहीं थे। बिड़ला मंदिर से उठकर वे पहाड़गंज जाते और घर के लिए साग-सब्जी लाते। इसी समय वे मिलने वालों से मिलते थे। घर पर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते थे।

आज यशोधर जब बिड़ला मंदिर जा रहे थे तो उनकी नजर किशन दा के तीन बेडरूम वाले क्वार्टर पर पड़ी। अब वहाँ छह-मंजिला मकान बन रहा है। उन्हें बहुमंजिली इमारतें अच्छी नहीं लग रही थीं। यही कारण है कि उन्हें उनके पद के अनुकूल एंड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर पर डी-2 टाइप अच्छे क्वार्टर मिलने का ऑफ़र भी स्वीकार्य नहीं है और वे यहीं बसे रहना

चाहते हैं। जब उनका क्वार्टर टूटने लगा तब उन्होंने शेष क्वार्टर में से एक अपने नाम अलाट करवा लिया। वे किशन दा की स्मृति के लिए यहीं रहना चाहते थे।

पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा है। इसी वजह से उन्हें घर जल्दी लौटना अच्छा नहीं लगता था। उनका बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पर लग गया था। यशोधर बाबू को यह भी 'समहाउ' लगता था क्योंकि यह कंपनी शुरू में ही डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह वेतन देती थी। उन्हें कुछ गड़बड़ लगती थी। उनका दूसरा बेटा आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा था। उसका एलाइड सर्विसेज में न जाना भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनका तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया। उनकी एकमात्र बेटी शादी से इनकार करती है। साथ ही वह डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की धमकी भी देती है। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं, परंतु उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

यशोधर की पत्नी संस्कारों से आधुनिक नहीं है, परंतु बच्चों के दबाव से वह मॉडर्न बन गई है। शादी के समय भी उसे संयुक्त परिवार का दबाव झेलना पड़ा था। यशोधर ने उसे आचार-व्यवहार के बंधनों में रखा। अब वह बच्चों का पक्ष लेती है तथा खुद भी अपनी सहूलियत के हिसाब से यशोधर की बातें मानने की बात कहती है। यशोधर उसे 'शानयल बुढ़िया', 'चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे' कहकर उसके विद्रोह का मजाक उड़ाते हैं, परंतु वे खुद ही तमाशा बनकर रह गए। किशन दा के क्वार्टर के सामने खड़े होकर वे सोचते हैं कि वे शादी न करके पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते तो अच्छा होता।

यशोधर ने सोचा कि किशन दा का बुढ़ापा कभी सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने मकान ले लिए। रिटायरमेंट के बाद किसी ने भी उन्हें अपने पास रहने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर भी यह पेशकश नहीं कर पाए क्योंकि वे शादीशुदा थे। किशन दा कुछ समय किराये के मकान में रहे और फिर अपने गाँव लौट गए। सालभर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें कोई बीमारी भी नहीं हुई थी। यशोधर को इसका कारण भी पता नहीं। वे किशन दा की यह बात याद रखते थे कि जिम्मेदारी पड़ने पर हर व्यक्ति समझदार हो जाता है।

वे मन-ही-मन यह स्वीकार करते थे कि दुनियादारी में उनके बीवी-बच्चे अधिक सुलझे हुए हैं, परंतु वे अपने सिद्धांत नहीं छोड़ सकते। वे मकान भी नहीं लेंगे। किशन दा कहते थे कि मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। रिटायरमेंट होने पर गाँव के पुश्तैनी घर चले जाओ। वे इस बात को आज भी सही मानते हैं। उन्हें पता है कि गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है तथा उस पर अनेक लोगों का हक है। उन्हें लगता है कि रिटायरमेंट से

पहले कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके पास रहेगा। ऐसा न होने पर क्या होगा, इसका जवाब उनके पास नहीं होता।

बिड़ला मंदिर के प्रवचनों में उनका मन नहीं लगा। उम्र ढलने के साथ किशन दा की तरह रोज मंदिर जाने, संध्या-पूजा करने और गीता-प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे। मन के विरोध को भी वे अपने तर्कों से खत्म कर देते हैं। गीता के पाठ में 'जनार्दन' शब्द सुनने से उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आई। उनकी चिट्ठी से पता चला कि वे बीमार है। यशोधर बाबू अहमदाबाद जाना चाहते हैं, परंतु पत्नी व बच्चे उनका विरोध करते हैं। यशोधर खुशी-गम के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं तथा बच्चों को भी वैसा बनाने की इच्छा रखते हैं। किंतु उस दिन हद हो गई जिस दिन कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि "आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा।"

यशोधर की पत्नी का कहना है कि उन्होंने बचपन में कुछ नहीं देखा। माँ के मरने के बाद विधवा बुआ ने यशोधर का पालन-पोषण किया। मैट्रिक पास करके दिल्ली में किशन दा के पास रहे। वे भी कुंवारे थे तथा उन्हें भी कुछ नहीं पता था। अत: वे नए परिवर्तनों से वाकिफ़ नहीं थे। उन्हें धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी पारिवारिक चिंतन में डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। ध्यान लगाने का कार्य रिटायरमेंट के बाद ठीक रहता है। इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार है।

जब तक किशन दा दिल्ली में रहे, तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। उनके जाने के बाद घर में होली गवाना, रामलीला के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना, 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए घर बुलाना आदि कार्य वे पत्नी व बच्चों के विरोध के बावजूद करते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें, परंतु बच्चे उन्हें सदैव उपेक्षित करते हैं। प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मंडी गए। वे चाहते थे कि उनके लड़के घर का सामान खुद लाएँ, परंतु उनकी आपस की लड़ाई से उन्होंने इस विषय को उठाना ही बंद कर दिया। बच्चे चाहते थे कि वे इन कामों के लिए नौकर रख लें। यशोधर को यही 'समहाउ इंप्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उन्हें दे। क्या वह ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था? उनके ऊपर, वह हर काम अपने पैसे से करने की धौंस देता है। घर में वह तमाम परिवर्तन अपने पैसों से कर रहा है। वह हर चीज पर अपना हक समझता है।

सब्जी लेकर वे अपने क्वार्टर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था-वाई०डी० पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ। घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर, मोटर-साइकिलें

थीं तथा लोग विदा ले-दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थीं। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

यशोधर चुपचाप घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने देर से आने का उलाहना दिया। यशोधर ने शर्मीली-सी हँसी हँसते हुए पूछा कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है? यशोधर के दूर के भांजे ने कहा, "जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार महीने कमाने लगा है, तब से।" यशोधर को अपनी सिल्वर बैडिंग की यह पार्टी भी अच्छी नहीं लगी। उन्हें यह मलाल था कि सुबह ऑफ़िस जाते समय तक किसी ने उनसे इस आयोजन की चर्चा नहीं की थी। उनके पुत्र भूषण ने जब अपने मित्रों-सहयोगियों से यशोधर बाबू का परिचय करवाया तो उस समय उन्होंने प्रयास किया कि भले ही वे संस्कारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज से भी अच्छी तरह परिचित होने का एहसास कराएँ।

बच्चों के आग्रह पर यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह पर केक काटने के स्थान पर जाकर खड़े हो गए। फिर बेटी के कहने पर उन्होंने केक भी काटा, जबकि उन्होंने कहा- 'समहाउ आई डोंट लाइक आल दिस।" परंतु उन्होंने केक नहीं खाया क्योंकि इसमें अंडा होता है। अधिक आग्रह पर उन्होंने संध्या न करने का बहाना किया तथा पूजा में चले गए। आज उन्होंने पूजा में देर लगाई ताकि अधिकतर मेहमान चले जाएँ। यहाँ भी उन्हें किशन दा दिखाई दिए। उन्होंने पूछा कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं चाहे वह गृहस्थ हो या ब्रहमचारी, अमीर हो या गरीब। शुरू और आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं और यह बताने में भी कि मेरे बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं, उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए? किशन दा अकेलेपन का राग अलाप रहे थे। उनका मानना था कि यह सब माया है। जो भूषण आज इतना उछल रहा है, वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा, जितना कि आज तू कर रहा है।

इस बीच यशोधर की पत्नी ने वहाँ आकर झिड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे। मेहमानों के जाने की बात सुनकर वे लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। बच्चे इस परंपरा

के सख्त खिलाफ़ थे। उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई। टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलने की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनकर चले जाते हैं, वह बुरा लगता है। बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई। यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहन कर दूध लेने जाया करें। वह स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

बहुविकल्पात्मक प्रश्न

1.नई पीढ़ी का रवैया पाठ में कैसा है?

(क) असंवेदनशील

(ख) संवेदनशील

(ग) सहानुभूतिपूर्ण

(घ) सहयोगात्मक

2. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में 'जो हुआ होगा' से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है?

(क) लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है

(ख) लेखक को मृत्यु का कारण पता है

(ग) लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है

(घ) लेखक को मृत्यु से कोई अन्तर नहीं पड़ता है ।

3. किशोर दा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता क्यों नहीं कर पाए थे?

(क) यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा से नाराज थी

(ख) यशोधर बाबू के घर में किशन दा के लिए स्थान का अभाव था

(ग) यशोधर बाबू का अपना परिवार था जिसे वे नाराज नहीं करना चाहते थे

(घ) किशन दा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था जिससे किशन दा ने स्वीकार नहीं किया

4. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' के अनुसार -"यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं ।" यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था?

(क) किशन दा उन्हें भड़काते थे

(ख) पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी

(ग) पीढ़ी के अन्तराल के कारण

(घ) वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे

5. मकान के विषय में किशनदा की कौन सी उक्ति यशोधर बाबू को जँचती थी?

(क) अपना मकान होना ही चाहिए

(ख) मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं

(ग) सरकारी क्वार्टर सरकारी ही होता है

(घ) इनमें से कोई नहीं

6. यशोधर बाबू ने किस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी?

(क) सरस्वती विद्यालय

(ख) रेम्जे स्कूल, अल्मोड़ा

(ग) शिष्यगण विद्यालय

(घ) अन्य

7. यशोधर पंत जब दिल्ली आए थे तब उन्हें नौकरी किसने दिलवाई?

(क) किशनदा ने

(ख) शर्मा ने

(ग) किसी ने नहीं

(घ) अन्य

8. यशोधर बाबू का विवाह कब हुआ था?

(क) 6 फरवरी, 1947

(ख) 6 फरवरी, 1946

(ग) 5 फरवरी, 1947

(घ) 6 फरवरी, 1945

9. किशनदा ने अपना जीवन किसके नाम कर दिया था?

(क) परिवार के नाम

(ख) समाज के नाम

(ग) दोस्तों के नाम

(घ) अन्य

10. यशोधर बाबू किस मंत्रालय में काम करते थे?

(क) वित्त मंत्रालय

(ख) गृह मंत्रालय

(ग) रक्षा मंत्रालय

(घ) खेल मंत्रालय

11. यशोधर बाबू के कितने बेटे थे?

(क) दो बेटे

(ख) तीन बेटे

(ग) चार बेटे

(घ) इनमें से कोई भी नहीं

12.यशोधर बाबू के बड़े बेटे का नाम क्या था?

(क) जनार्दन

(ख) गिरीश

(ग) भूषण

(घ) इनमें से कोई भी नहीं

13. किशन दा का पूरा नाम क्या था?

(क) कृष्ण पांडे

(ख) कृष्णानंद पांडे

(ग) किशन पांडे

(घ) उक्त में से कोई भी नहीं

14. यशोधर बाबू की बेटी क्या करना चाहती थी?

(क) अमेरिका जाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई

(ख) अमेरिका जाकर डॉक्टरी की पढ़ाई

(ग) इंग्लैंड जाकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई

(घ) इंग्लैंड जाकर डॉक्टरी की पढ़ाई

15. यशोधर बाबू के विवाह के पश्चात् उनके क्वार्टर में उनके साथ और कौन रहता था?

(क) यशोधर बाबू के ताऊ जी

(ख) यशोधर बाबू के पिताजी

(ग) यशोधर बाबू के चाचा जी

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

16. यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किससे प्रभावित था?

(क) किशनदा से

(ख) अपने ताऊ जी से

(ग) अपने पिताजी से

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

17. यशोधर बाबू की पत्नी उनसे नाराज क्यों रहती थी?

(क) विवाह के पश्चात् संयुक्त परिवार में रहने के कारण

(ख) विवाह के पश्चात् बंदिशों के कारण

(ग) नवविवाहिता पर पुराने नियम लागू होने के कारण

(घ) उपर्युक्त सभी

18. आप 'सिल्वर वैडिंग' कहानी की मूल संवेदना किसे कहेंगे?

(क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

(ख) पीढ़ी का अन्तराल

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

19. यशोधर बाबू के बेटे भूषण ने उन्हें उनकी शादी की 25 वीं वर्षगाँठ पर क्या उपहार दिया?

(क) कुर्ता पजामा

(ख) ऊनी ड्रेसिंग गाउन

(ग) आधुनिक घड़ी

(घ) इनमें से कुछ भी नहीं

20. यशोधर बाबू कहाँ के रहने वाले हैं?

(क) कुमाऊँ प्रदेश

(ख) गढ़वाल प्रदेश

(ग) पंजाब

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

21. यशोधर बाबू स्वयं को डेमोक्रेटिक कैसे समझते हैं?

(क) वे अपने नियम परिवार में लागू नहीं करते ।

(ख) सभी को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है ।

(ग) बेटा बेटी सभी को समान मानते हैं

(घ) उपर्युक्त सभी

22. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" इन जुमले में कौन सा भाव निहित है?

(क) यथास्थितिवाद यानि ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेने का भाव

(ख) अनिर्णय की स्थिति

(ग) द्वंद्व का भाव

(घ) उपर्युक्त सभी

23. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" ये दो जुमले, जो कहानी के बीजवाक्य हैं, कहानी के किस पात्र में बदलाव को असंभव बना देते हैं?

(क) यशोधर

(ख) किशनदा

(ग) यशोधर की पत्नी

(घ) उपर्युक्त सभी

24. यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी आधुनिकता में कैसे ढल गई?

(क) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के कारण

(ख) वक़्त को देखते हुए

(ग) मन की इच्छा से

(घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

25. 'सिल्वर वेडिंग' कहानी में शादी की वर्षगाँठ थी?

(क) 20 वीं

(ख) 25वीं

(ग) 35वीं

(घ) 15वीं

26. यशोधर पंत का तीसरा बेटा कहाँ रहता था?

(क) अमेरिका

(ख) रूस

(ग) फ्रांस

(घ) चीन

27. जनार्दन जोशी कौन थे?

(क) यशोधर पंत के अधीनस्थ कर्मचारी

(ख) यशोधर पंत के पड़ोसी

(ग) यशोधर पंत के मित्र

(घ) यशोधर पंत के बहनोई

28. यशोधर को जीवन जीने की कला किसने सिखाई?

(क) किशन दा

(ख) श्री टी एन शर्मा

(ग) भूषण

(घ) वाई. डी. पन्त

29. किशन दा की किस परंपरा को यशोधर ने जीवंत रखा?

(क) घर में होली गवाना

(ख) जन्मदिन मनाना

(ग) शादी की वर्षगाँठ बनाना

(घ) भोज का आयोजन करना

30. यशोधर बाबू ऑफिस कैसे जाते थे?

(क) कार से

(ख) स्कूटर से

(ग) साइकिल से

(घ) पैदल

31. इनमें सिल्वर वेडिंग कहानी के पात्र नहीं हैं?

(क) यशोधर बाबू

(ख) भूषण

(ग) किशन दा

(घ) रवि दा

32. यशोधर बाबू से बदतमीजी किसने की?

(क) चड्ढा ने

(ख) भूषण ने

(ग) वाई. डी. पंत ने

(घ) जनार्दन जोशी ने

33. घर में दूध लाने की जिम्मेदारी किस पर थी?

(क) भूषण पर

(ख) यशोधर पंत की बेटी पर

(ग) यशोधर पंत की पत्नी पर

(घ) यशोधर पंत पर

34. यशोधर पंत को भाऊ कौन कहता था?

(क) किशन दा

(ख) जनार्दन जोशी

(ग) भूषण

(घ) वाई. डी. पंत

35. भगवानदास कौन था?

(क) ऑफिस का चपरासी

(ख) ऑफिस का कर्मचारी

(ग) ऑफिस का बड़ा बाबू

(घ) ऑफिस का अर्दली

36. किशन दा के मानस पुत्र कौन हैं?

(क) जनार्दन जोशी

(ख) भगवान दास

(ग) यशोधर पंत

(घ) वाई डी पंत

37. 'जनार्दन' शब्द सुनकर यशोधर पंत को किसकी याद आई?

(क) किशन दा की

(ख) भूषण की

(ग) अपने बहनोई जनार्दन जोशी की

(घ) चड्ढा की

38. यशोधर पंत ऑफिस के बाद प्रतिदिन कौन से मंदिर जाते थे?

(क) बिड़ला मंदिर

(ख) योग माया मंदिर

(ग) गौरी शंकर मंदिर

(घ) अक्षरधाम मंदिर

39. दिल्ली में यशोधर पंत को किसने आश्रय दिया?

(क) किशन दा

(ख) जनार्दन जोशी

(ग) वाई. डी. पंत

(घ) चड्ढा

40. यशोधर पंत की बेटी पढ़ाई कर रही है?

(क) डॉक्टरी की

(ख) इंजीनियरिंग की

(ग) बैंक की

(घ) एम.बी.ए. की

41. भूषण काम करता था?

(क) विज्ञापन एजेंसी में

(ख) पेपर के दफ्तर में

(ग) टेलीफोन के दफ्तर में

(घ) शिक्षा कार्यालय में

42. माँ की मृत्यु के पश्चात यशोधर पंत किसके पास रहे?

(क) चाची

(ख) बुआ

(ग) भाभी

(घ) दादी

43. चंद्र दत्त तिवारी कौन थे?

(क) यशोधर पंत का भानजा

(ख) यशोधर पंत का मित्र

(ग) यशोधर पंत का ममेरा भाई

(घ) यशोधर पंत का अधीनस्थ कर्मचारी

44. किशनदा की परंपराओं को जीवित रखने की कोशिश में यशोधर बाबू ने किसको नाराज़ किया?

(क) गिरीश को

(ख) अपनी पत्नी को

(ग) अपने बच्चों को

(घ) पत्नी और बच्चों दोनों को

45. यशोधर बाबू बार-बार कहा करते थे?

(क) ओके

(ख) गुड बाय

(ग) समहाउ इमप्रॉपर

(घ) यू कैन गो

46. चूनेदानी कहकर किस का मजाक उड़ाया जाता है?

(क) घड़ी का

(ख) साइकिल का

(ग) पोशाक का

(घ) चश्मे का

47. यशोधर बाबू की पत्नी और बच्चों को उनके घर में किए जाने वाले आयोजनों पर कौन-सी चीज़ें सख्त नापसंद थीं?

(क) वक्त की बर्बादी

(ख) खर्च और होने वाला शोर

(ग) विभिन्न लोगों का घर में आना

(घ) अन्य

48. बिड़ला मंदिर से यशोधर बाबू कहाँ जाते थे?

(क) घर

(ख) गोल मार्केट

(ग) पहाड़गंज

(घ) अन्य

49. यशोधर बाबू कितने बजे घर पहुँचते थे?

(क) आठ बजे

(ख) सात बजे

(ग) दस बजे

(घ) अन्य

50. यशोधर बाबू के कितने बच्चे थे?

(क) पाँच

(ख) तीन

(ग) चार

(घ) दो

51. दफ्तर में यशोधर बाबू के मातहतों को शाम पाँच के बाद भी बैठना पड़ता था क्योंकि-

क) यशोधर बाबू किसी को जाने की अनुमति नहीं देते थे।

ख) दफ्तर में छुट्टी 6: बजे होती थी।

ग) यशोधर बाबू देर तक रुकते थे।

घ) दफ्तर में काम अधिक रहता था।

52. दफ्तर से चलते-चलते यशोधर बाबू जूनियरों से कोई मनोरंजक बात कर लेते थे-

क) यशोधर बाबू बहुत मजाकिया आदमी थे।

ख) दफ्तर के लोग बहुत मजाकिए थे।

ग) कृष्णानंद पांडे से यशोधर बाबू ने यह आदत सीखी थी।

घ) किशनदा ने यशोधर बाबू को ऐसा करने के लिए बाध्य किया था।

53. किसने कहा- "आप लोगों की देखादेखी सेक्शन की घड़ी भी सुस्त हो गई है।"

क) किशनदा ने।

ख) यशोधर बाबू ने।

ग) पाटिल ने।

घ) चड्डा ने।

54. "के ज़माने की है बड़े बाऊ यह तो। बाबा आदम? "'यह' से क्या संकेत किया गया है यहां

क) साइकिल

ख) पेन

ग) घड़ी

घ) दफ्तर।

55. दफ्तर में चड्डा किस ओहदे पर काम करता था?

क) क्लर्क

ख) असिस्टेंट ग्रेड

ग) सेक्शन ऑफिसर

घ) चपरासी

56. "हम पुरानी चाल के, हमारी घड़ी पुरानी चाल की" - इस पंक्ति से यशोधर बाबू क्या कहना चाहते हैं?

क) यशोधर बाबू को पुरानी चीजें पसंद है।

ख) यशोधर बाबू को नई चीजें बिल्कुल पसंद नहीं हैं।

ग) यशोधर बाबू पुराने खयालात के हैं।

घ) यशोधर बाबू को पुरानी घड़ी पसंद है।

57. यशोधर बाबू को दिल्ली आते ही सरकारी दफ्तर में किसी भी काम पर नहीं लगाया जा सका क्योंकि-

क) यशोधर बाबू की शैक्षणिक योग्यता पर्याप्त नहीं थी।

ख) यशोधर बाबू की उम्र कम थी।

ग) यशोधर बाबू दिल्ली पढ़ने के लिए आए थे।

घ) यशोधर बाबू अधिक तनख्वाह चाह रहे थे।

58. किशन दा की मृत्यु का कारण पूछने पर उनके रिश्तेदार ने यशोधर बाबू को कहा 'जो हुआ होगा'। इसका अर्थ है-

क) कुछ तो हुआ है।

ख) पता नही, क्या हुआ।

ग) कुछ हुआ होगा

घ) उपरोक्त सभी।

59. गधा पचीसी में कोई क्या करता है इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बाद में हर आदमी समझदार हो जाता है। इस पंक्ति का आशय है-

क) हर आदमी गधा होता है।

ख) 25 साल तक आदमी गधा होता है।

ग) जिम्मेदारी आने पर हर आदमी समझदार हो जाता है।

घ) उपरोक्त सभी।

60. किसका कथन है - "मूर्ख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं।"

क) यशोधर बाबू

ख) यशोधर बाबू की पत्नी

ग) यशोधर बाबू का बड़ा लड़का

घ) किशन दा

उत्तरमाला

1 (क)	2 (ग)	3(ख)	4 (घ)	5(ख)	6(ख)	7(क)	8 (क)	9(ख)	10(ख)
11(ख)	12(ग)	13(ख)	14(ख)	15(क)	16(क)	17(घ)	18(ख)	19(ख)	20(क)
21(घ)	22(घ)	23(क)	24(क)	25(ख)	26(क)	27(घ)	28(क)	29(क)	30(ग)
31(घ)	32(क)	33(घ)	34(क)	35(क)	36(ग)	37(ग)	38(क)	39(क)	40(क)
41(क)	42(ख)	43(क)	44(ख)	45(ग)	46(क)	47(घ)	48(ग)	49(क)	50(ग)
51(ग)	52(ग)	53(ख)	54(ग)	55(ख)	56(ग)	57(ख)	58(ख)	59 (ग)	60(घ)

वितान पाठ 2 **जूझ**

: आनंद यादव

पाठ का सार

“जूझ” कहानी मूलरूप से मराठी उपन्यास “झोबी” से ली गई हैं। जिसके लेखक डॉ आनंद यादव हैं।इस मराठी कहानी का हिंदी अनुवाद केशव प्रथम वीर द्वारा किया हैं। डॉ आनंद रतन यादव का मूल नाम आनंदा रत्नाप्पा ज़काते हैं। जूझ (अर्थात जूझना या संघर्ष करना) कहानी आनंद यादव की आत्मकथा का एक हिस्सा है ।

लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक रखा है। उसके पिता सारा दिन गाँव में घूमते रहते और रखमा बाई के कोठे पर भी जाया करते थे। स्वयं काम न करके लेखक को खेती के काम में लगा दिया था। लेखक पढ़ना चाहता था। उसे लगता था कि खेती से कोई लाभ नही, बल्कि पढ़ने से उसे नौकरी मिल जाएगी या कुछ व्यापार कर सकेगा। दिवाली बीत जाने पर महिना भर ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाना पड़ता क्योंकि लेखक के पिता को गुड़ की अच्छी कीमत मिल जाएगी। एक दिन लेखक ने माँ से पाठशाला जाने की इच्छा प्रकट की। माँ भी चाहती थी कि वह पाठशाला जाए लेकिन पिता के गुस्से के कारण वह भी चुप थी। लेखक ने एक तरीका बताया कि यदि दत्ता राव साहब पिता जी को समझाए तो बात बन सकती है। दत्ता राव साहब उस इलाके के प्रभावशाली व्यक्ति थे। माँ -बेटे ने जाकर उनको सारी बात बताई। राव साहब एक समझदार व्यक्ति और शिक्षा प्रेमी थे। उन्होने लेखक के पिता को डरा-धमका कर समझाया कि बेटे को पाठशाला भेजो। यदि तुम असमर्थ

हो तो वे स्वयं आनंदा को पाठशाला भेजेंगे। इस तरह लेखक का पाठशाला जाना फिर से शुरू हुआ। वह दूसरे दिन पिता जी की कडी शर्तों के अनुसार विद्यालय जाने लगा। कक्षा में सभी लडके नए थे। कक्षा के शरारती बच्चों ने उसका उपहास किया। लडकों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की। कक्षा में उसकी दोस्ती वसंत पाटिल नाम के होशियार बच्चे से हुई। वह गणित मे तेज़ था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने की कोशिश करने लगा। मास्टर उसे आनंदा कहकर बुलाने लगे। मराठी भाषा के अध्यापक न.पा.सौंदलगेकर से लेखक बहुत प्रभावित हुए। पढाते समय अध्यापक स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ, छंद और रसिकता के कारण लेखक उनसे प्रभावित हुआ। लेखक भी घर जाकर मास्टर साहब की तरह कविताएँ रचने लगा। अब लेखक का अकेलापन समाप्त हुआ। अब वह खेत में पानी लगाते हुए जानवर को चराते हुए कविता रचने लगा। वह अपने आस-पास के लोगों अपने गाँव , खेतो पर तुकबंदी करने लगा। वह अपनी लिखी हुई कविता मास्टर साहब को दिखाने लगता। मस्टर साहब ने ही उसे छंद अलंकार लय, का ज्ञान कराया। साथ ही अन्य कवियों के काव्य संग्रह भी दिया, जिसे पढ़कर लेखक ने कविता की समझ विकसित की।

पाठ के कुछ स्मरणीय बिंदु -

1. पाठ 'जूझ' के लेखक आनंद यादव हैं।

2. 'जूझ' पाठ के नायक/लेखक की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

 पढ़ने की ललक- लेखक माँ और दत्ता जी राव देसाई की मदद से पुनः पढ़ाई करता है।

 कठोर परिश्रमी - वह पढ़ाई भी करता है, खेतों में काम भी और ढोर भी चराता है।

 दूरदर्शी - उसे पता था कि अगर वह पढ़-लिख लेगा तो सरकारी नौकरी लग जाएगी।

 लगनशील - अपनी लगन के कारण ही वह स्कूल में होशियार बच्चों में गिना जाने लगता है। गणित में दक्ष हो जाता है।

 मराठी भाषा का अच्छा ज्ञानार्जन करता है और कविता भी लिखता है।

 अध्यापकों का चहेता --पाठ में तीन अध्यापकों का ज़िक्र है। रणनवरे मास्टर,मंत्री सर जो गणित पढ़ाते थे और न.वा.सौंदलगेकर जो मराठी पढ़ाते थे।

3. वसंत पाटील नाम का एक लड़का शरीर से दुबला-पतला, किंतु बड़ा होशियार था। उसके सवाल हमेशा सही निकलते थे। स्वभाव से शांत। हमेशा पढ़ने में लगा रहता। दूसरों के सवालों की जाँच करता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था।

4. कविता करना सीख जाने के बाद लेखक को अकेलेपन में भी मज़ा आने लगा, उसे यह भी लगने लगा कि कवि भी मनुष्य ही होते हैं और जब उसकी कविता को स्कूल के समारोह में गवाया गया तो उसे ऐसा लगा मानो उसके पंख निकल आए हों।

5. लेखक जुझारू योद्धा है क्योंकि वह विषम परिस्थिति में भी अपने पढ़ने का मार्ग प्रशस्त कर लेता है और उसकी प्रतिभा और बुद्धिमत्ता तब सिद्ध हो जाती है जब वह पढ़ाई-लिखाई मे कुशल हो जाता है और कविता भी लिखना शुरू कर देता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दादा कोल्हू जल्दी क्यों लगाना चाहते थे?

(क) काम जल्दी खत्म करने के लिए

(ख) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए

(ग) दूसरी फसल के लिए

(घ) आराम करने के लिए

उत्तर: (ख) गुड़ की ज्यादा कीमत के लिए

2. 'जूझ'कहानी के शीर्षक का अर्थ क्या हैं?

(क) संघर्ष करना

(ख) चालाकी

(ग) मेहनत करना

(घ) कठिनाई

उत्तर: (क)संघर्ष करना

3. 'जूझ'कहानी किस उपन्यास से ली गई है?

(क) गुजराती उपन्यास'नटरंग'

(ख) गुजराती उपन्यास"झोबी"

(ग) मराठी उपन्यास'नटरंग'

(घ) मराठी उपन्यास 'झोबी'

उत्तर: (घ) मराठी उपन्यास 'झोबी'

4. "झोबी" उपन्यास किस भाषा में लिखा गया हैं?

(क) राजस्तानी

(ख) हरियाणवी

(ग) गुजराती

(घ) मराठी

उत्तर: (घ) मराठी

5. लेखक आनंद यादव के पिता ने उनकी पढ़ाई कब छुड़वा दी?

(क) जब वो चौथी में पढ़ते थे

(ख) जब वो पांचवी में पढ़ते थे

(ग) जब वो छ्ठी में पढ़ते थे

(घ) जब वो सातवी में पढ़ते थे

उत्तर: (ख) जब वो पांचवी में पढ़ते थे

6. लेखक ने दुबारा कौन सी कक्षा में दाखिला लिया?

(क) पांचवी कक्षा में

(ख) छ्ठी कक्षा में

(ग) सातवी कक्षा में

(घ) आठवी कक्षा में

उत्तर: (क) पांचवी कक्षा में

7. लेखक के पिता का क्या नाम था?

(क) कणहप्पा

(ख) राजप्पा

(ग) रत्नाप्पा

(घ) सरहप्पा

उत्तर: (ग) रत्नप्पा

8. लेखक की कक्षा के मॉनीटर का नाम क्या था?

(क) वसंत पाटील

(ख) चव्हाण पाटील

(ग) मनोहर पाटील

(घ) राव पाटील

उत्तर: (ख) चव्हाण पाटील

9. 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?

(क) अवधी

(ख) ब्रज

(ग) मराठी

(घ) गुजराती

उत्तर: (ग) मराठी

10. 'जूझ' के कथानायक का क्या नाम बताया गया है?

(क) आनंद

(ख) आनंदा

(ग) नित्यानंदा

(घ) परमानंदा

उत्तर: (ख) आनंदा

11. पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?

(क) दादा से

(ख) माँ से

(ग) दत्ता जी राव से

(घ) सौंदलगेकर

उत्तर: (ख) माँ से

12. सौंदलगेकर किस विषय का अध्यापक थे?

(क) अंग्रेजी के

(ख) गणित के

(ग) मराठी के

(घ) संस्कृत के

उत्तर: (ग) मराठी के

13. खेत का कौन-सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की?

(क) पानी लगाने का काम

(ख) बिजाई का काम

(ग) कटाई का काम

(घ) कोल्हू का काम

उत्तर: (घ) कोल्हू का काम

14. पाठ के अनुसार लेखक के घर कोल्हू कब शुरू होता था?

(क) साल की शुरुआत में

(ख) होली पर

(ग) दिवाली के बाद

(घ) नवरात्रि में

उत्तर: (ग) दिवाली के बाद

15. लेखक पढ़ना क्यों चाहता है?

(क) ज्ञान के लिए

(ख) कवि बनने के लिए

(ग) विद्वान बनने के लिए

(घ) नौकरी के लिए

उत्तर: (घ) नौकरी के लिए

16. लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?

(क) कुत्ते के समान

(ख) शेर के समान

(ग) जंगली सूअर के समान

(घ) चीते के समान

उत्तर: (ग) जंगली सूअर के समान

17. लेखक की माँ के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया?

(क) खर्चे से बचने के लिए

(ख) बीमारी से बचने के लिए

(ग) अनपढ़ता से बचने के लिए

(घ) खुद काम से बचने के लिए

उत्तर: (घ) खुद काम से बचने के लिए

18. दादा राव साहब के यहाँ तत्काल क्यों चला गया?

(क) अपना सम्मान समझकर

(ख) डरकर

(ग) पैसों के लालच से

(घ) घबराकर

उत्तर: (क) अपना सम्मान समझकर

19. स्कूल से छुट्टी के बाद लेखक को कितने घंटे पशु चराने होते थे?

(क) दो घंटे

(ख) तीन घंटे

(ग) चार घंटे

(घ) एक घंटा

उत्तर: (घ) एक घंटा

20. लेखक के कक्षा अध्यापक का नाम क्या था?

(क) वसंत

(ख) सौंदलगेकर

(ग) मंत्री

(घ) रत्नप्पा

उत्तर: (ग) मंत्री

21. 'जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है?

(क) पढ़ने की प्रवृत्ति का

(ख) कविता करने की प्रवृत्ति का

(ग) लेखन प्रवृत्ति का

(घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

उत्तर: (घ) संघर्षमयी प्रवृत्ति का

22. जिस शरारती लड़के ने लेखक के सिर से गमछा छीना था, उसका नाम क्या था?

(क) वसंत

(ख) चह्वाण

(ग) मनोहर

(घ) सुन्दर

उत्तर: (ख) चह्वाण

23. लेखक के दादा (पिता) की कैसी प्रवृत्ति थी?

(क) परिश्रमी

(ख) गुस्सैल और हिंसक

(ग) विनम्र

(घ) अहिंसक

उत्तर: (ख) गुस्सैल और हिंसक

24. लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था?

(क) वसंत

(ख) सौंदलगेकर

(ग) मंत्री

(घ) रत्नप्पा

उत्तर: (ग) मंत्री

25. “आने दे अब उसे, मैं उसे सुनाता हूँ कि नहीं अच्छी तरह देख।" यह कथन किसने व किससे कहा?

(क) दत्ता राव ने लेखक के पिता से

(ख) दत्ता राव ने लेखक की माता से

(ग) लेखक के पिता ने लेखक से

(घ) लेखक के पिता ने दत्ता राव से

उत्तर: (क) दत्ता राव ने लेखक के पिता से

26. मराठी अध्यापक की किस बात से लेखक को लगा कि वह भी कविता कर सकता है?

(क) जब मास्टर ने अपने घर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी

(ख) जब मास्टर ने विद्यालय में एक प्रतियोगिता रखी

(ग) जब गाँव में मास्टर जी ने लेखक की तारीफ की

(घ) जब मास्टर ने उन्हे कविता लिखना सिखाया

उत्तर: (क) जब मास्टर ने अपने घर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी

27. जूझ पाठ का शीर्षक उपयुक्त है क्योंकि-

(क) लेखक पढ़ता रहता था

(ख) लेखक खेती के काम में संघर्ष करता था

(ग) लेखक के पिता का संघर्ष करने के कारण

(घ) लेखक के संघर्ष से जूझने की प्रवृत्ति के कारण

उत्तर: (घ) लेखक के संघर्ष से जूझने की प्रवृत्ति के कारण

28. 'जूझ'पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया?

(क) अकेलापन डरावना है

(ख) अकेलापन उपयोगी है

(ग) अकेलापन अनावश्यक है

(घ) अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

उत्तर: (ख) अकेलापन उपयोगी है

29. जूझ कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?

(क) खेतीबाड़ी में कोई भविष्य नहीं होता

(ख) अच्छे कार्य के लिए झूठ बोलना गलत नहीं है

(ग) सहपाठी तो हंसी मज़ाक करते हैं उनसे दोस्ती बना कर रखनी चाहिए

(घ) जीवन में कितनी तकलीफें क्यों न आयें, हमें हमेशा जुझारू रहना चाहिए

उत्तर: (घ) जीवन में कितनी तकलीफें क्यों न आयें, हमें हमेशा जुझारू रहना चाहिए

30. 'मंत्री' गणित के अध्यापक के बारे में कौन सी बातें असत्य है?

(क) वह उधम करने वाले बच्चों की पिटाई कर देते थे

(ख) वह पढ़ाई करने वाले लड़कों को शाबाशी देते

(ग) बच्चे 'मंत्री' गणित के अध्यापक के डर से पढ़कर आते

(घ) मंत्री अध्यापक बच्चों को रोज दो कविताएं सुनाते थे

उत्तर: (घ) मंत्री अध्यापक बच्चों को रोज दो कविताएं सुनाते थे

31. लेखक किस बच्चे से प्रभावित होकर पढ़ाई के सभी काम करने लगा?

(क) वसंत सैनी

(ख) वसंत पटेल

(ग) वसंत पाटील

(घ) वसंत दत्ता

उत्तर: (ग) वसंत पाटील

32. मराठी अध्यापक के अध्यापन के विषय में क्या असत्य है?

(क) वे कविता को सुरीले गले, छंद की बढ़िया चाल, रसिकता के साथ पढ़ाते थे

(ख) वे अभिनय के साथ कविता का भाव ग्रहण कराते

(ग) वे प्रसिद्ध कवियों के संस्मरण भी सुनाते

(घ) कविता सुनाते समय अगर कोई बच्चा बोल दे तो उसकी पिटाई कर देते

उत्तर: (घ) कविता सुनाते समय अगर कोई बच्चा बोल दे तो उसकी पिटाई कर देते

33. मराठी अध्यापक के अध्यापन से लेखक में क्या-क्या नए परिवर्तन आए?

(क) वह खेत में अकेले काम करते हुए कविता गाता

(ख) मास्टर के अभिनय, यति-गति, आरोह-अवरोह की नकल करते हुए खुले कंठ से कविता गाता

(ग) लेखक को अब अकेले रहना अच्छा लग गया

(घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (घ) उपर्युक्त सभी

34. कक्षा में किस बच्चे को मॉनिटर बनाया गया था?

(क) वसंत पाटिल

(ख) चाह्वान

(ग) आनंदा

(घ) वसंत दत्ता

उत्तर: (क) वसंत पाटिल

35. आनंद का विश्वास विद्यालय में पुनः क्यों बढ़ने लगा?

(क) विद्यालय में पुरस्कार मिलने के कारण

(ख) मंत्री अध्यापक से वाह वाही मिलने के कारण

(ग) अध्यापकों के अपनेपन और वसंत पाटिल से दोस्ती के कारण

(घ) दत्ता राव साहब के कारण

उत्तर: (ग) अध्यापकों के अपनेपन और वसंत पाटिल से दोस्ती के कारण

36. मास्टर सौंदलगेकर किन कवियों के साथ अपनी मुलाकात के संस्मरण सुनाते?

(i) दिनकर, नरेंद्र कोहली,

(ii) निराला जी के

(iii) बोरकर, तांबे

(iv) गिरीश और केशव कुमार

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i)

ख) केवल (ii)

(ग) (ii) और (iii)

(घ) (iii) और (iv)

उत्तर: (घ) (iii) और (iv)

37. कविताओं को मास्टर के बताए राग से अलग भी गाया जा सकता है। ये आनंदा को कब अनुभव हुआ?

(क) कक्षा के दूसरे बच्चों को कविता सुनाते समय

(ख) कविता लिखते समय

(ग) रात को सोते समय

(घ) खेत में ही काम करते समय मास्टर द्वारा गाये कविताओं को गाते -गाते

उत्तर: (घ) खेत में ही काम करते समय मास्टर द्वारा गाये कविताओं को गाते -गाते

38. लेखक को यह क्यों लगने लगा कि जितना वह अकेले रहे उतना अच्छा है?

(क) अकेलेपन में वह थोड़ा आराम कर सकता था।

(ख) अकेले में वह सिनेमा देख सकता है

(ग) अकेले में वह अलग-अलग चालों से तेज़ आवाज़ में कविता गा सकता था

(घ) अकेले में वह स्वयं से बाते कर सकता था

उत्तर: (ग) अकेले में वह अलग-अलग चालों से तेज़ आवाज़ में कविता गा सकता था

39. 'चाँद रात पसरिते' कविता के सम्बंध में कौन सी बात सत्य है?

(क) यह दिनकर द्वारा रचित है

(ख) यह अनंत काणेकर द्वारा रचित है

(ग) यह केशव कुमार द्वारा रचित है

(घ) यह सैंदलगेकर द्वारा रचित है

उत्तर: (ख) यह अनंत काणेकर द्वारा रचित है

40. आनंद ने 'चाँद रात पसरिते' कविता को सिनेमा के एक गीत की तर्ज़ पर गाया। वह गाना किस छंद की तर्ज़ पर था?

(क) दोहा

(ख) मनोरम

(ग) सवैया

(घ) केशव करणी जाति

उत्तर: (घ) केशव करणी जाति

41. मास्टर जी ने आनंदा के नए तर्ज़ पर गीत गाने से प्रभावित होकर क्या किया?

(क) आनंद को कविता के राग बदलने पर समझाया कि यह गलत राग है

(ख) छठी-सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामने उसे बुलाकर गवाया

(ग) उसे पुरस्कार दिया

(घ) उसे कविता न गाने को कहा

उत्तर: (ख) छठी-सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों के सामने उसे बुलाकर गवाया

42. आनंदा को कब यह लगने लगा कि कवि भी उसके जैसे ही हाड़ मांस के व्यक्ति हैं?

(i) जब उसने मराठी अध्यापक को देखा

(ii) खुद मास्टर भी कवि थे

(iii) जब मराठी अध्यापक उसे कवियों के चरित्र और संस्मरण सुनाते

(iv) इनमे कोई नही

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) और (ii)

(ख) (ii) और (iii)

(ग) (iii) और (iv)

(घ) (i) और (iv)

उत्तर: (ख) (ii) और (iii)

43. आनंद ने कविता लिखने की शुरआत में तुकबंदी के लिए किन विषयों को चुना?

(क) अपने परिवार के लोग

(ख) फसलों, जंगली फूलों अपने आस पास के वातावरण पर

(ग) रोज़मर्रा की क्रियाओं पर

(घ) पशु और पक्षीयों पर

उत्तर: (ख) फसलों, जंगली फूलों अपने आस पास के वातावरण पर

44. मास्टर सौंदलगेकर द्वारा आनंदा को कविता की बारीकियों को समझाने का उस पर क्या प्रभाव पड़ा?

(क) कविता के प्रति असीम प्रेम बढ़ गया

(ख) विद्यालय के प्रति अपनत्व और बढ़ गया

(ग) खेतों में काम करना बंद कर दिया

(घ) पढाई पर ध्यान देने लगा

उत्तर: (क) कविता के प्रति असीम प्रेम बढ़ गया

45.'जूझ' कहानी के नायक द्वारा पढ़ाई के साथ-साथ खेती का काम करने से सम्बंधित कौन सी बात असत्य है?

(क) उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो गई

(ख) वह और संघर्षशील हो गया

(ग) वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा।

(घ) प्रतिकूल परिस्थितियों ने उसके दृढ़ निश्चय को बढा दिया

उत्तर: (क) उसकी पढ़ाई के प्रति रुचि कम हो गई

46. कविता पाठ करने के समय मराठी अध्यापक क्या करते थे?

(क) कविता की लय भूल जाते थे

(ख) कविता लिखने को कहते थे

(ग) कविता के सिद्धांतों पर चर्चा करते थे

(घ) कविता पाठ के बीच-बीच में संस्मरण सुनाते थे

उत्तर: (घ) कविता पाठ के बीच-बीच में संस्मरण सुनाते थे

47. इस कहानी के माध्यम से किसके संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है?

(क) खेतिहर मजदूर के संघर्ष

(ख) आनंदा के जीवन का संघर्ष

(ग) गरीब माँ का संघर्ष

(घ) गरीब किसान का संघर्ष

उत्तर: आनंदा के जीवन का संघर्ष

48. 'जूझ' कहानी में आनंदा के उच्च स्तरीय कवि बनने तक का सफर किस बात का प्रमाण है?

(क) उसके परिश्रम एवं लगन का

(ख) पिता की बात को महत्व ना देने का

(ग) झूठ बोल कर पढ़ाई करने का

(घ) केवल अपने मन की करने का

उत्तर: (क) उसके परिश्रम एवं लगन का

49. 'जूझ' पाठ के अनुसार लेखक ने अपनी जन्मजात प्रतिभा का परिचय किस प्रकार दिया?

(क) विद्यालय में प्रवेश लेकर

(ख) पिता का विरोध करके

(ग) नए-नए विषयों पर कविता लिख कर

(घ) माता की आज्ञा का पालन करके

उत्तर: (ग) नए-नए विषयों पर कविता लिख कर

50. 'जूझ' पाठ में आनंदा की कक्षा में शरारत किस कारण कम होने लगी?

(क) वसंत के आ जाने से

(ख) गणित के अध्यापक द्वारा शरारती लड़कों की पिटाई किए जाने से

(ग) मराठी अध्यापक सौंदलगेकरके आने से

(घ) विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा होने से

उत्तर: (ख) गणित के अध्यापक द्वारा शरारती लड़कों की पिटाई किए जाने से

51. मास्टर सौंदलगेकर ने किस पर कविता लिखी थी?

(क) आनंद की जुझारू प्रवृत्ति पर

(ख) विद्यालय के अनुशासन पर

(ग) मालती लता की सुंदरता पर

(घ) प्रकृति की सुंदरता पर

उत्तर: (ग) मालती लता की सुंदरता पर

52. आनंदा के पिता द्वारा स्वयं खेती ना करके अपने बेटे से खेती का काम करवाना उनके किस चरित्र की ओर संकेत करता है?

(i) पिता अपने बेटे को परिश्रमी बनाना चाहता है

(ii) पिता के आलसी और कमजोर कामचोर रूप को दर्शाता है

(iii) पिता दूरदर्शी है

(iv) पिता के लिए पुत्र ही उसका सब कुछ है

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i)

(ख) केवल (ii)

(ग) (i), (iii) और (iv)

(घ) (iii) (iv)

उत्तर: (ख) केवल (ii)

53. आनंदा जब पहले दिन पाठशाला गया तो उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

(क) उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा

(ख) वह क्रोधित हुआ

(ग) वह अत्यंत उदास था

(घ) उसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं थी

उत्तर: वह अत्यंत उदास था

54. आनंदा और उसकी माँ द्वारा झूठ का सहारा ना लिए जाने की स्थिति में क्या होता?

(i) आनंदा के जीवन में अकेलापन ठहर जाता

(ii) वह अपनी कविता लिखने के गुण को नहीं निकाल पाता

(iii) वह शिक्षित होने से वंचित रह जाता

(iv) उपर्युक्त सभी

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) और (ii)

(ख) (ii) और (iii)

(ग) (iii) और (iv)

(घ) (iv)

उत्तर: (घ) (iv)

55. कविता के साथ खेलने से आनंदा को कौन सी शक्ति प्राप्त हुई?

(i) दिव्य शक्ति की

(ii) कविता के साथ नृत्य और अभिनय करने की

(iii) गायक बनने की

(iv) अकेलेपन में भी आनंद अनुभव करने की

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i)

(ख) केवल (iii)

(ग) (ii), (iv)

(घ) (iii), (iv)

उत्तर: (ग) (ii), (iv)

56. 'जूझ ' पाठ के अनुसार पढ़ाई लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था क्योंकि

(i) लेखक खेती बाड़ी नहीं करना चाहता था

(ii) दत्ता जी राव जानते थे कि खेती-बाड़ी में लाभ नहीं है

(iii) लेखक का पढ़ लिखकर सफल होना बहुत आवश्यक था

(iv) लेखक का पिता नहीं चाहता था कि वह आगे की पढ़ाई करें

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i)

(ख) केवल (ii)

(ग) केवल (iii)

(घ) (ii) और (iii)

उत्तर: (ग) केवल (iii)

57. दत्ता जी राव की सहायता के बिना जूझ कहानी का 'मैं' पात्र क्या सब नही कर पाता?

(i) पढ नही पाता

(ii) कविता, उपन्यास न लिख पाता

(iii) खती नही कर पाता

(iv) वह कभी स्कूल नही जा पाता

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) केवल (i)

(ख) केवल (ii)

(ग) (i) (ii) और (iii)

(घ) (i) (ii) और (iv)

उत्तर: (घ) (i) (ii) और (iv)

58. कविता के प्रति रुचि जगाने में शिक्षक की क्या भूमिका हो सकती है?

(i) कविता को रटवाना

(ii) कविता को रस,लय,छंद के आधार पर पढाना

(iii) छात्र को प्रोत्साहित करना

(iv) काव्य उपकरणों की जानकारी देना

उपरिलिखित कथनो में से कौन-सा / कौन-से सही है / हैं?

(क) (i) (iii) और (iv)

(ख) (ii) (iii) और (iv)

(ग) (i) (ii) और (iii)

(घ) (i) (ii) और (iv)

उत्तर: (ख) (ii) (iii) और (iv)

59. आनंदा को गणित समझ आने के सम्बंध मे कौन सा/से कथन सत्य है?

(क) मन की एकाग्रता के कारण

(ख) वसंत पाटिल की सहायता से

(ग) अध्यापक की सहायता से

(घ) मित्रो की सहायता से

उत्तर: (क) मन की एकाग्रता के कारण

60. कहानी में आनंदा लेखन का अभ्यास कैसे करता था?

(क) मिट्टी पर लिखकर

(ख) श्यामपट्ट पर लिखकर

(ग) अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर

(घ) घर की दीवारों पर लिखकर

उत्तर: (ग) अपने पशुओं की पीठ पर लिखकर

पाठ -3 अतीत में दबे पाँव

: ओम थानवी

पाठ का सार

अतीत में दबे पाँव" एक यात्रा वृतांत है जिसके लेखक ओम थानवी जी हैं। इस यात्रा वृतांत में ओम थानवी जी ने पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित सिंधु घाटी सभ्यता के एक महत्त्वपूर्ण स्थल"मोहनजोदड़ो" की अपनी यात्रा का सजीव वर्णन किया हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता को लगभग 5,000 साल पुरानी सभ्यता माना जाता हैं। इसमें दो सभ्यताएँ हड़प्पा सभ्यता (पंजाब प्रांत) और मोहनजोदड़ो (पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित) प्रमुख हैं। सिंधु घाटी सभ्यता को विश्व की सबसे पुरानी सुनियोजित नगरीय सभ्यता माना जाता है।

हड़प्पा में तो रेल लाइन बिछने की वजह से ज्यादा खुदाई नहीं हो पायी मगर मोहनजोदड़ो में विस्तृत खुदाई की गई। मोहनजोदड़ो की खुदाई का कार्य सन 1922 में राखलदास बनर्जी ने उस समय के पुरातत्व विभाग के निदेशक सर जॉन मार्शल के कहने पर किया।

मोहनजोदड़ो (मुर्दो का टीला) उस समय की ताम्रकालीन सभ्यता का सबसे बड़ा शहर था। जो करीब 200 हेक्टर क्षेत्र में फैला था और जिसकी आबादी लगभग 85,000 रही होगी। ऐसा माना जाता हैं कि अपने समय में मोहनजोदड़ो, घाटी की सभ्यता का केंद्र अर्थात राजधानी रही होगी।

लेखक जब मोहनजोदड़ो घूमने गए तो वहाँ घूमते हुए उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे कि वो चुपके - चुपके 5,000 वर्ष पूर्व की सभ्यता में पहुँच गए हैं। लेखक कहते हैं कि ताम्रकालीन शहरों का सबसे बड़ा शहर अपनी बड़ी-बड़ी गलियों और इमारतों के बल पर, आज के महानगरों को भी मात देता हुआ नजर आता है।

मोहनजोदड़ो शहर "टीलों" पर बसाया गया है। ये टीले प्राकृतिक नहीं है बल्कि छोटे-छोटे मानव निर्मित टीले हैं जो कच्ची - पक्की ईंटों के बने हैं। ऐसा सिंधु नदी के बाढ़ के पानी के प्रकोप से बचने के लिए किया गया था।

लेखक मोहनजोदड़ो की नगरीय सभ्यता - संस्कृति व जल संस्कृति के बारे में बताते हुए कहते हैं कि यह ताम्र कालीन नगरीय सभ्यता है। यहाँ के खंडहरों को देखकर ऐसा लगता है जैसे यहाँ आज भी कोई रहता है। शहर की नियोजन व्यवस्था बहुत सुंदर हैं । यहाँ की चौड़ी -चौड़ी गलियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती है।

यहाँ के सभी घर पक्की ईंटों व लकड़ी से बनाए गए हैं जिनकी दीवारें काफी मोटी हैं। शायद दो मंजिले घर बनाने के लिए ऐसा किया गया हो। घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर न खुल कर पीछे की तरफ खुलते हैं । मुख्य सड़क पर बैल गाड़ियाँ चला करती थी। संयोग वश हमारा चंडीगढ़ शहर भी इसी तर्ज पर बना हुआ हैं।

यहाँ पर इंसानी जरूरत का हर वह सामान मौजूद हैं जो कि किसी भी सभ्यता के फलने फूलने के लिए आवश्यक है मगर सारी वस्तुएँ बहुत छोटे - छोटे आकार में मौजूद हैं।

पूर्व दिशा में "अमीरों की बस्ती" बनी हुई हैं जिसमें बड़े - बड़े घर, चौड़ी सड़कें, अधिक कुएँ आदि हैं । जबकि आधुनिक युग में "अमीरों की बस्ती" पश्चिम दिशा में मानी जाती है। मगर मोहनजोदड़ो में ठीक इसका उलटा हैं।

यहाँ के लोग अपने सभी कार्य आपसी तालमेल से करते थे। लेखक के अनुसार यहाँ के लोग व्यापार करते थे। इन्हीं लोगों ने दुनिया को उन्नत खेती करना सिखाया। यहाँ पर एक विशाल कोठार भी हैं जिसमें कर के रूप में प्राप्त अनाज रखा जाता था। यहाँ कपास, गेहूँ, जौ, ज्वार, सरसों, बाजरा, चने, खजूर, खरबूज, अंगूर आदि की खेती के प्रमाण भी मिले हैं।

इस सभ्यता को अधिकतर विद्द्वान "खेतीहर और पशुपालक सभ्यता" मानते हैं । यहाँ लोहा नहीं पाया गया लेकिन पत्थर (सिंध) व तांबे (राजस्थान) के इस्तेमाल से कृषि के औजार बनाने के सबूत मिले हैं।

माना जाता हैं कि यहाँ के लोग बड़े ही शांतिप्रिय थे क्योंकि यहाँ हथियार जैसे कोई उपकरण नहीं मिले हैं। सैनिकों के सबूत भी नहीं मिले हैं । दुनिया का दूसरे नंबर का सबसे प्राचीन कपड़ा (सूती कपड़ा) यहीं से प्राप्त हुआ है। पहला प्राचीन कपड़ा जॉर्डन से प्राप्त हुआ था। यहाँ रंगाई करने के भी सबूत मिले हैं।

यहाँ के लोगों को ड्रेनेज सिस्टम (जल निकासी) के बारे में अच्छी जानकारी थी। हर घर में जल निकासी की उत्तम व्यवस्था देखने को मिलती है। जल निकासी के लिए नालियां बनाई गई हैं जो ढकी हुए हैं।

नगर में एक 40 फुट लंबा और 25 फुट चौड़ा व सात फुट गहरा जलकुंड भी है। माना जाता है कि यह किसी विशेष अनुष्ठान के लिए प्रयोग किया जाता होगा। इसकी दीवारें पक्की ईंटों से बनी हुई हैं। इसके पास ही आठ स्नानागार भी हैं। जलकुंड में गंदा पानी न जाये, इसकी भी व्यवस्था की गई है यानी साफ सफाई का विशेष ध्यान रखा गया हैं।

जलकुंड के पास ही एक कुआँ भी हैं जहां से शायद जलकुंड में पानी आता होगा। इसके अलावा यहाँ 700 कुँए व कई तालाब भी मिले हैं जो पक्की ईटों से बने हैं। यह संसार की पहली सभ्यता हैं जिसने कुँए खोदकर भूमिजल निकाला। इसीलिए सिंधु घाटी सभ्यता को “जल संस्कृति” भी कहते हैं।

लेकिन सिंधु घाटी सभ्यता में न तो कोई भव्य राजमहल मिला और न ही कोई भव्य मंदिर या पिरामिड मिला। इस संस्कृति की खास बात यह थी कि यहाँ पर किसी तरह की कोई भव्यता या दिखावा नहीं दिखाई देता हैं। यानि मोहनजोदड़ो, सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता और आडंबर का नामोनिशान नही है।

यहाँ धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ एवं बर्तन मिले हैं जिसमें चित्रकारी की गई हैं। मोहरे, खिलौने व अन्य साजो सामान आदि की वस्तुओं भी मिली हैं। यहाँ पर मिली एक नर्तकी की मूर्ति, राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली) में रखी हैं। यहाँ पर मिली 50, 000 से अधिक चीज़ें दुनिया के अलग - अलग संग्रहालयों में रखी गई हैं।

मोहनजोदड़ो में एक प्राचीन बौद्ध स्तूप भी है मगर यह कनिष्क कालीन है। इसी के बारे में जानकारी लेने राखलदास बनर्जी यहाँ आए थे। लेकिन जब इसे खोदा गया तो इसके नीचे उन्हें 5,000 साल पुरानी सभ्यता मोहनजोदड़ो का नगर देखने को मिला जिसकी नगर योजना अद्भुत व लाजवाब थी।

लेखक के अनुसार सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्यबोध हैं जो वहाँ की छोटी-छोटी वस्तुओं में देखने को मिलता है जो उस समय के समाज द्वारा निर्मित की गई है।

अभ्यास प्रश्न

1. "अतीत में दबे पांव" नामक पाठ के लेखक कौन है?

उत्तर- ओम थानवी।

2. "अतीत में दबे पांव" पाठ क्या हैं?

उत्तर -एक यात्रा वृत्तांत और रिपोर्ताज ।

3. "अतीत में दबे पांव" नामक पाठ में किस सभ्यता का वर्णन हैं?

उत्तर - मुअनजोदड़ो (सिंधुकालीन)

4. वर्तमान में यह पुरातात्विक स्थल कहाँ है?

उत्तर - पाकिस्तान के सिंध प्रांत में।

5. मोहनजोदड़ो किस नदी के तट पर स्थित हैं?

उत्तर - सिंधु नदी ।

6. मुअनजो-दड़ो किस काल के शहरों में सबसे बड़ा शहर है?

उत्तर - ताम्रकालीन।

7. मुअनजो-दड़ो का अर्थ क्या है?

उत्तर - मृतकों या मुर्दों का टीला।

8. वर्तमान में मुअनजोदड़ो को किस नाम से जाना जाता है?

उत्तर - मोहनजोदड़ो।

9. सिंधु नदी के पानी से बचने के लिए जमीन की सतह को किस तरह ऊपर उठाया गया था?

उत्तर - कच्ची - पक्की ईंटों की चिनाई से (टीलों के रूप में) ।

10. मेसोपोटेमिया के अभिलेखों में प्रयोग "मेलुहा" शब्द संभवत किसके लिए प्रयोग होता होगा?

उत्तर - मोहनजोदड़ो के लिए।

11. मुअनजो-दड़ो की खोज किसने की?

उत्तर - राखलदास बनर्जी ।

12. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक कौन थे

उत्तर - जान मार्शल।

13. यह स्थल किस चीज की अनूठी मिसाल है?

उत्तर - नगर नियोजन की।

14. सिंधु घाटी सभ्यता कितने साल पुरानी हैं?

उत्तर - 5,000 वर्ष पूर्व ।

15. मोहनजोदड़ो का समाज कैसा था?

उत्तर - साक्षर और सुसंस्कृत ।

16. सिंधु घाटी की सभ्यता को किस सभ्यता के समकक्ष माना जाता है?

उत्तर- मसोपोटेमिया (इराक) और मिस्र की सभ्यता।

17. सिंधु घाटी की जल संबंधी अनूठी विशेषता क्या है?

उत्तर - जल निकासी का प्रबंध

18. मोहनजोदड़ो नगर कितने हेक्टेयर में फैला हुआ था?

उत्तर - 200 हेक्टेयर में

19. लेखक के अनुसार मोहनजोदड़ो की आबादी लगभग कितनी थी?

उत्तर 85000

20. मोहनजोदड़ो के अलावा सिंधु घाटी सभ्यता का दूसरा शहर कौन सा है?

उत्तर- हड़प्पा

21. सिंधु घाटी संस्कृति किस प्रकार की मानी जाती है?

उत्तर - मैदानी संस्कृति

22. 100 वर्षों में अब तक मोहनजोदड़ो के कितने भाग की खुदाई की गई है?

उत्तर - एक तिहाई

23. मोहनजोदड़ो के स्तूप के चबूतरे वाले हिस्से को किस नाम से पुकारते हैं?

उत्तर - गढ़

24. मोहनजोदड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी थी?

उत्तर- 33 फीट

25. महाकुंड कितने फुट लंबा है?

उत्तर - 40 फुट

26. महाकुंड की चौडाई कितनी है?

उत्तर - 25 फुट

27. महाकुंड की गहराई कितनी है?

उत्तर - 7 फुट

28. महाकुंड के तीन तरफ किसके कमरे बने हुए हैं?

उत्तर - साधुओं के

29. महाकुंड में पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था है?

उत्तर - कुआँ।

30. दो पाँत और 8 स्नानागार कहां बने थे?

उत्तर - कुंड के उत्तर में।

31. कोठार किस काम आते थे?

उत्तर - कर से प्राप्त अनाज जमा करने के ।

32. दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया?

उत्तर - याजक नरेश।

33. नर्तकी के अलावा और किसकी मूर्ति मिली थी?

उत्तर - दाढ़ी वाले नरेश।

34. मोहनजोदड़ो, हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी है?

उत्तर - राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली ।

35. मोहनजोदड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गांव की याद आई?

उत्तर- कुलधरा गांव।

36. सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होता था। इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर - सूती कपड़ा।

37. मोहनजोदड़ो की सभ्यता और संस्कृति अब किस जगह की शोभा बढ़ा रही हैं?

उत्तर - अजायबघरों की ।

38. मोहनजोदड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?

उत्तर - चंडीगढ़।

39. खुदाई से प्राप्त गेहूं का रंग कैसा था?

उत्तर - काला।

40. अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था?

उत्तर - अली नवाज।

41. सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?

उत्तर - सौंदर्यबोध।

42. लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्यबोध को क्या नाम दिया है?

उत्तर - समाज पोषित सौंदर्यबोध ।

43. यहाँ की आडी और सीधी सड़कों को आज के वास्तुकार क्या कहते हैं?

उत्तर - ग्रिड प्लान।

44. भग्न इमारत में कितने खंभे हैं?

उत्तर - 20।

45. डी. के. हलका किसके नाम पर रखा गया हैं?

उत्तर - दीक्षित काशीनाथ के।

46. सोने की 3 सुईयों किसे मिली थी?

उत्तर - काशीनाथ दीक्षित

47. यहाँ के सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्से का नाम डी.के.जी किसके नाम पर रखा गया है?

उत्तर - पुरातत्वविद काशीनाथ दीक्षित।

48. सिंधु घाटी सभ्यता में कौन से फल उगाए जाते थे?

उत्तर - खजूर और अंगूर।

49. मोहनजोदड़ो के सबसे ऊंचे चबूतरे में क्या विद्यमान हैं?

उत्तर - बौद्ध स्तूप।

50. बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊंचे चबूतरे पर निर्मित है?

उत्तर - 25 फुट।

51. स्तूप से महाकुंड की ओर जाने वाले रास्ते का नाम क्या रखा गया है?

उत्तर- डिविनिटी स्ट्रीट यानि देव मार्ग।

52. चबूतरे पर किसके कमरे बने हुए हैं?

उत्तर - बौद्ध भिक्षुओं के।

53. साधु के कमरे कहाँ थे?

उत्तर - कुंड के तीन तरफ।

54. दक्षिण में टूटे-फूटे घरों के जमघट को किसकी बस्ती माना गया है?

उत्तर - कामगारों की।

55. उत्तर में दो पांत में कितने स्नानघर हैं?

उत्तर - 8 स्नानघर।

56. अनाज की ढुलाई के लिए किस वाहन का प्रयोग किया जाता होगा?

उत्तर - बैलगाड़ी।

57. मोहनजोदड़ो में कुओं को छोड़कर अन्य चीजों के आकार कैसे थे?

उत्तर -चौकोर या आयताकार।

58. सिंधु घाटी के छोटे टीलों पर बनी बस्तियों को क्या कहा गया है?

उत्तर - नीचा नगर।

59. रंगरेज के कारखानों में क्या रखा जाता होगा?

उत्तर - रंगाई के बर्तन।

60. नालियों की क्या विशेषता थी?

उत्तर - नालियों पक्की ईंटों से बनी और पत्थरों ढकी हुई थी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1.कोठार किसके काम आता होगा?

i. सुरक्षा के लिए

ii. धन जमा करने के लिए

iii. अनाज जमा करने के लिए

iv.कर से से प्राप्त अनाज जमा करने के लिए

उत्तर- iv.कर से से प्राप्त अनाज जमा करने के लिए

2.मुअनजो-दड़ो हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है?

i. इस्लामाबाद संग्रहालय में

ii. लाहौर संग्रहालय में

iii. दिल्ली संग्रहालय में

iv. लंदन संग्रहालय में

उत्तर- iii. दिल्ली संग्रहालय में

3.मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?

i. हरियाणा

ii. पंजाब

iii. उत्तर प्रदेश

iv. राजस्थान

उत्तर- iv. राजस्थान

4. मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?

i. शुभधरा

ii. बुलधरा

iii. कुलघड़ा

iv. कुलधरा

उत्तर- iv. कुलधरा

5.मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या कितनी थी?

i. 52 हजार से अधिक

ii. 50 हजार से अधिक

iii. 20 हजार से अधिक

iv. 30 हजार से अधिक

उत्तर- ii. 50 हजार से अधिक

6.सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?

i. नागर-बोध

ii. सौंदर्य-बोध

iii. संस्कृति-बोध

iv. सभ्यता-बोध

उत्तर- ii. सौंदर्य-बोध

7.लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है?

i. मानव-पोषित

ii. धर्म-पोषित

iii. समाज-पोषित

iv. व्यापार-पोषित

उत्तर- iii. समाज-पोषित

8.मुअनजो-दड़ो में लगभग कितने कुएँ थे?

i. 700 कुएँ

ii. 800 कुएँ

iii. 900 कुएँ

iv. 500 कुएँ

उत्तर- i. 700 कुएँ

9.सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है?

i. सूती कपड़ा

ii. कपास के बीज

iii. ऊन

iv. गर्म कपड़ा

उत्तर- i. सूती कपड़ा

10.मुअनजोदड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है?

i. 5000 साल

ii. 7000 साल

iii. 4000 साल

iv. 6000 साल

उत्तर- i. 5000 साल

11.राखालदास बैनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे?

i. सन् 1922 में

ii. सन् 1921 में

iii. सन् 1923 में

iv. सन् 1924 में

उत्तर- i. सन् 1922 में

12.राखालदास बैनर्जी कौन थे?

i. पुरातत्त्ववेत्ता

ii. अध्यापक

iii. अतिथि

iv. व्यापारी

उत्तर- i. पुरातत्त्ववेत्ता

13.मुअनजोदड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है?

i. लैंडस्केप

ii. नगर

iii. घर

iv. स्नानघर

उत्तर- i. लैंडस्केप

14.महाकुंड कितने फुट लंबा है?

i. 40 फुट

ii. 50 फुट

iii. 45 फुट

iv. 20 फुट

उत्तर- i. 40 फुट

15.महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं?

i. साधुओं के

ii. मेहमानों के

iii. व्यापारियों के

iv. उपर्युक्त सभी

उत्तर- i. साधुओं के

16.'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के लेखक का नाम क्या है?

i. ओम थानवी

ii. मनोहर श्याम जोशी

iii. फणीश्वरनाथ रेणु

iv. हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर- i. ओम थानवी

17. निम्न में से सत्य कथन का चुनाव करिए -

1. मुअनजो-दड़ो ताम्र काल के शहरों में सबसे बड़ा है।

2. हड़प्पा के ज्यादातर साक्ष्य रेललाइन बिछाने के दौरान विकास की भेंट चढ़ गए।

3. मुअनजो-दड़ो के टीले प्राकृतिक हैं।

4. मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है।

(क) (2) व (3)

(ख) (1),(2) व (4)

(ग) (1),(2) व (3)

(घ) इनमे से कोई नही

उत्तर- (ख) (1),(2) व (4)

18.अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो के सभी खंडहरों का नामकरण किस आधार पर किया गया है?

i.खुदाई करने वाले दल के आधार पर

ii.खुदाई करने वाले पुरातत्त्ववेत्ताओं के संक्षिप्त नाम पर

iii.इनमें से कोई नहीं

iv.खुदाई में मिली वस्तुओं के आधार पर

उत्तर- ii.खुदाई करने वाले पुरातत्त्ववेत्ताओं के संक्षिप्त नाम पर

19.अतीत में दबे पाँव पाठ के आधार पर महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं?

i.अमीरों के

ii.मेहमानों के

iii.कामगारों के

iv.साधुओं के

उत्तर- iv.साधुओं के

20.अतीत में दबे पाँव पाठ के अनुसार काशीनाथ दीक्षित को किस धातु की सुइयाँ मिली थी?

i.पीतल

ii.चाँदी

iii.लोहा

iv.सोना

उत्तर- iv.सोना

21.मुअनजो-दड़ो का क्या अर्थ है?

i.मुर्दों का टीला

ii.मोहन का नगर

iii.पक्के मकानों का शहर

iv.मुहाने पर स्थित

उत्तर- i.मुर्दों का टीला

22.सिंधु घाटी में किस फसल के बीज नहीं मिलते?

i.ज्वार

ii.अंगूर

iii.कपास

iv.गेहूँ

उत्तर- iii.कपास

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2023-24

विषय - हिंदी (आधार) - 302

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80 अंक**

<u>सामान्य निर्देश :</u>

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए:-
- इस प्रश्न पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड - अ (वस्तुपरक प्रश्न)

अपठित बोध

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:- **10x01=10**

पश्चिमी सभ्यता मुख मोड़ रही है। वह एक नया आदर्श देख रही है। अब उसकी चाल बदलने लगी है। वह कलों की पूजा को छोड़कर मनुष्यों की पूजा को अपना आदर्श बना रही है। इस आदर्श के दर्शाने वाले देवता रस्किन और टालस्टॉय आदि हैं। पाश्चात्य देशों में नया प्रभात होने वाला है। वहाँ के गंभीर विचार वाले लोग इस प्रभात का स्वागत करने के लिए उठ खड़े हुए हैं। प्रभात होने के पूर्व ही उसका अनुभव कर लेने वाले पक्षियों की तरह इन महात्माओं को इस नए प्रभात का पूर्व ज्ञान हुआ है और हो क्यों न ? इंजनों के पहिए के नीचे दबकर वहाँ वालों के भाई - बहन - नहीं नहीं उनकी सारी जाति पिस गई, उनके जीवन के धुरे टूट गए, उनका समस्त धन घरों से निकलकर एक ही दो स्थानों में एकत्र हो गया।

साधारण लोग मर रहे हैं, मज़दूरों के हाथ- पाँव फट रहे हैं, लहू बह रहा है! सर्दी से ठिठुर रहे हैं। एक तरफ दरिद्रता का अखंड राज्य है, दूसरी तरफ अमीरी का चरम दृश्य । परंतु अमीरी भी मानसिक दुखों से विमर्दित है। मशीनें बनाई तो गई थीं मनुष्यों का पेट भरने के लिए - मज़दूरों को सुख देने के लिए - परंतु वे काली - काली मशीनें ही काली बनकर उन्हीं मनुष्यों का भक्षण कर जाने के लिए मुख खोल रही हैं। प्रभात होने पर ये काली काली बलाएँ दूर होंगी। मनुष्य के सौभाग्य का सूर्योदय होगा।

शोक का विषय यह है कि हमारे और अन्य पूर्वी देशों में लोगों को मज़दूरी से तो लेशमात्र भी प्रेम नहीं है, पर वे तैयारी कर रहे हैं पूर्वोक्त काली मशीनों का आलिंगन करने की। पश्चिम वालों के तो ये गले पड़ी हुई बहती नदी की काली कमली हो रही हैं। वे छोड़ना चाहते हैं, परंतु काली कमली

उन्हें नहीं छोड़ती। देखेंगे पूर्व वाले इस कमली को छाती से लगाकर कितना आनंद अनुभव करते हैं। यदि हममें से हर आदमी अपनी दस उँगलियों की सहायता से साहसपूर्वक अच्छी तरह काम करे तो हम मशीनों की कृपा से बढ़े हुए परिश्रम वालों को वाणिज्य के जातीय संग्राम में सहज ही पछाड़ सकते हैं। सूर्य तो सदा पूर्व ही से पश्चिम की ओर जाता है। पर आओ पश्चिम से आने वाली सभ्यता के नए प्रभात को हम पूर्व से भेजें।

इंजनों की वह मज़दूरी किस काम की जो बच्चों, स्त्रियों और कारीगरों को ही भूखा नंगा रखती है और केवल सोने, चाँदी, लोहे आदि धातुओं का ही पालन करती है। पश्चिम को विदित हो चुका है कि इनसे मनुष्य का दुख दिन पर दिन बढ़ता है।

1. "पाश्चात्य देशों में नया प्रभात होने वाला है।"-पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है?

a. नया प्रकाश

b. नया विचार

c. नया सवेरा

d. नया प्रभास

2.संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'विमर्दित' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ?

a. ठगी हुई

b. ग्लानि पूर्ण

c. ईर्ष्या पूर्ण

d. पीड़ा पूर्ण

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -

कथन (I) : मानवीय दक्षता को महत्त्व देना चाहिए।

कथन (II) : मनुष्य तथा मानवीयता से प्रेम करना चाहिए।

कथन (III) : अपनी चाल को बदल लेना चाहिए।

कथन (IV) : मानव जीवन को आदर्श मानना चाहिए।

गद्यांश के अनुसार कौन सा/से कथन सही हैं ?

a. केवल कथन । सही है।

b. केवल कथन ॥ सही है।

c. केवल कथन ॥ और III सही हैं।

d. केवल कथन। और IV सही हैं।

4. गद्यांश के अनुसार पूर्वी देशों की समस्या क्या है ?

a. मज़दूरों के लिए अधिकारों की कमी

b. मज़दूरों का पूंजी पतियों द्वारा शोषण

c. मज़दूरी को कम महत्त्व का आंकना

d. मज़दूरी पर अमीरी का प्रभाव

5. गद्यांश के अनुसार साधारण लोग क्यों मर रहे हैं ?

a. मानव श्रम से ज्यादा मशीनों को महत्त्व मिलने के कारण

b. हाथ-पाँव फटने, खून रिसने और सर्दी के कारण

c. कम मजदूरी मिलने कारण हुई बीमारियों से

d. कार्य क्षेत्रों के विषैले पर्यावरण व खाने की कमी से

6. गद्यांश में मशीनों को 'काली मशीनें' कहना किस बात की ओर संकेत करता है ?

a. काला रंग शोक का प्रतीक होता है।

b. मशीनों द्वारा जन साधारण में बेरोज़गारी बढ़ाने के कारण

c. माँ दुर्गा के अवतार काली के जैसे भक्षण करने के कारण

d. मशीनों से अमीरों द्वारा काले धन अर्जन करने के कारण

7. "इंजनों के पहिए के नीचे दबकर वहाँ वालों के ....." इस प्रक्रिया के क्या परिणाम हुए?

a. आर्थिक संपदा का अनुचित व

b. भाई बहनों व अन्य रिश्तेदारों में दुराव

c. समस्त जाति द्वारा कठिन परिश्रम

d. मशीनों द्वारा मनुष्यों का संरक्षण

8. रस्किन और टालस्टॉय का महत्त्व है क्योंकि इन्होनें

a. पूर्वी देशों में साम्राज्यवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी

b. मानवीय संवेदनाओं एवं गुणों को महत्त्व दिया था

c. धार्मिक कट्टरता के प्रति चेतना जगाई थी

d. गाँधी जी इन दोनों के विचारों से अत्याधिक प्रभावित थे।

9. मनुष्य के सौभाग्य का सूर्योदय कब होगा ?

a. मजदूरों द्वारा क्रांति करने से

b. मशीनों के हट जाने से

c. सभी लोगों को काम मिलने से

d. मानवीय दक्षताओं को महत्त्व मिलने से

10.मनुष्य के दुख में निरंतर वृद्धि का क्या कारण बताया गया है ?

a.मशीनों पर अत्यधिक आश्रित हो जाना

b. मानवीय दक्षता की आलोचना

c. पूँजी पतियों द्वारा गरीबों का शोषण

d. काली मशीनों द्वारा मनुष्यों का भक्षण

प्रश्न 2. दिए गए पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- 05x01 =05

कुश्ती कोई भी लड़े

ढोल बजाता है सिमरू ही

जिसके सधे हाथ

भर देते हैं जोश पूरे दंगल में

उछलने लगती है मिट्टी पूरे अखाड़े की

ताक धिना धिन... ताक धिना धिन झाँकने लगते हैं लोग

एक-दूसरे के कन्धों के ऊपर से

उचक-उचक कर

बहुत गहरा है रिश्ता

सिमरू और ढोल का–

जैसे साँस और धड़कन का

ढोल ख़ामोश है

तो ख़ामोश है

अखाड़े की माटी

ख़ामोश ढोल को

जगाएँगे हाथ सिमरू के

ढोल बजेगा

जागेगा अखाड़ा

जागेगी माटी अखाड़े की

माटी ही तो है

जो स्वीकारती है सभी को

अच्छे हों या बुरे

हर रूप में !!

1. ढोल बजाता है सिमरू ही - पंक्ति में 'ही' क्या इंगित करता है ?

a. आदत

b. महत्त्व

c. आडंबर

d. प्रेम

2. कुश्ती में जोश कब भर आता है ?

a. जब हारता हुआ पहलवान जीतने लगता है

b. जब दोनों पहलवान बराबर की टक्कर वाले होते है

c. जब फ़ाइनल कुश्ती द्वारा राष्ट्रीय विजेता तय होता है

d. जब सिमरू द्वारा ढोल बजाया जाता है-

3. माटी द्वारा अच्छे - बुरे को स्वीकारने का क्या तात्पर्य है ?

a. माटी सबको जीतने का समान अवसर देती है

b. माटी का न्याय सबको स्वीकार्य होता है ८. अंत में अच्छे बुरे सभी माटी में मिल जाते हैं d. माटी की गोद में अच्छे-बुरे सभी पलते हैं

4. ढोल तथा अखाड़े की माटी में क्या समानता बताई गई है ?

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए -

कथन (I) : दोनों को उपयोग करने से पहले तैयार करना होता है

कथन (II) : दोनों में श्रम की आवश्यकता होती है

कथन (III) : दोनों का प्रयोग कर लोग अपनी कला सिद्ध करते है

कथन (IV) : दोनों की परिवर्तन में भूमिका होती है

निम्नलिखित विकल्पों पर विचार कीजिए तथा सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

विकल्प:-

a.केवल कथन (III) सही है।

b. केवल कथन (IV) सही है।

c.केवल कथन (II) और (III) सही हैं।

d. केवल कथन (I) और (IV) सही हैं।

5. कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कॉलम 1		**कॉलम 2**	
1	सिमरू	(i)	श्रमजीवी वर्ग
2	ढोल	(ii)	सामाजिक भूमि
3	अखाड़ा	(iii)	परिश्रम

a. 1- (iii), 2-(i), 3-(ii)

b. 1- (i), 2-(iii), 3-(ii)

c.1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

d. 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

अभिव्यक्ति और माध्यम

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- **05x01=05**

1. आलेख कुछ - कुछ फ़ीचर जैसा होता है। फिर भी दोनों में पर्याप्त अंतर है। अतः आलेख का निम्नलिखित में से विषय नहीं हो सकता है ?

a. ब्रेकिंग न्यूज़

b. राजनीति

c . खेलकूद

d. समसामयिकी

2. ऐसा सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन, जिसके माध्यम से सूचनाओं के साथ-साथ मनोरंजन पर भी ध्यान दिया जाता है, उसे ---------कहते हैं।

a. समीक्षा करना

b. फीचर लेखन

c. आलेख लेखन

d. रिपोर्ट बनाना

3. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को कहा जाता है :-

a. लेखक

b. एंकर

c. संपादक

d. संवाददाता

4. रजत एक पत्रकार हैं। वे सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर खेल से जुड़ी या इस विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करते हैं। उनकी रिपोर्टिंग को क्या कहा जा सकता है ?

a. बीट रिपोर्टिंग

b. फ्रीलांसिंग

c. विशेषीकृत रिपोर्टिंग

d. एंकरिंग

5.भास्कर पत्रकार हैं। वे आर्थिक जगत की खबरें बड़ी दिलचस्पी और सक्रियता से कवर करते हैं। उनकी रुची और रुझान के अनुसार वे क्या बन सकते हैं ?

प्रश्न संख्या

a. लेखक

b. पाठक

c. स्तंभ लेखक

d. विषय विशेषज्ञ

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित काव्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए - 05x01=05

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ

मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ

है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता

मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ

सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ,

जग भव-सागर तरने की नाव बनाए,

मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

1. **कवि के स्वप्नों का संसार है ?**

a. यथार्थ

b. आदर्श

c. स्वप्निल

d. सुखी

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए पद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए।

a. स्मृतियों की नाव में कवि एक यात्री है।

b. कविता में अग्नि परिवर्तन की इच्छा का प्रतीक है।

c. यथार्थ संसार से कवि को कोई सरोकार नहीं है।

d. सुख-दुख का असर कवि पर होता है ।

3. काव्यांश में 'उर' से तात्पर्य है ?

a. हृदय

b. इच्छा

c. स्मृति

d. आवेश

4. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : यथार्थ यथार्थ को स्वीकार नहीं करने से कवि के स्वप्न अधूरे रह गए हैं।

कारण (R) : कल्पना और वास्तविकता में सामंजस्य की कमी होने से कवि को संसार अधूरा महसूस होता है।

a. कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

b. कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

c. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) उसकी सही व्याख्या नहीं करता।

d. कथन (A) सही है तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5. भव - मौजों में मस्त बहने से तात्पर्य क्या है ?

a. सांसारिक सुख रूपी लहरें

b. मौज- मस्ती करना

c. स्वप्न में उपजी सुख - दुख की लहरें

d. नाव जैसी बहने वाली भावुकता

प्रश्न 5. निम्नलिखित गद्यांश के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- 05x01=05

मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो । सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है, ओह! कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों, पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से घायल करके मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।

1.गद्यांश में प्रयुक्त 'अतुलित' शब्द का समानार्थी शब्द हो सकता है ?

a. अरिहंत

b. अथाह

c. अभाव

d. अक्षय

2. गद्यांश का केंद्रीय भाव है ?

a. बाज़ार के प्रकार बताना

b. बाज़ार न जाने की सलाह

c. मनुष्य की तृष्णा को इंगित करना

d. मनुष्य पर बाज़ार के जादू का असर

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए।

a. जब मनुष्य बैचैन हो जाता है तब वह बाज़ार की ओर उन्मुख हो जाता है।

b. जब मनुष्य तुलना करने लगता है तब असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या के भाव मनुष्य में उभरते हैं।

c.जब मनुष्य को बाज़ार आमंत्रित करता है तब मनुष्य की व्याकुलता इसका कारण होती है। d. जब मनुष्य बाज़ार का तिरस्कार करता है तब वह इसका सही लाभ ले पाता है।

4. कॉलम 1 को कॉलम 2 से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कॉलम 1		**कॉलम 2**	
1	आग्रह का तिरस्कार जागता	(i)	मौन रहकर कार्य करना
2	बड़े बाज़ार का जादू	(ii)	अपनी तृष्णा को रोकना
3	बाज़ार के जादू से बचने का उपाय	(iii)	इच्छा पूर्ण ना होना

a. 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

b. 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)

c.1- (i), 2-(ii), 3-(iii)

d. 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

5.बाज़ार का आमंत्रण कि, 'आओ मुझे लूटो' से क्या आशय है ?

a. बाज़ार लुट जाना चाहता है

b. बाज़ार के पास वस्तुएँ बहुत ज्यादा हैं

c. बाज़ार केवल खुद का रूप दिखाना चाहता है

d. बाज़ार आकर्षित करना चाह रहा है

पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- 10x01=10

1.यशोधर बाबू दफ़्तर से घर जल्दी क्यों नहीं जाते थे ?

a. पत्नी और बच्चों से हर छोटी - बड़ी बात पर मतभेद होने के कारण

b. पीढ़ियों के अंतराल के कारण

c. ईश्वर में मन लग जाने के कारण

d. आधुनिकता के प्रति नकार की भावना के कारण

2.संसार के प्राचीनतम दो नियोजित शहर किसे माना गया है ?

a. मेसोपोटामिया तथा सिंधु घाटी

b. मेसोपोटामिया तथा हड़प्पा

c. हड़प्पा तथा मुअनजो-दड़ो

d. मुअनजो-दड़ो तथा मेसोपोटामिया

3.मुअनजो - दड़ो की अनूठी मिसाल क्या है ?

a. नगर नियोजन

b. प्राचीन शहर c. अन्न भंडार

d. मृतकों का टीला

4. निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए।

कथन (A) : यशोधर बाबू के बच्चे धर्म, रिश्तेदार तथा समाज को पिछड़ा मानते हैं।

कारण (R) : वे महत्त्वाकांक्षी और प्रगतिशील हैं। उनमें समय के साथ बदलाव आ गया है।

a. कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

b. कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।

c. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है ।

d. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

5.निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :-

कथन (I) : सिंधु सभ्यता में नगर - नियोजन उन्नत नहीं था ।

कथन (II) : सिंधु घाटी सभ्यता की खूबी सौंदर्य बोध है।

कथन (III) : मुअनजो-दड़ो छोटे - मोटे टीलों पर बसा था।

कथन (IV) : सिंधु घाटी सभ्यता टीलों पर आबाद थी।

सही कथन/ कथनों वाले विकल्प को चयनित कर लिखिए।

a. कथन (I) तथा (II) सही हैं।

b. कथन (I), (II) तथा (III) सही हैं ।

C. कथन (II), (III) तथा (IV) सही हैं।

d. कथन (II) तथा (III) सही हैं।

6.कहानी सिल्वर वैडिंग में यह वाक्य 'वह खुशहाली भी कैसी जो अपनों में परायापन पैदा करे'- किसने कहा होगा ?

a. किशन दा

b. यशोधर बाबू

c. भूषण

d. चड्ढा

7.'जूझ' - कहानी का लेखक पढ़ना क्यों चाहता था ?

a. ज्ञान के लिए

b. रोज़गार के लिए

c. कवि बनने के लिए

d. आत्मविश्वास के लिए

8.जूझ कहानी में लेखक का मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था । लेखक के पाठशाला ना जाने पाने का कारण था ?

(a) दादा का कामचोर स्वभाव

(b) कवि बनने का स्वप्न

c) खेती की मेहनत से बचना

d) घर का कर्ज़

9.कहानी सिल्वर वैडिंग में यशोधर बाबू के बच्चों के लिए कहा गया है कि, 'बच्चे आधुनिक युवा हो चले हैं' । इस पंक्ति से लेखक का क्या आशय हो सकता है ?

a. जीवन के सभी सुख प्रिय हैं

b. पिता की दिनचर्या से नाराज़गी c

c. अच्छी पगार मिलना

d. आधुनिक जीवन शैली की ओर रुझान

10.'जूझ' - कहानी के शीर्षक का अर्थ क्या है ?

a. मेहनत

b. कठिनाई

c. संघर्ष

d. चालाकी

खंड - ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

प्रश्न 7. निम्नलिखित दिए गए 03 विषयों में से किसी 01 विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए:- 06x01 =06

क. डिजिटल युग और मैं

ख. परीक्षा तनाव के कारण व इसे रोकने के उपाये

ग. उच्च शिक्षा हेतु छात्रों का विदेशों को पलायन

प्रश्न 8. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 02x02 =04

(i)कहानी के नाट्य रूपांतरण में संवादों के महत्त्व पर टिप्पणी कीजिए।

अथवा

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के संदर्भ में 'मैं' शैली के प्रयोग के बारे में क्या मान्यता है ?

(ii)नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखन के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें - "इस तरह का लेखन खुले मैदान की तरह होता है, जिसमें बेलाग दौड़ने, कूदने और कुलाँचे भरने की छूट होती है।

अथवा

टी.वी. की तुलना में रेडियो माध्यम की कोई दो सीमाएँ बताएँ ।

प्रश्न 9. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 03x02=06

(i)आपको श्रोताओं, दर्शकों या पाठकों को बाँधकर रखने की दृष्टि से प्रिंट माध्यम, टी.वी. और रेडियो में से सबसे सशक्त माध्यम कौन - सा लगता है ? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

(ii) डिजिटल मीडिया के उदय ने समाचार लेखन की उल्टी पिरामिड शैली के उपयोग को कैसे प्रभावित किया है ?

(iii) समाचार पत्रों में विशेष लेखन से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित उत्तर दें।

पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2

प्रश्न 10. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 03x02 =06

(i) बारिशों के बाद, भादों के पश्चात प्रकृति में परिवर्तन का कवि ने किस प्रकार वर्णन किया है ? पतंग कविता के आधार पर अपने शब्दों में वर्णन करें ।

(ii) 'छोटा मेरा खेत' कविता में अंधड़ और बीज से कवि का क्या तात्पर्य है ?

(iii) व्यक्ति पर प्रशंसा का क्या प्रभाव पड़ता है ? 'बात सीधी थी पर' कविता के आधार पर बताइए

प्रश्न 11. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 02x02=04

(i)कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर स्पष्ट करें कि दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमज़ोर को ही क्यों लाते हैं ?

(ii)'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए - "विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते ।"

(iii)'उषा' कविता में भोर के नभ की तुलना किससे और क्यों की गई है ?

प्रश्न12.निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 03x02=06

(i)"भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं" - लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

(ii)'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर पानी और बारिश के अभाव में गाँव की दशा का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

(iii)शिरीष के फूल निबंध में अवधूत रूप के रूप में लेखक ने किस महात्मा को याद किया है और क्यों ?

प्रश्न13.निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए :- 02x02=04

(i)डॉ. आंबेडकर 'समता' को कल्पना की वस्तु क्यों मानते हैं ?

(ii)कहानी 'पहलवान की ढोलक' व्यवस्था के बदलने के साथ लोक कला और इसके कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने की कहानी है। पंक्ति को विस्तार दीजिए ।

(iii)जिन्हें अपनी ज़रूरत का पता नहीं होता, वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन कैसे बढ़ाते हैं ?

पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2

प्रश्न14.निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 02 प्रश्नों में से किसी 01 प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए :- **04x01=04**

(i)'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू को अपने बच्चों की आकर्षक आय 'समहाउ इंप्रापर' क्यों लगती है ? आप यशोधर बाबू के स्थान पर होते तो 'समहाउ इंप्रापर' से कैसे सांमजस्य स्थापित करते ?

अथवा

उस घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए जिससे पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

-X-----X-----X-----X-

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र (2023-24)

विषय - हिंदी (आधार) - 302

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80 अंक**

सामान्य निर्देश :-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- खंड- अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तरों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए।
- खंड -ब में वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ ।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक - योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड --अ वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम संख्या	उत्तर	**अंक विभाजन**
प्रश्न 1.	प्रश्न- अपठित बोध - गद्यांश	**10x01=10**
1.	b. नया विचार	1
2.	d. पीड़ा पूर्ण	1
3.	a.केवल कथन । सही है।	1
4.	c. मज़दूरी को कम महत्त्व का आंकना	1
5.	a.मानव श्रम से ज्यादा मशीनों को महत्त्व मिलने के कारण	1
6.	b.मशीनों द्वारा जन साधारण में बेरोज़गारी बढ़ाने के कारण	1
7.	a.आर्थिक संपदा का अनुचित वितरण	1
8.	b.मानवीय संवेदनाओं एवं गुणों को महत्त्व दिया था	1
9.	d.मानवीय दक्षताओं को महत्त्व मिलने से	1
10.	a. मशीनों पर अत्यधिक आश्रित हो जाना	1
प्रश्न 2.	**प्रश्न- अपठित बोध - पद्यांश**	**05x01=05**
1.	b. महत्त्व	1
2.	d. जब सिमरू द्वारा ढ़ोल बजाया जाता है	1

3.	c.माटी की गोद में अच्छे-बुरे सभी पलते हैं	1
4.	b. केवल कथन (IV) सही है।	1
5.	b. 1-(i), 2-(iii), 3-(ii)	1
प्रश्न 3.	**प्रश्न- अभिव्यक्ति और माध्यम**	**05x01=05**
1.	a. ब्रेकिंग न्यूज़	1
2.	b. फीचर लेखन	1
3.	d. संवाददाता	1
4.	c. विशेषीकृत रिपोर्टिंग	1
5.	d. विषय विशेषज्ञ	1
प्रश्न 4.	**प्रश्न - काव्यांश - पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2**	**05x01=05**
1.	b. आदर्श	1
2.	b. कविता में अग्नि परिवर्तन की इच्छा का प्रतीक है।	1
3.	a. हृदय	1
4.	b. कथन (A) सही नहीं है, कारण (R) सही है।	1
5.	a. सांसारिक सुख रूपी लहरें	1
प्रश्न 5.	**प्रश्न - गद्यांश - पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2**	**05x01=05**
1.	b. अथाह	1
2.	d. मनुष्य पर बाज़ार के जादू का असर	1
3.	b. जब मनुष्य तुलना करने लगता है तब असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या के भाव मनुष्य में उभरते हैं।	1
4.	a. 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)	1
5.	d. बाज़ार आकर्षित करना चाह रहा है	1
प्रश्न 6.	**प्रश्न - पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2**	**10x01=10**
1.	a. पत्नी और बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने के कारण	1

2.	c. हड़प्पा तथा मुअनजो-दड़ो	1
3.	a. नगर नियोजन	1
4.	d. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं, कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।	1
5.	d. कथन (II) तथा (III) सही हैं।	1
6.	b. यशोधर बाबू	1
7.	b. रोज़गार के लिए	1
8.	a.दादा का कामचोर स्वभाव	1
9.	d. आधुनिक जीवन शैली की ओर रुझान	1
10.	c. संघर्ष	1

खंड - ब वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर

जनसंचार और सृजनात्मक लेखन

प्रश्न 7. दिए गए 03 विषयों में से किसी 01 विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख - 06x01 = 06

आरंभ -1 अंक
विषयवस्तु --3 अंक
प्रस्तुति -- 1 अंक
भाषा -- 1 अंक

प्रश्न 8. प्रश्न - लगभग 40 शब्दों में उत्तर :- 02x02=04

- कहानी की ही तरह नाटक में संवादों के द्वारा ही घटनाक्रम का विकास होता है
- अतः कहानी का नाट्य रूपांतरण करते हुए दृश्य लिखने के बाद कथावस्तु के अनुसार ही संवाद लिखे जाने चाहिए
- ये संवाद संक्षिप्त, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल और सामान्य बोलचाल की भाषा में ही लिखे जाने चाहिए
- इसके लिए हम मूल कहानी के संवादों को थोड़ा छोटा कर सकते हैं और आवश्यकतानुसार नए संवाद भी गढ़ सकते हैं

अथवा

• नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है

यद्यपि निबंधों और अन्य आलेखों में 'में' शैली का प्रयोग लगभग वर्जित होता है किंतु नए विषय और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में 'मैं' शैली के प्रयोग से लेखक के विचारों और उसके व्यक्तित्व को झलक प्राप्त होती है

(ii) नए और अप्रत्याशित विषयों के लेखन के संदर्भ में कहा जा सकता है कि लिखने का कोई फ़ॉर्मूला आज तक दुनिया में नहीं बना है
जिस तरह के विषय दिए जा सकते हैं, वे हो सकते हैं :- आपके सामने की दीवार, उस दीवार पर टंगी घड़ी, उस दीवार में बाहर की ओर खुलता झरोखा आदि इत्यादि
अर्थात लेखन के लिए लेखक के पास विषय, सिद्धांत आदि की कोई सेमा नहीं होती है लेखक की कल्पना, यथार्थ, आदर्श पर कोई बंधन नहीं होता है

अथवा

टी.वी. श्रव्य माध्यम होने के साथ - साथ दृश्य माध्यम भी है, अतः दर्शकों को रेडियो की तुलना में अधिक बाँधे रखता है

टीवी में शब्द दृश्यों के अनुसार और उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं किंतु रेडियो में शब्द और आवाज़ ही सब कुछ है

प्रश्न 9. दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :-

03x02=06

(i) विद्यार्थी चाहें तो प्रिंट, टी.वी. अथवा रेडियो में से किसी एक अथवा एक से अधिक माध्यमों पर अपने तर्क प्रदान कर सकते हैं। जैसे :

- प्रिंट माध्यम में पसंद के अनुसार किसी भी पृष्ठ को एक बार या उससे अधिक बार पढ़ा जा सकता है
- शब्दों में स्थायित्व होता है
- पढ़ते हुए उस लिखे हुए पर विचार भी किया जा सकता है
- टी.वी. में समाचार अथवा फिल्में हम देख भी सकते हैं और सुन भी सकते हैं। यह माध्यम दर्शकों को बांधे रखता है
- समाचार व पात्र दिखने में सजीव लगते हैं तथा सचित्र प्रसारण से समाचार अधिक प्रामाणिक बन जाते हैं
- टेलीविजन माध्यम साक्षर व निरक्षर दोनों प्रकार के लोगों के लिए उपयोगी है
- कम समय में हम अधिक समाचार देख सकते हैं

- समाचारों को रुचिकर ढंग से दिखाया जाता है
- रेडियो देश के कोने-कोने तक पहुँचता है
- रेडियो सस्ता माध्यम है
- साक्षर-निरक्षर सभी के लिए समान से उपयोगी

(ii) उल्टा पिरामिड शैली का विशेषतः प्रयोग मुद्रित या प्रिंट माध्यम तथा रेडियो में होता है

- डिजिटल मिडिया अधिक तीव्र एवं विस्तृत होने के कारण केवल उल्टा पिरामिड शैली पर आश्रित नहीं
- घंटे - दो घंटे में लोग स्वयं को अपडेट रखने लगे हैं, साथ ही डिजिटल मिडिया दृश्य और श्रव्य की सुविधाओं से लैस
- दृश्य और श्रव्य माध्यम जैसे टी. वी., इंटरनेट इत्यादि में समाचार, सूचना का एक बड़ा भाग दृश्य देख कर ही समझ आ जाता है
- अतः उल्टा पिरामिड शैली अब समाचार लेखन के अन्य तरीकों में से एक अन्य तरीका अथवा शैली ही है

(iii) अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों से संबंधित घटनाएँ, समस्याओं आदि से संबंधित लेखन, विशेष लेखन कहलाता है

- जब किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर लेखन किया जाए तो उसे विशेष लेखन कहते हैं
- अतः विशेष लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है
- विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं जैसे :-
- व्यापार, खेल, मनोरंजन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि इत्यादि

उदाहरण :-

शेयर बाज़ार में भारी गिरावट :- सामान्य रिपोर्टिंग में तथ्यात्मक बातें होंगी
शेयर बाज़ार में भारी गिरावट - विशेष लेखन के अंतर्गत खबर का विश्लेषण, गिरावट का कारण तथा निवेशकों पर इसका असर इत्यादि पर लेखन होगा

प्रश्न - पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2

प्रश्न 10. प्रश्न - दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर :-

03x02 = 06

(i) जब भादों मास के दौरान होने वाली घनघोर बारिश समाप्त हो जाती है तब शरद ऋतु का आगमन होता है खरगोश की लाल- भूरी आँखों जैसी चमकीली धूप निकल आती है

इसके कारण चारों और उज्ज्वल चमक बिखर जाती है, आकाश साफ और मुलायम हो जाता है, चारों ओर स्वच्छ वातावरण हो जाता है

हवाओं में मनोरम सुगंधित महक फैल जाती है

शरद ऋतु के आगमन से चारों ओर उत्साह एवं उमंग का वातावरण बताया है, पतंगबाजी का माहौल बन जाता है

शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए उसे साइकिल लेकर आते हुए चंचल बालक की तरह चित्रित किया है

(ii) 'अंधड़' का अभिप्राय है कि जब भावों की आँधी आती है तो रचना शब्दों का रूप लेकर कागज़ पर जन्म लेने लगती है

वास्तव में भाव ही कविता रचने का पहला चरण है

'बीज' से कवि का आशय है कि जब भाव आँधी रूप में आते हैं तो कविता रचने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है

(iii) प्रशंसा से व्यक्ति स्वयं को सही व उच्चकोटि का मानने लगता है

वह सही-गलत का निर्णय नहीं कर पाता उसका विवेक क्षीण हो जाता है

कविता में प्रशंसा मिलने के कारण कवि अपनी सहज बात को शब्दों के जाल में उलझा देता है

फलतः उसके भाव जनता तक पहुँच नहीं पाते

सीधी और सरल बात को कहने के लिए जब कवि चमत्कारिक भाषा का प्रयोग करता है तब

वह जो कहना चाहता है तब भाषा के चक्कर में भावों की सुंदरता नष्ट हो जाती है

प्रश्न 11. दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर:- 02x02=04

(i) दूरदर्शन वाले जानते हैं कि समाज में कमज़ोर व अशक्त लोगों के प्रति करुणा का भाव होता

लोग दूसरे के दुख के बारे में जानना चाहते हैं

दूरदर्शन वाले इसी भावना का फ़ायदा उठाना चाहते हैं

अपने लाभ के लिए ऐसे कार्यक्रम बनाते हैं

(ii) 'विप्लव-रव' से कवि का तात्पर्य क्रांति से है

कवि के अनुसार जब क्रांति होती है, तो गरीब लोगों में या आम जनता में जोश भर जाता है

यह वही वर्ग है, जो शोषण का शिकार होते हैं

अतः जब समाज में क्रांति होती है, तो इसी वर्ग से आरंभ होती है

(iii) प्रातः कालीन नभ की तुलना राख से लीपे गए गीले चौके से की गई है

इस समय आकाश नम तथा धुंधला होता है

इसका रंग राख से लीपे चूल्हे जैसा मटमैला होता है

जिस तरह चुल्हा-चौका सूख कर साफ़ हो जाता है उसी तरह कुछ देर बाद आकाश भी स्वच्छ एवं निर्मल हो जाता है

प्रश्न 12. दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर:-**03x02=06**

(i) भक्तिन अपनी गलत बात को सही करने के हज़ारों तर्क सामने रख देती थी

भक्तिन लेखिका की सुविधा नहीं देखती थी, हर बात को वह अपनी सुविधा अनुसार करती थी

लेखिका व भक्तिन के बीच बाहरी तौर पर सेवक - स्वामी का संबंध था, परंतु व्यवहार में यह लागू नहीं होता था

भक्तिन नौकर कम, जीवन की धूप-छाँव अधिक थी

भक्तिन लेखिका की छाया बनकर घुमती थी

भक्तिन हर सुख-दुख में साथ रहती थी

(ii) झुलसा देने वाली लू चलती थी

ढोर-ढंगर प्यास से मर रहे थे, पर प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था

जेठ मास भी अपना ताप फैलाकर जा चुका था

आषाढ़ के भी पंद्रह दिन बीत चुके थे

कूएँ सूखने लगे थे, नलों में पानी नहीं था

खेत की माटी सूख-सुख कर पत्थर हो गई थी

गली-मुहल्ला, गाँव-शहर हर जल लोग गरमी से भुनभुन कर त्राहिमाम कर रहे थे

(iii) लेखक को महात्मा गांधी की याद आती है

शिरीष पेड़ अवधूत की तरह, बाह्य परिवर्तन धूप, वर्षा, आँधी, लू-सब में शांत बना रहता है तथा पुष्पित-पल्लवित होता रहता है

ठीक इसी तरह से महात्मा गांधी भी मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट, खून खच्चर को बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे

इस समानता के कारण लेखक को गाँधी जी की याद आ जाती है, जिनके व्यक्तित्व ने समाज को सिखाया कि आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज़ है, आत्मा की शक्ति है

जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर इतना कोमल, इतना कठोर हो सका है, वैसे ही महात्मा गाँधी भी कठोर-कोमल व्यक्तित्व वाले थे

प्रश्न 13 -दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर:-02x02= 04

(i) डॉ० आंबेडकर का मानना है कि हर व्यक्ति समान नहीं होता

जन्म, सामाजिक स्तर, प्रयत्नों के कारण भिन्नता व असमानता होती है

मनुष्य जन्म से ही सामाजिक स्तर के अनुरूप तथा अपने प्रयासों के कारण भिन्न और समान होता है

अतः पूर्ण रूप से समता एक काल्पनिक स्थिति है

पूर्व समता एक काल्पनिक स्थिति है

इसके बावजूद वे सभी मनुष्यों को विकसित होने के समान अवसर देना चाहते हैं

वे सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार चाहते हैं

(ii) पुरानी व्यवस्था में राजदरबार और जनता द्वारा इन कलाकारों को मान-सम्मान दिया जाता था,

पर नई व्यवस्था में उन्हें सम्मान देने का प्रचलन न रहा

वे राजघराने के खर्चे पर जीवित रहते थे, पर नई व्यवस्था में ऐसा न था

उनके सहारे ये जीवित रहते थे, परंतु नई व्यवस्था में विलायती दृष्टिकोण को अपनाया गया

लोक कलाकारों को कम महत्त्व प्राप्त

पुरानी व्यवस्था में कलाकारों और पहलवानों को राजाओं का आश्रय एवं संरक्षण प्राप्त था

(iii) समाज में कुछ लोग क्रय-शक्ति के बल से बाज़ार से वस्तुएँ खरीदते हैं उन्हें अपनी ज़रूरत का

पता नहीं होता

वे समाज में असंतोष बढ़ाते हैं

सामान्य लोगों के सामने अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं

वे शानो-शौकत के लिए उत्पाद खरीदते हैं और बाज़ारूपन को बढ़ाते हैं।

ऐसे लोग बाज़ार से न सच्चा लाभ उठा पाते हैं, न उसे सच्चा लाभ दें सकते हैं

वे धन के बल पर बाज़ार में कपट को बढ़ाते हैं

प्रश्न - पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2

प्रश्न 14 -दिए गए 02 प्रश्नों में से किसी 01 प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर:- 04x01= 04

(i) यशोधर बाबू के अनुसार पैसा कमाने का साधन मर्यादित है तो उससे होने वाली आय पर सभी को गर्व

उनका वेतन बहुत धीरे-धीरे बढ़ता था, उससे अधिक महँगाई बढ़ जाती थी

उनकी आय में हुई वृद्ध का असर उनके जीवन स्तर को सुधार नहीं पाता

यशोधर बाबू के बच्चे किसी बड़ी विज्ञापन कंपनी में नौकरी पाकर रातोंरात मोटा वेतन कमाने लगे

यशोधर बाबू को इतनी मोटी तनख्वाह का रहस्य समझ में नहीं आता था

यशोधर बाबू समझते थे कि इतनी मोटी तनख्वाह के पीछे कोई गलत काम अवश्य किया जा रहा है

यशोधर बाबू ने अपना सारा जीवन कम वेतन में जैसे-तैसे गुज़ारा था, वे इतनी शान-शौकत को पचा नहीं पा रहे थे

वास्तविकता जानने का प्रयास किया जा सकता है

पीढ़ियों के बीच के अंतराल में सामंजस्य बैठाने के प्रयास किये जा सकते हैं

अथवा

लेखक पढ़ना चाहता था

पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी

लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही

माँ अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है

-X-----X---X-----X-

2. प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2023-24

विषय :हिंदी आधार

(विषय कोड-302)

कक्षा-बारहवी

निर्धारित समय-3 घंटे अधिकतम अंक- 80

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिएः-

*इस प्रश्नपत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं। प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 14 है।

*खंड 'अ' में उपप्रश्नों सहित 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

*खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

*दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

*यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

	खंड 'अ'(वस्तुपरक प्रश्न)	
	अपठित बोध	अंक 15
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:** समस्त ग्रंथों एवं ज्ञानी अनुभवी जनों का कहना है कि जीवन एक कर्मक्षेत्र है। हमें कर्म के लिए जीवन मिला है। कठिनाइयाँ एवं दुख और कष्ट हमारे शत्रु हैं, जिनका हमें सामना करना है और उनके विरुद्ध संघर्ष करके हमें विजयी बनना है। अंग्रेजी के यशस्वी नाटककार शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा , ठीक कहा है कि "कायर अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके होते हैं किंतु वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते है।" विश्व के प्रायः समस्त महापुरुषों, अमेरिका के निर्माता जॉर्ज वाशिंगटन और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से लेकर भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के जीवन-चरित्र हमें यह शिक्षा देते हैं कि महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। इन महापुरुषों के जीवन में अनेक संकटों का सामना करना पड़ा परंतु वे घबराएं नहीं संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए। संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है। कोई बाहरी शक्ति आपकी सहायता नहीं करती है। परिश्रम, दृढ़ शक्ति इच्छा व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।	(1 x10=10)

समस्याएँ वस्तुतः जीवन का पर्याय हैं। यदि समस्याएँ न हों तो आदमी प्राय: अपने को निष्क्रिय समझने लगेगा। ये समस्याएँ वस्तुतः जीवन की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती हैं। समस्या को सुलझाते समय, उसका समाधान करते समय व्यक्ति का श्रेष्ठतम तत्व उभर कर आता है। धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन है। पुराणों में अनेक कथाएँ यह शिक्षा देती है कि मनुष्य जीवन की हर स्थिति में जीना सीखें व समस्या उत्पन्न होने पर उसके समाधान के उपाय सोचे, जो व्यक्ति जितना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करेगा, उतना ही उसके समक्ष समस्याएँ आएंगी और उनके परिप्रेक्ष्य में ही उसकी महानता का निर्धारण किया जाएगा।

दो महत्वपूर्ण तथ्य सामान्य है- प्रत्येक समस्या अपने संघर्ष लेकर आती है। प्रत्येक संघर्ष के गर्भ में विजय निहित रहती है। एक प्राचार्य ने विद्यालय छोड़ने वाले अपने छात्रों को यह संदेश दिया था- तुम्हें जीवन में सफल होने के लिए समस्याओं से संघर्ष करने का प्रयास करना होगा। हम कोई भी कार्य करें, सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने का संकल्प लेकर चले। सफलता हमें कभी निराश नहीं करेगी। समस्त ग्रंथों और महापुरुषों के अनुभवों का निष्कर्ष यह है कि संघर्ष से डरना अथवा उससे विमुख होना लौकिक और पारलौकिक सभी दृष्टियों से अहितकर है। मानव धर्म के प्रतिकूल है और अपने विकास को अनावश्यक रूप से बाधित करना है।आप जागिए, उठिए, दृढ़ संकल्प और उत्साह एवं साहस के साथ संघर्ष रूपी विजय-रथ पर चढ़ जाएँ और अपने जीवन के विकास की बाधाओं रूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कीजिए।

i) .निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं - कथन (A) तथा कारण (R) I प्रश्न का उत्तर निम्लिखित विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर दीजिए:

कथन (A)) प्रत्येक समस्या अपने साथ संघर्ष लेकर आती है।

कारण (R)) संघर्ष के गर्भ में ही सफलता निहित होती है I

(a) कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है I

(b) कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है I

(c) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है

(d) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है

ii.व्यक्ति के जीवन में शिथिलता आ जाएगी। यदि-

(a) वह कोई शिकायत ही ना करें।

(b) वह हमेशा सोता ही रहे।

(c) वे हमेशा शिकायतें ही करता रहे।

(d) उसके जीवन में कोई समस्या ना हो।

iii.मनुष्य का विकास रुक जाएगा। यदि

(a) संघर्षों से डरेगा

(b) संघर्षों से डरकर विमुख होगा

a. और (b) दोनों

(c) केवल (a)

iv.जीवन एक कर्म क्षेत्र है- से क्या आशय है?

(a) मानव की जीवंतता उसके कर्मशील बने रहने में है।

(b) जीवन में कुछ क्षेत्रों की जानकारी ज़रूर होनी चाहिए

(c) जीवन में हर कदम सोच-समझ कर उठाना चाहिए

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

v. कौन-कौन से गुण व्यक्ति की सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

(a) परिश्रम

(b) दृढ़ इच्छाशक्ति

(c) लगन

(d) सभी

vi.मनुष्य के जीवन के लिए सबसे जरूरी क्या है?

(a) निष्क्रियता

(b) कर्मशीलता

(c) हंसी- ठिठोली

(d) खामोशी

vii.धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान इन्हीं प्रयत्नों की देन है से अभिप्राय है।

	(a) समस्याएं ही जीवन को प्रगति की नई -नई राहें दिखाती है। (b) समस्याएं जीवन का का बहुत कुछ लील लेती है (c) मनुष्य का श्रेष्ठम आरामदायक परिस्थियों में आता है (d) धर्म, दर्शन, ज्ञान, मनोविज्ञान को ज़रूर पढ़ना चाहिए **viii.'महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। ' वाक्य का नकारात्मक वाक्य होगा-** (a) क्या महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। (b) महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व नहीं है। (c) काश! महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व होता। (d) शायद महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व है। **ix.'समाधान' का समान शब्द क्या है?** (a) परिणाम (b) कठिनाई (c) उपाय (d) समस्या **x.गद्यांश का शीर्षक होगा।** (a) संघर्ष और सफलता (b) लोक परलोक (c) पौराणिक कथा (d) समस्त ग्रन्थ और महापुरुष	
2	**दिए गये पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:** **क्या करोगे अब ?** **समय का** **जब प्यार नहीं रहा** **सर्वसहा पृथ्वी का**	1X5=5

	आधार नहीं रहा **न वाणी साथ है** **न पानी साथ है** **न कही प्रकाश है स्वच्छ** **जब सब कुछ मैला है आसमान** **गंदगी बरसाने वाले** **एक अछोर फैला है** **कही चले जाओ** **विनती नहीं है** **वायु प्राणप्रद** **आदंकर आदमी** **सब जग से गायब है** **i). कवि ने धरती के बारे में क्या कहा है ...** a. रत्नगर्भा b. आधारशिला c. सर्वसहा d. माँ **ii. 'आदमकद आदमी' से क्या तात्पर्य है** a. मानवीयता से भरपूर आदमी b. ऊंचे कद का आदमी c. सम्पूर्ण मनुष्य d. सामान्य आदमी **iii. आसमान की तुलना किससे से की गयी है...** a. समुद्र से b. नीली झील से c. पतंग से d. गंदगी बरसाने वाले थैले से **iv. प्राणदान का तात्पर्य है** a. प्राणों को पूर्ण करने वाला b. प्राण प्रदान करने वाला c. प्राणों को प्रणाम करने वाला d. प्राणों को छीन लेने वाला	

	v. कवि समय से कब और क्यों कतराना चाहते हैं a. किसी के पास बात करने का समय नहीं b. किसी को दो क्षण बैठने का समय नहीं c. किसी को प्यार करने का समय नही d. किसी को गप मारने का समय नही	
प्रश्न संख्या	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न**	**अंक 05**
3	i). स्नेहा प्रसाद पत्रकार के रूप में एक बड़े समाचार पत्र में कार्यरत है।वहाँ उसका कार्य समाचार लेखन का है। आप बताए कि निम्नलिखित में से कौन सा कार्य उसके क्षेत्र से सम्बंधित है? a) तथ्य प्रस्तुत करना b) विशिष्ट भाषा का प्रयोग करके अपने लेख को मनोरंजक बनाना c)अपनी राय इमानदारी से प्रस्तुत करना d)पिरामीड शैली का प्रयोग करके उत्तम समाचार प्रस्तुत करना ii). अनस आलम एक व्यवसायी है,परंतु कभी कभी अपनी इच्छानुसार 'दैनिक वार्ता', 'मिलाप','दर्पण' जैसे समाचार पत्रो के लिए भुगतान के आधार पर पत्रकारिता करते है। वे किस प्रकार के पत्रकार है?- a) पूर्णकालिक b) अंशकालिक c) फ्रीलांसर d) स्ट्रिंगर iii). सूर्या एक समाचार पत्र में पत्रकार है,और उसे एक विशिष्ट गायक का साक्षात्कार लेने का मौका मिला। साक्षात्कार के लिए उसे किन बातों का ध्यान रखना होगा? a) सवाल ऐसे हो जो पाठक के मन में उठ रहे प्रश्नों का समाधान करे (जिज्ञासा शांत करे) b) सम्भव हो तो सक्षात्कार रिकार्ड कर लेना चाहिए c) रिकार्ड की सुविधा न होने पर नोट्स लिए जाए d) जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है, उसके बारे में जानकारी साक्षात्कार के दौरान ही ली जा सकती है। iv). शिव तेजा की वृद्धा दादी को आँखो से कम दिखाई देता है, परंतु जागरूक नागरिक होने के नाते देश -विदेश में घट रही विभिन्न घटनाओं को जानने में उनकी रूचि है। आप उन्हें निम्नलिखित में से जनसंचार के कौन सा माध्यम	

	चुनने की सलाह देंगे जो उन्हे देश -विदेश में घट रही विभिन्न घटनाओ की सम्पूर्ण जानकारी देगा। a) रेडियो b) समाचार पत्र c) इंटरनेट d) उपर्युक्त सभी v). **कथन**: भारत में पहला छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला। **कारण:** इसे मिशनरियो ने धर्म प्रचार की पुस्तके छापने के लिए खोला। a) कथन और कारण दोनो सही है b) कथन और कारण दोनो सही नहीं है। c) कथन सही पर कारण सही नहीं है। d) कथन का सही कारण नहीं है	
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक-10**
4	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः-** सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।। अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता।। जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।। अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवहि मोही।। जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई।। बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।। अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहहि निठुर कठोर उर मोरा।। निज जननी के एक कुमारा । तात तासु तुम्ह प्रान अधारा।। सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी।। उतरु काह दैहऊँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई।। बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिवदल लोचन।। उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपालु देखाई।। i)संसार में क्या पुनः प्राप्य नहीं है? a) सुत b)बित c)भ्राता	(5×1=5)

	d) परिवार ii)'मनि, फनि, करिबर, कर'← इन शब्दों के अर्थ क्रमशः दिए गए हैं सही विकल्प चुनिए- a)साँप,हाथी,सूँड़,रत्न b)हाथी,सूँड़,रत्न,साँप c)रत्न,साँप,हाथी,सूँड़ d) सूँड़,हाथी,साँप,रत्न iii)'हाथ पकड़कर' इस अर्थ में किन शब्दों का प्रयोग किया गया है? a)सौंपेसि मोहि b) बिधि सुखद c)तुम्हहि गहि d) गहि पानी iv)उतरु काह दैहऊँ तेहि' यहाँ पर तेहि से अभिप्राय है- a)कौशल्या b)कैकेयी c)सुमित्रा d)दशरथ v)'कमलनयन' के लिए कौन-सा शब्द प्रयोग किया गया है? a) सोच बिमोचन b) स्रवत सलिल c) राजिवदल लोचन d)दल लोचन	
प्रश्न-5	**.निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः-** इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं करता । मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है । इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी	(5×1=5)

	बड़ी समस्या नहीं जितनी यह है कि बहुत से लोग 'निर्धारित' कार्य को अरुचि के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से ग्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणा रुचि व आत्म-शक्ति को दबा कर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है । i)लेखक किस बात से असहमत है? a) जाति प्रथा का श्रम विभाजन औचित्य पूर्ण है b) जाति प्रथा का श्रम विभाजन औचित्य पूर्ण नहीं है c) जाति प्रथा का औचित्य पूर्ण है d) जाति प्रथा का औचित्य पूर्ण नहीं है ii)अरुचि व विवशता से बड़ी कठिनाइयाँ नहीं हैं- a) मानवस्वभाव b) व्यक्तिगत रुचि c) दारिद्र्य व उत्पीडन d)निर्धारितकार्य iii)टालू व कम कार्य करने की प्रवृत्ति का कारण हैः- a) वैवश्य b) दरिद्रता c) निर्विवाद d) रुचि iv)निष्क्रियता किस वजह से होती है- a) रुचि से b) स्वाभाविक प्रेरणा से c) आत्म-शक्ति दमन से d) स्वाभाविक नियमों से v)आर्थिक रूप से भी जातिप्रथा के हानिकारकत्व का हेतु है– a) काम निपटाना	

	b) न्यूनकार्यकरण c) दोनों d) उत्पीडन	
प्रश्न संख्या	**पूरक पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक वितान भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 10**
6	i) . कहानी सिल्वर वेडिंग में किशन दा की मृत्यु के संदर्भ में "जो हुआ होगा" से कहानीकार का क्या मतलब हैं ? a)उन्हें परवाह नहीँ है b)लेखक को किशन दा की मृत्यु का कारण नहीं पता था। c)सम्वेदनहीनता का उदाहरण d)सामाजिक बदलाव ii) . सिल्वर वेडिंग में ऊनी ड्रेसिंग गाउन उपहार लेते समय यशोधर बाबू को बेटे की कौन सी बात चुभ गई ? a) उपहार उन्हे अच्छा नहीं लगा। b) ऊनी ड्रेसिंग गाउन को पहनकर दूध लाने की बात c) बेटे द्वारा पिताजी के फटे गाउन की बात कहकर नया गाउन पहनकर दूध लाने का निर्देश d) यशोधर बाबू को बेटे की कौन सी बात नहीं चुभी iii) **(कथन)**यशोधर बाबू के साथ उनके बच्चो के बीच की मानसिक दूरी थी। **(कारण)** यशोधर बाबू के साथ उनके बच्चो के बीच की मानसिक दूरी की वजह पीढी के अंतराल को माना जा सकता है। a)कथन सही है,परंतु कारण सही नहीं है। b)कथन का सही कारण नहीं है c)कथन और कारण दोनों सही d) कथन और कारण दोनों गलत है iv) अपने बच्चो की उपलब्धि पर पंत जी का रवैया या विचार सकारत्मक नहीं था,परंतु उनके द्वारा लाई गई वस्तुओ का प्रदर्शन वह अत्यंत गर्व से करते थे। यह पंत जी के कौन सी चारित्रिक विशेषता को दर्शाता है? a)द्वंदात्मक चरित्र b)ईर्ष्यापूर्ण चरित्र c)दिखावापसंद	

d) अहंकारी

v) लेखक अपने दादा यानि पिता के सामने बोलने की हिम्मत क्यों नहीं करते थे -

कारण:- 1)क्योंकि उसके दादा गुस्सैल व हिंसक स्वभाव के व्यक्ति थे।

2) वे अत्यंत शांत स्वभाव के व्यक्ति थे

विकल्प:-

a) 1 सही उत्तर है

b) 1और 2 दोनो सही है

c) 1 और 2 दोनो गलत है

d) 2 सही है

vi) स्वय कविता रच लेने का आत्मविश्वास लखक के मन में कैस पैदा हुआ

1) सौंदलगेकर जी कक्षा में सस्वर कविता-पाठ करते थे

2) सौंदलगेकर ने उसे अन्य कवियों के बारे में बताया

3) सौंदलगेकर जी छात्रो को मारकर कविता पाठ सिखाते थे

4) सौंदलगेकर जी लय, छद, गति-यति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे।

a) 1 सही उत्तर है

b) 1 और 3 दोनो सही है

c) 1 और 2 दोनो गलत है

d) 1,2,3 सही है

vii) पढ़ाई के लिए पिता को राजी करने का दबाव डालने के लिए लेखक अपनी मां के साथ दत्ताजी राव के पास गया| क्योंकि आनंदा को पता था कि दत्ताजी की बात पिताजी मान जाएंगे। कारण

a) उसके पिताजी दत्ताजी राव की बात कभी नहीं टालेंगे ,कारण वह उनकी इज़्ज़त करते थे ।

b) उसके पिताजी दत्ताजी राव की बात कभी नहीं टालेंगे ,कारण पिता ने दत्ता जी से कर्ज़ा लिया था

c) उसके पिताजी दत्ताजी राव की बात कभी नहीं टालेंगे ,कारण वे उनके भाई थे।

d) उसके पिताजी दत्ताजी राव की बात कभी नहीं टालेंगे ,कारण वे उंसे डरते थे।

viii) मुअनजो -दड़ो का अर्थ क्या है ?

i) मृतकों या मुर्दों का टीला

	ii) जल संस्कृति a) केवल i) b) i और ii c) दोनो गलत है d) दोनो सही है ix) . 'डीके' हलका किसके नाम पर रखा गया है? a) दयाकाशीनाथ के b) दीक्षितकाशीनाथ के c) धर्मकाशीनाथ के d) दयालुकाशीनाथ के x) स्तूप से महाकुंड की ओर जाने वाले रास्ते का नाम क्या रखा गया है ? a) महानगर मार्ग b)डिविनिटी स्ट्रीट यानि देव मार्ग c) नगर मार्ग d)सिंधू मार्ग	
	खंड ब -(वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न संख्या	**जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पर आधारित प्रश्न**	**अंक 16**
7	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए क) नई शिक्षा नीति : 2020 ख) अमृत काल - नई दिशा में भारत के बढ़ते कदम ग) उम्मीद की नई किरण घ) लोकतंत्र का स्तंभ- मीडिया	
प्रश्न **8**	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग **40** शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : कहानी में संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय किन तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है और क्यों ? अथवा रेडियो नाटक के लिए किन तीन मुख्य बातों का विचार करना चाहिए और क्यों ?	(2x1=2)

	मंच पर अभिनीत किए जाने वाले नाटकों से रेडियो नाट्य लेखन में क्या अंतर है और क्यों? अथवा कथानक से आप क्या समझते है ? कहानी या नाटक में इसे केंद्रीय बिंदु क्यों माना जाता है ?	
9	निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए क) समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली में ककार का विभाजन किस प्रकार से होता है और इस शैली में स्रोत का कार्य है? ख) विशेष लेखन की परिभाषा बताते हुए विशेष लेखन कार्य के किन्हीं चार क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए। ग) संपादकीय लेखन और समाचार लेखन में कौन से बुनियादी अंतर है?	
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक आरोह भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 20**
प्रश्न **10**	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए **3** प्रश्नों में से किन्हीं **2** प्रश्नों के लगभग **60** शब्दों में उत्तर दीजिए : **3∗2= 06** अंक i)'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कवि की गति में शिथिलता और हृदय में विह्वलता का क्या कारण है? ii)'कवितावली के छंदों में अपने युग की आर्थिक एवं सामाजिक विषमता की अभिव्यक्ति है'-कथन की पुष्टि कीजिए । iii)रुबाइयाँ के आधार पर घर आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।	(3X2=6)
प्रश्न **11**	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए **3** प्रश्नों में से किन्हीं **2** प्रश्नों के लगभग **40** शब्दों में उत्तर दीजिए **|** i)कवि ने कथ्य को महत्व दिया है अथवा भाषा को-'बात सीधी थी पर ' ' के आधार पर तर्क-सम्मत उत्तर दीजिए। ii)'कैमरे में बद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए। iii) उषा' कविता के आधार पर सूर्योदय से ठीक पहले के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण कीजिए।	2X2=4
12	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** (i) भक्तिन सेवा-धर्म के मर्म को जानती है, सिद्ध कीजिए।	**(03∗02=06)**

	(ii) दिनों-दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग 'काले मेघा पानी दे' की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए। (iii) शिरीष, अवधूत और गांधीजी एक-दूसरे के समान कैसे हैं?	
13	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए (i) जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है? (ii) पहलवान की ढोलक की उठती गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है? (iii) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?	(2×2=4)
प्रश्न संख्या	**पूरक पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक वितान भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 4**
14	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-(02*02=04)** (i) क्या पीढ़ी के अंतराल को 'सिल्वर वेडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है? तर्क सहित उत्तर दीजिए। (ii) 'जूझ' के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए क्यों तड़पता था, उसे खेती का काम क्यों अच्छा नहीं लगता था। तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (iii) "सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था ।" उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।	

2.प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2023-24

विषय :हिंदी आधार

(विषय कोड-302)

कक्षा-बारहवी(अंक योजना)

निर्धारित समय-3 घंटे अधिकतम अंक- 80

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिएः-

*इस प्रश्नपत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न दिए गए हैं। प्रश्नपत्र के दोनों खंडों में प्रश्नों की संख्या 14 है।

*खंड 'अ' में उपप्रश्नों सहित 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

*खंड 'ब' में कुल 8 वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं, प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।

*दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

*यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

	खंड 'अ'(वस्तुपरक प्रश्न)	
	अपठित बोध	अंक 15
प्रश्न 1.	**निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:** **i) a)**कथन (A)) तथा कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है I **ii. d)** उसके जीवन में कोई समस्या ना हो। **iii. (c) a** और (b) दोनों **iv. a)**मानव की जीवंतता उसके कर्मशील बने रहने में है। **v. d)**सभी vi. b)कर्मशीलता **vii. a)**समस्याएं ही जीवन को प्रगति की नई -नई राहें दिखाती है। **viii. b)**महानता का रहस्य संघर्षशीलता अपराजेय व्यक्तित्व नहीं है। **ix.** c)उपाय **x. a)** संघर्ष और सफलता	(1 x10=10)
2	**दिए गये पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:**	1X5=5

	i). c. सर्वसहा **ii.** a. मानवीयता से भरपूर आदमी **iii** d. गंदगी बरसाने वाले थैले से **iv.** b. प्राण प्रदान करने वाला **v** c. किसी को प्यार करने का समय नही	
प्रश्न संख्या	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक पर आधारित प्रश्न**	**अंक 05**
3	i). a) तथ्य प्रस्तुत करना ii c) फ्रीलांसर iii). d) जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लेना है, उसके बारे में जानकारी साक्षात्कार के दौरान ही ली जा सकती है। iv). a) रेडियो v). a) कथन और कारण दोनो सही है	
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक-10**
4	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः-** (i) c)भ्राता (ii) c)रत्न,साँप,हाथी,सूँड़ (iii) d) गहि पानी (iv) c)सुमित्रा (v) c) राजिवदल लोचन	(5×1=5)
प्रश्न-5	1. b. जाति प्रथा का श्रम विभाजन औचित्य पूर्ण नहीं है 2. c. दारिद्र्य व उत्पीडन 3. a. वैवश्य 4. c. आत्म-शक्ति दमन से 5. c. दोनों	(5×1=5)
प्रश्न संख्या	**पूरक पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक वितान भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 10**

6	i) b)लेखक को किशन दा की मृत्यु का कारण नहीं पता था। ii) c) बेटे द्वारा पिताजी के फटे गाउन की बात कहकर नया गाउन पहनकर दूध लाने का निर्देश iii) c)कथन और कारण दोनों सही iv) a)द्वंदात्मक चरित्र v) a) 1 सही उत्तर है vi) a) 1 सही उत्तर है vii) a) उसके पिताजी दत्ताजी राव की बात कभी नहीं टालेंगे ,कारण वह उनकी इज़्ज़त करते थे । viii) a)केवल i) ix) b) दीक्षितकाशीनाथ के x) b)डिविनिटी स्ट्रीट यानि देव मार्ग	
	खंड ब -(वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न संख्या	**जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पर आधारित प्रश्न**	अंक 16
7	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए** आरंभ 1 अंक विषयवस्तु 3 अंक प्रस्तुति 1 अंक भाषा 1 अंक	
प्रश्न **8**	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :** (i)कहानी के संवादों का नाट्य रूपांतरण करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिए - • नाटक का दृश्य कथानक को आगे बढाता है तथा पात्रों व परिवेश को संवादों के माध्यम से स्थापित करता है । • कहानी में छपे लंबे संवादों को पाठक पढ़ तो सकता है लेकिन मंच पर बोले गए लंबे संवाद से तारतम्य स्थापित करना मुश्किल होता है । • नाटक में हर एक पात्र का विकास कहानी जैसे आगे बढ़ाती है ,वैसे होता है । इसलिए कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय पात्रों का वितरण करना बहुत जरुरी होता है	(2x1=2)

- कहानी कागजी होती है | एक व्यक्ति कहानी लिख सकता है, पर जब नाट्य रूपांतरण की बात आती है तो एक समूह या टीम की आवश्यकता होती है |
- नाटक में पात्रों द्वारा बोले जाने वाले संवाद छोटे प्रभावशाली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए |

अथवा

रेडियो नाटक का कथानक संवादों और ध्वनि प्रभावों पर ही निर्भर रहता है। इसलिए कथानक का चुनाव करते समय अग्रलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

(1) रेडियो नाटक का कथानक केवल एक घटना पर आधारित नहीं होना चाहिए। उदाहरण के रूप में, यदि रेडियो नाटक के कथानक का आधार पुलिस द्वारा डाकुओं का पीछा करना है, तो यह कथानक अधिक देर तक नहीं रहना चाहिए, अन्यथा यह उबाऊ हो जाएगा। इसका मतलब यह है कि रेडियो नाटक के कथानक में अत्यधिक संवाद होने चाहिए तथा एक-से-अधिक घटनाएँ भी होनी चाहिए।

(2) सामान्य तौर पर रेडियो नाटक की अवधि 15 से 30 मिनट तक होनी चाहिए। इससे अधिक की अवधि के नाटक को श्रोता सुनना पसंद नहीं करेगा। कारण यह है कि श्रोता की एकाग्रता 15 से 30 मिनट तक ही बनी रहती है। यदि रेडियो नाटक की अवधि लंबी होगी, तो श्रोता की एकाग्रता भंग हो जाएगी और उसका ध्यान भी भटक जाएगा।

(3) रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या बहुत कम होनी चाहिए। तीन-चार पात्रों का नाटक आदर्श नाटक कहा जा सकता है। यदि रेडियो नाटक में बहुत अधिक पात्र होंगे, तो श्रोताओं को पात्रों को याद रखना कठिन होगा, क्योंकि श्रोता केवल आवाज़ के माध्यम से रेडियो के पात्रों को याद रखता है।

कठिन होगा, क्योंकि श्रोता केवल आवाज़ के माध्यम से रेडियो के पात्रों को याद रखता है।

(i) रंगमंच नाटक दृश्य और श्रव्य होता है | रंगमंचीय नाटक में यह संभव नहीं है कि किसी भी स्थान का और किसी भी प्रकार का दृश्य प्रस्तुत किया जा सके | इस प्रकार इसे लिखने के समय सीमित सीमाओं का ध्यान रखना होता है इसके विपरीत रेडियो नाटक पूरी तरह से श्रव्य माध्यम है | फलत: रेडियो नाटक रंगमंच और उसकी सीमओं से मुक्त होता है | इसलिए रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा व् रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न

	तथा मुश्किल होता है |केवल आवाज के माध्यम से ही नाटक को प्रस्तुत किया जाता है	इसमें मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है | अथवा कथानक कहानी का केंद्रीय बिंदु होता है जिसमें प्रारंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं, पात्रों का उल्लेख होता है ।सरल शब्दों में, कहानी की रचना को कथानक कहा जाता है। प्रत्येक कहानी के लिए कथावस्तु का होना आवश्यक है, क्योंकि इसके अभाव में किसी कहानी की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है ।कथानक को कहानी का प्रारंभिक नक्शा भी माना जा सकता है। कहानी का कथानक कहानीकार के मन में ,किसी घटना ,जानकारी ,अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कहानी कार्य कल्पना का विकास करते हुए परिवेश ,पात्र औऱ समस्या का आकार देता है। इस प्रकार वह एक ऐसा काल्पनिक ढांचा (बनावट)तैयार करता है जो कोरी कल्पना न होकर संभावित हो तथा लेखक के उद्देश्य से मिलती हो ।	
9	**निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में लिखिए** क)समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ़ या शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं-क्या, कौन, कब और कहाँ? इसके बाद समाचार की बॉडी में और समापन के पहले बाकी दो ककारों-कैसे ' और क्यों-का जवाब दिया जाता है। इस तरह छह ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है। इनमें से पहले चार ककार-क्या, कौन, कब और कहाँ-सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बाकी दो ककारों-कैसे और क्यों-में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है। स्रोत-जानकारी प्राप्त करने का स्थान या वह विभाग या अधिकारी जिसको जानकारी देने का अधिकार हो। ख) अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता विशेष लेखन के कई क्षेत्र हैं :- • व्यापार ,खेल , मनोरंजन ,विज्ञान ,प्रौद्योगिकी , कृषि , विदेश आदि	

	ग) संपादकीय लेखन - व्यक्ति विशेष की राय होती है, भाषा अलंकारिक होती है,पक्ष लिया जा ता है,समय सीमा नही होती है। समाचार लेखन-तथ्य होते है,भाषा सीधी सपाट होती है, पक्षपात नहीं किया जाता है, तत्कालीन जानकारी दी जाती है।	
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक आरोह भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 20**
प्रश्न **10**	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए **3** प्रश्नों में से किन्हीं **2** प्रश्नों के लगभग **60** शब्दों में उत्तर दीजिए : **3*2= 06** अंक (i) कवि जानता है कि समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह गतिशील है और उसकी अपनी गति है। कवि को यह जानकारी है कि घर पर उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं होगा। उससे मिलने के लिए कोई व्याकुल नहीं होगा । इसलिए वह किसके लिए शीघ्रता करे। यह बात कवि के पैरों को शिथिल कर देती है लेकिन मंजिल पर पहुँचने की जलक उसके हृदय में बेचनी भर देती है। उसे लगता है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए। किसी अनजानी जगह पर प्रिय की यादों के साथ रात बिताना अत्यंत कष्टकर होगा। उसे फिर नए सिरे से सफर करना होगा। जल्दी-जल्दी ढलते दिन का ध्यान आते ही उसके पैरों में चंचलता आ जाती है। इस तरह कवि अपने घर की ओर लौटने में शिथिल तथा अनुत्साहित भी है। (ii) तुलसीदास ने अपने काव्य में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विशद वर्णन किया है। जब सभी श्रमजीवी, किसान वर्ग, बनिया, भिखारी, भाट, नौकर, नटवर्ग, चोर तथा जादूगर अपनी भूख मिटाने के लिए जीविकोपार्जन हेतु पढ़ते-लिखते थे तथा कुशलता अर्जित करते थे। पहाड़ पर चढ़ने जैसे कठिन कार्य को करते थे। ये सब पेट की खातिर यहाँ-वहाँ भटकते थे। शिकारी गहरे वन में दिन भर मारे-मारे भटकते थे। पेट की भूख मिटाने के लिये अत्याचार, अन्याय, ऊँच-नीच, अनैतिक, धर्म-अधर्म के कार्य करके पेट भरते थे। पेट की खातिर अपने बेटे-बेटियों को भी बेचने का नीच कार्य भी करते थे | (iii)दीवाली के त्योहार पर पूरा घर रंगरोगन से पुता हुआ है। माँ अपने नन्हें बेटे को प्रसन्न करने के लिए चीनी मिट्टी के जगमगाते खिलौने लेकर आती है। वह बच्चों के घर में दीया जलाती है। इसी तरह राखी के समय आकाश में काले-काले बादलों की हल्की घटा छाई हुई है। छोटी बहन ने पाँवों में पाजेब पहनी हुई है जो बिजली की तरह चमक रही है।	(3X2=6)

प्रश्न **11**	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए **3** प्रश्नों में से किन्हीं **2** प्रश्नों के लगभग **40** शब्दों में उत्तर दीजिए **।** (i) -'बात सीधी थी पर '' कविता में कवि ने कथ्य को महत्व दिया है। इसका कारण यह है कि सीधी और सरल बात को कहने के लिए जब कवि ने चमत्कारिक भाषा में कहना चाहा तो भाषा के चक्कर में भावों की सुंदरता नष्ट हो गई। भाषा के उलट-फेर में पड़ने के कारण उसका कथ्य भी जटिल होता गया। (ii) इस कविता को हम क्रूरता की कविता मानते हैं। यह कविता मीडिया के व्यापार व कार्यशैली पर व्यंग्य करती है। दूरदर्शन कमजोर व अशक्त वर्ग के दुख को बढ़ा-चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। वह कमजोर वर्ग की सहायता नहीं करता, अपितु अपने कार्यक्रम के जरिये वह स्वयं को समाज-हितैषी सिद्ध करना चाहता है। अत: यह कविता पूर्णत: मीडिया की क्रूर मानसिकता को दर्शाती है। (iii) सूर्योदय से पहले आकाश का रंग शंख जैसा नीला था, उसके बाद आकाश राख से लीपे चौके जैसा हो गया। सुबह की नमी के कारण वह गीला प्रतीत होता है। सूर्य की प्रारंभिक किरणों से आकाश ऐसा लगा मानो काली सिल पर थोड़ा लाल केसर डालकर उसे धो दिया गया हो या फिर काली स्लेट पर लाल खड़िया मिट्टी मल दी गई हो। सूर्योदय के समय सूर्य का प्रतिबिंब ऐसा लगता है जैसे नीले स्वच्छ जल में किसी गोरी युवती का प्रतिबिंब झिलमिला रहा हो।	2X2=4
12	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए-** i)भक्तिन सेवा धर्म का मर्म जानती है इसलिए वह अधिकांश समय महादेवी की सेवा में बिताना चाहती है। यहाँ तक कि जेल के नाम से थर -थर काँपने वाली भक्तिन को जब यह पता चलता है कि उसकी मालकिन को जेल हो सकती है तो वह भी अपने मालकिन के साथ जेल जाने को तैयार हो जाती है। युद्ध के खतरे में भी वह महादेवी अकेला नहीं छोड़ना चाहती है । ii)पानी का गहराता संकट हमारे देश के लिए एक भयंकर समस्या बन चुका है। इस संकट को टालने के लिए ग्रामीण व शहरी युवक-युवतियाँ अत्यधिक सहयोग दे सकते हैं। युवा वर्ग देश के गाँवों में तालाब खुदवा सकता है, जहाँ पानी का भंडारण किया जा सकता है। इस पानी से जहाँ	**(03*02=06)**

	एक ओर खेतों की सिंचाई की जा सकती है, वहाँ दूसरी ओर भूमिगत जल के स्तर में भी सुधार लाया जा सकता है। युवक प्रत्येक घर में जाकर पानी को व्यर्थ बरबाद न करने का संदेश भी लोगों को दे सकते हैं। iii) शिरीष तरु अवधूत की तरह, बाहय परिवर्तन धूप, वर्षा, आँधी, लू-सब में शांत बना रहता है तथा पुष्पित-पल्लवित होता रहता है। इनकी तरह ही महात्मा गांधी भी मारकाट, अग्निदाह, लूटपाट, खून खच्चर को बवंडर के बीच स्थिर रह सके थे।	
13	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए।** i)जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थिति प्रायः आती है क्योंकि उद्योग धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है। ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य को पेशा न बदलने की स्वतंत्रता न हो तो भुखमरी व बेरोजगारी बढ़ती है। हिंदू धर्म की जातिप्रथा किसी भी व्यक्ति को पैतृक पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। आज यह स्थिति नहीं है। सरकारी कानून, समाज सुधार व शिक्षा के कारण जाति प्रथा के बंधन कमजोर हुए हैं। पेशे संबंधी बंधन समाप्त प्राय है। यदि व्यक्ति अपना पेशा बदलना चाहे तो जाति बाधक नहीं है।	(2×2=4)

	ii)महामारी की त्रासदी से जूझते हुए ग्रामीणों को ढोलक की आवाज संजीवनी शक्ति की तरह मौत से लड़ने की प्रेरणा देती थी। यह आवाज बूढ़े-बच्चों व जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उपस्थित कर देती थी। उनकी स्पंदन शक्ति से शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। ठीक है कि ढोलक की आवाज में बुखार को दूर करने की ताकत न थी, पर उसे सुनकर मरते हुए प्राणियों को अपनी आँखें मूंदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी। उस समय वे मृत्यु से नहीं डरते थे। इस प्रकार ढोलक की आवाज गाँव वालों को मृत्यु से लड़ने की प्रेरणा देती थी। iii)भक्तिन के आ जाने से महादेवी ने लगभग उन सभी संस्कारों को, क्रियाकलापों को अपना लिया जो देहातों में अपनाए जाते हैं। देहात की हर वस्तु, घटना और वातावरण का प्रभाव महादेवी पर पड़ने लगा। वह भक्तिन से सब कुछ जान लेती थी ताकि किसी बात की जानकारी अधूरी न रह जाए। धोती साफ़ करना, सामान बांधना आदि बातें भक्तिन ने ही सिखाई थी। वैसे देहाती भाषा भी भक्तिन के आने के बाद ही महादेवी बोलने लगी। इन्हीं कारणों से महादेवी देहाती हो गईं।	
प्रश्न संख्या	**पूरक पाठ्यपुस्तकठ्यपुस्तक वितान भाग 2 पर आधारित प्रश्न**	**अंक 4**
14	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए-(02*02=04)** (i) हाँ पीढ़ी के अंतराल को 'सिल्वर वेडिंग' कहानी की मूल संवेदना कहा जा सकता है। यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि हैं। वे आधुनिकता व प्राचीनता में समन्वय स्थापित नहीं करपाते। नए विचारों को संशय की दृष्टि से देखते हैं। इस तरह वे ऑफ़िस व घर-दोनों से बेगाने हो जाते हैं। (सम्बंधित तर्क) (ii) 'जूझ' के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था, उसे खेती का काम अच्छा नहीं लगता था। शिक्षा से ही वह जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है और वह सम्मान में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है। इसलिए वह उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था। उसे खेती का काम इसलिए अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसे विश्वास था यदि वह सारी उम्र भी खेती करे तो भी उसे उसके हाथ कुछ नहीं लगेगा। (iii) * सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व अधिक था । सिन्धु घाटी सभ्यता में कला व शिल्प काफी विकसित था, कई स्थानों से	

	उत्तम कलाकृतियों की प्राप्त हुई है। सिन्धु घाटी सभ्यता में बर्तन का निर्माण, मूर्तियों का निर्माण व मुद्रा का निर्माण इत्यादि प्रमुख शिल्प थे। सिन्धु घाटी सभ्यता में कांस्य कलाकृतियाँ, मृणमूर्तियाँ, मनके की वस्तुएं व मुहरें प्राप्त हुई हैं। *नगर नियोजन तथा निकासी व्यवस्था भी उत्तम थी।	

3.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2023-24

विषय - हिंदी (आधार) - 302

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक : 80 अंक**

सामान्य निर्देश :-

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए:

- इस प्रश्न पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक तथा खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।
- खंड 'अ' में 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
- खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।
- दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है ।
- यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए |

खंड -अ (वस्तुपरक प्रश्न)

अपठित बोध

प्रश्न 1.निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- 10×1=10

आज किसी भी व्यक्ति का सबसे अलग एक टापू की तरह जीना संभव नहीं रह गया है। मानव समाज में विभिन्न पंथों और विविध मत-मतांतरों के लोग साथ-साथ रह रहे हैं। ऐसे में यह अधिक आवश्यक हो गया है कि लोग एक-दूसरे को जानें; उनकी आवश्यकताओं एवं उनकी इच्छाओं-आकांक्षाओं को समझें; उन्हें वरीयता दें और उनके धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों, अनुष्ठानों को सम्मान दें। भारत जैसे देश में यह और भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है।

स्वामी विवेकानंद इस बात को समझते थे और अपने आचार-विचार में वे अपने समय से बहुत आगे थे। उन्होंने धर्म को मनुष्य की सेवा के केंद्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी-देवताओं की तरह मंदिरों में स्थापित कर दिया जाए और मंदिरों से देवी-देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाए। उनका दृढ़ मत था कि विभिन्न धर्मों-संप्रदायों के बीच संवाद होना ही चाहिए। वे विभिन्न संप्रदायों की अनेकरूपता को उचित और स्वाभाविक मानते थे। स्वामी जी विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे और सभी को एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरुद्ध थे।

वे कहा करते थे-"यदि सभी मानव एक ही धर्म को मानने लगें, एक ही पूजा-पद्धति को अपना लें और एक-सी नैतिकता का अनुपालन करने लगें, तो यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी, क्योंकि यह सब हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्राणघातक होगा तथा हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से कार देगा।" स्वामी विवेकानंद हिंदू धर्म में सुधार लाना चाहते थे और हिंदुओं में गर्व और आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न करना चाहते थे। हिंदू धर्म एक ओर रूढ़िवादिता और दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा देश पर पश्चिमी विचार थोपे जाने से पीड़ित था। विवेकानंद का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष को आध्यात्मिक आधार दिया और मैतिक व सामाजिक दृष्टि से हिंदू समाज में उत्थान के लिए काम किया।

1. 'टापू की तरह' जीने से लेखक का क्या आशय है?

a) घमंड में रहना

(b) समाज से अलग रहना

(c) समाज से जुड़कर रहना

(d) विनम्र बनकर रहना

2. भारत जैसे देश में एक-दूसरे से मिलकर रहना आवश्यक क्यों है?

(a) समाज से अलग रहकर जीना संभव न होने के कारण

(b) विभिन्न धर्म, मतों व विचारधारा के लोग होने के कारण

(c) हिंदू धर्म को अधिक महत्त्व देने के कारण

(d) आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की महत्ता के कारण

3. विभिन्न पंथों और मत-मतांतरों के लोग मिलकर नहीं रहेंगे तो उसका क्या परिणाम होगा?

(a) समाज में शांति स्थापित होगी

(b) धार्मिक संस्थानों में विवाद नहीं होगा

(c) सभी का जीवन और अधिक कठिन हो जाएगा

(d) सभी का जीवन सुखमय हो जाएगा

4. गद्यांश के अनुसार स्वामी विवेकानंद किस बात को भली-भाँति समझते थे?

(a) भारत देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है

(b) भारत में विभिन्न धर्मो, संप्रदायों के बीच संवाद नहीं होना चाहिए

(c) भारत में सभी धर्मों को स्थान देना उचित नहीं है

(d) भारत में धार्मिक अनुष्ठानों को महत्त्व नहीं देना चाहिए

5. विवेकानंद जी द्वारा दिए गए बयान का आधार क्या था?

(a) समाज में अशांति फैलाना

(b) हिंदू धर्म का विरोध करना

(c) धर्म को मनुष्य की सेवा के केंद्र में रखना

(d) समाज में व्याप्त रुढ़ियों समाप्त करना

6. विभिन्न धर्म संप्रदायों के बीच संवाद होने से समाज को क्या लाभ होगा?

(a) विवादों का अंत करने के लिए रास्ता मिलेगा

(b) विभिन्न संप्रदायों की अनेकरूपता से सभी धार्मिक आस्थाओं के लोगों के विचारों का पता चलेगा

(c) विभिन्न धार्मिक संस्थाओं व उनके मतों का भेद पता चलेगा

(d) सभी विवादों की जड़ का पता चलेगा

7. स्वामी विवेकानंद ने सभी लोगों द्वारा एक ही धर्म, मत, पूजा-पद्धति को अपनाने को दुर्भाग्यपूर्ण क्यों माना है?

(a) क्योंकि इससे धार्मिक विकास नहीं होगा

(b) क्योंकि इससे आध्यात्मिक विकास रुक जाएगा

(c) क्योकि इससे सांस्कृतिक जड़े कमजोर हो जाएँगी

(d) उपरोक्त सभी

8. विवेकानंद जी द्वारा मंदिरों से मूर्ति हटाने का विद्रोही बयान क्यों दिया गया?

(a) धार्मिक क्रियाकलापों पर रोक लगाने के कारण

(b) भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को मंदिरों में स्थापित करने के कारण

(c) शोषित वर्ग का विरोध करने के कारण

(d) आध्यात्मिक चिंतन को बढ़ावा देने के कारण

9. गद्यांश में किसकी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं का सम्मान करने की बात कही गई है?

(a) विवेकानंद जी की

(b) विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों की

(c) उच्च वर्ग के लोगों की

(d) निम्न वर्ग के लोगों की

10. प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखक ने क्या संदेश दिया है?

(a) सांप्रदायिक सद्भाव को समाप्त कर नए समाज का निर्माण करना

(b) भारत की अनेकता में एकता की विशेषता को बनाए रखना

(c) उच्च वर्ग को समाप्त करने हेतु विद्रोह करना

(d) विवेकानंद जी को विश्व विजय के रूप में अपनाना

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए:- 5×1= 5

मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है।

सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है।

जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है?

नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं।

सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है?

जिसके बड़े रसीले, फल कंद, नाज, मेवे।

सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है?

जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे।

दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है?

मैदान, गिरि, वनों में, हरियालियाँ महकतीं।

आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

जिसकी अनंत वन से धरती भरी पड़ी है।

संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?

सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी।

जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?

1. कवि ने देश का मुकुट हिमालय को क्यों कहा है?

(क) पर्वतों में सबसे कम महत्त्वपूर्ण होने के कारण

(ख) सर्वाधिक ऊँचा होकर मस्तक स्वरूप दिखाई देने के कारण

(ग) धरती से समानता न होने के कारण

(घ) प्राकृतिक सौंदर्य से विरक्त होने के कारण

2. भारत के प्राकृतिक सौंदर्य को स्वर्ग के सदृश क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि इसकी प्राकृतिक सुंदरता में स्वर्ग की सुंदरता, सुख और आनंद का अनुमान हो रहा है

(ख) क्योंकि इसके समान सुंदरता किसी अन्य देश में नहीं है

(ग) क्योंकि यहाँ विभिन्न प्रकार के फूल, पौधे तथा नदियाँ है

(घ) क्योंकि यहाँ प्रकृति को पूजनीय माना जाता है

3. कवि ने भारत की किस विशेषता की ओर संकेत किया है?

(क) भारत देश की नदियाँ अमृत की धारा बहा रही है

(ख) भारत देश की धरती अनंत धन से लदी-भरी पड़ी है

(ग) भारत ने ही संसार के लोगों को सबसे पहले ज्ञान दिया

(घ) उपरोक्त सभी

4. किन पंक्तियों से पता चलता है कि भारत विश्व का शिरोमणि है?

(क) सुख-स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

(ख) सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है।

(ग) आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है?

(घ) संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है?

5. 'जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

(क) देश को सम्मान देने के लिए समुद्र बार-बार उसके चरण स्पर्श कर फूला नहीं समाता है

(ख) देश के चरण स्पर्श करने को समुद्र अपना अपमान समझता है

(ग) देश के चरण स्पर्श समुद्र को विवशता के कारण करना पड़ता है

(घ) देश बार-बार अपने चरणों को समुद्र से धुलवाता है

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए :- **5 × 1 = 5**

1. इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय है, क्योंकि

(क) इससे दृश्य एवं प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है

(ख) इससे खबरें बहुत तीव्र गति से पहुँचाई जाती हैं

(ग) इससे खबरों की पुष्टि तत्काल होती है

(घ) ये सभी

2. टेलीविजन की भाषा हेतु क्या सही नहीं है?

(क) वाक्य छोटे, सीधे एवं स्पष्ट हो

(ख) एक वाक्य में एक ही बात कहने का धैर्य हो

(ग) विशेषणों का प्रयोग हो

(घ) मुहावरों का यथासंभव प्रयोग हो

3. समाचार का प्रवेश द्वार किसे माना जाता है?

(क) इंट्रो

(ख) बॉडी

(ग) शीर्षक

(घ) समापन

4. स्ट्रिगर किसे कहते हैं?

(क) निश्चित मानदेय के आधार पर काम करने वाले अंशकालिक पत्रकार

(ख) नियमित वेतनभोगी पत्रकार

(ग) स्वतंत्र रूप से काम करने वाले पत्रकार

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

5 . मुद्रित माध्यम की विशेषता है

(क) इसे आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं

(ख) इसमें स्थायित्व नहीं होता है

(ग) इसे पहले पृष्ठ से ही पढ़ने में बाध्यता होती है

(घ) इसमें लिखित भाषा की विशेषताएँ शामिल होती हैं

प्रश्न 4 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए । 5 × 1 = 5

झूमने लगे फल,

रस अलौकिक,

अमृत धाराएँ फूटतीं

रोपाई क्षण की,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।

रस का अक्षय पात्र सदा का

छोटा मेरा खेत चौकोना।

1 कथन(A)- उत्तम साहित्य रचना रस के अक्षय पात्र के समान है|

कारण(R) - साहित्य रचना देश और काल से परे होकर आनंद बिखेरती रहती है।

a) कथन(A) तथा कारण(R) और दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है ।

c) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

d) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) इसकी गलत व्याख्या करता है ।

2. 'रोपाई क्षण की' से कवि का क्या आशय है.

a) कविता क्षणभंगुर है.

b) एक क्षण के भावावेश में कविता लेखन होता है।

c)कविता लेखन के लिए अभ्यास की जरूरत है|

d) कविता लेखन सबके बस की बात नहीं है|

3. 'कटाई अनंतता की' से क्या तात्पर्य है.

a) उत्तम काव्य रचना कालजयी होती है|

b) कविता का आनंद एक सीमित समय के लिए होता है|

c) खेती की कटाई अनंतकाल तक है।

d) कविता अलंकारों से पूर्ण होती है |

4. काव्यांश के आधार पर बाताइए कि वह कौन सी चीज़ है , जो लुटते रहने पर भी कम नहीं होती ?

a) फसल

b) धन -दौलत

c) कविता से प्राप्त आनंद

d) सौंदर्य

5. रस का अक्षयपात्र किसे कहा गया है?

a) उत्तम साहित्यकृति

b) खेत

c) कवि

d)जन्मभूमि

प्रश्न 5 निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढकर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए । 5 × 1 = 5

क्या जाने उस भोले आदमी को अक्षर-ज्ञान तक भी है या नहीं। और बड़ी बातें तो उसे मालूम क्या होंगी। और हम-आप न जाने कितनी बड़ी-बड़ी बातें जानते हैं। इससे यह तो हो सकता है कि वह चूरन वाला भगत हम लोगों के सामने एकदम नाचीज़ आदमी हो। लेकिन आप पाठकों की विद्वान श्रेणी का सदस्य होकर भी मैं यह स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ कि उस अपदार्थ प्राणी को वह प्राप्त है जो हम में से बहुत कम को शायद प्राप्त है। उस पर बाज़ार का जादू वार नहीं कर पाता। माल बिछा रहता है, और उसका मन अडिग रहता है। पैसा उससे आगे होकर भीख तक माँगता है कि मुझे लो। लेकिन उसके मन में पैसे पर दया नहीं समाती । वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। ऐसे आदमी के आगे क्या पैसे की व्यंग्य-शक्ति कुछ भी चलती होगी ? क्या वह शक्ति कुंठित रहकर सलज्ज ही न हो जाती होगी?

1) भगत जी को लेखक विद्वानों से भी श्रेष्ठ क्यों मानते हैं ?

a) भगत जी चूरन बेचते हैं

b) भगत जी बाज़ार के प्रलोभन में नहीं पडते।

c) वे बाज़ार के जाल में फंस जाते हैं

d) उन्हें बाज़ार से विरोध है ।

2) चूरनवाले भगत जी के सामने बाज़ार क्यों हार मान लेता है ?

a) भगत जी के पास असीम धन है ।

b) भगत जी केलिए बाज़ार आवश्यकता के समय काम आने के लिए है।

c) भगत जी बाज़ार की चमक-दमक से प्रभावित होते हैं।

d) भगत जी बाज़ार की हर चीज़ खरीदने का सामर्थ्य रखते हैं ।

3) अनुच्छेद के आधार पर भगत जी के चरित्र की मुख्य विशेषता क्या है?

a) लोभ

b) संयम और विवेक

c) क्रोध एवं ईर्ष्या

d) अहंकार

4) चूरनवाले भगत जी को अपदार्थ प्राणी क्यों कहा गया है ?

a) वे अधिक शिक्षित या धनिक नहीं हैं ।

b) वे चूरन बेचते हैं ।

c) उनपर बाज़ार के जादू क प्रभाव नहीं पड़ता ।

d) वे सभी सामान खरीद लेते हैं ।

5) कथन(A) और कारण(R) को पढकर उचित उत्तर के विकल्प को चुनिए ।

कथन(A) - भगत जी पर बाज़ार का जादू वार नहीं कर पाता ।

कारण(R) - भगत जी का मन स्थिर और लोभ से रहित है ।

a) कथन(A) यह तथा कारण(R) दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

b) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है ।

c) कथन(A) तथा कारण(R) दोनों गलत है।

d) कथन(A) सही है लेकिन कारण (R) इसकी गलत व्याख्या करता है ।

प्रश्न 6- पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।10×1 =10

1. कहानी "सिल्वर वैडिंग" में किशनदा की मृत्यु के सन्दर्भ में 'जो हुआ होगा' से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है ?

(a) लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है

(b) लेखक को मृत्यु का कारण पता है

(c) लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है

(d) लेखक को मृत्यु से कोई अंतर नहीं पड़ता है

2. यशोधर बाबू के बेटे भूषण ने उन्हें उनकी शादी की 25वीं वर्षगाँठ पर क्या उपहार दिया ?

(a) ऊनी ड्रेसिंग गाउन

(b) आधुनिक घड़ी

(c) कुर्ता पजामा

(d) इनमें से कोई नहीं

3. यशोधर बाबू अपनी पत्नी को क्या कहकर उनका मजाक उड़ाते थे ?

(a) शानयल बुढ़िया

(b) बूढ़ी मुहं मुंहासे, लोग करें तमासे

(c) चटाई का लहँगा

(d) उपर्युक्त सभी

4. यशोधर बाबू को अपने पर गर्व और प्रसन्नता का बोध कब होता है ?

(a) जब भूषण उन्हें सिल्वर वैडिंग का उपहार देता है

(b) जब वह ऑफिस से मंदिर जाते हैं

(c) जब लोग उनके बच्चों की उन्नति देखकर उनसे इर्ष्या करते हैं

(d) इनमें से कोई नहीं

5. **'जूझ' कहानी के नायक ने विद्यालय में पुनः किस कक्षा में बैठना शुरू किया?**

(a) चौथी

(b) पाँचवीं

(c) तीसरी

(d) सातवीं

6. **इनमें 'जूझ' कहानी के पात्र नहीं हैं ?**

(a) आनंद यादव

(b) सौन्दलगेकर

(c) दत्ता जी राव

(d) चड्ढा

7. **'जूझ' कहानी में 'बरहेल सूअर' की तरह 'गुर्राना' का प्रयोग किसके लिए हुआहै ?**

(a) आनंद की माँ के लिए

(b)आनंद के पिता के लिए

(c)आनंद के शिक्षक के लिए

(d)आनंद के मित्रों के लिए

8. **मोहनजोदड़ो, हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी है ?**

a) राष्ट्रीय संग्रहालय , नई दिल्ली

b) राष्ट्रीय संग्रहालय, जयपुर

c) राष्ट्रीय संग्रहालय, मुंबई

d) इनमें से कोई नहीं।

9).लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्यबोध को क्या नाम दिया है ?

a) राजपोषित सौंदर्यबोध

b) धर्म पोषित सौंदर्यबोध

c) समाज पोषित सौंदर्यबोध

d) इनमें से कोई नहीं

10. सिंधु घाटी की सभ्यता को किस सभ्यता के समकक्ष माना जाता है ?

a) मसोपोटेमिया (इराक) और मिस्र की सभ्यता

b) रोम की

c) ईरान की

d) इनमें से कोई नहीं।

खंड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

प्रश्न 7 दिए गए अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए। 6×1=6

क) सोशल मीडिया से भ्रमित होते विद्यार्थी

ख) परीक्षा से पहले मेरी मनोदशा।

ग) मेरी अपेक्षाएँ 2023 में

प्रश्न 8 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40शब्दों मे लिखिए |

2×2=4

क) कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?

ख) कहानी और नाटक के समान तत्व कौनसे हैं ?

ग) रेडियो नाटक के लिए संवाद लेखन में किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?

प्रश्न 9 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर60शब्दों मे लिखिए | 3× 2=6

क) पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?स्पष्ट कीजिए |

ख) ड्राई एंकर किसे कहते है?

ग) मुद्रित माध्यमों की खूबियाँ क्या -क्या है?

प्रश्न 10 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के उत्तर करीब 60 शब्दों में लिखिए-

3 x 2=6

क) कवितावली के उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है?

ख) उषा कविता के किन उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है?

ग) ' पर्दे पर वक्त की कीमत है ' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नज़रिया किस रूप में रखा है?

प्रश्न 11 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के जवाब करीब 40 शब्दों में लिखिए-

2x 2=4

क) 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता से आपको क्या संदेश मिलता है?

ख) कविता के संदर्भ में ' बिना मुरझाए महकने ' से क्या तात्पर्य है?

ग) 'रुबाइयाँ' में बालक द्वारा चाँद माँगने की ज़िद पर माँ क्या करती है?

अपने शब्दों में उत्तर दीजिए |

प्रश्न 12 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के जवाब करीब 60 शब्दों में लिखिए-

3 x 2=6

क) इन्दर सेना के बारे लेखक और जीजी की राय में क्या अंतर था ? आप किसके विचारों से सहमत है ?

ख) जाति-प्रथा को श्रम विभाजन का एक ही रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं?

ग) 'पहलवान की ढोलक ' पाठ के आधार पर बताइए कि लुट्टन सिंह ढोल को अपना गुरु क्यों मानता था?

प्रश्न 13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं 2 प्रश्नों के जवाब करीब 40 शब्दों में लिखिए-

2 x 2= 4

क) शिरीष की तुलना अवधूत से क्यों की है?

ख) भक्तिन के आने से लेखिका अधिक देहाती कैसे हो गयी?

ग) डॉ आंबेडकर के मतानुसार 'दासता' की व्याख्या कीजिए ।

प्रश्न 14. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 40शब्दों मे लिखिए |

2×2=4

क) यशोधर बालू दो भिन्न काल खंडों में जी रहे हैं'-पक्ष या विपक्ष में सोदाहरण तर्क दीजिए।

ख) दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेना पड़ता तो आगे का घटनाक्रम क्या होता?

ग) सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था।' ऐसा क्यों कहा गया?

****

3.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2023-24

विषय - हिंदी (आधार) - 302

कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय: 03 घंटे **अधिकतम अंक**

उत्तर संकेत

क्र सं	उत्तर संकेत	अंक
1	1. (ख) समाज से अलग रहना 2. (ख) विभिन्न धर्म, मतों व विचारधारा के लोग होने के कारण 3. (ग) सभी का जीवन और अधिक कठिन हो जाएगा 4. (क) भारत देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है 5. (ग) धर्म को मनुष्य की सेवा के केंद्र में रखना 6. (ग) विभिन्न धार्मिक संस्थाओं व उनके मतों का भेद पता चलेगा 7. (घ) उपरोक्त सभी 8. (ख) भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को मंदिरों में स्थापित करने के कारण 9. (ख) विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों की 10. (ख) भारत की अनेकता में एकता की विशेषता को बनाए रखना	10 × 1 = 10
2	1. (ख) सर्वाधिक ऊँचा होकर मस्तक स्वरूप दिखाई देने के कारण 2. (क) क्योंकि इसकी प्राकृतिक सुंदरता में स्वर्ग की सुंदरता, सुख और आनंद का अनुमान हो रहा है 3. (घ) उपरोक्त सभी 4. (घ) संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है? 5. (क) देश को सम्मान देने के लिए समुद्र बार-बार उसके चरण स्पर्श कर फूला नहीं समाता है	5 × 1 = 5
3	1. (क) इससे दृश्य एवं प्रिंट दोनों माध्यमों का लाभ मिलता है 2. (घ) मुहावरों का यथासंभव प्रयोग हो 3. (ग) शीर्षक 4. (क) निश्चित मानदेय के आधार पर काम करने वाले अंशकालिक पत्रकार 5. (क) इसे आराम से और धीरे-धीरे पढ़ सकते हैं	5 × 1 = 5
4	1 -(a), 2 -(b),3 –(a),4-(c),5-(a)	5 × 1 = 5

5	1-(b), 2 – (b), 3- (b), 4-(a),5-(a)	5 × 1 = 5
6	1 -(a),2-(a) ,3-(d) 4 –(c), 5-(b), 6 (d),7 (b),8(a), 9 (c), 10 (a)	10×1= 10
7	भूमिका 1 विषयवस्तु 4 भाषा 1	6
8 क	,कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है- 1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है। 2कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है। 3. कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है। 4: ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है। 5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है। 6. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है। 7. संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है।	2×2=4
ख	1 घटनाएँ 2 परिवेश 3 पात्र 4 संवाद- कहानी में संवाद कम होते हैं जबकि नाटक पूरी तरह संवादात्मक होता है । 5 कहानी का क्रमिक विकास	

ग	6 द्वंद्व 7 चरम उत्कर्ष (क्लाइमेक्स) संवाद जिस चरित्र को संबोधित कर रहा है उसका नाम लेना आवश्यक है क्योंकि रेडियो में कौन किससे बात कर रहा है यह हम देख नहीं पाते |	
9 क)

	चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रखा भी जा सकता है।	
10	**क)**. समाज में व्याप्त बेरोजगारी एवं भूखमरी का अत्यंत बारीकी से चित्रण - इससे विवश होकर निकृष्ट काम करने के लिए तैयार हो जाना, भूख मिटाने के लिए बेटा-बेटी को बेचने के लिए तक तैयार हो जाना तथा समाज के प्रत्येक वर्ग एवं विभाग में व्याप्त अशांति एवं उनकी विषमताओं का मार्मिक चित्रण उन्हों ने किया है | **ख)** प्रात नभ की तुलना नीले शंख से की गई है, राख से लीपा हुआ चौका जो गीला पडा है - बहुत काली सिल जिसमें लाल केसर पिसकर धो दिया गया है - स्लेट पर लाल खडिया चाक मलना , नील जल में झिलमिलाती गौर देह - ये सब प्रभात के समय गाँव मे पाने वाले दृश्य हैं| **ग)** पर्दे पर किसी की भावना- संवेदना, मान-अपमान की कीमत नहीं है, कवि दूरदर्शन के इस तरह के स्वार्थपूर्ण कामों की निंदा करता है |कवि चाहता है कि अपाहिजों के साथ समाज संवेदनापूर्ण व्यवहार करें |	**3**x2=6
11	**क)** छात्र अपने दृष्टिकोण के आधार पर संदेश का चयन करें| **ख)** ० फूल अपनी सुगंध चारों ओर फैलाता - अपनी सुगंध से दूसरों को आकृष्ट करता - लेकिन फूल के मुरझाने पर सुगंध नष्ट हो जाती है। किन्तु कविता में जो भाव और विचार हैं ,वे हमेशा बने रहते हैं । इसका रसास्वादन कालातीत है। **ग)** माँ आईना लाकर बच्चे को देती है और आईने में बच्चे के प्रतिबिम्ब दिखाकर कहती है कि लो चाँद धरती पर उतर आया है |	2x2=4
12	**क)** मेंढक मंडली पर पानी डालने को लेकर लेखक और जीजी के विचारों में अत्यधिक भिन्नता है। लेखक आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित है। इंदर सेना वर्षा की स्थिति में निरर्थक उछलकूद करती थी। उन पर पानी फेंकना मूर्खता थी। क्योंकि पानी की भारी कमी थी। जीजी मेंढक मंडली पर पानी फेंकने को उचित मानती है। वह कहती है कि किसी से कुछ पाने के लिए पहले कुछ चढ़ावा चढ़ाना पड़ता है। यह पानी का अर्घ्य है। पहले त्याग करने से ही फल मिलता है। अपना विचार छात्र स्वयं लिखें| **ख).** यह श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक-विभाजन का भी रूप लिए हुए है --मनुष्य को उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार काम का अवसर नहीं देता - समाज द्वारा पूर्व निर्धारित काम को विवश होकर स्वीकार करना पड़ता है, जीवन भर एक पेशे से बंधकर रह जाते है|	3x2=6

	ग) ढ़ोल की आवाज़ से ही लुट्टन को प्रेरणा मिलती थी,उस आवाज़ को उसने नया अर्थ दिया ,उसके अनुसार दाँव-पेंच रखा,कुश्ती जीतता रहा। लुट्टन को और कोई गुरु नहीं था,वह सबसे पहले ढ़ोल का प्रणाम करता था।	
13	**क)** क्योंकि वह कठिन परिस्थिति में भी मस्त रहता है , अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे सुन्दर रचनाएँ निकली है, शिरीष के फूल सब से सुंदर हैं। **ख)** लेखिका भक्तिन द्वारा अपनी इच्छा से बनाई गई देहाती भोजन खाने को विवश हो गयी , उनकी जीवन-शैली सरल हो गयी,भक्तिन द्वारा गाँव की अनेक दंत कथाएँ कंठस्थ कराई गई। **ग)** दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता| दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने केलिए विवश होना कानूनी पराधीनता न होने पर भी दासता कहा जा सकते हैं|	2x2=4
14	**क)**'सिल्वर वैडिंग' का प्रधान पात्र यशोधर बाबू है। वह रहता तो वर्तमान में हैं, परंतु जीता अतीत में है। वह अतीत को आदर्श मानता है। यशोधर को पुरानी जीवन शैली, विचार आदि अच्छे लगते हैं, वे उसका स्वप्न हैं। परंतु वर्तमान जीवन में वे अप्रासंगिक हो गए हैं। कहानी में यशोधर का परिवार नए ज़माने की सोच का है। वे प्रगति के नए आयाम छूना चाहते हैं। उनका रहन-सहन, जीने का तरीका, मूल्यबोध, संयुक्त परिवार के कटु अनुभव, सामूहिकता का अभाव आदि सब नए ज़माने की देन है। यशोधर को यह सब 'समहाड इम्प्रापर' लगता है। उन्हें हर नई चीज़ में कमी नजर आती है। वे नए जमाने के साथ तालमेल नहीं बना पा रहे। वे अधिकांश बदलावों से असंतुष्ट हैं। वे बच्चों की तरक्की पर खुलकर प्रतिक्रिया नहीं दे पाते। यहाँ तक कि उन्हें बेटे भूषण के अच्छे वेतन में गलती नजर आती है। दरअसल यशोधर बाबू अपने समय से आगे निकल नहीं पाए। उन्हें लगता है कि उनके जमाने की सभी बातें आज भी वैसी ही होनी चाहिए। यह संभव नहीं है। इस तरह के रूढ़िवादी व्यक्ति समाज के हाशिए पर चले जाते हैं। **ख,)** दत्ता जी राव से पिता पर दबाव डलवाने के लिए लेखक और उसकी माँ को एक झूठ का सहारा लेना पड़ा। यदि झूठ का सहारा न लेते और सच बताते कि उन्होंने दत्ता जी राव से पिता को बुलाकर लेखक को स्कूल भेजने के लिए कहा है तो लेखक के पिताजी उनके घर न जाते उल्टा माँ-बेटे की पिटाई कर देते।लेखक को खेती में झोंक देते।	2x2=4

	ग)सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्त्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर-नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की। मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है। खुदाई के दौरान जो भी वस्तुएँ मिलीं या फिर जो भी निर्माण शैली के तत्व मिले, उन सभी से यही बात निकलकर आती है कि सिंधु सभ्यता समाज प्रधान थी। यह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक थी। इसमें न तो किसी राजा का प्रभाव था और न ही किसी धर्म विशेष का। इतना अवश्य है कि कोई-न-कोई राजा होता होगा लेकिन राजा पर आश्रित यह सभ्यता नहीं थी। इन सभी बातों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि सिंधु सभ्यता का सौंदर्य समाज पोषित था।	

4.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, 2023-24

विषय: हिन्दी (आधार-302)

कक्षा : बारहवीं

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80 अंक**

सामान्य निर्देश :

- **निम्नलिखित निर्देशों को सावधानी से पढ़िए एवं उनका पालन कीजिये**
- **इस प्रश्न पत्र में खंड 'अ' में वस्तुपरक एवं खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं।**
- **खंड 'अ' में कुल 40 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, सभी 40 प्रश्नों के उत्तर देने हैं।**
- **खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं ।**
- **दोनों खण्डों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
- **यथासंभव दोनों खण्डों के उत्तर क्रमशः लिखिए।**

	खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)	
प्रश्न संख्या	**अपठित गद्यांश**	
प्रश्न 1	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चयन कीजिए :** "शिक्षा को महत्त्वाकांक्षा से मुक्त होना ही चाहिए। महत्त्वाकांक्षा ही तो राजनीति है। महत्त्वाकांक्षा के कारण ही तो राजनीति सबसे ऊपर, सिंहासन पर विराजमान हो गई है। सम्मान वहाँ है, जहाँ पद है। पद वहाँ है, जहाँ शक्ति है। शक्ति वहाँ है जहाँ राज्य है। इस दौड़ से जीवन में हिंसा पैदा होती है। महत्त्वाकांक्षी चित्त हिंसक चित्त है। अहिंसा के पाठ पढ़ाए जाते हैं। साथ ही महत्त्वाकांक्षा भी सिखाई जाती है। इससे ज्यादा मूढ़ता और क्या हो सकती है? अहिंसा प्रेम है। महत्त्वाकांक्षा प्रतिस्पर्धा है। प्रेम सदा पीछे रहना चाहता है । प्रतिस्पर्धा आगे होना चाहती है। प्रतिस्पर्धा प्रेम से बिल्कुल उलटी है। वह ईर्ष्या, घृणा और हिंसा है। प्रतिस्पर्धा में इस आगे होने की होड़ की शुरुआत शिक्षालयों में ही होती है और फिर चरमसीमा तक चली जाती है। मानव जाति में यही दौड़ है। राष्ट्रों में भी यही दौड़ है। युद्ध इस अंधी दौड़ की ही तो परिणति है। इस दौड़ के मूल में है- अहंकार । अहंकार सिखाया जाता है और उसका पोषण किया जाता है । छोटे-छोटे बच्चों में अहंकार को बढ़ावा दिया जा रहा है। नैतिक मूल्यों के स्थान पर उनके बालमन में अहंकार को प्रोत्साहित कर हम स्वयं के लिए ही विनाश का मार्ग बना	**(1x10)**

	रहे हैं। उनके निर्दोष और सरल चित्त अहंकार से विषाक्त किए जा रहे हैं। उन्हें भी प्रथम आने के लिए इस अंधी दौड़ का हिस्सा बनाया जा रहा है। यह अहंकार रूपी दानव बच्चों में आपसी प्रेम, मित्रता और भाई चारे की भावना के स्थान पर परस्पर शत्रुता को प्रबल बना रहा है। विनय के उपदेश दिए जाते हैं और सिखाया अहंकार जाता है। क्या वह दिन मनुष्य जाति के इतिहास में सबसे बड़े सौभाग्य का दिन नहीं होगा जिस दिन हम बच्चों को अहंकार के स्थान पर इंसानियत और सद्भावना का सबक सिखाना प्रारंभ करेंगे। जब अहंकार का स्थान प्रेम ले लेगा तब खुद-ब-खुद परिस्थितियाँ अनुकूल नजर आएँगी। इसके लिए शिक्षण पद्धति में कुछ बदलाव करके हम इस परिकल्पना को साकार कर सकते हैं और एक आदर्श समाज और उसमें बच्चों के योगदान को सुनिश्चित कर सकते हैं। प्रथम और अंतिम की कोटियों को तोड़कर परीक्षाओं को इस प्रकार सुनियोजित करना होगा जिससे जीवन मूल्यों की स्थापना हो । अहंकार के स्थान पर प्रेम को प्राथमिकता मिले और जीवन जीने के सर्वोच्च आदर्श स्थापित हो सकें। एक आदर्श समाज में एक आदर्श नागरिक के रूप में बच्चे के भविष्य की दृष्टि से यह परिवर्तन समय की सबसे बड़ी माँग है। परस्पर शत्रुता की भावना को मिटाकर हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को पोषित करें और जनकल्याण के पावन कार्य में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें तो निःसंदेह सकारात्मक परिणाम सामने आएँगें।"	
1.	लेखक शिक्षा को किससे मुक्त करने की बात कह रहा है ? a.अहंकार b.महत्त्वाकांक्षा c.हिंसा d.शत्रुता	
2.	'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना कैसे पोषित होगी :- a.आदर्श सोच से b.जीवन मूल्यों से c.परस्पर शत्रुता की भावना को मिटाने से d.अहंकार से	
3.	प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ के मूल में क्या है ? a.भाईचारा b.हिंसा c.सद्भावना d.अहंकार	
4.	मनुष्य जाति के इतिहास में सबसे बड़े सौभाग्य का दिन होगा, जब : a. हम बच्चों को अहंकार के स्थान पर इंसानियत और सद्भावना का सबक सिखाना प्रारंभ करेंगे ।	

	b. हम बच्चों को झूठ के स्थान पर इंसानियत और सद्भावना का सबक सिखाना प्रारंभ करेंगे । c. हम बच्चों को अहंकार के स्थान पर ईर्ष्या और भाईचारे का सबक सिखाना प्रारंभ करेंगे । d. उपर्युक्त सभी ।	
5.	एक आदर्श समाज और उसमें बच्चों के योगदान को सुनिश्चित कब किया जा सकता है ? a. भाईचारे को सद्भाव का रूप देकर b. प्रेम का स्थान शत्रुता को देकर c. अहंकार का स्थान प्रेम को देकर d. प्रतिस्पर्धा को शिक्षा का स्थान देकर	
6.	लेखक के अनुसार कौन-सा परिवर्तन समय की सबसे बड़ी माँग है ? a. जीवन जीने के सर्वोच्च आदर्शों और प्रेम को प्राथमिकता । b. जीवन में नैतिक मूल्यों और शत्रुता की भावना c. अहंकार और प्रतिस्पर्धा को प्राथमिकता **d.** शिक्षा और महत्त्वाकांक्षा को प्राथमिकता	
7.	निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए- लेखक के अनुसार? (i) परीक्षाओं को इस प्रकार सुनियोजित करना होगा जिससे अहंकार की स्थापना हो । (ii) परीक्षाओं को इस प्रकार सुनियोजित करना होगा जिससे जीवन मूल्यों की स्थापना हो । (iii) जब अहंकार का स्थान प्रेम ले लेगा तब खुद-ब-खुद परिस्थितियाँ अनुकूल नजर आएँगी । उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही हैं ? a. केवल I b. केवल II c. II और III d. d.I और III	
8.	प्रतिस्पर्धा की परिणति किस रूप में सामने आती है :- a. युद्ध के रूप में b. ख.दौड़ के रूप में c. ग.प्रमाद के रूप में d. घ.निराशा के रूप में	
9.	अहंकार रूपी दानव बच्चों पर किस प्रकार के कुप्रभाव डालता है ?	

	a. बच्चों में हिंसा, शत्रुता और भाईचारे की भावना के स्थान पर एकता को प्रबल बना रहा । b. बच्चों में आपसी प्रेम, मित्रता और भाईचारे की भावना के स्थान पर परस्पर शत्रुता को प्रबल बना रहा । c. बच्चों में आपसी ईर्ष्या, शिक्षा और भाईचारे की भावना के स्थान पर परस्पर शत्रुता को प्रबल बना रहा । d. उपर्युक्त में से कोई नहीं ।	
10.	निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प का चुनाव कीजिए :- कथन (A) नैतिक मूल्यों के स्थान पर बच्चों के बालमन में अहंकार को प्रोत्साहित कर हम स्वयं के लिए ही विनाश का मार्ग बना रहे हैं । कारण (R) नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहन हमारे समक्ष नई परेशानी उत्पन्न करेगा । a. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। b. कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है। c. कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं। d. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है|	
प्रश्न 2	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए :-** " माटी , तुझे प्रणाम ! मेरे पुण्यदेश की माटी, तू कितनी अभिराम ! तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर क्षण-भर में ही भूल गया मैं शत्रु-यंत्रणा क्रूर सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुन: संचार लगता जैसे आज युगों के बाद मिला विश्राम ! माटी, तुझे प्रणाम ! तुझसे बिछुड़ मिला प्राणों को कभी न पल-भर चैन तेरे दर्शन हेतु रात-दिन तरस रहे थे नैन धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व हुई साधना सफल, भक्त को प्राप्त हो गए राम ! माटी, तुझे प्रणाम ! अमर मृतिके ! लगती तू पारस से बढ़कर आज कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज मरणशील हम, किंतु अमर तू, है अमर्त्य यह धाम हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम !"	**1x5=5**

1.	कवि किसे प्रणाम कर रहा है ? a. मातृभूमि की माटी को b. ख. अमिट शक्ति को c. ग. पुण्यदेश की काया को d. घ.देश की वीरता को	
2.	"हम मर-मर कर अमर करेंगे तेरा उज्ज्वल नाम !" इस पंक्ति में किसका नाम उज्ज्वल करने की बात की गई है ? a. स्वयं का b. ख.पारस का c. ग.मातृभूमि का d. घ.सभी विकल्प सही हैं ।	
3.	'मेरे पुण्यदेश की माटी, तू कितनी अभिराम' इस पंक्ति में **अभिराम** शब्द का क्या अर्थ है? a. निरंतर b. मोहक c. सुगंधित d. वीर प्रसूता	
4.	शरीर के रोम-रोम में सुख और उत्साह की अनुभूति का भाव किस पंक्ति में व्यक्त हुआ है? a. तुझे लगा माथे से सारे कष्ट हो गए दूर b. धन्य हुआ तेरे चरणों में आकर यह अस्तित्व c. सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुन: संचार d. कारा-जड़ जीवन सचेत फिर, तुझ को छू कर आज	
5.	काव्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए - (I)कवि ने अपने अस्तित्व को इस मातृभूमि से सार्थक बताया है । (II)कवि ने जीवन की सफलता को, 'भक्त को राम मिल गए हो' के समान बताया है । (III)कवि देश की माटी को यातना देने वाली क्रूर बताया है । उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही हैं । a. केवल I b. केवल III c. II और III d. I और II	
प्रश्न -3	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनें**	**1×5=5**

1.	इनमें से कौन प्रिंट मीडिया की खूबी नहीं है - a. इससे लिखित भाषा का विस्तार होता है । b. छपे हुए शब्द स्थायी होते हैं c. यह चिंतन, तर्क-वितर्क और विचार-विश्लेषण का माध्यम है d. यह समझने में कठिन होती है ।	
2.	**पत्रकारीय लेखन के समय क्या ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है ?** a. सूचनाओं की सार्थकता b. समाचार की संवेदनशीलता c. सूचनाओं की तथ्यात्मकता d. उपरोक्त सभी	
3.	**किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहन छानबीन और विश्लेषण के बाद ------- तैयार होती है ।** a. समाचार **b.** फीचर **c.** संपादकीय **d.** विशेष रिपोर्ट	
4.	**स्वतंत्र पत्रकार किसे कहा जाता है ?** a. किसी एक समाचार पत्र से संबन्धित नहीं होते, ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर काम कराते हैं । b. ऐसा पत्रकार जो किसी एक समाचार संगठन में काम करता है और नियमित वेतन पाता है । c. सीमित समय या कम समय के लिए काम करने वाला पत्रकार , इन्हें प्रकाशित सामग्री के आधार पर वेतन मिलता है । **d.** संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्त करने वाला जो सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया करता है ।	
5.	**HTML का पूरा नाम है -** a. हाई टेक्स्ड-मार्क लैंगवेज़ b. हाइपर टेक्स्ड-मार्क्ड़-अप लैंगवेज़ c. ह्यूमन टेली मल्टीनेशनल लिमिटेड **d.** हाइपर टाइम-मेल लिमिटेड	
प्रश्न -4	**निम्नलिखित काव्यान्श के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-**	5x1=5

	मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ, उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ, जो मुझको बाहर हँसा,रुलाती भीतर, मैं, हाय, किसी के याद लिए फिरता हूँ! कर यत्न मिटे सब,सत्य किसी ने जाना? नादान वही है, हाय,जहाँ पर दाना! फिर मूढ़ न क्या जग,जो इस पर भी सीखे? मैं सीख रहा हूँ,सीखा ज्ञान भुलाना!	
1	**कथन (A) और कारण (R) को पढ़ कर उचित उत्तर पर (√) लगाइए -** **कथन (A) - कवि के अवसाद का कारण उसका उन्माद है |** **कारण (R) - उन्माद हमेशा अवसाद देता ही है |** **विकल्प -** a. कथन (A)ठीक है और कारण (R) उसकी सही व्याख्या है । b. कथन (A)ठीक है किन्तु कारण (R)उसकी सही व्याख्या नहीं है । c. कथन (A)गलत है किन्तु कारण (R)उसकी सही व्याख्या है । d. कथन (A)गलत है और कारण (R)भी गलत है ।	
2	**कवि के अवसाद का क्या कारण है ?** a. प्रेयसी की उपेक्षा b. प्रेयसी का न होना c. प्रेयसी की याद d. प्रेयसी का कठोर होना	
3	**नादान वह है जो -** a.दान देता है b. दान लेता है c.संसार में ही रमा रहता है d. जो प्रेम में राहता है	
4	**कवि क्या सीख रहा है ?** a. ज्ञान को भूलना b. सांसरिक ज्ञान को भुलाना c. प्रेम करना d. प्रेम त्यागना	
5	**कवि किस दुनिया में जीना चाहता है ?** a. मोक्ष की b.आध्यात्मिक आनंद की c. प्रेम की d. प्रगति की	
प्रश्न -5	**निम्नलिखित गद्यान्श के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए-** मित्र बोले- कुछ न पूछो । बाजार है कि शैतान का जाल है ? ऐसा सजा-सजाकर माल रखते हैं कि बेहया ही हो जो न फँसे । मैंने मन में कहा, ठीक। बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो। सब भूल जाओ,मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं	**(1x5)**

	कुछ चाहते हो,तो भी देखने में क्या हरज़ है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जागता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाज़ार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफ़ी नहीं है और चाहिए, औए चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है और यहाँ कितना अतुलित है ओह! कोई अपने को न जाने तो बाज़ार का यह चौक उसे कामना से विकल बना छोड़े। विकल क्यों पागल। असंतोष, तृष्णा और ईर्षा से घायल कर मनुष्य को सदा के लिए यह बेकार बना डाल सकता है।	
1	किसने बाज़ार को शैतान का जाल कहा है और क्यूँ? a. लेखक के तृष्णाकुल मित्र ने क्योंकि मन में अनगिनत वासनाएँ जगाता है| b. लेखक ने क्योंकि वह मन को पागल करता है| c. मित्र ने क्योंकि वह मन में तिरस्कार जगाता है| **d.** लेखक ने क्योंकि वह मन को काबू में करता है|	
2	'बेहया' शब्द में क्या व्यंग्य है ? a. उसे कहा गया है जो बाज़ार के आकर्षणों से प्रभावित नहीं होता है| b. जो सारे निमंत्रणों को ठुकराकर संयमी बना रहता है| c. कामना से विकल होने वाले लोगों के लिए कहा गया है| **d.** लेखक ने बाज़ार पर व्यंग्य किया है|	
3	बाज़ार में माल देखने का निमंत्रण किसलिए दिया जाता है a. ताकि देखने वाले के मन में तृष्णा जगे| b. वह बिना ज़रूरत के भी माल खरीद ले| c. मन में अनगिनत वासनाएँ जगे| **d.** उपर्युक्त सभी |	
4	**निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यान्श के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए -** a. बाज़ार में माल देखने का निमंत्रण इसलिए दिया जाता है ताकि देखने वाले के मन में तृष्णाएँ जगे| b. बाज़ार में माल देखने का निमंत्रण इसलिए दिया जाता है ताकि देखने वाले का मन संयमित रहे| c. बाज़ार को देखकर लोगों को लगे कि उनके पास अतुलित साधन है| d. बाज़ार का आमंत्रण लोगों में आग्रह पैदा करता है |	
5	**बाज़ार का आमंत्रण कि, 'आओ मुझे लूटो' से क्या आशय है ?** a. बाज़ार में पैसेवालों को बुलाना | b. बाज़ार के के आकर्षण में फँसकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीदना| c. बाज़ार के आकर्षण से दूर रहना|	

	d. बाज़ार से वांछित समान खरीदकर घर लौटना|	
	पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2	**1x10=10**
प्रश्न -6	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढकर उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए।** 1. यशोधर बाबू का आधुनिक विचारों के पक्ष में न होना किस तथ्य की ओर संकेत करता है? a. यशोधर बाबू सिद्दांतवादी व्यक्ति थे b. यशोधर बाबू रुढीवादी व्यक्ति थे c. यशोधर बाबू देहाती वादी व्यक्ति थे d. यशोधर बाबू गाँधीवाद के प्रवर्तक थे 2. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के अनुसार यशोधर बाबू शादी की सालगिरह मनाने के पक्ष में क्यों नहीं थे? a. क्योंकि इससे पैसों की बर्बादी होती थी b. क्योंकि ऎसा करना उनके हित में नहीं था c. क्योंकि वे इसे पश्चिम की नकल मानते थे b. क्योंकि वे रुढिवादी विचार्धारा को नहीं मानते थे 3. यशोधर बाबू की पत्नी पारंपरिक होते हुए भी किस कारण से आधुनिक हो गई हैं? a.यशोधर बाबू से अलग सोच रखने से b. समय के साथ खुद को बदलने से c. आधुनिकता में आनंद आने से d. बच्चों के प्रति मातृसुलभ मजबूरी से 4. 'जूझ' कहानी के अनुसार आनंद किसके काराण पढाई में मन लगाने लगा? a. नई कक्षा में प्रवेश पाने के कारण b. वसंत पाटिल के संपर्क में आने के कारण c. चव्हाण द्वारा मजाक उडाए जाने के कारण d. कक्षा में उत्तीर्ण होने के कारण 5. जूझ कहानी में आनंद लेखन का अभ्यास कैसे करता था? a. मिट्टी पर लिखकर b. श्यामपट्ट पर लिखकर c. अपने पशुओं के पीठ पर लिखकर d. घर की दीवारों पर लिखकर 6. 'जूझ' कहानी का उद्देश्य है। a. जीवन में संघर्ष की महत्ता प्रतिपादित करना b. जीवन में शिक्षा की महत्ता प्रतिपादित करना	

	c. ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों का उल्लेख करना d. जीवन में शिक्षक की भूमिका दर्शाना 7. 'जूझ' कहानी में आनंद के पिता उसकी किस बात से नाराज होते है? a. खेत में काम करने की बात से b. पढाई करने की बात से c. पशुओं को चराने की बात से d. उपर्युक्त सभी 8. 'अतीत में दबे पाँव' में लेखक ने किसका का वर्णन किया है? a. संपन्न बस्तियों का b. पौराणिक स्मृतियों के अद्ययन का c. इतिहासकारों की सोच व विचार शक्ति का d. सिंधु घाटी की सभ्यता का 9. मुअनजो-दडो में अब खुदाई क्यों बंद कर दी गई है? a. दलदल की समस्या के कारण b. कुछ नहीं मिलने के कारण c. अवशेष की उम्मीद नहीं होने से d. मौजूद खंडहर बचाने के लिए 10. छोटे दीलों पर बनी बस्तियों को क्या कहा गया है। a. गढ b. रईसों की बस्ती c. नीचा नगर d. सचिवालय	
	खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्रश्न -7	**निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखें -** क. बाज़ार का बदलता स्वरूप ख. पैसा पावर है ग. विज्ञापनों का दौर घ. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस) का जीवन पर प्रभाव	**1×6=6**
प्रश्न -8	**निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दें -**	**2×2=4**
प्रश्न -9	(i) रेडियो नाटक की अवधि 30 मिनट तक नियत करने का क्या कारण हो सकता है ? (ii) नाटक और कहानी में क्या समानता है ?	

	(iii) कहानी तथा नाटक में क्या अंतर है ?	
प्रश्न 10	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	3x2=6
(i)	'पतंग' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए|	
(ii)	'कविता के बहाने' के आधार पर कविता के असीमित अस्तित्व को स्पष्ट करें|	
(iii)	तुलसीदास जी का समय भी बेरोज़गारी और बेकारी से ग्रस्त था-सिद्ध कीजिए|	
प्रश्न 11	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	2x2=4
(i)	'बादल राग' कविता के आधार पर बादल के विप्लवकारी स्वरूप का चित्रण कीजिए |	
(ii)	'जादू टूटता है इस उषा का अब'- उषा का जादू क्या है? वह कैसे टूटता है? 'उषा कविता के आधार पर लिखिए|	
(iii)	'छोटा मेरा खेत' कविता के आधार पर खेत और कागज़ के पन्ने की समानता के तीन बिन्दुओं पर प्रकाश डालिए|	
प्रश्न 12	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	(3x2)
(i)	'बाज़ार दर्शन' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक ने बाज़ार को मानवता के लिए विडंबना कहा है और क्यों?	
(ii)	'काले मेघा पानी दे' संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता है- स्पष्ट कीजिए|	
(iii)	लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर कारणों का उल्लेख कीजिए?	
प्रश्न 13	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	2x2=4
(i)	भक्तिन और महादेवी के नामों में क्या विरोधाभास था? 'भक्तिन' पाठ के आधार पर लिखिए|	
(ii)	पहलवान की ढोलक की उठती- गिरती आवाज़ बीमारी से दम तोड़ रहे ग्रामवासियों में संजीवनी का संचार कैसे करती है? लिखिए |	
(iii)	आदर्श समाज की स्थापना में डॉ. अंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए|	

	पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2	अंक 4
प्रश्न. 14	**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढकर दिए गए दो (2) प्रश्नों में से एक (1) प्रश्न का लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए ।** (i) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? **अथवा** टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धडकती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं - इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।	**(1x4)**

4.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, 2023-24

विषय: हिन्दी (आधार-302)

कक्षा : बारहवीं (अंक योजना)

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक: 80 अंक**

- **अंक योजना, अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है|**
- **खंड -अ में दिए गए वस्तुपरक प्रश्नों का मूल्यांकन निर्दिष्ट अंक योजना के आधार पर ही किया जाए|**
- **खंड- ब में दिए गए विवरणात्मक के प्रश्नों के अंक-योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं हैं| ये सुझावात्मक व सांकेतिक हैं|**
- **यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिन्दुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दें तो उसे अंक दिए जाएँ|**
- **मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए|**

		खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न) प्रश्नों के उत्तर	
प्रश्न क्रम संख्या		**उत्तर**	**अंक**
		अपठित गद्यांश (1x10)	**1x10**
प्रश्न 1.	1.	b. महत्त्वाकांक्षा	1
	2.	c. परस्पर शत्रुता की भावना को मिटाने से	1
	3.	d. अहंकार	1
	4.	a. हम बच्चों को अहंकार के स्थान पर इंसानियत और सद्भावना का सबक सिखाना प्रारंभ करेंगे	1
	5.	c. अहंकार का स्थान प्रेम को देकर	1
	6.	a. जीवन जीने के सर्वोच्च आदर्शों और प्रेम को प्राथमिकता।	1
	7.	c. II और III	1
	8.	a. युद्ध के रूप में	1
	9.	b. बच्चों में आपसी प्रेम, मित्रता और भाईचारे की भावना के स्थान पर परस्पर शत्रुता को प्रबल बना रहा ।	1
	10.	d. कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है	1
		अपठित काव्यांश (1x5)	**(1x5)**
प्रश्न 2.	1.	a. मातृभूमि की माटी को	1
	2.	c. मातृभूमि का	1
	3.	b. मोहक	1
	4.	c. सुख-स्फूर्ति का इस काया में हुआ पुन: संचार	1
	5.	d. I और II	1

		अभिव्यक्ति और माध्यम	**(1x5)**
प्रश्न 3	(i)	(d) यह समझने में कठिन होती है	1
	(ii)	(d) उपरोक्त सभी	1
	(iii)	(d) विशेष रिपोर्ट	1
	(iv)	(a) किसी एक समाचार पत्र से संबन्धित नहीं होते, ऐसे पत्रकार भुगतान के आधार पर काम करते हैं ।	1
	(v)	(c) हाइपर टेक्स्ड-मार्क्ड़-अप लैंगवेज़	1
प्रश्न -4		**आरोह (काव्यांश)**	**(1x5)**
	1.	d) कथन (A)गलत है और कारण (R)भी गलत है ।	
	2.	c) प्रेयसी की याद	
	3.	c)संसार में ही रमा रहता है	
	4.	b) सांसरिक ज्ञान को भुलाना	
	5.	c) प्रेम की	
प्रश्न -5		**आरोह (गदयांश)**	**(1x5)**
	1.	a) उसे कहा गया है जो बाज़ार के आकर्षणों से प्रभावित नहीं होता है|	
	2.	c) कामना से विकल होने वाले लोगों के लिए कहा गया है|	
	3.	d) उपर्युक्त सभी |	
	4.	a) बाज़ार में माल देखने का निमंत्रण इसलिए दिया जाता है ताकि देखने वाले के मन में तृष्णाएँ जगे|	
	5.	d) बाज़ार के के आकर्षण में फँसकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीदना|	
		पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग 2	1x10
प्रश्न 6.	1.	a. यशोधर बाबू सिद्दांतवादी व्यक्ति थे	1
	2.	c. क्योंकि वे इसे पश्चिम की नकल मानते थे	1
	3.	b. समय के साथ खुद को बदलने से	1
	4.	b. वसंत पाटिल के संपर्क में आने के कारण	1
	5.	c. अपने पशुओं के पीठ पर लिखकर	1
	6.	a. जीवन में संघर्ष की महत्ता प्रतिपादित करना	1
	7.	b. पढाई करने की बात से	1
	8.	d. सिंधु घाटी की सभ्यता का	1
	9.	a. दलदल की समस्या के कारण	1

	10.	c. नीचा नगर	1
		खंड 'ब' (वर्णनात्मक प्रश्न) प्रश्नों के उत्तर	
प्रश्न -7		**रचनात्मक लेखन (1x6)**	(1x6)
	1.	**बाज़ार का बदलता स्वरूप** आज हमारा पूरा अस्तित्व बाजार के नियंत्रण में आ चुका है। कोई क्या खाए, क्या पिए, कहाँ जाए, क्या पढ़े, क्या देखे, क्या सुने सब पर बाजार का पहरा है। बाजार ही यह सब तय करता है और अपने हिसाब से परोसता है। हमारा स्वाद, हमारा जायका सब ही तो आज बाजार के इशारे पर नाच रहा है। पहले से तुलना करें तो भारतीय बाज़ार में बहुत सारे बदलाव आएं हैं। पहले के जमाने में भारतीय बाजार में उतनी आधुनिकता नहीं थी जितनी आज के युग में आ गई है। पहले के बाज़ार में ज्यादातर चीजें अपने देश में निर्मित होती थी। लेकिन अब दुनिया के विभिन्न देशों से आई वस्तुएं हमारे भारतीय बाज़ार में उपलब्ध है। पहले एक इंसान के छोटे दुकान होते हैं। अब यह दुकानों की जगह बड़े बड़े शॉपिंग मॉल खुल चुके हैं जहां एक जगह तरह तरह के समान उपलब्ध होते हैं।खाने पीने के बाज़ार की बात करें तो अब रेस्तरां का युग है। पहले यह कोई छोटा होटल या ढाबा हुआ करता ऊपर से देखने पर लगता है कि बाजार चुनने की छूट देता है और एक हद तक समर्थ होने एहसास देता है। ऐसे में हम खुद को शक्तिशाली महसूस करने लगते हैं। पर यह हमारे मन का कोरा भ्रम होता है क्योंकि इसका आधार आदमी की अपनी बुद्धि या विवेक न हो कर लुभावना विज्ञापन होता है बाज़ार के कारोबार को फलने-फूलने में इन विज्ञापनों का बड़ा हाथ है । 'ठंडा मतलब कोकाकोला' और 'यही है राइट च्वाइस बेबी' जैसे वाक्यांश कानों में जैसे जादू घोलते हैं । इनसे प्रभावित उपभोक्ता को भी लगने लगता है कि उसके गले की प्यास कोकाकोला के बिना अधूरी है । कैसा सम्मोहन है इनमें जो ग्राहक के कदमों को अनायास ही बाज़ार का रुख करने को मजबूर कर देता हैं । बाज़ार के बदलते परिदृश्य ने व्यक्ति की आदतों, रुचियों, आवश्यकताओं तथा भावनाओं में भी परिवर्तन किया है । आज उनमें उपभोकतवाद हावी हो गया है वस्तुओं को खरीदते समय उसकी गुणवत्ता, टिकाऊपन के बदले उसके रंग-रूप और आकार को प्राथमिकता मिलने लगी है । भारत देसी और विदेशी हर किस्म के व्यापारियों के लिए स्वर्ग सरीखा हो रहा है। यहाँ बढ़ती आबादी के चलते उपभोक्ताओं की कमी नहीं है। मध्य वर्ग	

		खोखली प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए खरीदारी की और बढ़ रहा है ताकि उच्च वर्ग की नकल कर आगे बढ़ सके। खरीदारी का अब जरूरतों से उतना घना रिश्ता नहीं होता जितना औरों की तुलना में अपने लिए ऊँची जगह बनाने से और बनी हुई जगह को सुरक्षित रखने से होता है। जो है उससे ऊब कर, नए-नए फैशन और चाल-ढाल, कहीं किसी से पिछड़ न जाएँ इस डर से हम सब जरूरी गैरजरूरी या उलजलूल हर तरह की खरीदारी में लगे हुए हैं। आज बाजार का विन्यास और चरित्र बदलता जा रहा है। कभी मेले ठेले और बाजार करना उत्सव होता था पर आज बाजार विमानवीकरण का बहाना बनाता जा रहा है। इस कठिन समय में हमें यह समझना होगा कि बाजार हमारे लिए है न कि हम बाजार के लिए। जीवन जीने का विवेक यदि नहीं होगा तो न यह धरती बचेगी न हम लोग क्योंकि धरती का कोष सीमित है।	
	2.	**पैसा पावर है** मैंने एक काहवत सुनी थी- "जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान"। अर्थात जिसे संतुष्टि मिल जाती है उसके लिए संसार की सारी संपत्ति धूल के समान है। पर आज शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसका रूपए-पैसे से से मन तृप्त हो गया हो। बड़े-बड़े धनकुबेर हों या संत-महात्मा आज जिसको भी देखो सब पैसे के गुलाम है। और हो भी क्यों न भाई साहब ! सभी जानते है कि "पैसा पावर है"। अर्थात जिसके पास पैसा है वह पावरफ़ुल व्यक्ति है और वह दुनिया की कोई भी वस्तु खरीद सकता है। आज जिसके पास पैसा है सब उसके आगे नतमस्तक होते हैं। इसीलिए पैसा कमाने के लिए लोग सही-गलत कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि- 'रुपया-पैसा हाथों की मैल है'। अब उनको कौन समझाए भाई कि 'रूपया-पैसा मैल नहीं बल्कि ऐसा माल है जिसे कोई नहीं छोड़ना चाहता'। अमीर लोगों में तो इस बात की होड़ लगी रहती है कि उनका नाम दुनिय के सबसे अमीर व्यक्तियों में गिना जाए। यानी जितना अधिक पैसा उतना ही अधिक पावर। इस पावर के बल पर वे धरती पर ही स्वर्ग जैसा वातावरण बना सकते हैं और उसके सुख का आनंद भी उठा सकते हैं। इस बात से मैं भी सहमत हूँ कि-"पैसा पावर है"। क्योंकि इसके बिना जीवन गुज़ारना कठिन है। लेकिन पैसे की पावर का सही जगह ही प्रयोग होना चाहिए अन्यथा यह समाज के लिए विनाशकारी हथियार बन सकता है। पैसे से अगर सुख के साधन खरीदे जा सकते हैं तो दूसरी तरफ मौत का सामान भी तैयार हो सकता है जिससे मानव जाति का विनाश निश्चित है। पैसे का पावर जीवन की अनिवार्य जरूरतें पूरी करने, मुसीबत में पड़े किसी मित्र-रिश्तेदार की सहायता करने, अपनी सुरक्षा और रोजी-रोटी का सामान	

		जुटाने, किसी गरीब-लाचार की सहायता करने में हो तो इस पावर से हम और हमारा समाज दोनों पावरफ़ुल बन सकते हैं।	
	3.	**विज्ञापनों का दौर** विज्ञापन आज की दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बन चुका है । इसने हमारे जीवन को पूरी तरह बादल कर रख दिया है । टीवी चैनल को देख लीजिए हर दस मिनट बाद कोई न कोई रन-बिरंगा विज्ञापन हमें लुभाता मिल जाएगा। आज की दुनिया विज्ञापनों की दुनिया है । इस दुनिया में उत्पादक अपने उत्पाद का इस तरह विज्ञापन देते हैं कि उपभोक्ता न चाहकर भी उत्पाद को खरीदने को मजबूर हो जाता है । अखबार में छापे विज्ञापन को देखिए , क्या लुभावनी पंक्ति लिखी दिखती है - ' सिर के बाल चले गए हों तो कोई चिंता नहीं, हम एक दो घंटे में सिर पर प्राकृतिक बाल उगाने का दावा करते हैं' । हम ऐसा तेल देंगे जो आपके सिर पर प्राकृतिक बाल ला देंगे, अगर हमारा दावा फेल रहा तो पैसे वापस । पेंसिल के विज्ञापन भी कितना लुभावना होता है - **'एक्स्ट्रा मार्क्स फॉर गुड हैंडराइटिंग',** तो क्या इसका यह अर्थ लगाया जाए कि बाज़ार की यह पेंसिल और अच्छे अंक प्राप्त करो । सोचने की बात यह है कि क्या कोई पेंसिल अच्छे अंक पाने की गारंटी हो सकती है ? लेकिन बाजारवाद के इस दौर में इतना सोचने की फुर्सत किसके पा है ? जाने-अनजाने विज्ञापनों ने बाज़ार ही नहीं उपभोक्ता का चरित्र भी बदल कर रख दिया है । आज हम विज्ञापन पर इतना भरोसा कराते हैं कि हमारे दिन की शुरुआत विज्ञापन में दिखी वस्तु से आरंभ होता है - टूथपेस्ट हो या चायपत्ती, सभी का प्रयोग विज्ञापन देखकर ही करते हैं । जब भी कोई नई कंपनी शुरू होती है तो जल्दी सफलता पाने के लिए इन्हीं विज्ञापनों का सहारा लेती है । आज विज्ञापन का उपयोग किसी भी व्यापार या किसी प्रसिद्ध क्षेत्र में उपलब्धि पाना हो तो विज्ञापन एक अचूक उपाय है । विज्ञापन में प्रदर्शित वस्तुएं भले ही आकर्षक हों लेकिन उसकी गुणवत्ता पर किसी का ध्यान नहीं । जब उत्पाद को खरीदकर घर लाते तब उसकी वास्तविकता सामने आती है । टिकाऊपन की बात तो छोड़िए, रंग पॉलिश की गारंटी सही निकले कोई आवश्यक नहीं । उपभोकतावाद के इस दौर में विज्ञापन बाज़ार का अनिवार्य अंग बन चुका है । एक ओर विज्ञापन अपने कार्य की सफलता बताने का माध्यम है तो दूसरी ओर बाज़ार की वस्तुओं को खरीदने और परखने का साधन भी है । इसलिए इसके महत्व को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता, हाँ अपनी सूझ-बुझ से वस्तुओं का सही चयन अवश्य किया जा सकता है ।	
	4.	**कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफ़िशियल इंटेलीजेंस) का जीवन पर प्रभाव**	

		वैसे तो भगवान ने मानव जाति को बेहद ही सुन्दर तोहफे दिए हुए हैं और इन्हीं तोहफों में ये जीवन, धरती, हमारा पर्यावरण इत्यादि शामिल हैं। लेकिन जिस तरह इंसानों ने अपने दिमाग का इस्तेमाल करके नई ऊंचाई को छुआ हैं। उसको देखकर तो यही लगता है कि भगवान द्वारा इंसानों को जो सबसे अच्छा तोहफा दिया गया है वो "दिमाग है"। दिमाग एक ऐसी चीज है जिसकी मदद से आप कुछ भी हासिल कर सकते हैं। उदाहरण के तौर- दिमाग की मदद से इंसान आज दूसरे ग्रहों तक जा पहुंचे हैं। जिस तरह इंसानों ने कंप्यूटर, फोन, स्पेस क्राफ्ट जैसी चीजों का आविष्कार किया है, वो सब काबिले तारीफ हैं। इतना ही नहीं दिमाग की मदद से इंसानों ने कई नामुमकिन चीजों को मुमकिन बना दिया है. वहीं अगर इंसान और जानवर के बीच में अगर कोई अंतर है। तो वो केवल दिमाग का अंतर है। भगवान द्वारा दिए गए इस तोहफे का इस्तेमाल करते हुए आज मनुष्य ने नकली दिमाग बनाने की ओर भी कदम बढ़ा लिए हैं। जी हाँ इंसान ने अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाने में कामयाबी भी हासिल कर ली है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जरिए कंप्यूटर सिस्टम या मशीनों को इस तरह से बनाने की कोशिश की जा रही है, कि वो इंसानों द्वारा किए जाने वाले कार्य आसानी से कर सकें। इन मशीनों को इस तरह से बनाया जा रहा ताकि वो हम लोगों जैसे निर्णय लेने, सहीं गलत की समझ होना, दृश्य धारणा, इंसानों की पहचान करना और इत्यादि कार्य आसानी से कर सके। अगर और सरल भाषा में कहा जाए तो इन मशीनों को इंसानों जैसा दिमाग दिया जा रहा है। ताकि वो इंसानों की तरह निर्णय भी ले सके। जिस कार्य को इंसानों द्वारा करने में कई महीनें लग जाते हैं वो इन मशीनों के जरिए जल्द किया जा सकता है। जहां पर इंसान का दिमाग एक जगह आकर सोचना बंद कर देता है वहीं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ ऐसा नहीं है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाली मशीनें बिना थके आसानी से कार्य करती हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता में मानव बुद्धि से परे जाने की पूरी क्षमता है और यह किसी भी विशेष कार्य को सटीक और कुशलता से कर सकता है। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में अपार क्षमता है। हालाँकि किसी भी चीज़ पर अधिक निर्भरता अच्छी नहीं होती है और कुछ भी पूर्ण रूप से मानव मस्तिष्क के समान नहीं हो सकता है। इसलिये कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अत्यधिक उपयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि बहुत अधिक स्वचालन और मशीनों पर निर्भरता, वर्तमान मानव जाति और आने वाली पीढ़ियों के लिये खतरनाक साबित हो सकती है।	

		अभिव्यक्ति और माध्यम(वर्णनात्मक प्रश्न) (2x2 तथा 2x3)	**10**
प्रश्न -8	(i)	रेडियो एक श्रव्य माध्यम है जिसमें नाटकों को केवल सुना जा सकता है। इसमें सुनाई जाने वाली ध्वनियों के आधार पर ही श्रोता नाटक को समझ पाता है। अधिक समय तक नाटक का प्रसारण श्रोताओं के लिए उबाऊ न हो जाए इसलिए रेडियो नाटक की अवधि 30 मिनट रखी जाती है।	**2**
	(ii)	○ दोनों में कोई न कोई कहानी होती है । ○ दोनों में पात्र और परिवेश होते हैं । ○ दोनों में कहानी का क्रमिक विकास, संवाद, द्वंद्व और चरम उत्कर्ष होता है ।	**2**
	(iii)	○ कहानी का संबंध लेखक और पाठक से जुड़ा है जबकि नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, पात्र , दर्शक, श्रोता, अन्य लोगों से जुड़ा होता है । ○ कहानी कही या पढ़ी जाती है जबकि नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है । नाटक के पात्र अभिनय द्वारा उसे मंच पर प्रस्तुत करते हैं । मंच पर सज्जा, संगीत और प्रकाश होता है । ○ कहानी में दृश्य नहीं देख सकते वह कल्पना करके समझी जाती है जबकि नाटक का संबंध दृश्यों से है । दृश्य का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है । ○ कहानी का प्रभाव कुछ समय तक रहता है जबकि नाटक का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसलिए लोग उसे अधिक समय तक याद रखते हैं ।	**2**
प्रश्न -9	(i)	**जनसंचार -** जब किसी यंत्र या तकनीक के माध्यम से लोगों के विशाल समूह के साथ संपर्क स्थापित किया जाए तो उसे 'जनसंचार' कहते हैं । समाचार पत्र, रेडियो, टीवी, इंटरनेट आदि इसके विभिन्न माध्यम हैं । इसके विभिन्न माध्यमों की विशेषताएँ और खामियाँ इस प्रकार है - **जनसंचार माधमों की खूबियाँ -** 1. प्रिंट माध्यम जैसे - समाचार पत्र, पत्रिकाएं चिंतन, तर्क-वितर्क और विचार-विश्लेषण का माध्यम हैं । इसमें समाचार पढ़ने के साथ-साथ रुककर उसपर सोचने का अवसर भी मिलता है । 2. टीवी खबरों में घटनाओं की तस्वीरें देखकर उसकी जीवंतता का बोध होता है । 3. इंटरनेट पर सूचनाओं का विशाल भंडार प्राप्त किया जा सकता है ।	**3**

		जनसंचार माधमों की खामियाँ - 1. निरक्षर लोगों को मुद्रित माध्यमों का लाभ नहीं मिल पाता इसके अतिरिक्त मुद्रित माध्यमों में सूचनाओं को तुरंत नहीं बताया जा सकता। एक बार प्रकाशित हो चुकी सामग्री को बदलाना या शुद्ध करना संभव नहीं । 2. रेडियो में प्रसारित सूचनाओं को अखबार की तरह पीछे लौटकर नहीं सुना जा सकता न ही कठिन शब्दों का अर्थ समझने के लिए शब्दकोश देखने का समय मिलता है । इसमें श्रोताओं को अधिक समय तक बांधे रहना संभव नहीं होता । 3. टीवी खबरों के प्रसारण में दृश्यों और ध्वनियों के साथ वॉयस ओवर का तालमेल न हो तो दिखाई जाने सूचनाओं का दर्शकों पर प्रभाव नहीं पड़ता ।	
	(ii)	वह घटनाएँ, सूचनाएँ जिनका समाज के विशाल जन समूह प्रभाव पड़े, समाचार कहलाती हैं । समाचार लेखन की शैलियाँ - पत्रकारिता जगत में समाचार लेखन की दो शैलियाँ प्रचलित हैं - 1. **सीधा पिरामिड शैली** - इसमें कथात्मक शैली में सूचनाएँ दी जाती हैं। 2. **उल्टा पिरामिड शैली**- इसका आरंभ 19वीं श्ताबड़ी में हुआ । यह समाचार लेखन की मानक और सबसे लोकप्रिय शैली है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बातें पहले लिखी जाती हैं इसके बात औसत जानकारियाँ और अंत में सबसे कम महत्व की बातें लिखी जाती हैं। पाठकों की सुविधा को देखकर अधिकांश जनसंचार माध्यम इस शैली का प्रयोग करते हैं । इसके अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है - **इंट्रो-** समाचार का मुख्य भाग **बॉडी** - घटना से संबन्धित अन्य महतवपूर्ण ब्यौरा **समापन -** कम महत्व की जानकारियाँ	**3**
	(iii)	**बीट रिपोर्टिंग** - किसी विशेष क्षेत्र से संबन्धित नए तथ्यों की आरंभिक जानकारी देना । जैसे- खेल, अपराध, विज्ञान-तकनीकि, शेयर मार्केट आदि क्षेत्रों पर आधारित रिपोर्ट तैयार करना । **विशेषीकृत रिपोर्टिंग** - इसमें विषय से संबन्धित गहन विश्लेषण होता है । जैसे शेयर मार्केट में आयी गिरावट पर रिपोर्ट लिखना विशेष रिपोर्ट है किन्तु गिरावट	**3**

		के कारणों और उसका बाज़ार पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण, विशेषीकृत रिपोर्टिंग कहलाता है ।	
		आरोह (गद्य पाठों पर आधारित प्रश्न)	**10**
प्रश्न -10		**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	(3x2)
	(i)	वर्षा ऋतु के सुहाने मौसम में पतंग उड़ाते बच्चों का वर्णन-बच्चे मस्ती,तन्मयता एवं उत्साह से भरपूर-रंगबिरंगे पतंग की तुलना रंगबिरंगी तितलियों से-इसे समझाने के लिए बिंबों का सहारा जैसे-चमकीली धूप मानो तेज़ी से साइकिल चलते आ रहा बच्चा|	
	(ii)	कविता के प्रभाव एवं प्रकाश का वर्णन-कविता का फैलाव(कवि की कल्पना) ऊँची उड़ान भरती चिड़िया से भी अधिक ऊँची और विस्तृत-उसकी महक और सुगंध फूल से भी अधिक स्थायी एवं अनंत-बच्चों के खेल के समान व्यापक,कल्पनापूर्ण और भेदभाव रहित|	
	(iii)	बेकरी हर युग की समस्या-तुलसीदास के समय का समाज बेरोज़गारी के संकट से जूझ रहा था-दरिद्रता रूपी रावण की दबोच में-न किसान फसल उगा प रहा-न व्यापारी व्यापार कर प रहा था-न भिखारी को भीख-काम -धाम के बिना लोग कहाँ जाए?	
प्रश्न -11		**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	(2x2)
	(i)	बादल में विध्वंस की पूरी शक्ति-बार-बार गरजते हैं -मूसलाधार वर्षा होती है-पहाड़ों पर निर्दयी होकर बिजली गिराते हैं|भयकर रूप देखकर धनी लोग तक काँप जाते हैं-अट्टालिकाएँ हिल उठती है-नन्हें पौधे प्रसन्न रहते हैं|	
	(ii)	सूर्योदय से उषा का अलौकिक रंग-रूप छूट जाता है|अवर्णनीय सौन्दर्य सूर्योदय -वेला में नष्ट हो जाते हैं-कवि के द्वारा प्रयुक्त उपमान ।	
	(iii)	कविकर्म को किसान के कर्म की तरह-कागज़ के पन्ने को छोटा चौकोना खेत-खेत में बीज ,जल,रसायन, डालने पर अंकुर,फल,फूल उगते हैं वैसे पन्ने पर कवि शब्द,भाव,अलंकार,रस से कविता बनाता है|	
		आरोह (गद्य पाठों पर आधारित प्रश्न)	**10**
प्रश्न -12		**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	(3x2)
	(i)	ऐसा बाज़ार जिसमें लोग आवश्यकता पूर्ति हेतु क्रय-विक्रय नहीं करते बल्कि परचेसिंग पावर का प्रदर्शन करते हैं- यह विडंबना है- ऐसा बाज़ार कपट बढ़ाता	

		है- सद्भाव नष्ट करता है- भाई चारा खत्म करता है- सभी लोग एक दूसरे की हानि करके अपना लाभ कमाना चाहते हैं -ऐसा व्यापार पूरी तरह मानवता के लिए एक अभिशाप है|	
	(ii)	विज्ञान सत्य और सहज प्रेम का द्वंद्व- हम देखे हुए सत्य पर विश्वास करते हैं किंतु कुछ सच हमारी दृष्टि से भी परे होती है- सत्य को हम प्रेम विश्वास और श्रद्धा के सहारे ही मान सकते हैं- दीदी ने अपने प्रेम के बल पर तर्क करने वाले लेखक को इंदर- सभा का महत्व समझाया- प्रेम के वशीभूत होकर लेखक उसकी बात मान गया- विज्ञान सत्य पर प्रेम की विजय का उदाहरण|	
	(iii)	अवधूत अर्थात सन्यासी जो सुख-दुख में समान भाव से प्रसन्न रहता है- भीषण कष्टों और कठिनाइयों में भी अपना जीवन रस बनाए रखता है- शिरीष का वृक्ष भी गर्मी ,तपन और लू के बीच फूलों से लदा रहता है- काल और समय को जीतकर भी लहलहाता है -इसलिए अवधूत एवं कालजयी कहा है|	
प्रश्न -13		**निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	(2x2)
	(i)	भक्तिन का असली नाम लक्ष्मी- परंतु वास्तव में बहुत गरीब थी- महादेवी के नाम में भी महानता और महिमा का भाव है जबकि वह स्वयं को बिल्कुल सामान्य नारी मानती है|	
	(ii)	ढोलक की आवाज़ नसों में सनसनी फैला देतीथी- सबको उत्तेजित करती थी -जीवंतता भरती थी। उसकी आवाज से लोगों को दंगल का दृश्य याद आ जाता था और उनमें एक ऊर्जा का संचार होता था। ढोलक की आवाज सन्नाटे में जिंदगी के होने का एहसास भरती थी- जीवन के उत्साह को बनाए रखने की प्रेरणा देती थी ।	
	(iii)	आदर्श समाज की स्थापना के लिए जन्मजात समानता का विचार- श्रम का विभाजन जाति के आधार पर न होकर रुचि के अनुसार- विचार से पूरी तरह सहमत- जाति प्रथा खत्म होगी और समाज में समानता का भाव पैदा होगा- रुचि के अनुसार काम चुनने का मौका मिलेगा और सब से बराबर का सम्मान मिलेगा -समाज सुखी और संतुष्ट रहेगा	
प्रश्न -14		**वितान (पाठों पर आधारित प्रश्न)**	(4x1)
	(i)	यशोधर बाबू की पत्नी संयुक्त परिवार के बंधनों में जकडी हुई थी, वह सुशील और समझदार है, वह आधुनिक समय के नए-नए विचारों में ढलना जानती है। वे जानती है कि बच्चों की सहानुभूति तभी प्राप्त किया जा सकता है कि जब	

		उनके अनुसार चला जाए। यशोधर बाबू परंपरावादी होने के कारण तालमेल नहीं बैठा पाते।	
	(ii)	**अथवा** मुअनजो-दडो और हडप्पा जैसे नगरों के खंडहर तत्कालीन सभ्यता और संस्कृति तथा इतिहास के प्रभाव के रुप में देखे जाते हैं। खंडहरों के आधार पर तत्कालीन जन-जीवन, रहन-सहन, सोच-विचार आदि	

5.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, 2023-24

विषय: हिन्दी (आधार-302)

कक्षा : बारहवीं

समय : **3** घंटे पूर्णांक : **80**

सामान्य निर्देश :

1. इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं- खंड 'अ' और 'ब'। कुल प्रश्न **14** हैं।
2. खंड 'अ' में **40** वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं, जिनमें से **40** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों के उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
4. प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए दीजिए।
5. दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
6. यथासंभव दोनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खण्ड 'अ': वस्तुपरक-प्रश्न

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए- (1 × 10 = 10)

जिस समय लोकमान्य तिलक ने राजनीतिक क्षेत्र में कदम रखा उस समय पूरा देश 'चैतन्यहीन' और 'स्वत्वहीन' हो चुका था। देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे। उनमें जीवन नहीं था, एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था। उनके मन में यह भरा जा चुका था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य इस देश पर सदा शासन करने वाला है। इस परिस्थिति को बदलने की आवश्यकता तिलक ने महसूस की। उन्होंने उन्हीं असंगठित पत्तों जैसे लोगों को इकट्ठा किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया। देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था। इस दृष्टि को बदलकर उन्हें जीवनोन्मुख बनाया। इस कार्य के लिए उन्होंने भगवद्गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। तब हालत कुछ ऐसी थी कि अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में ही हमारे पढ़े-लिखे विचारक गौरव महसूस करते थे। भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज, समाज-व्यवस्था सभी उनकी दृष्टि में हेय थी। तिलक ने इस बात को समझा और अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया। इसी के साथ उन्होंने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न हुए विरोधों को दूर कर राष्ट्रीयता की भावना को पैदा किया और राष्ट्रीयता की भावना से ही पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ जिसका प्रेरक वाक्य था-"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार"

(i) **गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा**

(क) तिलक का जीवन परिचय

(ख) स्वतंत्रता आंदोलन में तिलक का योगदान

(ग) विकल्प (क) और (ख)

(घ) इनमें से कोई नहीं।

(ii) **तिलक की राष्ट्रीयता की भावना किस रूप में प्रतिफलित हुई**?

(क) स्वराज्य की माँग के

(ख) पाकिस्तान की माँग के

(ग) इंग्लैण्ड की माँग के

(घ) सभी

(iii) **'चैतन्यहीन' से क्या तात्पर्य है**?

(क) चेतना विहीन

(ख) आत्मविश्वास परिपूर्ण

(ग) विकल्प (क) और (ख)

(घ) इनमें से कोई नहीं।

(iv) **भारतीयों की तुलना किससे की है**?

(क) गीले पत्ते

(ख) सूखे पत्ते

(ग) मिट्टी

(घ) पेड़

(v) **भारतीय पढ़े-लिखे विचारकों की दृष्टि में हेय क्या था**?

(क) रीति-रिवाज़

(ख) समाज-व्यवस्था

(ग) धर्म-प्रणाली

(घ) सभी

(vi) **तिलक ने लोगों में कैसा स्वाभिमान जाग्रत किया**?

(क) राष्ट्रीय

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय

(ग) विकल्प (क) और (ख)

(घ) इनमें से कोई नहीं।

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

(I) देशवासियों के मन में यह बस चुका था कि अंग्रेज़ सदा के लिए शासन करने वाले हैं।

(II) देशवासियों के मन में यह बस चुका था कि अंग्रेज़ सदा के लिए शासन नहीं करने वाले हैं।

(III) अंग्रेज़ सदा से भारतीयों की मदद करते आए हैं।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है। हैं**?**

(क) केवल **II**

(ख) केवल **III**

(ग) केवल **I**

(घ) **I** और **IIII**

(viii) **किसके द्वारा राष्ट्रीय पुनर्जागरण का कार्य किया गया**?

(क) जीवनोन्मुख दृष्टि

(ख) कर्मयोग के सिद्धान्त

(ग) विकल्प (क) और (ख)

(घ) इनमें से कोई नहीं

(ix) **प्रेरक वाक्य क्या था**?

(क) स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

(ख) स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है।

(ग) स्वराज की माँग हमारा जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है।

(घ) बेड़ियों में रहना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

(x) **निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-**

कथन (**A):** सामाजिक सौहार्द्र के लिए विभिन्न गुटों में बँटे भारतीय समाज के अन्तर्विरोधों को दूर किया।

कारण (**R):** जिससे पूर्ण स्वराज की माँग का उदय हुआ।

(क) कथन (**A)** तथा कारण (**R)** दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन (**A)** तथा कारण (**R)** दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (**A)** सही है तथा कारण (**R)** गलत है।

(घ) कथन (**A)** गलत है तथा कारण (**R)** सही है।

2. **निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प-चयन द्वारा दीजिए- (**1 × 5 = 5)

मन-दीपक निष्कंप जलो रे !
सागर की उत्ताल तरंगें,
आसमान को छू-छू जाएँ
डोल उठे डगमग भूमंडल

अग्निमुखी ज्वाला बरसाए
धूमकेतु बिजली की द्युति से,
धरती का अंतर हिल जाए

फिर भी तुम जहरीले फन को
कालजयी बन उसे दलो रे !

कदम-कदम पर पत्थर, काँटे
पैरों को छलनी कर जाएँ।
श्रांत-क्लांत करने को आतुर
क्षण-क्षण में जग की बाधाएँ
मरण गीत आकर गा जाएँ
दिवस-रात, आपद-विपदाएँ

फिर भी तुम हिमपात तपन में
बिना आह चुपचाप जलो रे !

(i) **कवि ने बाधाओं को दूर करने हेतु क्या बनने को कहा है** ?
(क) देवता
(ख) कालजयी
(ग) दीपक
(घ) जहरीला नाग
(ii) **बाधाओं को किसकी उपमा दी है** ?
(क) पत्थर और काँटे की।
(ख) फूल और कलियों की।
(ग) दीपक और बाती की।
(घ) जीवन और मृत्यु की।
(iii) **कवि मानव मन को क्या करने को कहता है** ?
(क) प्रतिशोध लेने को।
(ख) यादों के भंवर में न भटकने को।
(ग) निडर रहने को।
(घ) धर्मयुद्ध करने को।
(iv) **कवि ने कविता में किसे संबोधित किया है** ?
(क) दीपरूपी मन।
(ख) कमलरूपी मन।
(ग) सूर्यरूपी मन।

(घ) फनरूपी मन।

(v) **'क्षण-क्षणं, छू-छू, कदम-कदम' में कौन-सा अलंकार है?**

(क) उपमा।

(ख) मानवीकरण।

(ग) पुनरुक्ति प्रकाश।

(घ) अन्योक्ति।

अथवा

मैंने गढ़े
ताकत और उत्साह से
भरे-भरे
कुछ शब्द
जिन्हें छीन लिया मठाधीशों ने
दे दिया उन्हें धर्म का झंडा
उन्मादी हो गए
मेरे शब्द
तलवार लेकर
मिटाने लगे
अपना ही वजूद
फिर रचे मैंने
इंसानियत से लबरेज
ढेर सारे शब्द
अबकी उन्हें अगवा कर लिया
सफेदपोश लुटेरों ने
और दबा दिया उन्हें
कुर्सी के पाये तले
असहनीय दर्द से चीख रहे हैं
मेरे शब्द और वे
कर रहे हैं अट्टहास
अब मैं गढ़ूँगी
बोऊँगी उन्हें
निराई गुड़ाई और
खाद-पानी से
लहलहा उठेगी फ़सल

तब कोई मठाधीश
कोई लुटेरा
नहीं छीन पाएगा उन्हें
छीनने की कोशिश में भी
गिर ही जाएँगे कुछ दाने
और समय आने पर
फिर उगेंगे वे
एक बार
दो बार
बार-बार
लगातार उगेंगे
मेरे शब्द

(i) **मठाधीशों ने उत्साह भरे शब्दों को क्यों छीना** ?
(क) धार्मिक उन्माद जगाने के लिए
(ख) धर्म से दूर करने के लिए
(ग) विकल्प (क) और (ख)
(घ) इनमें से कोई नहीं।
(ii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**
(I) तलवार शब्द आत्मघात की ओर संकेत करता है।
(II) तलवार शब्द सुरक्षा की ओर संकेत करता है।
(III) तलवार शब्द निष्क्रिय की ओर संकेत करता है।
उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं**?**
(क) केवल **II**
(ख) केवल **I**
(ग) केवल **III**
(घ) **I** और **III**
(iii) **कवयित्री किस उम्मीद से शब्दों को बो रही है**?
(क) सही अर्थ प्राप्त करने की
(ख) अलग अर्थ प्राप्त करने की
(ग) विकल्प (क) और (ख)
(घ) इनमें से कोई नहीं
(iv) **पंक्तियों में 'वे' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है**?
(क) राष्ट्रपति
(ख) जनता
(ग) नेताओं

(घ) किसान

(v) **कवि बाधाओं को दूर करने हेतु क्या बनने के लिए कहता है?**

(क) सक्रिय

(ख) कालजयी

(ग) साधारण मनुष्य

(घ) राष्ट्रपति

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए-** (1 × 5 = 5)

(i) **भुगतान के आधार पर काम करने वाले पत्रकार कहलाते हैं ?**

(क) फ्रीलांसर

(ख) वॉचडॉग

(ग) बीट

(घ) संपादक

(ii) **समाचार के प्रारम्भिक अंश को क्या कहते हैं ?**

(क) इन्ट्रो

(ख) बॉडी

(ग) ककार

(घ) ये सभी

(iii) **निम्न में से प्रिंट मीडिया का माध्यम है-**

(क) टेलीविज़न

(ख) रेडियो

(ग) सिनेमा

(घ) समाचार-पत्र

(iv) **कॉलम 'क' का कॉलम 'ख' से उचित मिलान कीजिए-**

कॉलम 'क'	कॉलम 'ख'
(i) सिनेमा	**(i)** दृश्य माध्यम
(ii) समाचार पत्र	**(ii)** प्रिंट माध्यम
(iii) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना	**(iii)** मार्थोनी
(iv) रेडियो का आविष्कार	**(iv) 1936**

(क) (**iv), (iii), (ii), (i)**

(ख) (**i), (ii), (iii), (iv)**

(ग) (**i), (ii), (iv), (iii)**

(घ) (**i), (iii), (iv), (ii)**

(v) **ऑल इंडिया रेडियो वर्तमान में किस संस्था के अंतर्गत है** ?

(क) प्रसार भारती

(ख) भारतीय टेलीकॉम

(ग) डी. डी. नेशनल

(घ) ये सभी

4. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए-** (**1 × 5 = 5)**

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले जाते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं
अपने रंध्रों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास।

(i) पद्यांश में 'वे' और 'उनके' सर्वनाम शब्द किनके लिए प्रयुक्त हुए हैं?

(क) स्त्रियों के लिए

(ख) बच्चों के लिए

(ग) पुरुषों के लिए

(घ) बूढ़ों के लिए।

(ii) **'जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास' पंक्ति का आशय है-**

(क) बच्चे के जन्म पर कपास का उपहार दिया जाता है

(ख) बच्चे कपास की तरह सफ़ेद होते हैं

(ग) जन्म से ही बच्चे कपास जैसी कोमल भावनाएँ और लचीला शरीर लेकर आते हैं

(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

(iii) 'दौड़ते हैं बेसुध' पंक्ति के अनुसार बच्चों की बेसुधी के उदाहरण हैं

(क) वे दौड़ते-दौड़ते सो जाते हैं

(ख) वे सो नहीं पाते, अतः नींद में ही दौड़ते रहते हैं

(ग) वे जैसे ही बेसुध होते हैं, दौड़ना शुरू कर देते हैं

(घ) कटी पतंग को लूटने के लिए वे छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं। वे छतों के खतरनाक किनारों पर भी बेसुध होकर दौड़ने लगते हैं।

(iv) अलंकार की दृष्टि से कौन-सा विकल्प सही है?

(क) धागे के सहारे - उपमा अलंकार

(ख) पैरों के पास - अनुप्रास अलंकार

(ग) और भी निडर होकर - पुनरुक्ति अलंकार

(घ) उस समय गिरने से - छेकांनुप्रास अलंकार

(v) छतों के किनारों से उन्हें गिरने से कौन बचाता है?

(क) बच्चों की मदमस्त गतिविधियाँ

(ख) उनकी रोमांचकारी अनुभूतियाँ

(ग) उनकी बेखौफ़ एवं रोमांचक निश्चिन्तता

(घ) उपर्युक्त सभी।

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए-

(1 × 5 = 5)

फिर जीजी बोली, "देख, तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूँ उगाना है तो किसान पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ अपने पास से लेकर ज़मीन में क्यारियाँ बना कर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं; वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फ़सल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघों से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे। भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण

बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गांधी जी महाराज कहते हैं।"

(i) **बुवाई के लिए किसान किस प्रकार से श्रम करता है** ?

(क) ज़मीन की निराई, गुड़ाई करना

(ख) हल चलाना व क्यारियाँ बनाना

(ग) बीज बोना

(घ) उपर्युक्त सभी।

(ii) **त्याग की महत्ता को किसने बताया था** ?

(क) ऋषि-मुनियों ने

(ख) इंदर सेना ने

(ग) लेखक ने

(iii) इंदर सेना पर पानी फेंकना जीजी के अनुसार क्या है ?

(क) पानी की बर्बादी

(ख) पानी की बुवाई

(ग) अंधविश्वास

(घ) पानी का विसर्जन।

(iv) निम्नलिखित कथन कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए-

कथन (**A):** जीजी ने अपने आचरण संबंधी बात के समर्थन में गांधी जी का नाम लिया।

कारण (**R):** क्योंकि गाँधी-जी सत्य का समर्थन करते थे।

(क) कथन (**A)** सही है तथा कारण (**R)** गलत है।

(ख) कथन (**A)** गलत है तथा कारण (**R)** सही है।

(ग) कथन (**A)** सही है तथा कारण (**R)** कथन की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन (**A)** तथा कारण (**R)** दोनों गलत हैं।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

(I) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि इंदर सेना पर जल समर्पित करना होगा।

(II) जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह सिद्ध करना चाहती है कि खेती के लिए हल आवश्यक है।

(III) खेती का कार्य वर्षा पर पूरी तरह निर्भर होता है।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं**?**

(क) केवल **I**

(ख) केवल **II**

(ग) केवल **III**

(घ) **I** और **III**

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-

(1 × 10 = 10)

(i) **लेखक ने अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में किसकी सहायता लेने का सुझाव दिया** ?

(क) दादा की

(ख) सौंदलगेकर की

(ग) ताऊ की

(घ) दत्ता जी राव की

(ii) **लेखक का पिता अपना पूरा दिन कहाँ व्यतीत करता था** ?

(क) खेतों में

(ख) घर पर

(ग) रखमाबाई के पास

(घ) पाठशाला में

(iii) **लेखक के पिता के लिए किसका बुलावा सम्मानीय बात थी**?

(क) देसाई का

(ख) गणपा का

(ग) सौंदलगेकर का

(घ) बोरकर का

(iv) **यशोधर बाबू का चड्ढा के संबंध में क्या विचार था**?

(क) अद्भुत

(ख) बदतमीज़

(ग) कामचोर

(घ) समहाउ इंप्रापर चड्ढा

(v) **यशोधर बाबू की कलाई घड़ी का क्या कहकर मज़ाक उड़ाता था** ?

(क) चूनेदानी

(ख) चूहेदानी

(ग) माचिस की डिबिया

(घ) खटारा

(vi) **किशन दा ने यशोधर बाबू को कितने रुपए उधार देकर मदद की थी** ?

(क) **₹ 20**

(ख) **₹ 50**

(ग) **₹ 100**

(घ) **₹ 150**

(vii) **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए**

(I) यशोधर बाबू की शादी **6** फरवरी **1947** में हुई थी।

(II) यशोधर बाबू की शादी **8** फरवरी **1947** में हुई थी।

(III) यशोधर बाबू की शादी **9** फरवरी **1947** में हुई थी।

(IV) यशोधर बाबू की शादी **10** फरवरी **1947** में हुई थी।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा / कौन-से सही है/ हैं**?**

(क) **I** और **IV**

(ख) केवल **I**

(ग) केवल **II**

(घ) केवल **IV**

(viii) **कुंड की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है-**

(क) इसका विशाल आकार

(ख) कुंड के नीचे उतरती सीढ़ियाँ

(ग) पक्की ईंटों का जमाव

(घ) तीन तरफ़ बने साधुओं के कक्ष

(ix) **विशाल कोठार किस प्रयोग में लाया जाता था** ?

(क) सेना के अस्त्र-शस्त्र रखने के

(ख) कर के रूप में प्राप्त अनाज रखने के

(ग) तीर्थयात्रियों व साधुओं के ठहरने के

(घ) लगान के हिसाब-किताब के बहीखाते रखने के

(x) **फसलों की ढुलाई किसके द्वारा की जाती थी** ?

(क) बैलगाड़ी के

(ख) हथठेला के

(ग) सिर पर रखकर

(घ) ऊँटों के

खण्ड 'ब' : वर्णनात्मक प्रश्न

7. **दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग** 120 **शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-** (6 × 1 = 6)

(क) कम्प्यूटर : मेरे जीवन में

(ख) भारत की सामाजिक समस्याएँ

(ग) स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं

(घ) विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

8. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में दीजिए- (**2 × 2 = 4)

i)(क) कहानी-कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

अथवा

(ख) रेडियो नाटक किसे कहते हैं **?**

ii)(क) नाटक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

(ख)कहानी और नाटक में क्या अंतर हैं?

9. **निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए- (**3×2 = 6)

i)(क) साइबर पत्रकारिता क्या है**?**

अथवा

(ख) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में अंतर स्पष्ट कीजिए।

ii)(क) हर सूचना समाचार नहीं होती। ऐसा क्यों**?**

अथवा

(ख)समाचार - लेखन की सबसे प्रभावी और प्रचलित शैली कौन-सी है ? उस शैली की क्या विशेषता है?

10. **काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए- (3 × 2 = 6)**

(क) कवि ने कविता की उड़ान और खिलने को चिड़िया और फूलों से किस तरह भिन्न बताया है**?**
(ख) "कैमरे में बंद अपाहिज" करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है, इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
(ग) 'उषा' कविता के आधार पर गाँव की सुबह का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

11. **काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए-** **(2 × 2 = 4)**

(क) पंथी क्या सोच रहा है और क्यों **?**
(ख) दूरदर्शन वाले कैमरे के सामने कमज़ोर को ही क्यों लाते हैं **?**
(ग) तुलसीदास के समय तत्कालीन समाज कैसा था **?**

12. **गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए- (3 × 2 = 6)**

(क) भक्तिन के स्वभाव की ऐसी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण उसने लेखिका को अपने अनुसार ढाल लिया।
(ख) 'बाज़ारूपन' से आप क्या समझते हैं**?** कैसे लोग बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं**?**
(ग) जीजी इंदरसेना पर पानी फेंकना पानी की बर्बादी क्यों नहीं मानतीं **?** उनके तर्कों का उल्लेख कीजिए।

13. **गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए। (2 × 2 = 4)**

(क) लेखक किस कार्य को व्यर्थ मानता है और क्यों **?**
(ख) 'बाज़ार दर्शन' में लेखक किसकी महिमा का कायल है**?**
(ग) जेठ-जिठौतों के मन किस कारण ललचा जाते थे **?**

14. **निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए।**

(2 × 2 = 4)

i) यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है, लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों? चर्चा कीजिए।

ii) जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथा नायक की किसी केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है?

iii) पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-"सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

****

5.प्रतिदर्श प्रश्न पत्र, 2023-24
विषय: हिन्दी (आधार-302)
कक्षा : बारहवीं (अंक योजना)

समय : 3 **घंटे** **पूर्णांक :** 80

खण्ड 'अ': वस्तुपरक-प्रश्न
अपठित गद्यांश

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प को चुनकर लिखिए- (**1 × 10 = 10)

(i) (ख) स्वतंत्रता आंदोलन में तिलक का योगदान

(ii) (क) स्वराज्य की माँग के

व्याख्या : तिलक द्वारा समाज में जगाई गई राष्ट्रीयता की भावना ही पूर्ण स्वराज्य की माँग के रूप में प्रतिफलित हुई।

(iii) (क) चेतना विहीन

(iv) (ख) सूखे पत्ते

व्याख्या : भारतीयों की तुलना सूखे पत्ते से इसलिए की गई है क्योंकि उसमें जीवन का रस नहीं था।

(v) (घ) सभी

(vi) (क) राष्ट्रीय

(vii) (ग) केवल **I**

(viii) (क) जीवनोन्मुख दृष्टि

व्याख्या : स्वतन्त्रता पाने में प्रेरक वाक्य बना "स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है।"

(ix) (क) स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

(x) (क) कथन (**A)** तथा कारण (**R)** दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

2. **निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प-चयन द्वारा दीजिए- (**1 × 5 = 5)

(i) (ख) कालजयी

व्याख्या : कवि बाधाओं को दूर करने हेतु कालजयी बनने को कहता है। जो बाधाओं से डरे नहीं, मरे नहीं बल्कि मृत्यु को भी जीत ले।

(ii) (क) पत्थर और काँटे की।

(iii) (ग) निडर रहने को।

(iv) (क) दीपरूपी मन।

(v) (ग) पुनरुक्ति प्रकाश।

अथवा

(i) (क) धार्मिक उन्माद जगाने के लिए

व्याख्या : धार्मिक उन्याद लोगों में जगाने के लिए मठाधीशों ने उत्साह भरे शब्दों को छीन लिया।

(ii) (ख) केवल **I**

(iii) (क) सही अर्थ प्राप्त करने की

(iv) (ग) नेताओं

(v) (ख) कालजयी

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- (**1 × 5 = 5)

(i) (क) फ्रीलांसर

व्याख्या : फ्रीलांसर पत्रकार भुगतान के आधार पर अलग-अलग अख़बारों के लिए लिखते हैं।

(ii) (क) इन्ट्रो

व्याख्या : समाचार के विस्तृत तत्त्वों को घटते क्रम में लिखना बॉडी कहलाता है तथा समाचार का प्रारंभ-भाग इन्ट्रो/मुखड़ा कहलाता है। इसे उल्टा पिरामिड शैली कहते हैं।

(iii) (घ) समाचार-पत्र

व्याख्या : प्रिंट मीडिया/मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम है। वास्तव में आधुनिक युग की शुरुआत ही मुद्रण के आविष्कार से हुई।

(iv) (ग) **(i), (ii), (iv), (iii)**

(v) (क) प्रसार भारती

व्याख्या : सन् **1997** में आकाशवाणी को केन्द्र सरकार के सीधे नियंत्रण से निकालकर प्रसार भारती नाम के स्वायत्तशासी निकाय को सौंप दिया गया।

4. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनिए-** (1 × 5 = 5)

(i) (ख) बच्चों के लिए

व्याख्या : पद्यांश में 'वे' और 'उनके' सर्वनाम शब्द पतंग उड़ाने वाले बच्चों के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

(ii) ' (ग) जन्म से ही बच्चे कपास जैसी कोमल भावनाएँ और लचीला शरीर लेकर आते हैं

व्याख्या : बच्चे जब जन्म लेते हैं तब वे बहुत ही सुकोमल होते हैं। उनमें कोमल भावनाएँ होती हैं व लचीला शरीर होता है जैसे- कि कपास कोमल, मुलायम व लचीली होती है।

(iii) (घ) कटी पतंग को लूटने के लिए वे छतों पर बेसुध होकर दौड़ते हैं। वे छतों के खतरनाक किनारों पर भी बेसुध होकर दौड़ने लगते हैं।

व्याख्या : बच्चे जब पतंग उड़ा रहे होते हैं तब वे अपनी चिंता ही छोड़ देते हैं। वे बेसुध होकर कटी पतंग को लूटने के लिए दौड़ पड़ते हैं चाहे वह छत हो या छत का किनारा, जहाँ से गिरने का भय भी रहता है।

(iv) (ख) पैरों के पास - अनुप्रास अलंकार

(v) (घ) उपर्युक्त सभी।

व्याख्या :बच्चों की गतिविधियाँ बहुत मदमस्त होती हैं। उनके लिए कटी पतंग पकड़ने के लिए दौड़ना रोमांचकारी अनुभूति होती है। वे गिरने के डर से बेखौफ़ रहते हैं। उन्हें केवल रोमांचक निश्चिन्तता रहती है। उनकी ये सभी गतिविधियाँ और उनकी निडरता उन्हें छतों के किनारे से गिरने से बचाती हैं।

5. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प को चुनिए-**1×5=5

(i) (घ) उपर्युक्त सभी।

व्याख्या : किसान ज़मीन की निराई, गुड़ाई करता है, बीज़ बोता है और हल चलाकर क्यारियाँ बनाकर परिश्रम द्वारा बुवाई करता है।

(ii) (क) ऋषि-मुनियों ने

व्याख्या : ऋषि-मुनियों का कहना है कि मनुष्य को पहले स्वयं त्यागपूर्वक दान करना चाहिए तभी उसे उसका गुना मिलता है।

(iii) (ख) पानी की बुवाई

व्याख्या : जीजी के अनुसार काले मेघों से वर्षा पाने के लिए इंदर सेना पर पानी फेंकना मानो पानी की बुवाई है।

(iv) (ग) कथन (**A)** सही है तथा कारण (**R)** कथन की सही व्याख्या करता है।

व्याख्या : जीजी आचरण को बहुत महत्त्व देती थी। राजा और प्रजा दोनों का आचरण मानवीय मूल्यों के अनुसार होना चाहिए। गांधीजी भी यही कहते थे कि उनका स्वयं का आचरण सत्य व त्याग पर आधारित था। वे सादगी भरा जीवन व्यतीत करते थे और अहिंसा के रास्ते पर चलते थे।

(v) (क) केवल **I**

व्याख्या : जीजी किसान के उदाहरण द्वारा यह बताना चाहती है कि जिस प्रकार किसान बुआई करके फ़सल उगाता है उसी प्रकार इंदर सेना पर जल डालना भी वर्षा के लिए बुवाई होती है।

6. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हेतु निर्देशानुसार सही विकल्प का चयन कीजिए-(**1×10 = 10)

(i) (घ) दत्ता जी राव की

व्याख्या : पूरे गाँव में दत्ता जी राव का अत्यधिक मान- सम्मान था। लेखक के पिता भी उनकी बात को ठुकरा नहीं सकते थे अतः लेखक ने अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में दत्ताजी राव की सहायता लेना उचित समझा।

(ii) (ग) रखमाबाई के पास

व्याख्या : लेखक का पिता ऐशो-आराम और मस्ती से रहने वाला व्यक्ति था। वह खेतों में काम नहीं करना चाहता था और आज़ादी से घूमना चाहता था। इसी ऐशो-आराम और मस्ती के लिए वह अपना पूरा दिन रखमाबाई के पास व्यतीत करता था।

(iii) (क) देसाई का

व्याख्या : लेखक के पिता दत्ता जी राव देसाई को बहुत मानते थे। वे उनकी प्रत्येक बात भी मानते थे। उसके लिए देसाई का बुलावा आना सम्मान की बात थी।

(iv) (घ) समहाउ इंप्रापर चड्ढा

व्याख्या : चड्ढ़ा ने यशोधर बाबू के साथ बद्तमीज़ी की थी और उसकी चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते देखकर भी चड्ढ़ा उन्हें समहाउ इंप्रापर लग रहा था।

(v) (ख) चूहेदानी

व्याख्या : यशोधर बाबू ने जब ऑफिस के लोगों को ऑफिस की घड़ी की तरह सुस्त बताया, तो चड्ढ़ा ने भी यशोधर बाबू की घड़ी को चूनेदानी' कहकर उनकी घड़ी का मज़ाक उड़ाया।

(vi) (ख) **₹ 50**

व्याख्या : किशन दा ने यशोधर बाबू को, **₹ 50** उधार देकर मदद की थी।

(vii) (ख) केवल **I**

व्याख्या : यशोधर बाबू की शादी **6** फरवरी, **1947** में हुई थी।

(viii) (ग) पक्की ईंटों का जमाव

व्याख्या : महाकुंड को चूने और गारे का इस्तेमाल कर ईंटों से पक्का बनाया गया है जिससे अंदर का पानी बाहर और बाहर का अशुद्ध पानी अंदर नहीं आ सकता। इसका पानी बाहर निकालने के लिए भी ईंटों से ढकी पक्की नालियाँ बनी हैं।

(ix) (ख) कर के रूप में प्राप्त अनाज रखने के

व्याख्या : महाकुंड के दूसरी तरफ़ बना नौ-नौ की तीन कतारें, हवादारी और चौकियों को देख प्रबंधकों ने इस विशाल कोठार का उपयोग कर के रूप में मिले अनाज का संग्रहण करना माना है।

(x) (क) बैलगाड़ी के

व्याख्या : फसलों की ढुलाई बैलगाड़ी द्वारा की जाती थी।

खण्ड 'ब' : वर्णनात्मक प्रश्न

7. **दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग** 120 **शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-** (6 × 1 = 6)

(क) कंप्युटर : मेरे जीवन में
(ख) भारत की सामाजिक समस्याएँ
(ग) स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं
(घ) विकास के लिए शिक्षा आवश्यक
उत्तर:
(क) कंप्युटर : मेरे जीवन में

कंप्युटर आधुनिक विज्ञान का अद्भुत करिश्मा है जिसने सारे विश्व को अपने आकर्षण में जकड़ लिया है। कोई वैज्ञानिक प्रतिष्ठान हो या औद्योगिक प्रतिष्ठान, बैंक हो या बीमा निगम, रेलवे स्टेशन हो या बस डिपों हर जगह इसका बोलबाला है। यही स्कूल-कॉलेजों में विद्यार्थियों की रुचि का केन्द्र है। सबकी तरह मैं भी कंप्युटर के प्रभाव से अछूता नहीं हूँ। कंप्युटर ने मेरे जीवन को जहाँ रफ्तार दी है वहीं इसे आरामदायक भी बना दिया है। शिक्षा से सम्बन्धित कैसी भी जानकारी प्राप्त करना बहुत सरल हो गया है।

परिवार, रिश्तेदारों, मित्रों आदि से सम्पर्क बनाए रखना हो या बिजली, टेलीफोन आदि के बिल जमा करने हों, तो कंप्युटर के द्वारा घर बैठे जमा कर सकते हैं। कंप्युटर के कारण भारी-भरकम पुस्तकों को रखने, सँभालने और उन्हें उलटने-पुलटने की आवश्यकता खत्म होती जा रही है। इंटरनेट ने सारे विश्व को एक पाठशाला में बदल देने की शक्ति दिखा दी है। कंप्युटर के कारण मैं किसी भी प्रकार की लम्बी से लम्बी गणना बिना किसी त्रुटि के कुछ ही पलों में कर लेता हूँ। जब कभी थक जाता हूँ या बोरियत महसूस करता हूँ तो कंप्युटर पर चलचित्र देख लेता हूँ या मनपसंद गाने सुन लेता हूँ। इससे अकेलेपन का एहसास भी नहीं होता। घर से दूर परदेस में यह एक सच्चे मित्र की भाँति मेरा साथ देता है।

परिवार को पैसे भेजने का कार्य भी कंप्युटर सुगमता से कर देता है। घर जाने के लिए रेल का टिकट कराना हो या हवाई जहाज का, कंप्युटर के द्वारा सुविधापूर्वक किया जा सकता है। वस्तुतः आज के समय में कंप्युटर हमारे घर के एक सदस्य की तरह हमारा साथ निभा रहा है।

(ख) भारत की सामाजिक समस्याएँ

मेरा भारत एक विशाल देश है जहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों व वेश-भूषाओं को धारण करने वाले लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों में अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है परन्तु

अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है। प्रायः जाति, भाषा, रहन-सहन व धार्मिक विभिन्नताओं के बीच सामंजस्य रखना दुष्कर हो जाता है। विभिन्न धर्मों व सम्प्रदायों के लोगों की विचारधाराएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं।

देश में व्याप्त प्रांतीयता, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है। इसके चलते आज देश के लगभग सभी राज्यों से दंगे-फसाद, मारकाट, लूट-खसोट आदि के समाचार प्रायः सुनने व पढ़ने को मिलते हैं। नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार तथा बलात्कार का प्रयास हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु हमारे कथित सभ्य-शिक्षित समाज में भी दहेज का ज़हर व्याप्त है। अंधविश्वास व रूढ़िवादिता हमारे देश के नवयुवकों को भाग्यवादिता की ओर ले जाती है फलस्वरूप वे कर्महीन हो जाते हैं। भ्रष्टाचार भी हमारे देश में एक जटिल समस्या का रूप ले चुका है।

भ्रष्टाचार के परिणामस्वरूप देश में महँगाई और कालाबाजारी के ज़हर का स्वच्छंद रूप से विस्तार हो रहा है। जातिवाद की जड़ें समाज में बहुत गहरी हो चुकी हैं। ये समस्याएँ आज की नहीं हैं अपितु सदियों से पनप रही हैं। इसके परिणामस्वरूप पनपी सामाजिक विषमता देश के विकास में बाधक हैं। इसके अतिरिक्त देश में फैली अशिक्षा और निर्धनता जैसी सामाजिक समस्याओं के रहते कोई भी देश वास्तविक रूप में विकास नही कर सकता।

(ग) स्वाभिमान चाहिए, अभिमान नहीं

स्वाभिमान और अभिमान ये दोनों मनुष्य के चरित्र को परिभाषित करते हैं। जहाँ स्वाभिमान उसके उच्च व्यक्तित्व का उदात्त अंग कहलाता है वहीं अभिमान उसके पतन का कारण बनता है। स्वाभिमान मनुष्य का गुण बन जाता है और अभिमान उसका अवगुण कहलाता है। स्वाभिमान ही प्रत्येक मनुष्य का आभूषण है। यह हर व्यक्ति के अंतस में विद्यमान उसका प्रिय मित्र होता है।

स्वाभिमान रूपी पूँजी जिसके पास नहीं होती वह मृतप्राय होता है। उसे हर कोई रौंदता हुआ आगे बढ़ जाता है। इसी प्रकार जिस देश के लोगों में स्वाभिमान का भाव नहीं होता, उस राष्ट्र को कोई भी शत्रु-देश आक्रमण करके सरलता से अपने अधीन कर लेता है। इसके विपरीत अभिमान मनुष्य का वह अवगुण है जो व्यक्ति के सिर चढ़कर बोलता है। यह मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। मनीषियों का कथन है कि अहंकारी कितने भी ऊँचे बोल क्यों न बोल ले उसका अंत हमेशा बुरा ही होता है।

स्वाभिमानी मनुष्य मृत्यु तुल्य कष्टों का भी हँसकर सामना कर लेते हैं। वे अपने स्वाभिमान का सौदा कभी भी किसी भी मूल्य पर नहीं करते। ऐसे स्वाभिमानियों से तो बड़े-बड़े साम्राज्य भी थर-थर काँपते हैं। वे जानते हैं कि ऐसे लोग अपने लिए कभी समझौता नहीं करते। वहीं अभिमानी लोग खुद तो डूबते ही हैं अपने साथियों को भी डुबाने का अपराध करते हैं। वे इस तथ्य को भूल जाते

हैं "घमंडी का सिर नीचा।" अभिमानी का अन्त सदैव बुरा होता है जैसे रावण और हिरण्यकश्यप जैसे अभिमानियों का हुआ अतः हमें स्वाभिमानी बनना चाहिए, अभिमानी नहीं। मैं भी ऐसा ही स्वाभिमानी बनूँगा।

(घ) विकास के लिए शिक्षा आवश्यक

शिक्षा अपने चारों ओर की चीज़ों को सीखने की प्रक्रिया है मैं यह जानता हूँ कि यह हमें किसी भी वस्तु या परिस्थिति को आसानी से समझने, किसी भी समस्या से निपटने और जीवन भर विभिन्न आयामों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। शिक्षा के बिना हम अधूरे हैं और हमारा जीवन बेकार है, शिक्षा के बिना मनुष्य अपना विकास नहीं कर सकता है।

शिक्षा से मनुष्य का बौद्धिक विकास होता है जिसके बल पर वह आत्मनिर्भर बन अपना आर्थिक विकास कर सकता है। किसी भी देश या जाति के विकास के लिए भी शिक्षा उतनी ही आवश्यक है जितनी मानव के व्यक्तिगत विकास के लिए इसीलिए हमारे देश में 'पढ़े इंडिया, बढ़े इंडिया' जैसे-शिक्षा कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जा रहा है। यह सामाजिक विकास, आर्थिक समृद्धि और तकनीकी उन्नति का सही रास्ता है। शिक्षा वैज्ञानिकों की, शोधकार्यों में; यांत्रिक मशीनों आधुनिक जीवन के आवश्यक अन्य तकनीकियों के आविष्कार में सहायता करती है। यह समाज में सामान्य संस्कृति और मूल्यों को विकसित करती है। इस तरह देश शिक्षा के द्वारा अपने चहुँमुखी विकास की ओर अग्रसर होता है।

8. **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में दीजिए-** (2 × 2 = 4)

i)(क) उत्तर:
कहानी का इतिहास मानव इतिहास जितना ही पुराना माना जाना चाहिए क्योंकि कहानी मानवीय प्रकृति जन्य है। पहले युद्ध, प्रेम, प्रतिशोध के किस्से, फिर कल्पनात्मक कहानियाँ और फिर जो उसे प्रिय लगा, उसके किस्से सुनाए जाते थे। धीरे-धीरे वीरता के बलिदानों और त्याग, तपस्या के किस्से भी सुनाए गए जिससे व्यक्तियों में साहस के साथ-साथ मानवीय मूल्य बने रहें। परियों की कहानियाँ, भूत-प्रेतों की डरावनी कहानियाँ, राजा-रानी की कहानियाँ, साधारण जीवन से जुड़ी आम आदमी की कहानियाँ आदि रोचक कहानियों से शुरू हुई और वर्तमान में सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार करती कहानियाँ रची जाने लगीं। शिक्षा देने के लिए कहानी विधा का प्रयोग किया गया और 'पंचतंत्र' की कहानियाँ लिखी गईं। धीरे-धीरे कहानी के साथ उद्देश्य का सम्मिश्रण हो गया जो कि उत्तरोत्तर विकसित होता गया।

(ख)उत्तर:
रेडियो संचार का एक साधन है जिसके माध्यम से किसी भी संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचा सकते हैं लेकिन केवल आवाज़ के माध्यम से इसीलिए इसे दूरभाष यंत्र भी कहते हैं। रेडियो-नाटक एक श्रव्य-माध्यम है। इसका रंगमंच एक तरह का अंधकार ही है क्योंकि ये हमें दिखाई

नहीं देता, केवल सुनाई देता है। दर्शक सुने जा रहे संवादों से अपनी कल्पना में दृश्यों की रचना कर लेता है। रेडियो-नाटक शब्दों व माइक के सहारे प्रस्तुत किया जाता है। इसका समय निर्धारित होता है। इस पर देश, काल व स्थान का बँधन नहीं होता।

ii)(क) उत्तर:
नाटक की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
(i) नाटक एक ऐसी गद्य विधा है, जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है।
(ii) नाटक का सम्बन्ध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से होता है।
(iii) नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।
(iv) 'नाटक' को दृश्यों के आधार पर विभाजित किया जाता है।
(v) नाटक में मंच सज्जा संगीत तथा प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

(ख)

कहानी और नाटक दो अलग-अलग विधाएँ हैं। इनमें यदि कुछ समानताएँ हैं तो कुछ भिन्नताएँ भी हैं। कहानी की परिभाषा देते हुए हिंदी साहित्यकोश लिखता है-"कहानी गद्य-साहित्य का एक छोटा, अत्यंत सुसंगठित और अपने-आप में पूर्ण कथारूप है।" परंतु नाटक जीवन की अनुकृति है। नाटक को सजीव पात्रों द्वारा एक चलते-फिरते सप्राण रूप में अंकित किया जाता है। अन्य शब्दों में, हम कह सकते हैं कि कहानी का संबंध केवल लेखक तथा पाठक से होता है, परंतु नाटक का संबंध लेखक के अतिरिक्त निर्देशकों, पात्रों, दर्शकों तथा श्रोताओं से होता है।

दृश्य होने के कारण नाटक अधिक प्रभावशाली विधा है। नाटक को मंच पर प्रस्तुत किया जाता है। उसमें मंच सज्जा, संगीत, प्रकाश व्यवस्था इत्यादि को भी स्थान दिया जाता है, परंतु कहानी केवल कही जाती है या पढ़ी जाती है। कहानी को पढ़ते समय हम उसे बीच में भी छोड़ सकते हैं और बाद में समय मिलने पर कभी भी पढ़ सकते हैं, परंतु नाटक को एक ही समय तथा स्थान पर दर्शकों के सामने अभिनीत किया जाता है। संक्षेप में, हम कहते हैं कि कहानी पढ़ने या सुनने की विधा है, नाटक रंगमंच पर अभिनीत करने की विधा है।

9. **निम्नलिखित तीन में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए-(**3 × 2 = 6)

i)(क)उत्तर:
साइबर पत्रकारिता का अभिप्राय उस पत्रकारिता से है जो मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट पर खबरें देती है। आज तमाम वेबसाइटें इस प्रकार की हैं जो प्रमुख समाचार भी उपलब्ध कराती हैं। फिल्म, खेल, व्यापार जगत के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय घटनाचक्र की ताजा-तरीन जानकारी इन वेबसाइटों पर उपलब्ध होती हैं। साइबर मीडिया में ग्राफिक्स, ऑडियो-विडियो, चित्र आदि सभी का प्रयोग होता है।

साइबर मीडिया अर्थात् मल्टी मीडिया कई संचार माध्यमों से युक्त होता है। यह दर्शकों या पाठकों की रूचि को कम नहीं करता बल्कि बढ़ाता है जिसके कारण वे इससे दूर नहीं जा पाते।

(ख)उत्तर:
बीट रिपोर्टिंग का आशय किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित नए तथ्यों की आरम्भिक जानकारी देना है। इसमें कहाँ, कब, क्या, किसने किया**?** इसकी पर्याप्त सूचना होती है। इसकी सूचना देने वाले को बीट रिपोर्टर कहा जाता है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग से आशय सामान्य समाचारों के बाद विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी समस्याओं का, घटनाओं का या अन्य किसी मुददे का गहराई से विवेचन करना है। विशेषीकृत रिपोर्टिंग में घटना और घटना के महत्त्व का स्पष्टीकरण होता है तथा रक्षा, विदेश-नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा आदि को प्राथमिकता दी जाती है।

i)(क)उत्तर:
हर सूचना समाचार इसलिए नहीं होती, क्योंकि समाचार किसी भी ऐसी ताज़ा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट होती है, जिसमें अधिक-से-अधिक लोगों की रुचि होती है और इसका प्रभाव भी अधिक-से-अधिक लोगों पर पड़ता है। समाचारों में तथ्यों की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इन तथ्यों को बिना तोड़े-मरोड़े प्रस्तुत किया जाता है। हमें समाचार माध्यमों से महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती रहती हैं। ये सार्वजनिक महत्त्व की सूचनाएँ होती हैं। ये व्यक्तिगत नहीं होतीं। ये समसामयिक घटनाओं पर आधारित होती हैं। हमारी निजी जिंदगी पर आधारित सूचनाएँ या व्यक्तिगत महत्त्व की सूचनाएँ समाचार नहीं होती।

ii)लेखन की सबसे प्रभावी और प्रचलित शैली उल्टा पिरामिड शैली है। उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए क्रम में अन्य तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है।

10. **काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए- (**3 × 2 = 6)

(क)उत्तर:
कविता कल्पना के पंखों पर चिड़िया की तरह मुक्त गगन में विचरण करती है और फूलों की भाँति खिलकर अपनी शोभा सर्वत्र फैला देती है। किन्तु कविता चिड़िया से भिन्न इसलिए है क्योंकि चिड़िया के पंखों की सामर्थ्य सीमित है, जबकि कविता की सामर्थ्य असीमित है। इसी प्रकार फूल खिलकर मुरझा जाते हैं, किन्तु कविता कभी मुरझाती नहीं उसकी शोभा सुगंध रूपी समय बीतने के साथ और भी बढ़ती जाती है।।

(ख)उत्तर:
चैनलों/दूरदर्शन द्वारा अपाहिज व्यक्तियों की बेबसी को दर्शाकर करुणा पैदा करने के पीछे क्रूरतापूर्वक व्यावसायिक उद्देश्यों का संचालन (परीक्षार्थी के अन्य तर्कसंगत विचार भी स्वीकार्य)

व्याख्यात्मक हल

कैमरे में बंद अपाहिज' कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है, क्योंकि एक शारीरिक रूप से अपाहिज, विकलांग व्यक्ति जो कि शारीरिक रूप से चुनौती को सहन कर रहा है, दूरदर्शन वाले अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछकर, विभिन्न भाव-भंगिमाओं (संकेतों) द्वारा एक साक्षात्कार कार्यक्रम के बहाने उसका मानसिक शोषण करते हैं।

कार्यक्रम का उद्देश्य समाज के ऐसे व्यक्तियों के प्रति करुणा जाग्रत करना है। यह कविता दूरदर्शन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को उभारती जरूर है, लेकिन ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत करती है, जो दुःख-दर्द, यातना-वेदना को बेचना चाहता है। यह कविता शारीरिक चुनौती को सहन करते लोगों के प्रति संवेदनशील नज़रिया अपनाने के रूप में भी देखी जा सकती है। कवि ने संवेदनहीनता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। वह दिखलाता है कि किस तरह करुणा के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम क्रूर बन जाता है।

(ग) उत्तर:
(i) प्रात:काल की रंगत बहुत नीले शंख जैसी
(ii) ओस से भरा भोर का नभ राख से लीपे हुए चौके जैसा
(iii) उषाकालीन आकाश लाल केसर से धुली काली सिल जैसा निर्मल और स्वच्छ
(iv) खुले तालाब में स्नान करती युवतियाँ

व्याख्यात्मक हल

उषा कविता में कवि ने गतिशील बिंब योजना का प्रयोग करते हुए गाँव की सुबह का सुंदर शब्द-चित्र प्रस्तुत किया है। बहुत सुबह पूर्व दिशा में सूर्य दिखाई देने से पहले आकाश नीले शंख के समान प्रतीत हो रहा था। उसका रंग ऐसा लग रहा था जैसे किसी गाँव की महिला ने चूल्हा जलाने से पहले राख से चौका पोत दिया हो। उसका रंग गहरा था। कुछ देर बाद हल्की-सी लाली ऐसे दिखाई दी जैसे काले सिल पर जरा-सा लाल केसर मल दिया हो और फिर उसे धो दिया हो या किसी स्लेट पर लाल खड़िया या चाक मल दिया गया हो। आकाश के नीलेपन में सूर्य ऐसे प्रकट हुआ जैसे नीले जल में किसी युवती का गोरा सुंदर शरीर झिलमिलाता हुआ प्रकट हो रहा हो। लेकिन सूर्य के दिखाई देते ही यह सारा प्राकृतिक सौन्दर्य मिट गया।

11. **काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए- (**2 × 2 = 4)

(क) उत्तर:
पंथी यह सोच रहा है कि कहीं जीवन रूपी पथ में मृत्यु रूपी अंधकार छा गया तो मैं लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाऊँगा अतः मुझे अपनी गति बढ़ानी चाहिए। मंज़िल अब ज़्यादा दूर नहीं है।

(ख) उत्तर:
दूरदर्शन वालों को पता है कि कमज़ोर व अशक्त लोगों के प्रति समाज में करुणा व दया का भाव होता है। लोग दूसरे के दुःख के बारे में जानना चाहते हैं और दूरदर्शन वाले उनकी इसी भावना का फायदा उठाते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाते हैं।

(ग) उत्तर:
तुलसीदास के समय में सामाजिक मान्यताएँ व परम्पराएँ नष्ट हो रही थीं। समाज में धार्मिक अंधविश्वास फैल रहा था जिनमें पूरा समाज फँसता जा रहा था। समाज में नारी की स्थिति शोचनीय थी।

12. **गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 60 **शब्दों में लिखिए- (**3 × 2 = 6)

(क) उत्तर:
(i) भक्तिन देहाती खाना-पीना (मकई, दलिया, मट्ठा, ज्वार के भुने सफ़ेद दानों की खिचड़ी आदि) बनाना जानती थी।
(ii) देहाती खाने की रुचि न होते हुए भी लेखिका को खाना पड़ता था।
(iii) लेखिका को अपने बोलचाल, खान-पान के अनुरूप ढाल लिया लेकिन खुद को लेखिका के अनुसार नहीं ढाल पाई।

व्याख्यात्मक हल :
भक्तिन देहाती खाना-पीना (मकई, दलिया, मट्ठा, ज्वार के भुने सफ़ेद दानों की खिचड़ी आदि) बनाना जानती थी। खाने की रुचि न होते हुए भी लेखिका को भक्तिन के बनाए खाने को खाना पड़ता था। भक्तिन ने कुछ ही दिनों में लेखिका को अपनी बोल-चाल, खान-पान के अनुरूप ढाल लिया लेकिन स्वयं को लेखिका के अनुसार नहीं बना पाई।

(ख)'उत्तर:
बाज़ारूपन से बाज़ार में कपट भाव बढ़ता है और अपनेपन के अभाव में आपस में उचित व्यवहार में कमी आ जाती है। ग्राहक और विक्रेता के संबंध केवल व्यावसायिक ही रह जाते हैं। एक की हानि में दूसरा अपना लाभ देखने लगता है। वे व्यक्ति ही बाज़ार को सार्थकता दे सकते हैं जो अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार का उपयोग करते हैं। यदि हम बाज़ार की चमक-दमक में फँसकर रह गए तो वह हमें असंतोष, तृष्णा, घृणा एवं ईर्ष्या से घायल कर बेकार बना डालता है।

(ग)उत्तर:
'इंदर सेना' गाँव के बालकों और किशोरों की एक मंडली थी जो लोगों से घर-घर जाकर पानी की माँग करती थी। जीजी ने कहा कि यदि हम इंदर सेना पर पानी नहीं फेंकेंगे तो इन्द्र भगवान हमें

पानी कैसे देंगे? यह पानी की बर्बादी नहीं है बल्कि यह तो पानी का अर्घ्य है जिसे हम कुछ पानी की चाह लेकर इंद्र को चढ़ाते हैं। मनुष्य जिस वस्तु को दान में नहीं देगा तो फिर कैसे पाएगा? ऋषि-मुनियों ने दान को सर्वोत्तम बताया है। त्याग-भावना से जो दान दिया जाता है उसी से फल की प्राप्ति होती है। जिस प्रकार किसान तीस-चालीस मन गेहूँ की पैदावार प्राप्त करने के लिए पहले अपने खेत में पाँच-छ: सेर अच्छे गेहूँ की बुवाई करता है। इसी प्रकार हमारे इस कार्य से प्रसन्न होकर इन्द्र देवता काले मेघा लेकर वर्षा करेंगे जिससे गाँव, शहर, खेत-खलिहान खिल उठेंगे।

13. **गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए। (**2 × 2 = 4)

(क)उत्तर:
लेखक सूखे के समय मेढक मंडली पर पानी फेंकना व्यर्थ मानता है। वर्षा न होने के कारण पानी की इतनी कमी अधिक कमी है। उसके अनुसार दिन-दिन गहराते पानी के संकट के समय मेढक मंडली पर पानी फेंकना पानी की बर्बादी है। ऐसे अंधविश्वासों से देश का ही नुकसान होता है।

(ख)उत्तर:
'बाज़ार दर्शन' में लेखक पत्नी की महिमा का कायल है क्योंकि आदिकाल से फ़िज़ूलखर्ची में पत्नी की प्रमुखता पति से अधिक प्रमाणित है। पत्नी जब पति के साथ बाज़ार जाती है तो वह अपने पति को कुछ अधिक सामान खरीदने को मजबूर कर देती है।

(ग)उत्तर:
भक्तिन के हरे-भरे खेत, मोटी-ताज़ी गाय-भैंस और फलों से लदे पेड़ देखकर जेठ-जिठौतों के मन ललचा जाते थे और किसी भी प्रकार उन्हें हड़प लेने को बेचैन रहते थे। वे भक्तिन की सारी संपत्ति पर अपना कब्जा कर लेना चाहते थे।

14. **गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग** 40 **शब्दों में लिखिए। (**2 × 2 = 4)

i)यशोधर बाबू बचपन से ही जिम्मेदारियों के बोझ से लद गए थे। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहांत हो गया था। उनका पालन-पोषण उनकी विधवा बुआ ने किया। मैट्रिक होने के बाद वे दिल्ली आ गए तथा किशन दा जैसे कुंआरे के पास रहे। इस तरह वे सदैव उन लोगों के साथ रहे जिन्हें कभी परिवार का सुख नहीं मिला। वे सदैव पुराने लोगों के साथ रहे, पले, बढ़े। अत: उन परंपराओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन पर किशन दा के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव था। इन सब कारणों से यशोधर बाबू समय के साथ बदलने में असफल रहते हैं। दूसरी तरफ, उनकी पत्नी पुराने संस्कारों की थीं। वे एक संयुक्त परिवार में आई थीं जहाँ उन्हें सुखद अनुभव हुआ। उनकी इच्छाएँ अतृप्त रहीं। वे मातृ सुलभ प्रेम के कारण अपनी संतानों का पक्ष लेती हैं और बेटी के अंगु एकपाई

पहात हैं। वे बेयों के किसी मामले में दल नाहीं देता। इस प्रकर वे स्वायं को शीघ्र ही बदल लेती है।

ii)शीर्षक किसी भी रचना के मुख्य भाव को व्यक्त करता है। इस पाठ का शीर्षक 'जूझ' पूरे अध्याय में व्याप्त है।

'जूझ' का अर्थ है-संघर्ष। इसमें कथा नायक आनंद ने पाठशाला जाने के लिए संघर्ष किया। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गाँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ व परिवेश को विश्वसनीय ढंग से व्यक्त करता है। इसके अतिरिक्त, आनंद की माँ भी अपने स्तर पर संघर्ष करती है। लेखक के संघर्ष में उसकी माँ, देसाई सरकार, मराठी व गणित के अध्यापक ने सहयोग दिया। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है। इस कहानी के कथानायक में संघर्ष की प्रवृत्ति है। उसका पिता उसको पाठशाला जाने से मना कर देता है। इसके बावजूद, कथा नायक माँ को पक्ष में करके देसाई सरकार की सहायता लेता है। वह दादा व देसाई सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखता है तथा अपने ऊपर लगे आरोपों का उत्तर देता है। आगे बढ़ने के लिए वह हर कठिन शर्त मानता है। पाठशाला में भी वह नए माहौल में ढलने, कविता रचने आदि के लिए संघर्ष करता है। इस प्रकार यह शीर्षक कथा-नायक की केंद्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है।

iii) सिंधु-सभ्यता से जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनमें औजार तो हैं, पर हथियार नहीं हैं। मुअनजो-दड़ो, हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु-सभ्यता में हथियार उस तरह नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं। दूसरी जगहों पर राजतंत्र या धर्मतंत्र की ताकत का प्रदर्शन करने वाले महल, उपासना-स्थल, मूर्तियाँ और पिरामिड आदि मिलते हैं। हड़प्पा संस्कृति में न भव्य राजप्रासाद मिले हैं, न मंदिर, न राजाओं व महतों की समाधियाँ। मुअनजो-दड़ो से मिला नरेश के सिर का मुकुट भी बहुत छोटा है। इन सबके बावजूद यहाँ ऐसा अनुशासन जरूर था जो नगर-योजना, वास्तु-शिल्प, मुहर-ठप्पों, पानी या साफ़-सफ़ाई जैसी सामाजिक व्यवस्थाओं में एकरूपता रखे हुए था। इन आधारों पर विद्वान यह मानते हैं कि यह सभ्यता समझ से अनुशासित सभ्यता थी, न कि ताकत से।